“शिक्षित महिलाओं पर एक अभूतपूर्व अध्ययनः उनकी सफलता और आत्मधारणा के सम्बन्ध में”

Thesis

Submitted for the award of
Degree of Doctor of Philosophy
Discipline Education
By

Seema Tiwari

Enrollment No: MUIT0116038073

Under the Supervision of
Dr. Haldhar Yadav
Professor, Dept. of Education,
MUIT, Lucknow

Under the Maharishi School of Humanities & Arts
Session : 2016-17

Maharishi University of Information Technology

Sitapur Road, P.O. Maharishi Vidya Mandir
Lucknow, 226013

Degree Serial No./उपाधि क्रमांक
PH.D/2022/00001864

Enrollment No./नामांकन संख्या
MUIT0116038073

Maharishi University of Information Technology
महर्षि सूचना प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय

Upon the recommendation
of the Academic Council

*This is to certify that **Seema Tiwari** has been awarded the degree of Doctor of Philosophy in **Education** of this University in the year **2022**.*

Title of the thesis

"SHIKSHIT MAHILAON PAR EK ABHOOTPOORV ADHYAYAN : UNKI SAFALTA AUR AATM DHARNA KE SAMBANDH MEIN"

विद्या परिषद की अनुशंसा पर

प्रमाणित किया जाता है कि **सीमा तिवारी** को **शिक्षाशास्त्र** विषय में इस विश्वविद्यालय की डॉक्टर ऑफ़ फिलासफी की उपाधि वर्ष **2022** में प्रदान की गयी ।

शोध प्रबन्ध का शीर्षक

"शिक्षित महिलाओं पर एक अभूतपूर्व अध्ययन : उनकी सफलता और आत्म धारणा के सम्बन्ध में"

know (U.P), India
नऊ (उ.प्र), भारत
ed/दिनांक : 01.08.2022

Registrar
कुलसचिव

Vice Chancellor
कुलपति

Declaration by the Scholar

I hereby declare that the work presented in this thesis entitled **"शिक्षित महिलाओं पर एक अभूतपूर्व अध्ययनः उनकी सफलता और आत्मधारणा के सम्बन्ध में"** in fulfillment of the requirements for the award of Degree of Doctor of Philosophy, submitted in the **Maharishi School of Humanities & Arts**, Maharishi University of Information Technology, Lucknow is an authentic record of my own research work carried out under the supervision of **Dr. Haldhar Yadav**, I also declare that the work embodied in the present thesis-

i) is my original work and has not been copied from any journal/ thesis/ book; and

ii) has not been submitted by me for any other Degree or Diploma of any University/ Institution.

Signature of the Scholar

सीमा तिवारी

SEEMA TIWARI

Supervisor's Certificate

This is to certify that **Ms. Seema Tiwari** has completed the necessary academic turn and the swirl presented by him/her is a faithful record is a bonafide original work under my guidance and supervision. He/She has worked on the topic **"शिक्षित महिलाओं पर एक अभूतपूर्व अध्ययनः उनकी सफलता और आत्मधारणा के सम्बन्ध में"** under the School of Humanities & Arts, Maharishi University of Information Technology, Lucknow.

Signature of the Supervisor

Date: 22/07/22

Dr. Haldhar Yadav

ACKNOWLEDGEMENT

The goal of every journey is to reach the destination. Reaching the destination is the most pleasurable moment in one's life. But what makes the journey interesting and memorable is the people who have walked together. I would first and foremost like to express my deep sense of reverence and gratitude to God almighty. Without his invisible support and guidance this would have been impossible. He has magically unfolded the Education pathway in my mind's eye and empowered me to crease it. With my deepest gratitude I would like to thank my revered guide, Dr. Haldhar Yadav, Professor, Department of Education, Maharishi University of Information Technology, Lucknow, (Uttar Pradesh) who has inspired, touched and illuminated me.

I would like to thank the Honorable Vice-Chancellor Prof. (Dr.) Bhanu Pratap Singh. Maharishi University of Information Technology for giving me opportunity to undergo the research work at esteemed university. I would also like to thanks Registrar Prof. (Dr.) Akhand Pratap Singh, Deputy Registrar Mr. Girish Chhimwal, Dean Research Dr. Anil Kumar Dixit and Head of Department Humanities & Arts, Maharishi University of Information Technology for providing support and the environment during my work was more than what anyone would have expected. She/he has been a friend, philosopher and guide in the true sense. Here scholarly knowledge added essence to my work. Here persistence and understanding instilled the urge to move on and never give up. Here cheerful and friendly nature let me pour out my ideas, doubts and problems without any inhibition. She/he has been the milestone that gives assurance that one is on the right path and destination is not too far way. She/he has been the backbone, supporting my work in every way possible. As I travelled through this journey there were lot of hard bends and hurdles. My wonderful family members with their magical want made all of them vanish. I thank them from the bottom of my heart. I would like to lovingly acknowledge their contribution, so that I would be able to complete my research. I would like to thank all the people who have in their own way contributed to this work.

सीमा तिवारी

SEEMA TIWARI

Research Scholar

विषय-सूची

क्रम संख्या	विवरण	पृष्ठ संख्या
❖	*COVER PAGE*	*i*
❖	*DECLARATION BY THE SCHOLAR*	*ii*
❖	*SUPERVISOR'S CERTIFICATE*	*iii*
❖	*ACKNOWLEDGEMENT*	*iv*
❖	*विषय-सूची*	*v*
❖	*सारांश (ABSTRACT)*	*vi*
प्रथम- अध्याय	परिचय	03 – 32
द्वितीय- अध्याय	सहित्य की समीक्षा	33 – 53
तृतीय- अध्याय	शोध क्रियाविधि	54 – 65
चतुर्थ- अध्याय	संमक व्याख्या	66 – 162
पंचम- अध्याय	निष्कर्ष एवं सुझाव	163 – 177
❖	*सन्दर्भ सूची*	178 – 199
❖	*परिशिष्ट*	200 – 248

सारांश (ABSTRACT)

अध्ययन ने शिक्षित महिलाओं की सफलता और आत्मधारणा के विचार का खुलासा किया। सभी प्रतिभागी खुद को एक सफल महिला के रूप में देखतें हैं। वे सभी इस बात से सहमत थे कि सफलता एक बहुआयामी अवधारणा है और हर व्यक्ति के लिए आयाम अलग-अलग होते हैं। कुछ सामान्य आयाम परिवार, आर्थिक, पेशेवर, स्वास्थ्य, सामाजिक आदि हैं। अधिकांश प्रतिभागी अपने परिवार को प्राथमिकता के रूप में रखते हैं और बाकी सब कुछ उसके बाद आता है। उनमें से अधिकांश अपने परिवार (पति बच्चों) के लिए सब कुछ त्याग सकते है, इसका मतलब है कि उनका जीवन उनके विचार के इर्द-गिर्द घूमता है। उनमें केवल एक ही शिक्षक है जो किसी के लिए अपना सब कुछ बलिदान नहीं कर सकता उन सभी ने सोचा कि सफलता केवल भौतिकवादी नहीं है और सफलता को संतुष्टि, मन की शांति, खुशी आदि के रूप में वर्णित किया है। वे सभी अपने जीवन में संतुष्टि और खुशी चाहते है न कि केवल भौतिकवादी चीजें प्राप्त करना। अध्ययन ने आम लोगों के विचारों को खारिज कर दिया कि नाम, प्रसिद्धि, समृद्धि और पद ही एक सफलता है। यदि परिवार सहायक है तो एक महिला के लिए जीवन और करियर में सफलता प्राप्त करना आसान है क्योंकि सभी प्रतिभागियों का एक सहायक परिवार होता है। सभी प्रतिभागी विवाहित हैं और स्वीकार करते हैं कि एक सफल करियर में पति का समर्थन एक महत्वपूर्ण कारक है। अधिकांश प्रतिभागी इस बात से सहमत थे कि पारिवारिक लगाव कभी-करियर में एक बाधा होता है। सभी प्रतिभागी इस बात से सहमत थे कि पारिवारिक लगाव कभी-कभी करियर में एक बाधा होता है। सभी प्रतिभागी खुद को तलाशने में असमर्थ हैं क्योंकि वे अपने शौक और रूचियों के लिए समय का प्रंबधन नहीं कर सके, यहां तक कि वे परिवार और पेशे की सभी जिम्मेदारियों को निभा रहे है। वे सभी इस बात से सहमत है कि महिलाओं को मल्टीटास्किंग पर्सन माना जाता है।

अध्ययन का सार यह है कि सफलता एक गैर-भौतिकवादी अवधारणा, यह संतुष्टि, खुशी और मन की शांति आदि है। हमारे समाज में अधिकांश महिलाएं परिवार उन्मुख हैं। उन्होंने खुद को अपने परिवार के बाद रखा। हर कोई अपने जीवन में संतुष्टि चाहता है। सफलता एक व्यापक अवधारणा है और हर व्यक्ति में भिन्न होती है। सफल होना एक बहुत एहसास है और केवल पैसा कमाना ही सफलता नहीं है।

शिक्षित महिलाओं पर एक अभूतपूर्व अध्ययन: उनकी सफलता और आत्म-धारणा के सम्बन्ध में

प्रथम अध्याय

परिचय

1.1 परिचय

जिस क्षण हम किसी लक्ष्य की सफलता और उपलब्धि के बारे में सोचते हैं, हमारे मन में एक आशावादी खुशी का अनुभव होता है। अधिकांश लोगों का मानना है कि बहुत सारा पैसा, शक्ति और प्रतिष्ठा प्राप्त करना सफलता है लेकिन जब हम अलग-अलग लोगों की राय का विश्लेषण करते हैं तो हम पाते हैं कि सफलता के और भी कई आयाम हैं। ये आयाम हर व्यक्ति में अलग-अलग होते हैं। यदि हम सफलता के बारे में सोचते हैं, तो हम पाते हैं कि एक लक्ष्य प्राप्त होने के बाद, हमें अगले के लिए जाना चाहिए। इसलिए, सफलता की यात्रा अंतहीन है क्योंकि इच्छाओं का कोई अंत नहीं है और जब हम सफल लोगों के जीवन को करीब से देखते हैं, तो हम पाते हैं कि वे अपने जीवन में कभी भी एक बिंदु पर नहीं रुकते हैं। सफलता एक ऐसा शब्द है जिसका सुखद अर्थ है और हर कोई अपने जीवन में सफलता प्राप्त करना चाहता है। अंग्रेजी ऑक्सफोर्ड लिविंग डिक्शनरी द्वारा परिभाषित सफलता "एक उद्देश्य या उद्देश्य की पूर्ति" का अर्थ है प्रसिद्धि, धन या सामाजिक स्थिति की प्राप्ति ("सफलता", 2019)। दुनिया में हर व्यक्ति सफल होना चाहता है, लेकिन सफलता के पहलू सभी के लिए अलग-अलग होते हैं, इसलिए सफलता को परिभाषित करना बहुत मुश्किल है क्योंकि सभी के लिए अर्थ समान है, लेकिन पहलू अलग हैं। सफलता का अर्थ अपने द्वारा निर्धारित लक्ष्य या लक्ष्य को प्राप्त करना है। एक व्यक्ति के लिए, सफलता का अर्थ उसके बैंक खाते में लाखों डॉलर हो सकता है, लेकिन दूसरे के लिए सामाजिक स्थिति अधिक मायने रखती है। सफलता की कई परिभाषाएं हैं लेकिन सभी का सार लक्ष्य को प्राप्त करना या जो चाहते हैं उसे प्राप्त करना ही सफलता है।

पेले के अनुसार, “सफलता कोई दुर्घटना नहीं है। यह कड़ी मेहनत, दृढ़ता, सीखना, अध्ययन करना, त्याग करना और सबसे बढ़कर, जो आप कर रहे हैं उससे प्यार करना है" ("पेले कोट्स," 2019)। इस उद्धरण में महान फुटबॉल खिलाड़ी पेले ने कहा कि सफलता कोई दुर्घटना नहीं है, इसका मतलब है कि सफलता आकस्मिक उपलब्धि नहीं है, लेकिन सफलता का गठन करने वाले तत्व कड़ी मेहनत,

दृढ़ता, सीखना, अध्ययन, बलिदान आदि हैं, जिसका अर्थ है कि यदि कोई व्यक्ति सफल होना चाहता है तो उसे कड़ी मेहनत करनी होगी और अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए दृढ़ संकल्पित होना चाहिए। यह भी महत्वपूर्ण है कि एक व्यक्ति में अपने क्षेत्र में सीखने और अध्ययन करने की गुणवत्ता हो क्योंकि सीखना एक आजीवन और सतत प्रक्रिया है। एक व्यक्ति जन्म से मृत्यु तक अलग-अलग चीजें सीखता है, और यह कभी समाप्त नहीं होता है। लक्ष्य की प्राप्ति के लिए त्याग भी करना पड़ता है, लेकिन यहां व्यक्ति किस प्रकार का त्याग करता है, यह लक्ष्य के प्रकार पर निर्भर करता है। इसका अर्थ है कि यदि कोई व्यक्ति कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करना चाहता है तो उसे उन सभी चीजों का त्याग करना चाहिए जो उसे पढ़ाई से विचलित और विचलित करती हैं या यदि कोई व्यक्ति एक अच्छा खिलाड़ी बनना चाहता है तो इसके लिए उसे सभी प्रकार के अस्वस्थ्य का त्याग करना चाहिए। उसे फिट, मजबूत और सक्रिय बनाने के लिए भोजन की आदतें ताकि वह अपने खेल में उत्कृष्टता प्राप्त कर सके। अंत में, पेले ने जो कहा, हम जो कर रहे हैं उससे प्यार करना अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि जब हम रुचि के साथ काम करते हैं तो हमेशा सफलता और संतुष्टि मिलती है।

" उठो! जागो! और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए।" - स्वामी विवेकानंद (टंडन, और गुप्ता, 2010)।

स्वामी विवेकानंद के उपरोक्त उद्धरण से यह स्पष्ट है कि सफलता प्राप्त करने के लिए हमें तब तक लगातार काम करना होगा जब तक कि हमारा लक्ष्य प्राप्त न हो जाए, इसका मतलब है कि हमें सफलता पाने के लिए अपने काम पर ध्यान देना होगा। इस विचार में उठो जाग्रत का अर्थ है कि हमें उभरना होगा और इस बारे में सचेत रहना होगा कि हम क्या हासिल करना चाहते हैं और अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए होशपूर्वक और लगातार काम करते हैं। इस निरंतरता के संदर्भ में थॉमस एडिसन का एक प्रसिद्ध उद्धरण है –

"मैं असफल नहीं हुआ हूं। मैंने अभी-अभी 10,000 तरीके खोजे हैं जो काम नहीं करेंगे" (पटेल, 2015)

बिजली के बल्ब का आविष्कार करने वाले प्रसिद्ध वैज्ञानिक एडिसन दस हजार बार असफल हुए लेकिन आखिर में सफल हुए। अगर उसने प्रयास करना छोड़ दिया होता, तो वह कभी सफल नहीं हो सकता था। यह निरंतरता है जो स्वामी विवेकानंद के उद्धरण में परिलक्षित होती है। यदि हम सफल होना चाहते हैं तो हमें अपने लक्ष्य पर तब तक काम करना चाहिए जब तक वह प्राप्त न हो जाए; इसका मतलब है कि हम तब तक प्रयास करना बंद नहीं करते जब तक हम सफल नहीं हो जाते, यही सफलता की कुंजी है।।

क्लेमेंस (n.d.) के दृष्टिकोण में जब हम सफलता के बारे में सोच रहे होते हैं, तो हम केवल शक्ति, प्रतिष्ठा और समृद्धि के बारे में सोचते हैं; सफलता का यही एक चेहरा है जो आम लोग सोचते हैं। लेकिन सफलता के और भी कई पहलू हैं जिनमें ये भी शामिल हैं। कई बार हम सफलता की परिभाषा में और भी कई बातों की चर्चा करना भूल जाते हैं। क्लेमेंस के विचार में यदि हमने अपनी सफलता की परिभाषा नहीं बनाई है तो हमने बहुत समय बर्बाद किया है क्योंकि अगर हमने अपने लक्ष्य का बुनियादी ढांचा नहीं बनाया है तो हमें नहीं पता कि क्या करना है और क्या हासिल करना है। इसलिए, यह जानना आवश्यक है कि हम सफलता के बारे में क्या सोचते हैं; हमारी राय में, "सफलता क्या है?" जब हम जानते हैं कि हमारे लिए सफलता का क्या मतलब है, तभी हम उस सफलता को प्राप्त करने के लिए काम कर सकते हैं (क्लेमेंस, एन.डी.)।

अधिकांश लोग सोचते हैं कि केवल धन, शक्ति, प्रतिष्ठा और प्रसिद्धि अर्जित करना ही सफलता है। लेकिन अलग-अलग लोगों की राय का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि सफलता के कई पहलू हैं या आसान शब्दों में कहें तो सफलता कई प्रकार की होती है। सफलता के प्रकार कुछ हद तक लोगों की जरूरतों पर निर्भर करते हैं। यह कमोबेश मास्लो के आवश्यकता सिद्धांत से संबंधित है। मास्लो के सिद्धांत में, आवश्यकता का एक पदानुक्रम है जो इस प्रकार है (मंगल, 2006।) –

1. शारीरिक आवश्यकता (निम्नतम स्तर)
2. सुरक्षा की जरूरत
3. अपनेपन और प्यार की ज़रूरतें (सामाजिक ज़रूरतें)

4. सम्मान की जरूरत है
5. आत्म-बोध (उच्चतम स्तर)

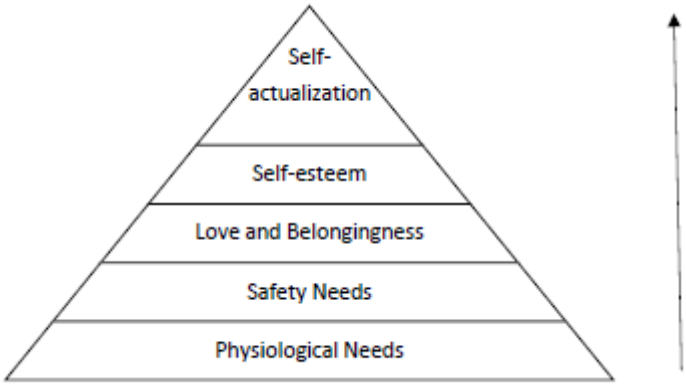

चित्र-1.1 मास्लो की आवश्यकताओं का पदानुक्रम

जरूरतों के इस पदानुक्रम में जो इंसान के लिए मकसद हैं; हम इसे सफलता के प्रकारों के संदर्भ में देख सकते हैं। उपरोक्त सिद्धांत के अनुसार जब किसी व्यक्ति की शारीरिक (बुनियादी) जरूरतें पूरी हो जाती हैं, तभी वह दूसरे स्तर के लिए प्रयास करता है। एक आवश्यकता जो संतुष्ट हो गई है वह अब आवश्यकता नहीं है। जब कोई व्यक्ति एक आवश्यकता से संतुष्ट होता है तो वह दूसरे स्तर के लिए प्रयास करेगा। इसी तरह सफलता के प्रकार प्राप्त किए जा सकते हैं। जब किसी व्यक्ति का स्वास्थ्य अच्छा होता है तो वह अन्य प्रकार की सफलता प्राप्त करने के लिए एक प्रेरक शक्ति के रूप में कार्य करता है। जैसे, अच्छे स्वास्थ्य वाला व्यक्ति अपनी नौकरी या व्यवसाय या जो कुछ भी कर रहा है उस पर बेहतर कर सकता है। सफलता के प्रकार एक दूसरे से जुड़े हुए हैं।

1.2 सफलता के प्रकार

एक कनाडाई लेखक और एक प्रेरक वक्ता रॉबिन शर्मा को सफलता के आठ तत्व मिले या हम कह सकते हैं कि सफलता के प्रकार (शर्मा, एन.डी.)।

1. आंतरिक सफलता
2. शारीरिक सफलता
3. पारिवारिक सफलता

4. करियर की सफलता
5. आर्थिक सफलता
6. सामुदायिक सफलता
7. साहसिक सफलता
8. प्रभाव सफलता

आइए हम सफलता के प्रकारों या रूपों पर चर्चा करें-

1.2.1 स्वास्थ्य सफलता

एक अंग्रेजी कहावत के अनुसार, "स्वस्थ शरीर में स्वस्थ दिमाग रहता है" (त्यागी, 2019)। इसका अर्थ है कि यदि कोई व्यक्ति शारीरिक रूप से स्वस्थ और स्वस्थ है तो उसे इस प्रकार की सफलता प्राप्त होती है और तभी वह ठीक से कार्य कर सकता है। स्वास्थ्य के बारे में राल्फ वाल्डो इमर्सन का एक और प्रसिद्ध उद्धरण है, "पहला धन स्वास्थ्य है" (अर्चना, एन.डी.)।

सभी सफल लोगों का स्वास्थ्य अच्छा होता है और यही सफलता की कुंजी है। यहां हम कुछ उदाहरणों पर चर्चा करते हैं, जैसे बाबा रामदेव जिन्होंने भारत के साथ-साथ दुनिया में योग, प्राणायाम और प्राकृतिक चिकित्सा को फिर से पेश किया। वह एक सफल व्यक्ति हैं और उन्होंने अपनी यात्रा जमीनी स्तर से शुरू की है। वह पहले स्वास्थ्य पर ध्यान केंद्रित करते हैं और उनका उद्देश्य योग, प्राणायाम और प्राकृतिक चिकित्सा का अभ्यास करके अन्य लोगों को स्वस्थ रहने और सभी प्रकार की बीमारियों से छुटकारा पाने में मदद करना है।

बॉलीवुड अभिनेता और निर्माता जॉन अब्राहम बताते हैं कि, "मेरा शरीर मेरा धर्म है" और यह भी कहा, "मैं सिक्स-पैक के साथ जीना चाहता हूं और सिक्स-पैक के साथ मरना चाहता हूं।" (इंडियावेस्ट, 2012)

उपरोक्त दो कथनों से यह स्पष्ट होता है कि शारीरिक फिटनेस और स्वास्थ्य उनकी प्राथमिकता पर है। वह एक सफल अभिनेता और निर्माता भी हैं, यहां तक कि बॉलीवुड में उनका कोई गॉडफादर नहीं है। उन्हें अपने प्रयासों से ही सफलता मिली है। उन्होंने अपनी यात्रा की शुरुआत भी बहुत ही बुनियादी स्तर से की थी। उन्होंने अपनी फिटनेस और सेहत पर ध्यान देकर ग्लैमर की दुनिया में सफलता हासिल की।

एक अत्यधिक सफल व्यक्ति का एक और उदाहरण भारत के वर्तमान प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी हैं, जो योग और प्राणायाम करके अपने स्वास्थ्य पर भी ध्यान केंद्रित करते हैं। अपनी फिटनेस के कारण, वह दिन में लगभग अठारह घंटे से अधिक काम करते हैं। उन्होंने विभिन्न देशों की यात्रा की और एक सामान्य व्यक्ति की तुलना में अधिक काम कर रहे हैं। वह एक सफल और बहुत लोकप्रिय प्रधान मंत्री हैं जिन्होंने खुद को नीचे के स्तर से ऊपर उठाया है।

1.2.2 पारिवारिक सफलता

यदि कोई व्यक्ति अपने परिवार से खुश है तो वह अपनी नौकरी या व्यवसाय जैसे अन्य क्षेत्रों में बेहतर कर सकता है (शर्मा, एन.डी.)। यदि उसका अपने परिवार के सदस्यों के साथ अच्छा, सहायक और स्वस्थ संबंध है तो वह जीवन के अन्य दृष्टिकोणों जैसे करियर, सामाजिक स्थिति आदि की ओर देख सकता है। सफल होने के लिए जीवन साथी की भूमिका भी बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि जीवन साथी ही जीवन साथी है। वह व्यक्ति जिसके साथ कोई अपने जीवन की हर बात साझा कर सकता है और चर्चा कर सकता है, और वह जीवन में किसी के लक्ष्य को प्राप्त करने में मदद कर सकता है। यह परिवार के सभी सदस्यों पर भी लागू होता है, अर्थात यदि किसी व्यक्ति के पास एक सहायक परिवार है तो वह एक गैर-सहायक परिवार के साथ जितना प्राप्त कर सकता है, उससे अधिक प्राप्त कर सकता है। इसलिए, पारिवारिक सफलता प्राप्त करना एक उपलब्धि है।

1.2.3 शैक्षिक सफलता

जब किसी व्यक्ति ने अकादमिक क्षेत्र में वह हासिल कर लिया है जो वह चाहता है या अपने अकादमिक क्षेत्र में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया है तो इसे अकादमिक सफलता कहा जाता है। यदि किसी व्यक्ति ने अपनी पसंद और रुचि के विषयों का अध्ययन किया है, तो वह उन विषयों के बजाय उन विषयों में बेहतर कर सकता है जो उस पर थोपे जाते हैं। यदि किसी व्यक्ति ने अपनी पसंद के पाठ्यक्रम को अपनाया है, तो वह उन पाठ्यक्रमों की तुलना में बेहतर कर सकता है जो उस पर जबरदस्ती थोपे जाते हैं। भारतीय सन्दर्भ में कई माता-पिता अपने बच्चों पर अपनी मर्जी हावी कर रहे हैं और जबरदस्ती कर रहे हैं। कई परिवारों में देखा गया है कि माता-पिता ने अपने बच्चों पर जबरदस्ती वे विषय थोप दिए जिनमें उन्हें अपने छात्र जीवन में रुचि थी लेकिन कुछ कारणों से उन्होंने उन विषयों को आगे नहीं बढ़ाया। अक्सर माता-पिता अपने बच्चों के लिए वर्तमान सामाजिक प्रवृत्ति या बाजार की मांग के आधार पर अपने बच्चों की रुचि के बावजूद विषयों का फैसला करते हैं। यही बात करियर के पहलुओं में भी देखी जाती है। आजकल हमारे देश में माता-पिता की सोच बदल रही है और वे अब अपने बच्चों की रुचि के विषयों, पाठ्यक्रमों और व्यवसायों को पसंद करते हैं। इसलिए, यदि कोई व्यक्ति अपनी पसंद के विषयों और पाठ्यक्रमों का अध्ययन करता है, तो वह निश्चित रूप से उत्कृष्ट होगा और अपने शिक्षाविदों में अच्छे अंक, ग्रेड प्राप्त करेगा और आंतरिक संतुष्टि प्राप्त करेगा, जिसे अकादमिक सफलता कहा जाता है।

1.2.4.करियर की सफलता

करियर की सफलता के लिए खुद की क्षमता, रुचि और क्षमता की पहचान करना बहुत महत्वपूर्ण है। यदि कोई व्यक्ति उस क्षेत्र में अपना करियर बनाता है जिसमें उसकी रुचि है और करने की क्षमता है, तो वह निश्चित रूप से उसमें सफल होता है। यदि कोई व्यक्ति अपनी पसंद की नौकरी या व्यवसाय करता है, तो वह निश्चित रूप से अपने करियर के शीर्ष पर पहुंचता है। अपनी पसंद का काम करने से उसे काम में मजा आता है और नौकरी-संतुष्टि और खुशी मिलती है। इसलिए, उसमें अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए हमारे हित का कार्य करना आवश्यक है। इसे करियर की सफलता कहा जाता है।

1.2.5 वित्तीय सफलता

जैसा कि नाम से पता चलता है कि यह धन से संबंधित है। कुछ लोग दूसरों की तुलना में बहुत अधिक धन-उन्मुख होते हैं। इस प्रकार के व्यक्ति को अपने दम पर पैसा कमाने का एक तरीका मिल जाता है। जीवन में पैसा ही सब कुछ नहीं है, लेकिन यह मनुष्य के अस्तित्व में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पैसा जीवन को आसान और बेहतर बनाता है। इसके द्वारा वह सभी भौतिकवादी चीजें खरीद सकता है जो वह चाहता है जैसे एक बड़ा घर, उसकी सपनों की कार, दुनिया की यात्रा, आदि (शर्मा, एन डी)। इच्छाओं का कोई अंत नहीं है लेकिन पैसे की मदद से कोई भी भौतिकवादी चीजें खरीद सकता है जो उसे आनंद की भावना देती हैं। तो, पर्याप्त मात्रा में धन होना वित्तीय सफलता है।

1.2.6 सामाजिक सफलता

लोगों के साथ बातचीत करना और उनमें लोकप्रिय होने की इच्छा एक मानवीय स्वभाव है। जब एक बच्चा स्कूल में पढ़ता है तो वह अधिक से अधिक दोस्त बनाना चाहता है और साथ ही सहपाठियों और शिक्षकों के बीच लोकप्रिय होना चाहता है। यह प्यार और अपनेपन की मनोवैज्ञानिक जरूरत है। हर इंसान की इस जरूरत की ख्वाहिश होती है लेकिन उनमें से कुछ ही इसमें सफल होते हैं। एक व्यक्ति जो कुछ भी कर रहा है वह लोगों के बीच लोकप्रिय होना चाहता है। एक व्यक्ति को जितने अधिक लोग जानते हैं और पसंद करते हैं, उतनी ही अधिक सामाजिक सफलता उसे प्राप्त होती है। सामाजिक सफलता का तरीका अलग हो सकता है लेकिन इसका उद्देश्य लोगों के बीच लोकप्रिय होना है। इसे सामाजिक सफलता कहते हैं।

1.2.7 प्रभाव सफलता

ज्यादातर लोग अपनी सफलता के बारे में सोच रहे हैं लेकिन उनमें से कुछ ही सोचते हैं कि उन्होंने दुनिया को क्या योगदान दिया है क्योंकि हम दुनिया को कुछ देने के लिए पैदा हुए हैं। अगर हमने दुनिया को कुछ नहीं दिया है तो यह हमारे जीवन का अपव्यय है। हमें दुनिया के लिए जो अद्वितीय या रचनात्मक है, उसमें योगदान देना है, तभी हमारा जीवन सफल होता है। हमें केवल आत्मकेंद्रित नहीं होना चाहिए क्योंकि यदि हम सफल लोगों के बारे में पढ़ते हैं, तो उनमें अन्य लोगों को सफल होने के लिए प्रेरित करने का गुण होता है। यदि हमारे पास जो ज्ञान या कौशल है, वह दुनिया के लिए फायदेमंद है, तभी

हमारे जीवन को वास्तविक अर्थों में सफल कहा जाता है। यह भी सफलता का हिस्सा है। जब हम सफल और प्रसिद्ध लोगों के जीवन को देखते हैं, तो हम पाते हैं कि उन सभी ने दुनिया के लिए जितना उन्होंने अपने लिए किया है, उससे कहीं अधिक योगदान दिया है। तो, हम कह सकते हैं कि यह सफल होने का एक हिस्सा या तरीका है (शर्मा, एन.डी.)।

1.2.8 सफलता का दार्शनिक पहलू

इस प्रकार की सफलता सभी सफलताओं के पदानुक्रम के शीर्ष पर आती है क्योंकि यह मानव मन और आत्मा से संबंधित है। इसमें उच्च स्वाभिमान, सकारात्मक सोच, आंतरिक शांति और मजबूत आध्यात्मिक विश्वास शामिल हैं। यह कुछ हद तक मास्लो के पदानुक्रम (आवश्यकता सिद्धांत) के आत्म-साक्षात्कार की संभावना है। बहुत कम लोग ही इस स्तर की सफलता प्राप्त करते हैं क्योंकि सभी प्रकार की भावनाओं और स्वयं की प्रवृत्ति को नियंत्रित करना आसान नहीं होता है। जिस व्यक्ति में ये सभी सकारात्मक सोच, सुख, आत्मसंतुष्टि, उच्च स्वाभिमान, आंतरिक शांति और मजबूत आध्यात्मिक संबंध हैं, वह दुर्लभ है, लेकिन जिसने इन सभी गुणों को प्राप्त कर लिया है, उसे सफलता के दार्शनिक पहलू के रूप में संदर्भित किया जा सकता है। इन सभी गुणों का होना कठिन है लेकिन असंभव नहीं है, इसके लिए दृढ़ता, धैर्य, एकाग्रता और आत्म-संयम की आवश्यकता है। अगर किसी व्यक्ति को अपने काम में संतुष्टि और खुशी मिलती है, तो वह हर चीज के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करता है और जब उसका दृष्टिकोण सकारात्मक होता है, तो वह वह कुछ भी हासिल कर सकता है जो वह चाहता है।

जब कोई बिना किसी वापसी की उम्मीद के, सिर्फ खुशी के लिए, शांति और आध्यात्मिकता की मजबूत भावना के साथ अपना काम करना शुरू कर देता है, तो उसे इस तरह की सफलता मिलेगी।

1.3 समाज में महिलाओं की भूमिका

हमारा समाज पुरुषों और महिलाओं से बना है और यह अपने बेहतर आचरण के लिए कुछ मानदंड और रुझान विकसित करता है। ये मानदंड और रुझान समाज के सदस्यों द्वारा इस धारणा के साथ

बनाए जाते हैं कि बहुमत ने इन मानदंडों को मंजूरी दे दी है। लेकिन अगर हम उनमें से कुछ की बारीकी से जांच करें, तो हमें लगता है कि ये रुझान हमारे समाज के केवल पचास प्रतिशत सदस्यों द्वारा उनकी बेहतरी और सुविधा के लिए बनाए या स्वीकृत किए गए हैं। अब शोधकर्ता इन प्रवृत्तियों के कुछ उदाहरण लेना चाहेंगे। यह माना जाता है कि खाना बनाना केवल महिलाओं का कर्तव्य है चाहे वह बेटी हो, माँ हो, बहन हो या पत्नी हो। जब भी परिवार का कोई सदस्य घर आता है और खाना चाहता है, तो वह हमेशा उनकी उपलब्धता के अनुसार उनमें से किसी एक को बुलाता है। वे कभी भी अपने पिता, भाई या परिवार के किसी पुरुष सदस्य को नहीं बुलाते। ऐसा तब भी होता है जब वे हमेशा घर में रहती हैं और महिलाएं ऑफिस, कॉलेज या कहीं और से बाहर से आई हैं। अब हम इसका एक और उदाहरण लेना चाहेंगे, मान लीजिए कि एक परिवार में पति और पत्नी दोनों अपने बच्चों के साथ रह रहे हैं, यह माना जाता है कि बच्चे की देखभाल करना पत्नी का कर्तव्य है, चाहे वह काम कर रही हो या नहीं महिला या गृहिणी। ऐसी प्रवृत्तियों के ये तो चंद उदाहरण हैं, लेकिन हमारे समाज में ऐसे कई उदाहरण हैं।

अगर हम सवाल करें कि ये कल्पित मानदंड किसके द्वारा बनाए गए हैं? निश्चय ही इसका उत्तर हमारा समाज होगा। अब हम कह रहे हैं कि हमारा समाज बदल रहा है, और यह स्वीकार करता है कि महिलाओं को भी व्यवसायों में भाग लेना चाहिए, और केवल यह कहकर हमें लगता है कि अब हम आधुनिक होने जा रहे हैं। लेकिन वही समाज यह नहीं मानने वाला है कि वह महिलाओं को उपर्युक्त घरेलू कर्तव्यों से मुक्ति दे। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि आधुनिक युग में महिलाओं को दोहरी भूमिका का बोझ मिल गया है, एक घरेलू कर्तव्य है और दूसरा व्यावसायिक कर्तव्य है। महिलाएं भी अपने करियर के क्षेत्र में सफल होना चाहती हैं। यदि कोई महिला अपने करियर में सफलता प्राप्त करना चाहती है, तो जाहिर है कि उसे दोहरी भूमिका निभानी होगी। माता-पिता को अपने बच्चों से ज्यादा उम्मीदें होती हैं और अगर लड़की-बच्चा है तो उम्मीद दोहरे प्रकार की होती है। एक यह है कि एक लड़की को अच्छी तरह से पढ़ना चाहिए और अपनी पढ़ाई में शीर्ष स्थान प्राप्त करना चाहिए और दूसरा घरेलू कर्तव्यों और उसमें विशेषज्ञता हासिल करना है। जब उसकी शादी हो जाती है और वह काम भी कर रही होती है, तो पति, ससुराल वालों और बच्चों की उम्मीदें भी दोहरी होती हैं, कि वह ऑफिस के साथ-साथ घर का काम भी करेगी। ऐसे में सवाल उठता है कि महिलाओं को हमेशा दोहरी भूमिका क्यों निभानी पड़ती है?

कोई आश्चर्य नहीं कि इसे कई भूमिकाएँ कहा जाता है, जैसे घर पर उसे एक रसोइया, धोबी, माली, गृहस्वामी, बच्चों की देखभाल करने वाली आदि की भूमिका निभानी होती है और वह कार्यालय में जो काम करती है।

इसके द्वारा शोधकर्ता केवल एक कामकाजी महिला की भावनाओं, सपनों और समस्याओं पर ध्यान आकर्षित करना चाहता है। यदि कोई महिला अपने करियर में सफल होना चाहती है, तो उसे गृहिणी की दोहरी भूमिका और अपने व्यवसाय की आधिकारिक भूमिका निभानी होगी। यहां, शोधकर्ता एक महिला की सफलता पर दोहरी भूमिका के प्रभाव की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहता है। दोहरी भूमिका का यह बोझ उसके जीवन के कई पहलुओं को प्रभावित करता है। दोहरा काम करने से महिला को थकान, मानसिक तनाव, शारीरिक परेशानी, दोस्तों के लिए कम समय, मनोरंजन के लिए कम समय, खुद के लिए भी कम समय का सामना करना पड़ता है। कभी-कभी वह जितना सहन कर सकती है, उससे कहीं अधिक दबाव होता है। वह ऑफिस में अपनी ड्यूटी करने के अलावा घर का सारा काम करती है। इन कार्यों को एक साथ प्रबंधित करने से कभी-कभी वह अपने आहार, स्वास्थ्य आदि के लिए खुद पर ध्यान नहीं देती है। यह उसके लिए मानसिक तनाव और शारीरिक समस्याओं का कारण बनता है। एक महिला के लिए हमेशा दोहरी भूमिका निभाना एक कठिन काम होता है, लेकिन महिलाएं अपने दोहरे कर्तव्यों के बीच तालमेल बिठा लेती हैं।

1.4 आवश्यकता और औचित्य

दुनिया का हर व्यक्ति सफल होना चाहता है। जरूरी नहीं है कि सिर्फ करियर बनाने से ही सफलता मिले। सफलता की विभिन्न प्रकार की व्याख्याएं हैं। जैसे यह भी संभव है कि, एक लड़की का लक्ष्य एक अच्छी गृहिणी/गृहिणी बनना होता है और यदि वह इसे प्राप्त कर लेती है, तो वह सोचती है कि वह सफल है। यदि एक व्यक्ति जिसने वह करियर हासिल कर लिया है जिसे वह हासिल करना चाहता था, वह सोचेगा कि वह सफल है। अगर एक माँ जिसके बच्चे अच्छी तरह से बसे हुए हैं, वह सोच सकती है कि वह सफल है। यदि कोई व्यक्ति अपने प्रेमी से शादी करना चाहता है और यदि उसने किया है, तो वह सोचता है कि यह उसके लिए एक बड़ी उपलब्धि है, और वह सफल हुई।

उपरोक्त उदाहरण प्रकृति में एक दूसरे से इतने भिन्न हैं। उपरोक्त दो पहलुओं अर्थात समाज में महिलाओं की भूमिका और सफलता के पहलुओं से, अन्वेषक यह जानना चाहता है कि महिलाएं सफलता के बारे में क्या सोचती हैं और वे इसे अपने लिए कैसे देखती हैं। अन्वेषक भी शिक्षित महिलाओं की सफलता की घटनाओं को जानना चाहता है। और उनकी आत्म धारणा। इस अध्ययन की प्रासंगिकता इसलिए है क्योंकि शोधकर्ता कुछ ऐसी महिलाओं का अध्ययन करना चाहता है जो यह सोचती हैं कि वे सफल हैं और यह जानने में रुचि रखती हैं कि वे किस तरह से सफल हुईं, उनकी सफलता के पीछे क्या कारण है और सफल होने के लिए उनके द्वारा अपनाए गए मार्ग की विशिष्टता क्या है।

1.5 अध्ययन का महत्व

सफलता एक व्यापक शब्द है लेकिन यहां शोधकर्ता शिक्षित महिलाओं की सफलता और आत्मबोध के विचार को जानना चाहता है। सफलता का संबंध शिक्षा से है या हम कह सकते हैं कि कुछ अपवादों को छोड़ दें तो शिक्षा की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। सफलता और आत्म-बोध के बारे में अलग-अलग संदर्भों में अलग-अलग शोध किए गए हैं। लेकिन शोधकर्ता को शिक्षित महिलाओं की सफलता और आत्म-धारणा के विचार पर कोई गुणात्मक ध्यान नहीं मिला। यहां, शोधकर्ता शिक्षित महिलाओं की सफलता और आत्म-बोध की घटनाओं को प्रकट करना चाहता है ताकि लोगों को सफलता की घटना के बारे में पता चले और शिक्षित महिलाएं अपनी सफलता को कैसे समझें। अतः यह अध्ययन बहुत प्रासंगिक है।

1.6 समस्या का विवरण

शिक्षित महिलाओं पर एक अभूतपूर्व अध्ययन : उनकी सफलता और आत्म-धारणा के सम्बन्ध में

1.7 प्रमुख शर्तों की परिभाषा

1.7.1 सफलता

ऑक्सफोर्ड लिविंग डिक्शनरी के अनुसार, सफलता का अर्थ किसी उद्देश्य या उद्देश्य की पूर्ति ("सफलता", 2019) है। यह एक आयामी नहीं है और एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में भी भिन्न होता है।

1.7.2 आत्म-धारणा

यह मानव व्यवहार का एक निर्धारक है कि, एक व्यक्ति अपने बारे में क्या सोचता और मानता है।

1.7.3 शिक्षित महिलाएं

जिन महिलाओं की न्यूनतम योग्यता स्नातक है, उन्हें इस अध्ययन में शिक्षित महिला माना गया है।

1.8 शोध प्रश्न

1. शिक्षित महिलाओं की सफलता का क्या विचार है?
2. शिक्षित महिलाओं के लिए सफलता क्या है?
3. क्या शिक्षित महिलाएं सोचती हैं कि वे सफल हैं?
4. शिक्षित महिलाएं सफल होने का अनुभव कैसे करती हैं?
5. शिक्षित महिलाएं अपनी सफलता को कैसे देखती हैं?
6. शिक्षित महिलाओं की सफलता को प्रभावित करने वाले कारक कौन से हैं?
7. सफल होने में शिक्षा की क्या भूमिका है?
8. शिक्षित महिलाओं की 'आत्म-धारणा' का क्या विचार है?
9. शिक्षित महिलाओं की सफलता को प्रभावित करने वाले सांस्कृतिक और सामाजिक कारक कौन से हैं?

10. सफल होने में परिवार की क्या भूमिका है?

11. शिक्षित महिलाओं की सफलता को प्रभावित करने वाले पारिवारिक कारक कौन से हैं?

1.9 गुणात्मक अनुसंधान

गुणात्मक अनुसंधान एक विशिष्ट घटना, व्यक्ति, घटना या संगठन की गहरी समझ हासिल करने के उद्देश्य से अनुसंधान का एक दृष्टिकोण है। इसे चरों के हेरफेर की भी आवश्यकता नहीं है, चर की परिचालन परिभाषाओं की भी आवश्यकता नहीं है। गुणात्मक अनुसंधान प्राथमिक अनुभव, ईमानदार रिपोर्टिंग और प्रतिभागियों के साथ बातचीत के वास्तविक पाठ्य विवरण (पीपीए 696 अनुसंधान विधियों, एनडी) के माध्यम से गहरी समझ पर केंद्रित है। कभी-कभी गुणात्मक अनुसंधान उन लोगों के साथ भ्रमित होता है जो गैर-मात्रात्मक हैं, लेकिन यह घटनात्मक प्रतिमान पर आधारित है और इसमें विभिन्न प्रकार की व्याख्यात्मक शोध पद्धतियों का उपयोग किया जाता है (सर्वश्रेष्ठ, 2012)। गुणात्मक शोध मानववादी शोध करने की एक वैज्ञानिक विधि है क्योंकि यह उन चीजों को बेहतर ढंग से समझता है जिन्हें मात्रात्मक तरीकों से नहीं मापा जा सकता है। यह किसी भी अन्य दृष्टिकोण की तुलना में अधिक लचीला है। यह उन प्रश्नों के उत्तर से संबंधित है जो मात्रात्मक दृष्टिकोण से नहीं दिए जा सकते थे। यह विषय के गहन अध्ययन पर भी ध्यान केंद्रित करता है। यह प्रकृति में अधिक व्यक्तिपरक और खोजपूर्ण है।

1.9.1 गुणात्मक शोध क्यों?

मानव व्यवहार की खोज के लिए उपयोग की जाने वाली विधियाँ अधिकतर मात्रात्मक होती हैं, लेकिन मानविकी में, यदि हम गुणात्मक विधियों का उपयोग करते हैं तो यह मानव व्यवहार को समझने के लिए बेहतर होगा। मानव की भावनाओं, अनुभव और सोच आदि को मापने के लिए मात्रात्मक दृष्टिकोण में बहुत उपयुक्त उपकरण और विधियां नहीं हैं। इस प्रकार की विशेषताओं का पता लगाने और व्याख्या करने के लिए गुणात्मक दृष्टिकोण का उपयोग करना बेहतर है। इसलिए, मानव व्यवहार की जांच करने के लिए एक उपयुक्त विधि का चयन करना महत्वपूर्ण है क्योंकि मनुष्य भौतिक संस्था नहीं हैं और इसलिए इसे मात्रात्मक रूप में ठीक से नहीं मापा जा सकता है। इसी समय, कई कारक और व्यक्तिगत अंतर हैं जो मानव व्यवहार को प्रभावित करते हैं। ऐसे कोई दो व्यक्ति नहीं हैं जिनकी एक ही घटना के बारे

में समान सोच या अनुभव हो। इसलिए, व्यक्तित्व को महत्व देना आवश्यक है जो तभी संभव है जब हम मानवतावादी शोध के लिए गुणात्मक दृष्टिकोण का उपयोग करें।

"…….. जब व्यवहारिक सामाजिक विज्ञान पर प्राकृतिक विज्ञान पद्धति को लागू किया गया है, तो इसने प्रयोग और मात्रात्मक विश्लेषण की प्रक्रियाओं को बरकरार रखा है। इसके विपरीत, मानव विज्ञान के लिए पसंदीदा विधि में विवरण, व्याख्या और आत्म-चिंतनशील या महत्वपूर्ण विश्लेषण शामिल है।" (मानेन, 2016, पृष्ठ 4)।

प्राकृतिक विज्ञान अनुसंधान और व्यवहार विज्ञान अनुसंधान में मूलभूत अंतर प्रयुक्त वस्तु के बारे में है। व्यवहार विज्ञान अनुसंधान में उपयोग की जाने वाली वस्तुएँ मनुष्य हैं जो सोच सकते हैं, भावनाएँ रख सकते हैं और तर्क का अनुभव और अभ्यास कर सकते हैं। ये विशेषताएं प्राकृतिक विज्ञान अनुसंधान की वस्तुओं में नहीं पाई जाती हैं। मात्रात्मक और गुणात्मक अनुसंधान के दो दृष्टिकोण हैं और मानव विज्ञान अनुसंधान के लिए गुणात्मक दृष्टिकोण अधिक उपयुक्त है क्योंकि इसका उद्देश्य अनुभव के प्राथमिक स्रोत और वास्तविक बातचीत की रिपोर्टिंग के माध्यम से गहन अध्ययन करना है। मानविकी और शैक्षिक अनुसंधान में, हम ऐसे शोध कर सकते हैं जो व्यक्तित्व का पता लगाते हैं जो वैज्ञानिक तरीकों से संभव नहीं है। इसका मतलब यह नहीं है कि व्यवहार विज्ञान या मानविकी के तरीके अवैज्ञानिक हैं, लेकिन हम अनुभवों की गहन खोज के लिए वैज्ञानिक रूप से गुणात्मक विधियों का उपयोग करते हैं।

1.9.2 घटना संबंधी अनुसंधान

फेनोमेनोलॉजी का उपयोग एक विधि के रूप में किया जाता है जब कोई शोधकर्ता किसी घटना का वर्णन करना चाहता है। फेनोमेनोलॉजी एक घटना के सामान्य अर्थ और अवधारणा के बारे में कई व्यक्तियों के जीवित अनुभव का अध्ययन है। घटना विज्ञान के विशेषज्ञ एक घटना के बारे में अनुभवों के सार्वभौमिक सार पर ध्यान केंद्रित करते हैं (क्रेसवेल, 2013)। घटना विज्ञान की उत्पत्ति एक दर्शन के रूप में हुई और बाद में इसे दृष्टिकोण और पद्धति के रूप में इस्तेमाल किया गया। इसके पूर्वधारणा-रहित

दृष्टिकोण का अर्थ है कि अनुसंधानकर्ता को अन्वेषण प्रारम्भ करने से पूर्व सभी पूर्वाग्रहों से मुक्त होना चाहिए। विशिष्ट साक्षात्कारों या कभी-कभी कविताओं, टिप्पणियों और दस्तावेजों द्वारा एकत्र किए गए डेटा डेटा के स्रोत होते हैं। इसका व्यवस्थित प्रक्रियाओं द्वारा विश्लेषण किया जाता है और विवरण दो चीजों के बारे में हैं अर्थात व्यक्तियों ने 'क्या' अनुभव किया और उन्होंने इसका अनुभव कैसे किया (मौस्तकास 1994)। "सार" घटना विज्ञान का अंतिम पहलू है (क्रेसवेल, 2013)।

1.10 करियर के विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की स्थिति

करियर के विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी से न केवल उनके व्यक्तित्व और उनके परिवार की स्थिति में सुधार होता है बल्कि देश के सामाजिक और आर्थिक विकास में भी योगदान होता है। इस तथ्य के बावजूद, भारत में सफलता के विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं का योगदान अभी भी कम है। विकासशील देश से विकसित देश का दर्जा प्राप्त करने के लिए भारत को विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं के योगदान को उनके अनुपात के अनुसार सुधारना चाहिए। सफलता के कुछ क्षेत्र और इसमें महिलाओं की स्थिति इस प्रकार है-

1.10.1 इंजीनियरिंग में महिलाएं

यह पाया गया है कि 1980 के दशक से पहले इंजीनियरिंग में महिलाओं की भागीदारी लगभग न के बराबर थी। इस क्षेत्र में महिलाओं के नामांकन में वृद्धि का चलन पिछले 15 वर्षों से ही शुरू हुआ था। हालाँकि, महिला इंजीनियरों की संख्या बढ़ रही है, फिर भी उन्हें अपने करियर में कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है (पारिख और सुखात्मे, 2004)।

करियर के दो महत्वपूर्ण पहलू हैं पेशे में वृद्धि और करियर की समस्याएं। किसी संगठन में किसी व्यक्ति की स्थिति का महत्वपूर्ण संकेतक उस पर प्रबंधन की जिम्मेदारियों की सीमा है। महिला इंजीनियरों पर दो अध्ययनों को ध्यान में रखते हुए [पारिख और सुखात्मे 1992, 1994, 1997 और पारिख और सुखात्मे 2002] को आईआईटी बॉम्बे में लिया गया, और उन्होंने पाया कि 1975 और 1976 के स्नातकों में से केवल 20 प्रतिशत उच्च प्रबंधन से संबंधित थे। उच्च प्रबंधन में यह योगदान बाद के वर्षों

में घटकर 5 प्रतिशत रह गया। उन्होंने महिलाओं के लिए 'कांच की छत' के रूप में संदर्भित किया। अध्ययन में यह भी पाया गया है कि जो लोग 1975 और 1976 में उत्तीर्ण हुए, उन्हें 15 साल बाद भी कोई प्रबंधन जिम्मेदारी नहीं मिलती (पारिख और सुखात्मे, 2004)।

कई महिला इंजीनियर का कहना है कि प्रैक्टिकल ट्रेनिंग के लिए उन्हें अपनी पसंद का प्लेसमेंट नहीं मिल पाता है। उन्हें कैंपस के माध्यम से नौकरी पाने या कैंपस इंटरव्यू के लिए बुलाने में भी कठिनाई का सामना करना पड़ता है। ये कथन इस तथ्य से स्पष्ट हैं कि कुछ नए कॉलेजों में कोई कैंपस साक्षात्कार नहीं हैं (पारिख और सुखात्मे, 2004)।

यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि महिला इंजीनियरों के लिए करियर संबंधी समस्याएं उनकी छात्र उम्र से शुरू होती हैं। यहां तक कि महिला इंजीनियरों के लिए अपने पेशेवर करियर में पहली नौकरी पाना एक प्रमुख बाधा है (पारिख और सुखात्मे, 2004)।

1.10.2 विज्ञान में महिलाएं

दुनिया के अधिकांश हिस्सों में विज्ञान और इंजीनियरिंग में महिलाओं की भागीदारी बहुत कम है। भारत में, विज्ञान में उच्च शिक्षा में महिलाओं का कुल नामांकन केवल एक तिहाई और इंजीनियरिंग में केवल एक सातवां है। विज्ञान में भारतीयों पर अध्ययन 1970 के दशक से पहले नहीं हुआ है। रोशन बेगम और कमला बलरामनिन (1975) द्वारा भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र (BARC) में महिला वैज्ञानिकों पर एक सर्वेक्षण किया गया था। इस सर्वेक्षण में, वे पाते हैं कि पितृसत्तात्मक संस्कृति में समाजीकरण और चाइल्डकैअर सुविधाओं की कमी के कारण महिलाओं को पुरुषों की तुलना में अधिक मेहनत करनी पड़ती है। गुरनानी एंड शेठ (1984) के अनुसार, महिला वैज्ञानिकों ने महसूस किया कि पुरुष सहकर्मी और वरिष्ठ महिला पेशेवर रूप से महिलाओं को स्वीकार नहीं करते हैं। चक्रवर्ती (1986) ने बताया कि बहुत कम महिला वैज्ञानिकों ने केंद्रीय अनुसंधान संस्थानों में वरिष्ठ पदों पर कार्य किया है। उन्होंने महिला वैज्ञानिकों (गुप्ता और शर्मा, 2002) के लिए पूर्वाग्रहों, ढांचागत समर्थन की कमी और दोहरे बोझ की भूमिका पर भी जोर दिया।

"भारत में महिला अकादमिक वैज्ञानिक" अध्ययन का एक उद्देश्य विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विशिष्ट संस्थानों में महिला संकाय सदस्यों के अनुभवों का विश्लेषण करना था। अध्ययन के लिए चार उच्च शिक्षा संस्थानों का चयन किया गया-

1. भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी), दिल्ली,
2. भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी), खड़गपुर,
3. जादवपुर विश्वविद्यालय (जेयू) और
4. रुड़की विश्वविद्यालय (यूओआर), जिसे बाद में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) का दर्जा दिया गया।

आंकड़ों के विश्लेषण के बाद यह निष्कर्ष निकला कि महिला वैज्ञानिकों को तीन प्रमुख समस्याओं का सामना करना पड़ा।

1. काम के माहौल में पुरुषों का दबदबा।

लेखकों ने पाया कि उपरोक्त सभी चार चयनित संस्थानों में कुछ ऐसी शाखाएँ थीं, जिनमें कोई भी महिला संकाय सदस्य नहीं है। अधिकांश उत्तरदाताओं ने इस बात पर सहमति व्यक्त की कि महिलाओं को खुद को समान रूप से कुशल साबित करने के लिए पुरुषों की तुलना में अधिक मेहनत करनी पड़ती है।

2. अलगाव की भावना

अन्य वैज्ञानिकों के साथ संपर्क और नेटवर्किंग के लिए अनौपचारिक संचार आवश्यक है। लेखकों ने पाया कि महिलाओं के पास बहुत कम अनौपचारिक संचार होता है, जिसके परिणामस्वरूप महिलाएं अपने काम के माहौल में काफी अलग-थलग पड़ जाती हैं।

1. एक महिला और वैज्ञानिक होने के बीच संघर्ष का अनुभव।

इस समस्या के तहत महिलाओं को अपनी जेंडर भूमिकाओं और पेशेवर भूमिका के बीच एक दुविधा का सामना करना पड़ता है। एक प्रतिवादी ने कहा कि उनके पुरुष सहयोगियों की अपेक्षा है कि महिला वैज्ञानिकों को विनम्र होना चाहिए और जो कुछ भी वे कहते हैं, उससे सहमत होना चाहिए (गुप्ता और शर्मा, 2002)।

1.10.3 उद्यमिता में महिलाएं

विज्ञान और इंजीनियरिंग की तरह, उद्यमिता को भी भारत में महिलाओं का क्षेत्र नहीं माना जाता है। एक उद्यम को स्थापित करने और चलाने के लिए प्रेरणा, सामाजिक संपर्क, आर्थिक वातावरण के बारे में जागरूकता, जोखिम लेने की क्षमता और पूंजी की आवश्यकता होती है। भारत की पितृसत्तात्मक संस्कृति में, इन सभी क्षमताओं को महिलाओं की क्षमताओं के रूप में नहीं माना जाता है। पूनम सिन्हा (2003) ने अपने अध्ययन 'पूर्वोत्तर भारत में महिला उद्यमिता: प्रेरणा, सामाजिक समर्थन और बाधाएं' में निष्कर्ष निकाला कि हालांकि पूर्वोत्तर भारत की महिलाओं में उद्यम स्थापित करने और चलाने की बहुत संभावनाएं हैं लेकिन उन्हें कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कुछ समस्याएं पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए समान होती हैं लेकिन कुछ केवल महिलाओं के लिए विशिष्ट होती हैं। एक उद्यम की स्थापना के लिए कुछ प्रारंभिक मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। इसके लिए मार्गदर्शन के कई स्रोत हो सकते हैं, लेकिन अध्ययन से पता चलता है कि उद्यमिता के लिए मार्गदर्शन का स्रोत पूर्वोत्तर भारत के पुरुषों और महिलाओं के लिए काफी भिन्न है। एक उद्यम शुरू करने के लिए अधिकांश पुरुष या तो स्वयं निर्णय लेते हैं या अन्य उद्यमियों से मार्गदर्शन लेते हैं, जबकि दूसरी ओर, अधिकांश महिलाएं मार्गदर्शन के लिए अपने पति या परिवार के कुछ अन्य सदस्यों पर निर्भर करती हैं। मार्गदर्शन की यह निर्भरता महिलाओं की खोज करने की क्षमताओं को प्रतिबंधित करती है। अध्ययन से यह भी पता चलता है कि यद्यपि पुरुषों और महिलाओं दोनों को वित्त प्राप्त करने में समस्या का सामना करना पड़ता है लेकिन महिलाओं के मामले में यह अधिक गंभीर है। महिलाएं कर्ज के बदले जमानत नहीं दे पाती हैं क्योंकि ज्यादातर संपत्ति पुरुषों के हाथ में होती है। अध्ययन में दर्शाई गई एक और बड़ी समस्या यह है कि महिला उद्यमियों को दोहरा बोझ उठाना पड़ता है, एक उद्यम है और दूसरा परिवार है। हालांकि उन्होंने

कहा कि उन्हें अपने परिवार से पूरा सहयोग मिला, लेकिन उन्होंने अपने परिवार को प्राथमिकता के तौर पर लिया (सिन्हा, 2003)।

1.10.4 राजनीति में महिलाएं

कोई भी लोकतांत्रिक देश वास्तविक अर्थों में अपनी 'लोकतांत्रिक' स्थिति तभी प्राप्त कर सकता है जब देश की महिलाओं को पुरुषों की तुलना में राजनीति में कमोबेश समान भागीदारी प्राप्त हो। इस भागीदारी के तीन आयाम हैं पहला एक मतदाता के रूप में भागीदारी, दूसरा यह निर्णय लेने की स्वतंत्रता है कि किसे वोट देना है और तीसरा राजनीतिक प्रतिनिधि के रूप में भागीदारी है। पहले आयाम को ध्यान में रखते हुए, भारत का संविधान पुरुषों और महिलाओं दोनों को वोट डालने का समान अधिकार देता है। दूसरा आयाम महिलाओं के विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक, पारिवारिक, शिक्षा और आर्थिक कारकों पर निर्भर करता है। तीसरा आयाम सबसे महत्वपूर्ण है और भारत में लंबे समय से एक राजनीतिक प्रतिनिधि के रूप में महिलाओं की भागीदारी पर बहस का विषय रहा है। लोकसभा चुनाव 2019 में, भारत को पिछले आम चुनावों की तुलना में सबसे अधिक महिला सांसद मिलीं। इस चुनाव में निर्वाचित महिला सांसदों की संख्या 78 थी जो लोकसभा के कुल सांसदों का 14.6% है। आम चुनाव 2019 में महिला सांसदों का अनुपात 2014 के आम चुनाव ("चार्ट और नक्शे में 2019 का फैसला···", 2019) से 1.3% तक बढ़ गया है। हालांकि यह आंकड़ा काफी संतुष्टि देता है लेकिन अभी भी बांग्लादेश (21%), यूएसए (24%), यूनाइटेड किंगडम (32%), दक्षिण अफ्रीका (43%) और रवांडा (61%) जैसे देशों से बहुत पीछे है। सभा ने अब तक की सबसे अधिक महिला सांसदों का चुनाव किया" , 2019)।

'भारत में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी' के अध्ययन से पता चलता है कि राजनीतिक भागीदारी सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक और मनोवैज्ञानिक जैसे कई कारकों पर निर्भर करती है। मनोवैज्ञानिक कारक राजनीति के बारे में रुचि और चिंता का उल्लेख करते हैं। अध्ययन में यह भी पाया गया है कि आमतौर पर भारत में महिलाओं का राजनीति और सार्वजनिक मामलों के प्रति तटस्थ रवैया होता है। राजनीति और जनसभाओं में भाग लेने में उनकी रुचि कम होती है। भारत में, राजनीति अस्वस्थ प्रतिस्पर्धा, लालची संघर्ष और शारीरिक शक्ति के प्रदर्शन से संबंधित है। इस परिप्रेक्ष्य में महिलाओं का

मानना था कि राजनीति पुरुषों का खेल है। राजनीति में महिलाओं की भागीदारी को प्रभावित करने वाला एक अन्य कारक उनका सामाजिक वातावरण है, और भारतीय महिलाओं के जीवन पर परिवार का एक महत्वपूर्ण सामाजिक प्रभाव है। भारतीय महिलाओं की सामान्य पहचान उसके पिता, भाई या पति द्वारा निर्धारित की जाती है। इसलिए, उन्हें घर और परिवार में राजनीतिक प्रशिक्षण और समाजीकरण के लिए सीमित अवसर मिलते हैं। एक अन्य कारक जो भारत में महिलाओं की भागीदारी को प्रभावित करता है, वह है राजनीतिक परिवर्तन। यह परिवर्तन न केवल महिलाओं को वोट देने के लिए प्रभावित करता है बल्कि राजनीति में एक प्रतियोगी के रूप में महिलाओं की भागीदारी को भी प्रभावित करता है। देश का समग्र राजनीतिक वातावरण महिलाओं को राजनीति में भाग लेने के लिए हतोत्साहित करता है। भारतीय राजनीति में बहुत अधिक धन और बाहुबल का उपयोग होता है और महिलाओं में धन, बाहुबल और सार्वजनिक डोमेन को प्रभावित करने वाले ऐसे अन्य रूपों का उपयोग करने की अपेक्षाकृत कम क्षमता होती है। भारतीय राजनीति में अपराधीकरण भी महिलाओं को राजनीति में भाग लेने के लिए हतोत्साहित करता है (खन्ना, 2009)।

1.11 अपने क्षेत्र की कुछ असाधारण महिलाएं: हमारी आशा

ओमान की लेखिका जोखा अलार्थी ने अपने उपन्यास \ सेलेस्टियल बॉडीज के लिए वर्ष 2019 का मैन बुकर अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार जीता। जोखा अलार्थी ने यह प्रतिष्ठित पुरस्कार जीतकर साहित्य के क्षेत्र में इतिहास रच दिया, क्योंकि इतिहास में यह पहला मौका था जब किसी महिला को मूल रूप से अरबी में लिखे गए उपन्यास के लिए यह पुरस्कार मिला था। यह उपन्यास पहली बार 2010 में लेडीज ऑफ द मून के रूप में प्रकाशित हुआ था। निर्णायक मंडल की अध्यक्ष, बेट्टनी ह्यूजेस ने इस उपन्यास को "समान उपायों में दिल जीतने वाली पुस्तक" के रूप में बधाई दी। बेट्टनी ह्यूजेस ने कहा, वह उत्साहित हैं कि अरबी संस्कृति के लिए खिड़की खोल दी गई है। जोखा अलार्थी ने अपने अनुवादक मर्लिन बूथ के साथ पुरस्कार (लगभग $63000) साझा किया। प्रत्येक वर्ष यह पुरस्कार अंग्रेजी में अनुवादित और ब्रिटेन में प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ पुस्तक को दिया जाता है (इन ए फर्स्ट, अरबी उपन्यास ने अंतर्राष्ट्रीय बुकर, 2019 जीता; अरबी लेखिका को पहाड़ी बार मिला बुकर पुरस्कार, 2019)।

22 मई, 2019 को, फ्लाइट लेफ्टिनेंट भावना कंठ ने भारतीय वायु सेना के इतिहास में एक नया पृष्ठ जोड़ा, जब वह एक लड़ाकू जेट पर लड़ाकू मिशन शुरू करने के लिए अर्हता प्राप्त करने वाली IAF की पहली महिला फाइटर पायलट बनीं। फ्लाइट लेफ्टिनेंट भावना कंठ ने लड़ाकू मिशन को अंजाम देने के लिए ऑपरेशनल सिलेबस को सफलतापूर्वक पूरा किया। अधिकारियों ने कहा कि उसने मिग-21 पर अपना मिशन पूरा किया। यह भारतीय वायु सेना में महिलाओं के लिए लड़ाकू पायलट बनने का द्वार खोलता है (राचा इतिहास···, 2019)।

सफलता के आसमान पर एक और चमकता सितारा है अरुणिमा सिन्हा। वह राष्ट्रीय स्तर की वॉलीबॉल खिलाड़ी थीं। 12 अप्रैल 2011 को, वह नौकरी के लिए परीक्षा देने के लिए लखनऊ से दिल्ली जाने वाली ट्रेन में सवार हुई। कुछ लुटेरों ने उसे ट्रेन से बाहर धकेल दिया, परिणामस्वरूप, उसने अपना एक पैर खो दिया। हालाँकि उसे गंभीर चोटें आई थीं और उसने अपना पैर खो दिया था, लेकिन उसने अपनी आशा नहीं खोई। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली में अपने इलाज के दौरान उन्होंने माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने का फैसला किया। उनकी प्रेरणा क्रिकेटर युवराज सिंह (जिन्होंने कैंसर से सफलतापूर्वक लड़ाई लड़ी थी) थे। अरुणिमा ने कृत्रिम पैर के साथ माउंट एवरेस्ट पर चढ़ाई की, और माउंट एवरेस्ट और माउंट विंसन पर चढ़ने वाली पहली विकलांग महिला बनीं। ("अरुणिमा सिन्हा," 2019)।

एक नया इतिहास तब बना जब आईएनएसवी तारिणी की छह महिला क्रू ने ग्लोब की परिक्रमा का कार्य पूरा किया। यह दुनिया का भारत का पहला सभी महिला जलयात्रा अभियान है और उन्हें प्रतिष्ठित नारी शक्ति पुरस्कार 2017 [आईएनएसवी तारिणी टीम को नारी शक्ति पुरस्कार 2017, 2018] से सम्मानित किया गया।

1.12 आत्म-धारणा

अवधारणात्मक मनोविज्ञान ने कहा कि किसी भी क्षण किसी व्यक्ति का व्यवहार यह है कि वह अपने जीवन के हर पहलू में आत्म-अवधारणा के महत्व को कैसे समझता है और वह खुद को परिस्थितियों के विभिन्न पहलुओं में कैसे देखता है। यह मानव व्यवहार का एक बहुत ही महत्वपूर्ण

कारक है कि व्यक्ति अपने बारे में क्या विश्वास करता है यानी उनकी आत्म धारणा। यहाँ चर्चा में स्व-अवधारणा को आत्म-बोध के पर्यायवाची के रूप में लिया गया है।

1.12.1 स्वयं की अवधारणा

किसी व्यक्ति की आत्म-अवधारणा इस बात का परिणाम है कि वह खुद को एक निश्चित प्रकार के व्यक्ति के रूप में कैसे देखता है, कुछ विशेषताओं, दृष्टिकोण, आदतों, व्यवहार के पैटर्न, कुछ विश्वासों, मूल्यों, इच्छा रखने वाले, किस सामाजिक समूह से है वह / वह संबंधित है, समाज में उसकी सामाजिक स्थिति और भूमिका क्या है और अन्य लोगों की दृष्टि से उसकी पहचान एक व्यक्ति के रूप में कैसे की जाती है। ये सभी चीजें मिलकर एक व्यक्ति की आत्म-अवधारणा बनाती हैं। विभिन्न लेखकों ने समय की अवधि में आत्म-अवधारणा को परिभाषित और विस्तृत किया है। जे मौर (1950) ने तर्क दिया कि व्यक्तित्व सिद्धांत के क्षेत्र में आत्म-अवधारणा एक महत्वपूर्ण चरित्र है जो कि उसका संगठन है, जो व्यक्ति को "मैं" या "मैं" लगता है। कॉम्ब एंड सिनाग (1959) आत्म-अवधारणा की व्याख्या करता है कि कोई व्यक्ति अपने बारे में और अपने कुछ तरीकों और खुद को देखने के बारे में क्या मानता है (चेकर, 1990)। "आत्म-अवधारणा स्वयं के बारे में एक व्यक्ति का दृष्टिकोण है, जो स्वयं के द्वारा पूर्ण विवरण है जिसमें एक व्यक्ति किसी भी समय सक्षम है" (अंग्रेजी और अंग्रेजी, 1958, जैसा कि चेकर, 1990 में उद्धृत किया गया है)।

1.12.2 आत्म-अवधारणा के आयाम

आत्म-अवधारणा या व्यक्ति जो अपने बारे में सोचता है, उसके कम से कम चार आयाम हैं (चेकर, 1990)।

1. मूल आत्म-अवधारणा

इस आयाम को माना जाता है कि एक व्यक्ति अपनी क्षमताओं और उसकी स्थिति और दुनिया में उसकी भूमिका को कैसे मानता है। यह किसी व्यक्ति के दृष्टिकोण से संबंधित है कि वह किस प्रकार का व्यक्ति है। यह उसकी शारीरिक बनावट, शारीरिक आत्म और उसकी ड्रेसिंग शैली द्वारा नियंत्रित होता है।

2. स्वयं की क्षणिक धारणा

स्वयं की यह धारणा प्रकृति में क्षणभंगुर है जिसे एक व्यक्ति वर्तमान समय में बनाए रखता है। स्वयं की यह धारणा परिप्रेक्ष्य में कमी हो सकती है और कुछ हालिया अनुभव या पल के स्वभाव से प्रभावित हो सकती है।

3. सामाजिक स्व

यह स्वयं है क्योंकि व्यक्ति सोचता है कि दूसरे उसे कैसे देखते हैं। यद्यपि यह आवश्यक नहीं है कि यह स्वयं उसके बारे में लोगों की धारणा के अनुरूप है लेकिन यह किसी के व्यवहार के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

4. आदर्श स्व

आचरण के मानकों की स्थापना सांस्कृतिक प्रभावों के माध्यम से विकसित होती है। इस प्रकार, व्यक्ति एक अवधारणा विकसित करने की कोशिश कर रहा है कि उसे कैसा होना चाहिए। इस आत्म-चित्र के संपूर्ण योग को आदर्श स्व कहा जाता है। आत्म-अवधारणा के आयामों के पदानुक्रम में आदर्श आत्म शीर्ष स्तर पर आता है। यह स्वयं के अन्य आयामों का मूल्यांकन करने के लिए एक पैरामीटर प्रदान करता है (चेकर, 1990)।

1.12.3 आत्म-अवधान के परिमाण

हैरी एस. सुलिवन (1953) के अनुसार, आत्म-अवधारणा के विकास में सामाजिक संपर्क एक महत्वपूर्ण कारक है। आत्म-अवधारणा का विकास पारस्परिक संबंधों और महत्वपूर्ण अन्य लोगों के साथ सहानुभूतिपूर्ण पहचान के माध्यम से हुआ। जेम्स सॉरे (1956) का मानना था कि उच्च स्तर पर किसी की आत्म-अवधारणा के विकास में व्यक्तिगत मूल्यों, दृष्टिकोणों, आदर्शों की भागीदारी होती है। यह आत्म धारणा निर्धारित करती है कि कोई व्यक्ति अपने जीवन के अधिकांश भाग में क्या महसूस करता है, सोचता है और क्या करता है (चेकर, 1990)।

1.13 शोध क्रियाविधि

1.13.1 तरीके और प्रक्रिया

मैंने पाया कि घटनात्मक पद्धति (हेर्मेनेयुटिक फेनोनोमेनोलॉजी) शिक्षित महिलाओं की सफलता और आत्म-धारणा की घटना का अध्ययन करने के लिए उपयुक्त हैं क्योंकि इस पद्धति में प्रतिभागियों के जीवित अनुभवों का अध्ययन किया जायेगा। प्रतिभागियों द्वारा बोले गए विशेष शब्दों को डेटा के समृद्ध विवरण में शामिल किया जायेगा। कार्यप्रणाली ने अन्वेषक के सभी पूर्वाग्रहों और अनुमानों को बाहर करने की अनुमति दी (रोसेनफेल्ड, 2009)। इसलिए, घटना को परिभाषित करने के लिए प्रत्येक महिला के अनुभव का विश्लेषण करके उद्देश्य पूरा होगा। जीवित अनुभव ने प्रत्येक प्रतिभागी का व्यक्तिगत रूप से लिया और समग्र रूप से विश्लेषण किया जायेगा।

1.13.2 कार्यप्रणाली

इस शोध की यात्रा की शुरुआत उन महिलाओं से दिल से दिल की बात करने से होगी, जिन्हें लगता था कि वे सफल होंगे। यह विधि अभूतपूर्व होगी और प्रतिभागियों के वास्तविक अनुभवों को कलमबद्ध करने के लिए अध्ययन की आवश्यकता होगी। मैंने कई शिक्षित महिलाओं से बात की और सफलता पर चर्चा की हैं। उनमें से कुछ ने सोचा कि वे सफल हैं और कुछ नहीं। मैंने उन महिलाओं के साथ संबंध बनाना शुरू कर दिया हैं जो खुद को सफल मानती थीं। मैंने अन्य महिलाओं के साथ भी सफलता के बारे में बात की, जो पहले मुझे नहीं जानती थीं और वे उत्साहित हो गईं और मेरे द्वारा चुने गए विषय से प्रभावित हुईं। मैंने उनके साथ विभिन्न बैठकों के माध्यम से, कभी-कभी फोन पर भी अच्छे संबंध बनाए। फिर, मैंने उनमें से पाँच को चुना जो जीवन के पाँच अलग-अलग क्षेत्रों से थे। जिन महिलाओं को मैंने इस अध्ययन के लिए चुना हैं, उनकी सफलता पर चर्चा करते हुए उन्हें बहुत मज़ा आया। उनमें से एक ने मुझे बताया कि वह एक सेलिब्रिटी की तरह महसूस कर रही थी या जैसे उसने कुछ बहुत बड़ा हासिल किया हैं। महिलाओं ने अपनी सफलता के बारे में अपने वास्तविक अनुभव साझा किए क्योंकि उन्हें अपने जीवन के बारे में बात करते हुए वास्तव में खुशी महसूस हुई।

यहां, मैं प्रतिभागियों के सचेत अनुभव की संरचना का अध्ययन करना चाहता हूं। सजीव अनुभव का अर्थ उन अनुभवों से हैं जो प्रतिभागियों ने महसूस किया जैसे कि साक्षात्कार के समय हो रहा हैं, जिसका अर्थ हैं कि उन्होंने स्मृति लेन की यात्रा की। मैंने उन प्रतिभागियों के साथ भी सहानुभूति व्यक्त की जिन्होंने अपने वास्तविक अनुभव साझा किए। इस अध्ययन में, मैंने अनुभवों की सचेतन संरचना का अध्ययन किया हैं। प्रतिभागियों द्वारा साझा किए गए अनुभव उनकी चेतना में थे। उन्हें घटना के समय के रूप में सचेत रहने की सुविधा दी गई थी। किसी को एक समय में एक बात के बारे में जागरूक करना आसान नहीं हैं, लेकिन मैंने उनके विशद अनुभव को सचेत रूप से प्राप्त करने के लिए प्रश्नों को यथासंभव घटनात्मक बनाने की कोशिश की हैं। प्रतिभागियों को अध्ययन की जाने वाली घटना के बारे में अपने विचार बनाने के लिए जागरूक किया गया। सफलता से संबंधित भावनाओं को साझा करते हुए महिलाएं उस घटना के बारे में जागरूक थीं जो वे अपनी सफलता की कहानी के रूप में साझा कर रही थीं। शोध की प्रक्रिया में मैंने उनके द्वारा साझा की जाने वाली प्रत्येक घटना के बारे में उन्हें जागरूक करने का प्रयास किया हैं।

गुणात्मक शोध के लिए डेटा निर्माण के लिए एक बहुत ही सामान्य उपकरण साक्षात्कार हैं जिसका उपयोग प्रतिभागियों के गहन अनुभवों को घटना को समझने के लिए किया जायेगा। प्रतिभागियों से प्रतिक्रियाएँ प्राप्त करने के लिए यहाँ एक स्व-निर्मित साक्षात्कार-निर्देशिका का उपयोग किया जायेगा। साक्षात्कार-निर्देशिका के प्रश्न शोध प्रश्नों पर आधारित होंगे। जहाँ भी आवश्यक हो, प्रतिभागियों से उनके अनुभवों का पूरा विवरण प्राप्त करने के लिए पूरक प्रश्न पूछे जाएँगे।

इस शोध-प्रबन्ध की आवश्यकता को पूरा करने के लिए मेरे द्वारा यहाँ उद्देश्यपूर्ण निदर्शन का प्रयोग किया जायेगा। प्रतिभागियों का चयन करने के लिए मानदंड थे a) सभी प्रतिभागी महिलाएं होंगी। b) सभी प्रतिभागी शिक्षित होंगी अर्थात वे किसी भी क्षेत्र में कम से कम स्नातक होंगी। ग) सभी चयनित प्रतिभागियों ने सोचा कि वे अपनी राय में सफल होंगी। उन प्रतिभागियों की पहचान करना बहुत मुश्किल होंगी जो सोचते होंगे कि वे सफल हैं लेकिन मैंने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों की कई शिक्षित महिलाओं से बात की हैं और अंत में उन महिलाओं को मिला हैं जो अपनी राय में सफल रही हैं-

- एक गृहिणी
- एक अध्यापक
- एक डॉक्टर
- एक वैज्ञानिक
- एक व्यवसायी महिला

व्यक्तियों के जीवित अनुभव के विस्तृत विवरण के लिए नमूना पांच महिलाओं तक सीमित होगी।

इस शोध में, प्रतिभागियों के साक्षात्कार और अवलोकन द्वारा डेटा उत्पन्न किया जायेगा। साक्षात्कार व्यक्तिगत रूप से और एक प्राकृतिक सेटिंग में भी लिए जाएँगे। यह ध्यान में रखा गया जायेगा कि साक्षात्कार के समय प्रतिभागियों को आराम दिया गया था। प्रतिभागियों का फिर से दौरा किया जायेगा और उनका साक्षात्कार लिया जायेगा। बार-बार साक्षात्कार लिए गए और जो भी और जब भी आवश्यक पाया जायेगा, पूरक प्रश्न पूछे जाएँगे। सभी साक्षात्कार प्रतिभागियों की अनुमति से (मल्टीमीडिया मोबाइल का उपयोग करके) रिकॉर्ड किए जाएँगे। मेरे द्वारा बार-बार रिकॉर्ड किए गए साक्षात्कारों को सुनकर ट्रांसक्रिप्शन किया जायेगा।

1.14 अध्यायीकरण

प्रथम अध्याय

परिचय

द्वितीय अध्याय

साहित्य की समीक्षा

तृतीय अध्याय

शोध पद्धति

चतुर्थ अध्याय

डेटा विश्लेषण और डेटा व्याख्या

पंचम अध्याय

निष्कर्ष

सन्दर्भ

1. सफलता। (2019)। https://en.oxforddictionaries.com/definition/succes
2. पेले उद्धरण। (2019)। https://www.brainyquote.com/quotes/pele_737774
3. टंडन, यू., एंड गुप्ता, ए. (2010)। टीचर इन इमर्जिंग इंडियन सोसाइटी। लखनऊ: आलोक प्रकाशन.
4. पटेल, एस. (2015)। 101 इंसपिरिंग कोट्स फ्रॉम द मोस्ट सक्सेस्फुल पीपल इन हिस्ट्री।
5. क्लेमेंस, पी। (एनडी)। https://possibilitychange.com/what-is-success/
6. मंगल, एस.के. (2006)। एडवांस्ड एजुकेशनलसाइकोलॉजी (सेकंड एडिशन)।न्यू दिल्ली: प्रेंटिस हॉल ऑफ इंडिया प्राइवेट लिमिटेड।
7. Sharma, R. (n.d.). द 8 फॉर्म्स ऑफ़ सक्सेस. https://www.robinsharma.com/article/the-8-forms-of-success
8. त्यागी, वी. (2019)। हेल्दी माइंड, हेल्दी बॉडी। https://www.wisdomtimes.com/blog/healthy-mind health-body/
9. अर्चना. (n.d.) हेल्थ इज वेल्थ कोट्स। https://www.indiacelebrating.com/quotes/health-is-wealth-quotes/
10. भारत पश्चिम। (2012)। https://www.indiawest.com/entertainment/bollywood/my-body-is-my-religionjohn abraham/article_440e7f66-3d79-5e4d-8dbf-5ca2064fbf8a.html
11. पीपीए 696 रीसर्च मेथोड्स डाटा कलेक्शन स्ट्रेटेजीज II: क्वालिटेटिव रीसर्च।(एन. डी.) https://web.csulb.edu/~msaintg/ppa696/696quali। tm#:~:text=Qualitative%20r esearch%20aims%20to%20get,मीनिंग %20अर्थ%2%20उनके%20 व्यवहार को प्रभावित करता है।
12. बेस्ट, जे.डब्ल्यू., एंड कान, जे.वी. (2012)। रीसर्च इन एजुकेशन (10th एडिसन)। न्यू दिल्ली: पीएचआई लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड।

13. मानेन, एम.वी. (2016)। रीसर्चिंग लाइव्ड एक्सपीरियंस (2nd एडिसन)। न्यूयॉर्क: रूटलेज टेलर एंड फ्रांसिस ग्रुप।

14. क्रेसवेल, जे.डब्ल्यू. (2013)। क्वॉलिटिटेटिव इन्क्वायरी एंड रीसर्च डिजाइन। न्यू दिल्ली: सेज पब्लिकेशन्स।

15. मुस्तकास, सी. (1994)। फेनोलॉजिकल रिसर्च मेथोड्स। न्यू दिल्ली: सेज पब्लिकेशन्स।

16. पारिख, पी.पी. एंड सुखात्मे, एस.पी. (2004)। वुमन इंजीनियर इन इंडिया। इकनोमिक एंड पोलिटिकल वीकली, 39(2), 193-201।

17. गुप्ता, एन., एंड शर्मा, ए. (2002)। वुमन अकैडमिक साइंटिस्ट्स इन इंडिया। सोशल सोशल ऑफ़ साइंस, 32(5/6), 901-915। http://www.jstor.org/stable/3183058

18. सिन्हा, पी. (2003)। वुमन एंटरप्रेंयूर्शिप इन द नार्थ ईस्ट इंडिया: मोटिवेशन, सोशल सपोर्ट एंड कंस्ट्रेंट्स। इंडियन जर्नल ऑफ इंडस्ट्रियल रिलेशंस, 38(4), 425-443। http://www.jstor.org/stable/27767864

19. खन्ना, एम। (2009)। पोलिटिकल पार्टिसिपेशन ऑफ़ वुमन इन इंडिया। द इंडियन जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस, 70(1), 55-64. http://www.jstor.org/stable/41856495

20. अरबी लेखिका को पहली बार मिला बुकर पुरस्कार। (2019, 23 मई)। अमर उजाला, पी.16.

21. रचा इतिहास... युद्ध मिशन में जाने की बढ़ा पार करने वाली पहाड़ी फाइटर पायलट बनी भावना। (2019, 23 मई)। अमर उजाला, पी. 1 1।

22. अरुणिमा सिन्हा। (2019)। https://en.wikipedia.org/wiki/Arunima_Sinha।

23. आईएनएसवी तारिणी टीम नारी शक्ति पुरस्कार 2017 (2018) से सम्मानित किया।https://currentaffairs.gktoday.in/tags/insv-tarini

24. चेकर, एम। (1990)। टीचर्स पर्सेप्शन ऑफ़ दियर प्रिंसिपल्स इम्प्रेशन अबाउट देम रिलेटेड टु दियर सेल्फ-पर्सेप्शन एंड दियर वर्क बिहैवियर। अनपब्लिश्ड डिजर्टेशन, यूनिवर्सिटी ऑफ़, न्यू दिल्ली।

द्वितीय अध्याय

साहित्य की समीक्षा

बुर्जुआ, पी. (1971) का मानना है कि न्यू ऑरलियन्स भाषा पर पॉल रिकोयूर के हालिया लेखन से एक अस्पष्टता उभरती है। एक ओर, वे भाषा की घटना विज्ञान के लिए भाषा विज्ञान को गंभीरता से लेने के लिए आज यह आवश्यक समझते हैं; दूसरी ओर, भाषा विज्ञान पर अपने सभी लेखों में वह उन्हें गंभीरता से लेने के बजाय उन्हें खारिज करते दिखाई देते हैं। यह अस्पष्टता, जिसे रिकोयूर ने अर्धविज्ञान और घटना विज्ञान के बीच एक आवश्यक टकराव के रूप में माना है, से उत्पन्न होने वाली इस अस्पष्टता को और अधिक ध्रुवीकृत किया जा सकता है: "भाषा के विज्ञान के माध्यम से चक्कर कुछ ऐसा नहीं है जिसे कोई चुन सकता है या नहीं।

स्कैच, आर। (1972) ने तीन परिप्रेक्ष्य से घटना विज्ञान के दृष्टिकोण की जांच करता है हुसरल की अनुवांशिक घटना विज्ञान हाइडेगर की व्याख्यात्मक घटना विज्ञान और मेर्लेउ-पोंटी के धारणा के विचार व्यक्त किये। फेनोमेनोलॉजी एक सामान्य समझ प्रदान करती है जो मन और दुनिया के बीच संबंध को प्रदर्शित करती है। यह संबंध वस्तु के संबंध में विषय द्वारा एक पारलौकिक कार्य के रूप में हुसरल की घटना विज्ञान में परिलक्षित होता है। हाइडेगर की घटना विज्ञान ज्यादातर "डेसीन" की अवधारणा में है जो समय और इतिहास के साथ एक लिंक से प्रभावित है। मर्लेउ-पोंटी की धारणा का विचार विचार से पहले मौजूद होने को 'अपरिवर्तनीय उपस्थिति' के रूप में देखता है। हुसरल के विपरीत; हाइडेगर और मर्लेउ-पोंटी खुद को दुनिया और व्यक्ति के अविभाज्य हिस्से के रूप में देखते हैं।

पैट्रिक सुलिवन (1981) का दावा है कि, सेमियोलॉजी इस शर्त को घटना विज्ञान पर रखता है: कि घटना विज्ञान संरचनाओं के सिद्धांत के लिए, सिस्टम या अर्धवैज्ञानिक मॉडल के लिए, यानी निर्माण के सिद्धांत और संकेतों के संबंध के लिए खाते में सक्षम हो। लेकिन घटना विज्ञान अर्धविज्ञान पर एक शर्त रखता है: कि यह पर्याप्त रूप से अर्थ के लिए जिम्मेदार है।

हेयिंक जे, और टायमस्ट्रा, टी। (1993) ने गुणात्मक अनुसंधान के कार्य की जांच की। विज्ञान पर प्रचलित प्रत्यक्षवादी दृष्टिकोण के कारण, सामाजिक विज्ञानों के भीतर गुणात्मक शोध का केवल एक मामूली स्थान है। हालाँकि, यह जागरूकता बढ़ रही है कि विशुद्ध रूप से मात्रात्मक दृष्टिकोण हमेशा संतोषजनक नहीं होता है। यह उदाहरण के लिए जीवन की गुणवत्ता में अनुसंधान के क्षेत्र में मामला है। यह लेख गुणात्मक अनुसंधान के कई सैद्धांतिक और पद्धति संबंधी पहलुओं पर चर्चा करता है। निम्नलिखित मुद्दों से निपटा जाता है: एक शोध पद्धति के रूप में (गहराई से) साक्षात्कार, और गुणात्मक डेटा का वर्गीकरण, विश्लेषण और व्याख्या। इसके बाद गुणात्मक शोध की विश्वसनीयता और वैधता पर विचारों पर चर्चा की जाती है। आवेदन के कई क्षेत्रों के विवरण के बाद, हाल के शोध के संदर्भ में गुणात्मक अनुसंधान के संभावित मूल्य का वर्णन किया गया है।

ओल्डफादर, पी, और वेस्ट, जे (1994) ने जैज़ के रूप में गुणात्मक शोध का एक रूपक गुणात्मक जांच की प्रक्रियाओं में अंतर्निहित गुणों को रोशन करने के लिए विकसित किया है। जैज़ रूपक स्पष्ट समझ को स्पष्ट करने के लिए एक मार्ग बनाता है जो हमें पूरी तरह से व्यवस्थित स्कोर के बिना शोधकर्ताओं के रूप में अपना रास्ता बनाने में सक्षम बनाता है। जैसा कि जैज़ को कॉर्ड प्रगति और विषयों की एक गहरी संरचना द्वारा निर्देशित किया जाता है, गुणात्मक जांच को ज्ञानमीमांसा सिद्धांतों, सामाजिक रूप से निर्मित मूल्यों, पूछताछ केंद्रित, और निरंतर तुलना जैसे विश्लेषणात्मक पद्धतियों के माध्यम से उभरने वाले निष्कर्षों द्वारा निर्देशित किया जाता है।

चानाना, के. (2001) ने पाया की भारत और दक्षिण एशिया में लड़कियों और महिलाओं की शिक्षा पर मेरे पिछले तीन दशकों के काम में विकसित हुआ। तर्क यह है कि भारत में महिला शिक्षा का विकास और विकास एक साथ दो प्रक्रियाओं में फंस गया है। एक ओर, राज्य की नीति और शिक्षा पर सार्वजनिक चर्चा ने बृहत स्तर पर सकारात्मक शक्तियों को उत्पन्न करने के लिए लड़कियों और महिलाओं के बीच शिक्षा को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर जोर दिया। दूसरी ओर, परिवार, राजा समूह और संस्कृति में निहित सूक्ष्म-स्तरीय ताकतें लड़कियों और महिलाओं की शैक्षिक नीतियों, कार्यक्रमों और उन तक पहुंचने की क्षमता को निर्धारित करती हैं। इसलिए महिलाओं की शिक्षा को उनके सामाजिक संदर्भ के संदर्भ के बिना देखना संभव नहीं है, जो संस्कृति, धर्म और 'देशभक्ति परिवार संरचना

और विचारधारा' में निहित है? वास्तव में, वृहद नीति स्वयं नारी की भूमिका की सामाजिक अवधारणा के आसपास के सांस्कृतिक काउंटरों द्वारा रंगी हुई है। यद्यपि नारीवादी शैक्षिक नीतियों और कार्यक्रमों के छिपे हुए एजेंडे को उजागर करने में सक्षम हैं, फिर भी नारीत्व की सामाजिक जड़ता को दूर करना मुश्किल है। इसके अलावा, एक संस्था के रूप में शिक्षा की संरचनात्मक विशेषताओं को सीमित करना या केवल वित्तीय और प्रशासनिक बाधाओं के कारण इसके विकास या विकास की अनुपस्थिति को देखना संभव नहीं है, लेकिन संस्कृति और धर्म के साथ इसकी परस्पर क्रिया को देखना सबसे आवश्यक है।

गुप्ता, एन., और शर्मा, ए. (2002) ने काम और सामाजिक वातावरण और उनके सामने आने वाली समस्याओं की प्रकृति के बारे में भारत में महिला अकादमिक वैज्ञानिकों की धारणाओं का विश्लेषण किया हैं। अधिकांश देशों में विज्ञान में लैंगिक असमानता आम है। काफी हद तक, यह असमानता सामाजिक-सांस्कृतिक वातावरण का एक उत्पाद है जिसमें विज्ञान संचालित होता है। पेशेवर वातावरण और सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ विज्ञान के अभ्यास में एक साथ जुड़े हुए हैं। एक समग्र चित्र विकसित करने के लिए प्रश्नावली और साक्षात्कार विधियों का एक त्रिभुज नियोजित किया गया था। निष्कर्ष बताते हैं कि महिला अकादमिक वैज्ञानिक प्रचलित सामाजिक-सांस्कृतिक प्रणाली से प्रभावित हैं। इस प्रकार, कार्यस्थल और परिवार में 'देशभक्ति' विचारधारा प्रबल होती है। महिलाओं को काम पर लिंग संबंधी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, और साथ ही दोहरे बोझ का सामना करना पड़ता है जिसके परिणामस्वरूप तनाव होता है। इन समस्याओं का महिला अकादमिक वैज्ञानिकों के करियर पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

बीवर, ए. (2002) के अनुसर घटना विज्ञान को अक्सर कृत्रिम बुद्धि और संज्ञानात्मक विज्ञान अनुसंधान के लिए अप्रासंगिक माना जाता है क्योंकि पहले व्यक्ति विवरण वास्तविक कारण स्पष्टीकरण के स्तर तक नहीं पहुंचते हैं। यद्यपि इस कमजोर अर्थ में लिया गया घटना विज्ञान उपयोगी नहीं हो सकता है, घटना विज्ञान की विधि को अधिक औपचारिक रूप से लिया जाना उपयोगी परिणाम दे सकता है। हुसेरल की घटनात्मक कमी, या युग, अनुभूति के विज्ञान के लिए संदर्भ का सही ढांचा निर्धारित करता है क्योंकि यह स्पष्ट करता है कि क्या अनुभूति से संबंधित है और जो प्राकृतिक दुनिया से संबंधित है। इस

महत्वपूर्ण अंतर को अलग करने से हमें संज्ञान के लिए सही प्रक्रिया निर्धारित करने और उनके कार्यों का वर्णन करने में मदद मिलती है। इसलिए संज्ञान की एक औपचारिक घटना संज्ञानात्मक कंप्यूटिंग में पहल की सहायता कर सकती है।

पारिख, पी.पी. और सुखात्मे, एस.पी. (2004) ने इंजीनियरिंग कॉलेजों में नामांकन, आउट-टर्न नौकरी के अवसरों, करियर की स्थिति और अन्य कारकों पर डेटा का उपयोग करते हुए भारत में महिला इंजीनियरों पर दो व्यापक अध्ययनों के निष्कर्षों पर चर्चा करते हैं। धारणाओं और बाधाओं पर महिला इंजीनियरों और नियोक्ताओं की प्रतिक्रियाओं का भी विश्लेषण किया गया है। यद्यपि महिला इंजीनियरों के आउट-टर्न में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, लेकिन उनके रोजगार की संभावनाएं और करियर में उन्नति की रूपरेखा चिंता का विषय बनी हुई है।

पिट, डी. (2004) ने इसके लिए एक तर्क प्रस्तुत किया। कई दार्शनिक तर्क के बिना, इस विचार का समर्थन करते हैं कि ऐसा कुछ है जो सचेत रूप से उस पी के बारे में सोचने जैसा है, जो कि यह सोचने के लिए सचेत रूप से अलग है कि क्यू। यह थीसिस, अगर सच है, तो मन के दर्शन और संज्ञानात्मक विज्ञान के लिए महत्वपूर्ण परिणाम होंगे। तर्क का दावा है कि अगर कुछ ऐसा नहीं होता तो उनकी सामग्री के संबंध में जागरूक विचारों को अलग करना असंभव होगा। इस तर्क का बचाव कई आपत्तियों के खिलाफ किया जाता है। मैं तब उपयोग करता हूं जिसे मैं "न्यूनतम जोड़ी" अनुभव कहता हूं - बिना और समझ के पढ़े जाने वाले वाक्य - पाठक में उस तरह के अनुभव को प्रेरित करने के लिए जो मैं दावा करता हूं कि मौजूद है। आगे की आपत्तियों पर विचार किया जाता है और उनका खंडन किया जाता है।

कैनफ़ील्ड, जे., और स्वित्ज़र, जे. (2005) ने सफलता के लिए नियमों के सरल सेट का खुलासा किया जिसके कारण वह चिकन सूप फॉर द सोल श्रृंखला के बहु-मिलियन कॉपी बेस्टसेलिंग लेखक बन गए, और दिखाता है कि कोई भी कैसे अनुसरण कर सकता है इन सिद्धांतों को अपने स्वयं के सपनों को प्राप्त करने के लिए। प्रदर्शन और उपलब्धि के बड़े स्तर किसी के द्वारा प्राप्त किए जा सकते हैं। यह पुस्तक सिद्ध आत्म-सशक्तिकरण उपकरण और समय-परीक्षणित प्रदर्शन रणनीतियों की पेशकश

करती है जो व्यक्तिगत और व्यावसायिक सफलता का आधार हैं। जैक कैनफील्ड इन सिद्धांतों का पालन करके 50 से अधिक सबसे अधिक बिकने वाली पुस्तकों के लेखक बन गए हैं - यहां उन्होंने बताया कि वे कैसे मदद कर सकते हैं आप अधिक से अधिक चुनौतियों का सामना करते हैं, ब्रेक-थ्रू परिणाम उत्पन्न करते हैं और सफलता का सपना देखते हैं।

स्क्विंटनी, एफ। (2006) ने पाया की यह हमें उचित संतुलन अवधारणाओं को तैयार करके संतुलन खेल का कड़ाई से वर्णन करने की अनुमति देता है। वास्तविक दुनिया की सूचना अर्थशास्त्र की समस्याओं और अति आत्मविश्वास पर प्रयोगात्मक निष्कर्षों से प्रेरित, यह पेपर अपूर्ण जानकारी के साथ रणनीतिक बातचीत के मॉडल के लिए एक सामान्य महामारी निर्माण का परिचय देता है, जहां खिलाड़ियों की आत्म-धारणा गलत हो सकती है। हम दिखाते हैं कि हमेशा "उद्देश्य" संतुलन मौजूद होता है, जहां खिलाड़ी उन्हें समझने की कोशिश किए बिना एक-दूसरे की रणनीतियों का सही अनुमान लगाते हैं, और ये परिणाम व्यक्तिपरक पुजारियों के साथ एक संबद्ध बायेसियन गेम के संतुलन के साथ मेल खाते हैं। जनसंख्या खेलों में, इन संतुलनों को हमेशा खिलाड़ियों द्वारा आत्मनिरीक्षण रूप से युक्तिसंगत बनाया जा सकता है, भले ही उनकी संभवतः गलत आत्म-धारणा हो।

क्रास्नो, आर।, रीगल-क्रंब, सी।, और मुलर, सी। (2007) ने हाई स्कूल में लिंग, आत्म-धारणा और शैक्षणिक समस्याओं का अध्ययन किया। सामाजिक-आर्थिक उपलब्धि और अन्य जीवन पाठ्यक्रम प्रक्षेपवक्र के लिए शिक्षा के बढ़ते महत्व को देखते हुए, प्रारंभिक शैक्षणिक संघर्षों के दीर्घकालिक परिणाम हो सकते हैं यदि उन्हें संबोधित नहीं किया जाता है। आधिकारिक स्कूल प्रतिलेखों के साथ राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिनिधि नमूने का विश्लेषण और किशोर कामकाज पर व्यापक डेटा ने प्रारंभिक संघर्षों और छोटे शैक्षिक प्रक्षेपवक्र के बारे में बाहरी प्रतिक्रिया के बीच इस संबंध में एक सामाजिक मनोवैज्ञानिक मार्ग की पहचान की। लड़कियों के लिए, निदान सीखने की अक्षमताओं की अनुपस्थिति में कक्षा की विफलताओं ने तेजी से नकारात्मक आत्म-धारणाओं को जन्म दिया, जो बदले में, गणित और विज्ञान के पाठ्यक्रम को बाधित कर दिया, विशेष रूप से पारिवारिक और सहकर्मी संदर्भों में जिसमें शैक्षणिक सफलता को प्राथमिकता दी गई थी। लड़कों के लिए, निदान सीखने की अक्षमता, कक्षा के

प्रदर्शन की परवाह किए बिना, आत्म-धारणा में समान परिवर्तन और परिवार और सहकर्मी संदर्भों में पाठ्यक्रम लेने के लिए इन परिवर्तनों के समान परिणाम उत्पन्न करते हैं। इन परिणामों से पता चलता है कि मुख्यधारा के स्कूलों में भाग लेने वाले लड़कियों और लड़कों की लंबी अवधि की शैक्षिक संभावनाओं को प्रभावित करने के लिए क्षमता लेबल और क्षमता से संबंधित प्रदर्शन संकेतक एक साथ कैसे आते हैं, जिसमें अधिकांश छात्रों को सीखने की अक्षमता या गंभीर शैक्षणिक समस्याएं नहीं होती हैं।

गुप्ता, एन. (2007) का तर्क है कि विज्ञान में उच्च शिक्षा के अनौपचारिक परिवेश में महिलाएं वंचित हैं, और यह परिवेश हर जगह एक समान नहीं है। अनौपचारिक संचार और बातचीत डॉक्टरेट प्रक्रिया सहित विज्ञान के अभ्यास के अभिन्न अंग हैं। यह मानता है कि भारत जैसे दक्षिण एशियाई देशों में विज्ञान में महिलाओं की स्थिति को समझने के लिए, विशिष्ट सामाजिक, ऐतिहासिक और संस्थागत संदर्भ में जांच की अवधारणा की जानी चाहिए। एक प्रश्नावली सर्वेक्षण के माध्यम से पुरुष और महिला धारणाओं की तुलना, और महिलाओं के साथ गुणात्मक साक्षात्कार, अनौपचारिक डॉक्टरेट विज्ञान वातावरण में भारतीय महिलाओं की समस्याओं की प्रकृति को समझने का प्रयास किया गया है। निष्कर्ष बताते हैं कि यद्यपि समस्याओं की प्रकृति पश्चिम में विज्ञान में महिलाओं द्वारा सामना की जाने वाली समस्याओं के समान प्रतीत होती है, पूर्वाग्रहों का विशिष्ट रूप भिन्न होता है, और यह कि सांस्कृतिक संदर्भ भेदभाव के विशिष्ट रूपों को ढालता है। इसका भविष्य के अनुसंधान और नीतियों पर प्रभाव पड़ता है।

रिचर्ड्स, एल. और मोर्स, जे.एम. (2007) ने एक व्याख्यात्मक घटना संबंधी अध्ययन के आंशिक निष्कर्षों की रिपोर्ट दी, जिसमें मलावी के स्नातक छात्र नर्सों के नैदानिक सीखने के अनुभव की खोज की गई थी। नर्सिंग छात्रों के नैदानिक प्रदर्शन का प्रभावी और निष्पक्ष मूल्यांकन करना एक चुनौती है जो नर्स शिक्षा का सामना करना जारी रखती है और संकाय और छात्र दोनों की चिंताओं का प्रमाण है। अध्ययन मलावी में एक यूनिवर्सिटी नर्सिंग कॉलेज में हुआ, जिसमें तीस छात्र नर्स प्रतिभागियों के एक उद्देश्यपूर्ण नमूने का उपयोग किया गया। प्रतिभागियों के नैदानिक सीखने के अनुभव के खातों को प्राप्त करने के लिए संवादात्मक साक्षात्कार आयोजित किए गए थे और कोलाज़ी के प्रक्रियात्मक चरणों को

संशोधित करके विकसित एक रूपरेखा ने घटना संबंधी विश्लेषण को निर्देशित किया था। इस अध्ययन से कई मुद्दे सामने आए, लेकिन इस पत्र के लिए अध्ययन से जिन मूल्यांकन मुद्दों का पता चला, उन पर चर्चा की गई। इसने नर्सिंग छात्रों के नैदानिक प्रदर्शन के मूल्यांकन के दौरान अनुचितता और निष्पक्षता की कमी की चिंताओं का खुलासा किया। यह भी पता चला कि पारस्परिक संबंधों ने मूल्यांकन प्रक्रिया को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया। नतीजतन, नर्सिंग छात्र नैदानिक ग्रेड पर ऐसे संबंधों के प्रभाव को जानने के लिए योग्य नर्सों के साथ संबंध बनाने में व्यस्त हो जाते हैं। निष्कर्षों से पता चलता है कि छात्र अच्छे ग्रेड प्राप्त करने के लिए विभिन्न रणनीतियों को नियोजित करते हैं और यह "ग्रेड बनाने" के साथ छात्रों की समग्र व्यस्तता को दर्शाता है। यह तर्क दिया जाता है कि नर्सिंग छात्रों के नैदानिक प्रदर्शन का मूल्यांकन नर्सिंग शिक्षा का एक महत्वपूर्ण घटक है और इसे इस तरह से संचालित किया जाना चाहिए जिससे नर्स शिक्षकों को नर्सिंग छात्रों की नैदानिक दक्षता को प्रभावी ढंग से निर्धारित करने में सक्षम बनाया जा सके।

क्लॉट्स-फिगुएरास, इरमा, (2007) से पता चलता है कि राजनेताओं का लिंग उन व्यक्तियों के शैक्षिक स्तर को प्रभावित करता है जो उन जिलों में बड़े होते हैं जहां ये राजनेता चुने जाते हैं। महिला राजनीतिक प्रतिनिधित्व में 10 प्रतिशत की वृद्धि से शहरी क्षेत्रों में प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने की संभावना 6 प्रतिशत अंक बढ़ जाती है, जो कि सबसे अमीर और सबसे गरीब भारतीय राज्यों के बीच प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने के अंतर का 21% है। जाति भी मायने रखती है, क्योंकि निचली जातियों और वंचित जनजातियों के लिए आरक्षित सीटों पर जीत हासिल करने वाली महिला राजनेता वे हैं जिनका मुख्य रूप से प्रभाव है। इसके अलावा, राजनेताओं के लिंग और जाति दोनों यह निर्धारित करते हैं कि उनकी नीतियों से किसे अधिक लाभ होता है: शहरी क्षेत्रों में महिला राजनेता अपने लिंग और जाति के लोगों की शैक्षिक उपलब्धियों में वृद्धि करती हैं। भारत में राजनेताओं पर एकत्र किए गए एक अद्वितीय डेटासेट का समूह और निवास के जिले के व्यक्तिगत डेटा के साथ मिलान किया जाता है। राजनीतिक डेटा महिलाओं और पुरुषों के बीच घनिष्ठ चुनावों की पहचान की अनुमति देता है, जो अर्ध-प्रयोगात्मक चुनाव परिणाम उत्पन्न करते हैं जो राजनेताओं के लिंग के कारण प्रभाव का अनुमान लगाने के लिए उपयोग किए जाते हैं।

ओवरगार्ड, एस. (2008) ने जाको हिंटिका की हसरल की घटना विज्ञान के उद्देश्य और पद्धति की व्याख्या पर चर्चा की। मेरा तर्क है कि हिंटिक्का कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं पर हुसरल की घटना विज्ञान को गलत तरीके से प्रस्तुत करता है। अधिक विशेष रूप से, हिंटिक्का हसरल की "तत्काल अनुभव" की धारणा को गलत तरीके से समझते हैं और इसके परिणामस्वरूप "युग" और "अभूतपूर्व कमी" के रूप में जाने वाले केंद्रीय पद्धतिगत उपकरणों के कार्यों को समझने में विफल रहता है। परिणाम यह है कि वह जिस घटना विज्ञान की अवधारणा का श्रेय हसरल को देता है वह हुसरल की स्थिति की दार्शनिक क्षमता को महसूस करने से बहुत दूर है। इसलिए यदि हम विश्लेषणात्मक दर्शन और महाद्वीपीय घटना विज्ञान के बीच एक उपयोगी तालमेल चाहते हैं जो कि हिंटिक्का का अंतिम उद्देश्य है, तो हिंटिका के हुसरल के खाते को कई महत्वपूर्ण बिंदुओं पर सुधार करने की आवश्यकता है।

टॉम फ्रोइस और टॉम ज़िमके (2009) का तर्क है कि सक्रिय संज्ञानात्मक विज्ञान की जैविक नींव वैचारिक उपकरण प्रदान कर सकती है जो वर्तमान सन्निहित एआई की कमियों का अधिक स्पष्ट रूप से निदान करने के लिए आवश्यक हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के लिए सन्निहित और स्थित दृष्टिकोण परिपक्व हो गया है और कृत्रिम एजेंटों के निर्माण के व्यावहारिक लक्ष्य के संबंध में पारंपरिक कम्प्यूटेशनल दृष्टिकोण का एक व्यवहार्य विकल्प बन गया है, जो वास्तविक दुनिया की बदलती परिस्थितियों में एक मजबूत और लचीले तरीके से व्यवहार कर सकता है। फिर भी, जानबूझकर एजेंसी की हमारी वैज्ञानिक समझ को आगे बढ़ाने के लिए वर्तमान सन्निहित एआई की पर्याप्तता के संबंध में हाल ही में कुछ चिंताओं को उठाया गया है। जबकि इंजीनियरिंग या कंप्यूटर विज्ञान के दृष्टिकोण से यह सीमा प्रासंगिक नहीं हो सकती है, यह निश्चित रूप से एआई शोधकर्ताओं के लिए अत्यधिक प्रासंगिक है जो प्राकृतिक अनुभूति के सटीक मॉडल बनाने का प्रयास कर रहे हैं। विशेष रूप से, एक सक्रिय परिप्रेक्ष्य लेने से एआई को स्वायत्त एजेंसी और अर्थ-निर्माण की जैविक जड़ों को गंभीरता से लेने की आवश्यकता होती है। हम दो आवश्यक प्रणालीगत आवश्यकताओं की पहचान करते हैं, अर्थात् संवैधानिक स्वायत्तता और अनुकूलता, जो हमें सक्रिय एआई के दो डिजाइन सिद्धांतों को पेश करने के लिए प्रेरित करती हैं। यह तर्क दिया जाता है कि इस तरह के सक्रिय एआई का विकास वर्तमान पद्धतियों के लिए एक

महत्वपूर्ण चुनौती है। हालाँकि, यह अंततः सन्निहित एआई की वर्तमान सीमाओं पर काबू पाने का एक आशाजनक तरीका प्रदान करता है, विशेष रूप से प्राकृतिक सन्निहित अनुभूति के पूर्ण मॉडल प्रदान करने के संदर्भ में। अंत में, कुछ व्यावहारिक निहितार्थ हैं और सक्रिय एआई के दो डिजाइन सिद्धांतों के उदाहरणों पर भी चर्चा की गई है।

नोलन, ए, एंड टैलबर्ट, टी। (2011) ने प्रिस्क्रिप्टिव स्टेटमेंट के रूप में गुणात्मक अभिकथन का अध्ययन किया। गुणात्मक शोधकर्ता के लिए निर्देशात्मक उपयुक्तता के संबंध में प्राथमिक प्रश्न का उत्तर देना कठिन है। जबकि निश्चित रूप से गुणात्मक शोधकर्ता हैं जिन्होंने गुणात्मक अनुसंधान डिजाइन के इलाके को बेहतर ढंग से परिभाषित करने और वर्णन करने के लिए अनुवांशिक प्रोटोकॉल की पेशकश की है और ऐसे गुणात्मक शोधकर्ता हैं जो शोध निष्कर्ष प्रदान करते हैं जिन्हें पाठक द्वारा निर्देशात्मक माना जा सकता है, गुणात्मक शोध की प्रकृति निर्देशात्मक से बचने के लिए होती है शोध के निष्कर्षों में बयान। इसके बजाय, अनुसंधान डिजाइन की एक पारदर्शी प्रक्रिया, सैद्धांतिक रूपरेखा आवेदन या निर्माण, प्रतिभागी आबादी/नमूना पहचान, और डेटा संग्रह/विश्लेषण पूरे शोध पांडुलिपि में प्रकट होते हैं, जो निर्देशात्मक निष्कर्षों की ओर नहीं ले जाते हैं, बल्कि उन परिणामों पर जोर देते हैं जिन्हें ध्यान से पाठक को सूचित किया जाता है।

पेक्स, ए। (2011) ने घर की रोशनी का कम होना अभी भी अंधेरे चरण पर ध्यान केंद्रित किया है, हालांकि सभागार में दूसरों के बारे में जागरूकता और इसकी शांत हलचल पूरी तरह से फीकी नहीं पड़ती है। मंच से, कई लोगों की आवाज एक साथ पांच या छह मापा कदम उठाते हैं, फिर रुकते हैं, पल-पल रोशनी (मंच और घर) से पहले नौ कलाकारों को प्रकट करने के लिए तेजी से लुप्त होती है। वे सामान्य कपड़े (शर्ट और जैकेट, जम्पर और स्कर्ट, अलग-अलग रंग) पहने हुए, बाहर की ओर मुंह करके खड़े होते हैं, दर्शकों की ओर स्थिर निगाह रखते हैं। वे प्रतिबिंबित स्लैब की एक श्रृंखला के बीच अंतराल में खड़े होते हैं, प्रत्येक समान नियमित आयाम, थोड़ा व्यापक और स्वयं कलाकारों की तुलना में लंबा होता है। कलाकारों के पीछे उसी सामग्री से काटे गए पैनलों की एक और पंक्ति है। कुछ देर रुकने के बाद अंतरिक्ष में अंधेरा छा जाता है।

क्लॉट्स-फिगुएरेस, आई (2012) से पता चलता है कि राजनेताओं का लिंग उन व्यक्तियों के शैक्षिक स्तर को प्रभावित करता है जो उन जिलों में बड़े होते हैं जहां ये राजनेता चुने जाते हैं। भारत में राजनेताओं पर एकत्र किए गए एक अद्वितीय डेटासेट का समूह और निवास के जिले के व्यक्तिगत डेटा से मिलान किया जाता है। राजनीतिक डेटा महिलाओं और पुरुषों के बीच घनिष्ठ चुनावों की पहचान की अनुमति देता है, जो अर्ध-प्रयोगात्मक चुनाव परिणाम उत्पन्न करते हैं जो राजनेताओं के लिंग के कारण प्रभाव का अनुमान लगाने के लिए उपयोग किए जाते हैं। महिला राजनीतिक प्रतिनिधित्व बढ़ने से यह संभावना बढ़ जाती है कि एक व्यक्ति शहरी क्षेत्रों में प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करेगा, लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में नहीं, और पूरे नमूने में नहीं।

लोरी बीमन एट अल। (2012) से पता चलता है कि महिला नेतृत्व किशोर लड़कियों के करियर की आकांक्षाओं और शैक्षिक प्राप्ति को प्रभावित करता है। 1993 के एक कानून ने बेतरतीब ढंग से चुनी गई ग्राम परिषदों में महिलाओं के लिए नेतृत्व के पदों को आरक्षित किया। 495 गांवों में 11-15 आयु वर्ग के किशोरों और उनके माता-पिता के 8,453 सर्वेक्षणों का उपयोग करते हुए, हम पाते हैं कि, उन गांवों की तुलना में जो कभी आरक्षित नहीं थे, माता-पिता में आकांक्षाओं में लिंग अंतर 25% और किशोरों में 32% एक महिला को सौंपे गए गांवों में बंद हो गया। किशोर शिक्षा प्राप्ति में लिंग अंतर मिट जाता है और लड़कियों को घर के कामों में कम समय लगता है। हमें युवा महिलाओं के श्रम बाजार के अवसरों में बदलाव का कोई सबूत नहीं मिलता है, यह सुझाव देता है कि महिला नेताओं का प्रभाव मुख्य रूप से एक आदर्श मॉडल प्रभाव को दर्शाता है।

थॉमस फिनगान (2012) के अध्ययन में लेविनास की हुसरल, घटना विज्ञान और ईश्वर के प्रति वफादारी पायी गई। 'धार्मिक मोड़' से संबंधित घटना विज्ञान में समकालीन बहस विश्वास और कारण के बीच संबंधों के मुद्दे को उठाती है। धार्मिक मोड़ पर सबसे महत्वपूर्ण बयानों में से एक, डोमिनिक जेनिकॉड, घटना विज्ञान के संदर्भ में विश्वास-कारण द्विभाजन की पुष्टि है, विशेष रूप से इस संबंध में कि इमैनुएल लेविनास जैसे विचारकों ने इसके संस्थापक एडमंड हुसरल की घटना संबंधी परियोजना का

दुरुपयोग कैसे किया है। यह लेख विश्वास-कारण द्विभाजन को चुनौती देता है और दिखाता है कि लेविनास में विश्वास की भूमिका को उसे हुसेरलियन घटना विज्ञान से विचलित के रूप में चिह्नित करने की आवश्यकता नहीं है।

कैटरीना एडल्स-हिर्श (2015) ने इन समस्याओं का समाधान किया और स्नातकोत्तर शिक्षा के छात्रों को एक उपयोगी संसाधन प्रदान करते हैं जो इस शोध पद्धति को अपने अध्ययन में लागू करने पर विचार कर रहे हैं। यह लेख एक दर्शन के रूप में घटना विज्ञान को परिभाषित करके शुरू होता है, और फिर तीन अलग-अलग दार्शनिक दृष्टिकोणों की मुख्य विशेषताओं की एक श्रृंखला की खोज करता है। यह शोध की इस पद्धति से जुड़े उपकरणों और तकनीकों का उपयोग करने के प्रमुख पहलुओं को स्पष्ट करने के लिए विशिष्ट उदाहरणों के साथ एक ट्रान्सेंडैंटल फेनोमेनोलॉजिकल अध्ययन को कैसे अंजाम देता है, इसकी रूपरेखा तैयार करके समाप्त होता है। नौसिखिए शोधकर्ताओं के बीच, घटना विज्ञान को एक पद्धतिगत ढांचे के रूप में उपयोग करने के बारे में काफी अनिश्चितता है। समस्या इस तथ्य में निवास करती प्रतीत होती है कि घटना विज्ञान एक दर्शन है, गुणात्मक शोध के लिए एक आधार है, साथ ही साथ अपने आप में एक शोध पद्धति भी है। इस भ्रम के साथ यह गलत धारणा भी जुड़ गई है कि घटना विज्ञान एक एकीकृत दृष्टिकोण है, जब इसमें वास्तव में तीन अलग-अलग जटिल दर्शन होते हैं। इसलिए, एक घटनाविज्ञानी शोधकर्ता के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वह अपने शोध के लिए अपनाए गए दृष्टिकोण को बताए, क्योंकि यह उनके पद्धतिगत प्रक्रियाओं के चयन पर प्रभाव डालता है।

अमांडा विलियमसन (2015) ने सोंद्रा फ्रेले के साथ निबंध साक्षात्कार बढ़ाया, मैं नृत्य और घटना विज्ञान में उनके मार्ग-अनुसंधान के बारे में पूछता हूं, और कैसे ऐतिहासिक और सैद्धांतिक रूप से घटना विज्ञान की परंपराएं नृत्य अनुसंधान प्रतिमानों के भीतर प्रतिच्छेद करती हैं। हम एक साथ प्रश्नों और क्षेत्रों को कवर करते हैं जैसे कि कैसे और कब घटना संबंधी परंपराओं को नृत्य अध्ययन में एकीकृत करना शुरू हुआ, दैहिक विज्ञान के सापेक्ष घटना संबंधी दृष्टिकोण, और छात्रों के लिए नैतिक प्रभाव जब घटना विज्ञान पढ़ाया जाता है और नृत्य अध्ययन के छात्रों के लिए एक केंद्रीय अनुसंधान प्रतिमान बन

जाता है। सोंद्रा ने इन अंतरंग क्षेत्रों के भीतर अपने अकादमिक अनुभव, और व्यक्तिगत यात्राएं और घटना संबंधी परंपराओं की पेचीदगियों और अंतरंगताओं के भीतर प्रतिबिंब साझा किए।

सरोजा देवी राजेंद्रन (2016) ने महिला शिक्षा की वर्तमान स्थिति, हमारे द्वारा किए गए इस अध्ययन और अध्ययन ने निष्कर्ष निकाला कि महिला शिक्षा की दर बढ़ रही है लेकिन उचित तरीके से नहीं। भारत अब महिला शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी देश है। भारत में महिला शिक्षा भी सरकार और नागरिक समाज दोनों के लिए एक प्रमुख चिंता का विषय रही है क्योंकि शिक्षित महिलाएं देश के विकास में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। शिक्षा महिला सशक्तिकरण का लक्ष्य है क्योंकि यह उन्हें चुनौतियों का जवाब देने, अपनी पारंपरिक भूमिका का सामना करने और अपना जीवन बदलने में सक्षम बनाती है। ताकि हम महिला सशक्तिकरण के संदर्भ में शिक्षा के महत्व की उपेक्षा न कर सकें। भारत 2020 तक एक विकसित देश महाशक्ति बनने की ओर अग्रसर है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिला शिक्षा की वृद्धि बहुत धीमी है। इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि हमारे देश की बड़ी महिलाएं अभी भी अनपढ़, कमजोर, पिछड़ी और शोषित हैं। महिलाओं की शिक्षा में महिलाओं की शिक्षा समाज में स्थिति परिवर्तन का सबसे शक्तिशाली साधन है। शिक्षा परिवार के भीतर उनकी स्थिति में सुधार के साधन के रूप में असमानताओं और कार्यों में कमी लाती है। ईएफए कार्यक्रम 2002 में भारत सरकार द्वारा शुरू किया गया था, इसके 86 वें संवैधानिक संशोधन के बाद 6-14 वर्ष की आयु से शिक्षा को प्रत्येक भारतीय बच्चे का मौलिक अधिकार बना दिया गया था। लेकिन महिलाओं के लिए निर्धारित मानदंड के अनुसार बालिका शिक्षा की स्थिति में सुधार नहीं हो रहा है।

सदरुद्दीन बहादुर कुतोशी (2018) के अध्ययन के परिणाम दिमाग को विस्तृत करते हैं, एक घटना को देखने के लिए सोचने के तरीकों में सुधार करते हैं, और यह जीवित अनुभवों के जानबूझकर अध्ययन के माध्यम से आगे देखने और शोधकर्ताओं की मुद्रा को परिभाषित करने में सक्षम बनाता है। एक दर्शन और जांच की एक विधि के रूप में घटना विज्ञान जानने के लिए एक दृष्टिकोण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह व्याख्याओं और अर्थ बनाने में एक बौद्धिक जुड़ाव है जिसका उपयोग सचेत स्तर पर मनुष्य की जीवित दुनिया को समझने के लिए किया जाता है। ऐतिहासिक रूप से, हसरल' (1913/1962)

घटना विज्ञान का परिप्रेक्ष्य घटना को देखकर मनुष्य को गहरे स्तर पर समझने का विज्ञान है। हालाँकि, व्याख्यात्मक-हेर्मेनेयुटिक घटना विज्ञान का हाइडेगेरियन दृष्टिकोण अध्ययन के तहत जीवित अनुभवों को व्यापक अर्थ देता है। इस उपागम का उपयोग करते हुए, एक शोधकर्ता जीवन के अनुभवों में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने और अर्थ बनाने के लिए व्याख्या करने के लिए घटनाओं की उपस्थिति के प्राकृतिक तरीके का वर्णन करने के लिए दी गई धारणा के रूप में ब्रैकेटिंग का उपयोग करता है। किसी विशेष स्थिति में अभिनेताओं द्वारा अनुभव की जाने वाली घटना की पहचान करने के लिए विशिष्ट अनुभव को उजागर करने के लिए डेटा संग्रह और विश्लेषण साथ-साथ होता है। हालांकि, शोध प्रतिभागी के दृष्टिकोण से इसे समझने और व्याख्या करने में व्यक्तिपरकता और व्यक्तिगत ज्ञान घटना संबंधी अध्ययनों में केंद्रीय रहा है। इस तरह के एक उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए, सामाजिक विज्ञान में घटना विज्ञान का व्यापक रूप से उपयोग किया जा सकता है।

हॉल, जोनाथन (2018) ने उन सफल महिलाओं के अनुभवों के बारे में जानें जो विज्ञान के क्षेत्र में पेशेवर हैं। तीन अर्ध-संरचित साक्षात्कारों में लगे बारह प्रतिभागी। निष्कर्षों से पता चला कि प्रतिभागियों के पास प्रामाणिक विज्ञान के अनुभवों तक पहुंच और समर्थन था। उन्होंने विज्ञान के लिए एक जुनून विकसित किया जिसे स्व-चयनित समर्थन प्रणाली द्वारा समर्थित किया गया था। कार्यस्थलों में उन्नति, जिसमें अक्सर पुरुषों का वर्चस्व था, को संगठनात्मक मानदंडों की एक परिष्कृत समझ की आवश्यकता थी। इस प्रगति के लिए रणनीतिक एजेंसी की आवश्यकता थी कि उन्होंने अपना समय और उनके द्वारा बनाए गए संबंधों को कैसे बिताया। अनुभवों में दो अंतर पाए गए जो नस्ल पर आधारित थे। नस्ल के आधार पर पहला अंतर यह था कि अश्वेत और हिस्पैनिक प्रतिभागियों ने नस्लीय और जातीय भेदभाव का अनुभव किया। दूसरा अंतर यह था कि ब्लैक और हिस्पैनिक प्रतिभागियों ने प्रत्येक साक्षात्कार में अपने काम के लिए अपने विश्वास की केंद्रीयता पर चर्चा की। ये निष्कर्ष विज्ञान समुदाय के लिए अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। विज्ञान विधियों के प्रशिक्षक सेवा-पूर्व शिक्षकों को इस बारे में शिक्षित कर सकते हैं कि कैसे प्रतिभागियों ने विज्ञान समुदायों में लिंग-आधारित चुनौतियों का सामना किया। इसके अलावा, इन महिलाओं की कहानियां समावेश और समानता को कवर करने वाले पाठों की संरचना कर

सकती हैं। उद्योग के लिए, सभी कर्मचारियों को पेशेवर मानकों का पालन करना चाहिए और सलाहकारों को उनके सलाहकारों से संबंधित होना चाहिए।

ब्रायन ई. न्यूबॉयर एट अल। (2019) ने पाया की कैसे घटना विज्ञान हमें दूसरों के अनुभवों से सीखने में मदद कर सकता है। एक शोध पद्धति के रूप में, स्वास्थ्य व्यवसाय शिक्षा (एचपीई) के विद्वानों को दूसरों के अनुभवों से सीखने में मदद करने के लिए घटना विज्ञान विशिष्ट रूप से स्थित है। फेनोमेनोलॉजी गुणात्मक शोध का एक रूप है जो दुनिया के भीतर किसी व्यक्ति के जीवित अनुभवों के अध्ययन पर केंद्रित है। हालांकि यह जांच के लिए एक शक्तिशाली दृष्टिकोण है, इस पद्धति की प्रकृति अक्सर एचपीई शोधकर्ताओं को डराती है। इस लेख का उद्देश्य घटना विज्ञान के दो प्रमुख दृष्टिकोणों के बीच प्रमुख दार्शनिक और पद्धतिगत मतभेदों की समीक्षा करके घटना विज्ञान की व्याख्या करना है: अनुवांशिक और हेर्मेनेयुटिक। घटना संबंधी अनुसंधान को सफलतापूर्वक संचालित करने के लिए इन दृष्टिकोणों को रेखांकित करने वाली औपचारिक और ज्ञानमीमांसा संबंधी मान्यताओं को समझना आवश्यक है।

किम, ई.,और एल्बेलो, जे.एल. (2020) ने पाया की विमानन उच्च शिक्षा संस्थानों में नस्ल और लिंग की समानता के लिए जागरूकता बढ़ाते हैं और उन जरूरतों और चाहतों का पता लगाते हैं जो अल्पसंख्यक महिलाओं के लिए शैक्षणिक सफलता की ओर ले जा सकती हैं। लिंग और नस्ल समानता आंदोलनों के बारे में बढ़ती जागरूकता के बावजूद, विमानन में अल्पसंख्यक महिलाओं की आज की आबादी अभी भी कम प्रतिनिधित्व करती है। यह शोध कम प्रतिनिधित्व वाली अल्पसंख्यक महिलाओं पर केंद्रित है जो विमानन क्षेत्र में अपना करियर बनाना चाहती हैं और कौन से कारक एक विशेष विमानन उच्च शिक्षा संस्थान में उनकी सफलता के स्तर को प्रभावित करते हैं। उड्डयन में अल्पसंख्यक महिलाओं के विषय और इन संस्थानों में सफलता के लिए उनके रास्ते के बारे में पर्याप्त डेटा और शोध नहीं है। इस गुणात्मक शोध का उद्देश्य विमानन में अल्पसंख्यक महिलाओं और उनकी जरूरतों से संबंधित साहित्य में मौजूदा अंतर को पाटना है और चार साल की डिग्री पूरी करना चाहता है। गुणात्मक शोध डिजाइन छह छात्रों में लाया गया जो शोधकर्ताओं द्वारा निर्धारित शर्तों द्वारा परिभाषित

अल्पसंख्यक महिला के रूप में पहचान करते हैं, और उन्हें अर्ध-संरचित साक्षात्कार प्रारूप में प्रश्नों की एक सूची पूछी गई थी। गहन साक्षात्कार से एकत्र किए गए गुणात्मक डेटा ने उन महत्वपूर्ण पहलुओं और पैटर्न की पहचान करने में मदद की जिन्हें विमानन में अल्पसंख्यक महिलाएं जरूरतों और चाहतों के रूप में पहचानती हैं जो अकादमिक सफलता की ओर ले जा सकती हैं। उड्डयन में अल्पसंख्यक महिला छात्रों की कथित जरूरतों और चाहतों के रूप में खुले संचार, दोस्ती और समुदाय, और सकारात्मक संकाय समर्थन की पहचान की गई। इन निष्कर्षों का उपयोग विमानन विशेष उच्च शिक्षा संस्थान में कम प्रतिनिधित्व वाले छात्रों की बेहतर सेवा के लिए किया जा सकता है। निष्कर्ष के रूप में, निष्कर्षों का उपयोग किसी ऐसे मुद्दे पर जागरूकता लाने के लिए किया जा सकता है जिसका व्यापक रूप से अध्ययन या शैक्षिक विमानन संस्थानों में चर्चा नहीं की जाती है।

रिजवे, लैवेंट्रिस एस., (2021) ने पोर्ट सिटी यूनिवर्सिटी के छात्र विकलांगता सेवाओं के कार्यालय के साथ एक व्यक्तिगत, एक-पर-एक अभिविन्यास के बाद विकलांग छात्रों को स्थानांतरित करने में आत्म-प्रभावकारिता और अपनेपन की भावना का पता लगाया। इस अध्ययन ने डेटा एकत्र करने के लिए एक गुणात्मक दृष्टिकोण, विशेष रूप से घटना विज्ञान को नियोजित किया। शोधकर्ता ने छात्र विकलांगता सेवाओं के कार्यालय में पंजीकृत विकलांग छात्रों के स्थानांतरण के एक उद्देश्यपूर्ण नमूने का उपयोग करके अर्ध-संरचित साक्षात्कार के माध्यम से डेटा प्राप्त किया। सात प्रतिभागियों ने आत्म-प्रभावकारिता और अपनेपन की उनकी धारणा से संबंधित व्यक्तिगत अभिविन्यास के साथ अपने अनुभव से संबंधित प्रतिक्रियाएं प्रस्तुत कीं। इसके अलावा, डेटा एक व्याख्यात्मक घटना संबंधी विश्लेषण से गुजरा। अध्ययन अन्वेषक ने व्यक्तिगत अभिविन्यास सार को उजागर करते हुए, विषयों में साक्षात्कार टेप को कम कर दिया। शोध के निष्कर्षों से पता चलता है कि प्रतिभागियों की आत्म-प्रभावकारिता और अपनेपन पर सबसे अधिक प्रभाव वाले व्यक्तिगत अभिविन्यास से संबंधित कारक सफलता के लिए तैयारी, आवास का समर्थन, आभासी बैठक विकल्प, अनुरूप दृष्टिकोण, और जानकार और आकर्षक विकलांगता सेवा प्रदाता थे।

नुचेल एल चांस (2021) ने उच्च शिक्षा वरिष्ठ नेतृत्व में अश्वेत महिलाओं के नेतृत्व विकास पर क्रूसिबल अनुभवों के प्रभाव की एक अभूतपूर्व जांच की। नेतृत्व सिद्धांत के क्रूसिबल द्वारा समर्थित, यह लेख इस बात की पड़ताल करता है कि कैसे प्रतिकूल अनुभव उच्च शिक्षा वरिष्ठ नेतृत्व में अश्वेत महिलाओं के नेतृत्व विकास को प्रभावित करते हैं। अश्वेत लोगों को लगातार प्रतिकूलताओं का सामना करना पड़ा है, जबकि अश्वेत महिलाओं ने अपनी परस्पर पहचान से उत्पन्न जटिल प्रतिकूलताओं को दूर किया है। रिपोर्ट की गई प्रतिकूल परिस्थितियों में शारीरिक, यौन और मौखिक हमला और दुर्व्यवहार, बचपन के प्रतिकूल अनुभव जैसे कि गरीबी में बड़े होना, एकल माता-पिता द्वारा पाला जाना, बदमाशी के अधीन होना, प्रियजनों को खोना, भेदभाव और स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं शामिल हैं। अश्वेत महिलाएं लचीली होती हैं, और शिक्षा प्रतिकूल परिस्थितियों में जीवन रेखा साबित हुई है, इस प्रकार नेतृत्व क्षमताओं को बढ़ावा देती है। वे प्रतिकूल क्रूसिबल अनुभवों को दूर करने के लिए ईंधन के रूप में प्रतिकूल परिस्थितियों का उपयोग करते हैं, इस प्रकार उन्हें नेतृत्व के लिए तैयार करने के लिए आवश्यक कौशल विकसित करते हैं। परिणाम आगे बताते हैं कि उच्च शिक्षा में अश्वेत महिलाओं के वरिष्ठ नेतृत्व ने महत्वपूर्ण प्रतिकूल अनुभवों का अनुभव किया जो प्रतिकूल परिस्थितियों पर काबू पाने के लिए क्रूसिबल अनुभवों के रूप में प्रकट हुए। निष्कर्ष उनके करियर को आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक नेतृत्व कौशल विकसित करने की उनकी क्षमता और उनके प्रतिकूल अनुभवों के बीच संबंध को प्रकट करते हैं।

बेकिर यिलिरिम (2021) ने पूर्वस्कूली शिक्षा पर कोविड -19 महामारी के नतीजों की जांच की और जवाब मांगा कि पूर्वस्कूली शिक्षा कैसे लागू की जाती है, किस तरह की गतिविधियां आयोजित की जाती हैं, किस तरह की चुनौतियों को दूर करने की जरूरत है, और क्या उपाय किए जाने की आवश्यकता है पूर्वस्कूली शिक्षा को बनाए रखने के लिए। नमूने में 25 प्रीस्कूल शिक्षक और 30 माता-पिता शामिल थे जिन्हें मानदंड नमूनाकरण, एक उद्देश्यपूर्ण नमूनाकरण विधि का उपयोग करके भर्ती किया गया था। अध्ययन घटना विज्ञान पर आधारित था, जो एक गुणात्मक शोध डिजाइन है। दो महीने के भीतर शैक्षिक अभ्यास करने वाले प्रतिभागियों के अर्ध-संरचित साक्षात्कार फॉर्म और वीडियो रिकॉर्ड का उपयोग करके डेटा एकत्र किया गया था। आगमनात्मक सामग्री विश्लेषण का उपयोग करके डेटा का विश्लेषण किया गया था। प्रतिभागियों ने कहा कि कोविड -19 महामारी का पूर्वस्कूली शिक्षा पर कई प्रतिकूल प्रभाव पड़ा

और उन्होंने शिक्षा को बनाए रखने के लिए कला, विज्ञान और गणित की गतिविधियों और खेलों का आयोजन किया, लेकिन इस प्रक्रिया के दौरान कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि महामारी के दौरान पूर्वस्कूली शिक्षा को बनाए रखने के उपाय किए जाने चाहिए।

सैफुल अमीन एट अल। (2022) ने इंडोनेशिया में एक ही पेसेंट्रन (इस्लामिक बोर्डिंग स्कूल) के तीन संतरी, स्नातकों की जीवन सफलता प्राप्त करने की घटना में याहानु चरित्र शक्तियों का पता लगाया। हम इस शोध को एक घटनात्मक दृष्टिकोण के साथ डिजाइन करते हैं। हमने गहन साक्षात्कार के माध्यम से डेटा एकत्र किया, फिर इसे शब्दशः एक ठोस विवरण में स्थानांतरित किया, और वर्णनात्मक-मनोवैज्ञानिक घटना विश्लेषण प्रक्रियाओं के माध्यम से इसका विश्लेषण किया। निष्कर्ष बताते हैं कि: (1) याहानु एक नैतिक चरित्र की तुलना में एक प्रदर्शन चरित्र से अधिक है; (2) पांच लक्षण जो याहानु के तत्व बनते हैं: साहस, आत्मविश्वास, प्रभावकारिता, सीखने की तत्परता, और धैर्य नेतृत्व, अग्रणी, सक्रियता और जोखिम लेने की भावना को प्रेरित करता है; और (3) चार का प्रतिच्छेदन रणनीतिक रूप से सोचने / कार्य करने, अनुकूलन करने, रचनात्मक होने और संवाद करने के कौशल को मजबूत करता है। ये निष्कर्ष आगे चरित्र शक्ति और जीवन की सफलता के बीच एक मजबूत संबंध साबित करते हैं, जो माता-पिता, शिक्षा चिकित्सकों और नीति निर्माताओं के लिए विशेष रूप से प्राथमिक और माध्यमिक स्तरों पर चरित्र शिक्षा को डिजाइन करने में सहायक है।

संदर्भ

- बुर्जुआ, पी. (1971)। फेनोमेनोलॉजी एंड द साइंसेस। रिसर्च इन फेनोमेनोलॉजी, 1, 119-136।
- स्कैच, आर। (1972)। हुसेरलियन एंड हाइडेगेरियन फेनोमेनोलॉजी। फिलोसोफिकल स्टडीज: एन इंटरनेशनल जर्नल फॉर फिलॉसोफी इन द अनलिटिक ट्रेडिशन, 23(5), 293-314।
- पैट्रिक सुलिवन (1981) सेमियोटिक फेनोमेनोलॉजी एंड पीयर्स, सेमियोटिक्स 1981 पीपी 83-93, डीओआई: 10.1007/978-1-4615-9328-7_9
- हेयिंक, जे, एंड टायमस्ट्रा, टी। (1993) द फंक्शन ऑफ़ क्वालिटेटिव रिसर्च। सोशल इंडीकेटर्स रिसर्च, 29(3), 291-305।
- ओल्डफादर, पी, एंड वेस्ट, जे। (1994) क्वालिटेटिव रिसर्च ऐज जैज़। एजुकेशनल रिसर्चर, 23(8), 22-26।
- चानाना, के. (2001)। हिन्दुइज़्म एंड फीमेल सेक्सुअलिटी: सोशल कण्ट्रोल एंड एजुकेशन ऑफ़ गर्ल्स इन इंडिया। सोशियोलॉजिकल बुलेटिन, 50(1), 37-63.
- गुप्ता, एन., एंड शर्मा, ए. (2002) वीमेन एकेडमिक साइंटिस्ट इन इंडिया। सोशल स्टडीज ऑफ़ साइंस, 32(5/6), 901-915.
- बीवर, ए (2002)। फेनोमेनोलॉजी एंड आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस। मेटाफिलॉसॉफी, 33(1/2), 70-82.
- पारिख, पी.पी. एंड सुखात्मे, एस.पी. (2004) वीमेन इंजीनियर इन इंडिया। इकोनॉमिक एंड पोलिटिकल वीकली, 39(2), 193-201.
- पिट, डी. (2004) द फेनोमेनोलॉजी ऑफ़ कॉग्निशन ओर " व्हाट इज इट लाइक टू थिंक दैट? फिलॉसफी एंड फेनोमेनोलॉजिकल रिसर्च, 69(1), 1-36।
- कैनफील्ड, जे।, एंड स्विट्जर, जे। (2005) द सक्सेस प्रिंसिपल्स (10वीं एनिवर्सरी एडिशन एजुकेशन।) न्यूयॉर्क: विलियम मोरो।

- स्क्विंटानी, एफ। (2006) मिस्टेकन सेल्फ -परसेंप्शन एक्विलिब्रियम। इकनोमिक थ्योरी, 27(3), 615-641
- क्रॉसनो, आर, रीगल-क्रंब, सी, एंड मुलर, सी। (2007) जेंडर, सेल्फ -परसेप्शन, एंड ऐकडेमिक प्रोब्लेम्स इन हाई स्कूल। सोशल प्रोब्लेम्स, 54(1), 118-138. डीओआई:10.1525/एसपी.2007.54.1.118।
- गुप्ता, एन। (2007) इंडियन वीमेन इन डॉक्टोरल एजुकेशन इन साइंस एंड इंजीनियरिंग: ए स्टडी ऑफ़ इनफॉर्मल मिलिएउ एट द रेपुटेड इंडियन इंस्टीटूशन। ऑफ़ टेक्नोलॉजी। साइंस, टेक्नोलॉजी एंड ह्यूमन वैल्यूज, 32(5), 507-533।
- रिचर्ड्स, एल. एंड मोर्स, जे.एम. (2007) रीडमे फर्स्ट फॉर ए यूज़र्स गाइड टू क्वालिटेटिव मेथोड्स। सेज पब्लिकेशंस, थाउजेंड ओक्स, ओपन जर्नल ऑफ नर्सिंग, वॉल्यूम 5 नंबर 5, 19 मई
- क्लॉट्स-फिगुएरास, इरमा, (2007) "आर फीमेल लीडर्स गुड फॉर एजुकेशन?: एविडेंस फ्रॉम इंडिया" UC3M वर्किंग पेपर। इकोनॉमिक्स वी 077342, यूनिवर्सिडैड कार्लोस III डी मैड्रिड। डिपार्टमेंट डे इकोनोमिया।
- ओवरगार्ड, एस। (2008) हाऊ टू एनालाइज इमीडियेट एक्सपीरियंस: हिंटिका, हुसरल, एंड द आइडिया ऑफ फेनोमेनोलॉजी। मेटाफिलॉसॉफी, 39(3), 282-304।
- टॉम फ्रोइस एंड टॉम ज़िमके (2009) "एनएक्टिव आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस: इन्वेस्टिगेशन द सिस्टमिक ऑर्गनाइजेशन ऑफ लाइफ एंड माइंड", आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस 173 (2009) 466-500।
- नोलन, ए, एंड टैलबर्ट, टी। (2011) क्वालिटेटिव अस्सेर्टेसन एज प्रेस्क्रिप्टिव स्टेटमेंट। एजुकेशनल साइकोलॉजी रिव्यु, 23(2), 263-271।
- पेक्स, ए। (2011)। फेनोमेनोलॉजी एंड डांस: हसरलियन मेडिटेशन। डांस रिसर्च जर्नल, 43(2), 33-49.

- क्लॉट्स-फिगुएरेस, आई। (2012)। आर फीमेल लीडर्स गुड फॉर एजुकेशन? एविडेंस फ्रॉम इंडिया। अमेरिकन इकोनॉमिक जर्नल: एप्लाइड इकोनॉमिक्स, 4(1), 212-244।
- लोरी बीमन एट अल। (2012) "फीमेल लीडरशिप राइसेस एस्पिरशन एंड एजुकेशनल अटेन्मेन्ट फॉर गर्ल्स: ए पॉलिसी एक्सपेरिमेंट इन इंडिया । 2012 फ़रवरी 3; 335 (6068): 582-586।
- थॉमस फिनगान (2012) "लेविनास फैथ्फुल्नेस टू हुस्सेरल, फेनोमेनोलॉजी, एंड गॉड", वॉल्यूम। 48, नंबर 3 (सितंबर 2012), पीपी। 281-303
- कैटरीना एडल्स-हिर्श (2015); फेनोमेनोलॉजी एंड एजुकेशनल रिसर्च इंट। एड के जे. रेस. 3 (8)। 251-260।
- अमांडा विलियमसन (2015) "ऑन डांस एंड फेनोमेनोलॉजी: एन ऐसे इंटरव्यू विथ प्रोफेसर सोंद्रा फ्रेले, यूनिवर्सिटी ऑफ़ न्यूयॉर्क ", वॉल्यूम। 2, इशू 2.
- सरोजा देवी राजेंद्रन (2016) इंडियन वूमेन एजुकेशन जनवरी 2016", कांफ्रेंस: वूमेन एम्पावरमेंट एंड ह्यूमन राइट: ट्रांसफॉर्मिंग दियर राइट : ट्रांसफॉर्मिंग दियर राइट्स इन द 21वींसेंचुरी एट: अलगप्पा अलगप्पा, कराईकुडी
- सदरुद्दीन बहादुर कुतोशी (2018) "फेनोमेनोलॉजी: ए फिलॉसफी एंड मेथड ऑफ इंक्वायरी", जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड एजुकेशनल डेवलपमेंट, वॉल्यूम। 5 नंबर 1 (जून 2018)।
- हॉल, जोनाथन (2018) "ए फेनोमेनोलॉजिकल स्टडी स्टडी ऑफ़ द एक्सपेरिएंसेस वीमेन इन साइंसेस फ़ील्ड्स" (2018)। इलेक्ट्रॉनिक थीसिस एंड दिस्सेरटेशन। 5983.
- ब्रायन ई. न्यूबॉयर एट अल। (2019) "हाउ फेनोमेनोलॉजी कैन हेल्प्स अस लर्न द एक्सपेरिएंसेस ऑफ़ अदर्स", पर्सपेक्टिव ऑन मेडिकल एजुकेशन वॉल्यूम-8, पेज- 90-97 (2019)।
- किम, ई, एंड अल्बेलो, जेएल (2020)। वुमेन इन एविएशन: ए फेनोमेनोलॉजिकल स्टडी एक्सप्लोरिंग द नीड्स एंड वांट्स नीड्सरी फॉर ग्रेजुएशन। कॉलेजिएट एविएशन रिव्यू इंटरनेशनल, वॉल्यूम -38, इशू -2।

- रिजवे, लैवेंट्रिस एस., (2021) "ए फेनोमेनोलॉजिकल स्टडी ऑफ़ परसेप्शन ऑफ़ सेल्फ-एफिशिएंसी एंड बेलोगिंग्नेस इन ट्रांसफर स्टूडेंट विथ डिसैबिलिटीज आफ्टर एन इंडिविडुअलिज़्ड ओरिएंटेशन एट ए पब्लिक यूनिवर्सिटी" (2021)।
- नुशेल एल चांस (2021) "ए फेनोमेनोलॉजिकल इन्क्वायरी इन टू द इन्फ्लुएंस ऑफ़ क्रूसिबल एक्सपेरिएंसेस ऑन द लीडरशिप डेवलपमेंट ऑफ़ ब्लैक वीमेन इन हायर एजुकेशन सीनियर लीडरशिप", वॉल्यूम 49, इशू 4, 2021, https://doi.org/10.1177/174114322 1101 9417
- बेकिर यिलिरिम (2021) "प्रीस्कूल एजुकेशन इन टर्की ड्यूरिंग द कोविड -19 पंडामिक: ए फेनोमेनोलॉजिकल स्टडी", अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन जर्नल वॉल्यूम 49, पेज 947–963 (2021)
- सैफुल अमीन एट अल। (2022) "अना याहानु फकत": ए फेनोमेनोलॉजिकल स्टडी ऑन द परफॉरमेंस करैक्टर एंड लाइफ सक्सेस", अप्रैल 2022, क्वालिटेटिव रिपोर्ट, 27(4):945-964, डीओआई:10.46743/2160-3715/2022.4916

तृतीय अध्याय

शोध क्रियाविधि

3.1 शोध क्रियाविधि

इस अध्ययन का उद्देश्य शिक्षित महिलाओं की सफलता और एक महिला होने की घटना को समझना हैं और मैं सफलता की प्रक्रिया को जानना और तलाशना चाहती थी। पुरुषों की सफलता की घटना महिलाओं से भिन्न हो सकती हैं क्योंकि पुरुषों और महिलाओं की सफलता को प्रभावित करने वाले कारक अलग-अलग होते हैं। इस शोध का उद्देश्य प्रत्येक महिला की सफलता की घटना को उसके अनुभव से उसके अपने शब्दों में समझना हैं। इस घटना को उन महिलाओं की कहानियों से बेहतर ढंग से समझा जा सकता हैं जो सोचती हैं कि वे सफल हैं। इस अध्ययन में केवल उन्हीं महिला प्रतिभागियों का चयन किया जायेगा जो जीवन के विभिन्न पहलुओं में स्वयं को सफल मानती हैं। शोधकर्ता द्वारा शिक्षित महिलाओं की सफलता के अनुसार शैक्षिक, पारिवारिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक कारकों आदि का अध्ययन किया जायेगा। इस अध्याय में वर्तमान अध्ययन की पद्धति पर चर्चा की जाएगी।

3.2 प्रक्रिया

मैंने पाया कि घटनात्मक पद्धति (हेर्मेनेयुटिक फेनोनोमेनोलॉजी) शिक्षित महिलाओं की सफलता और आत्म-धारणा की घटना का अध्ययन करने के लिए उपयुक्त हैं क्योंकि इस पद्धति में प्रतिभागियों के

जीवित अनुभवों का अध्ययन किया जायेगा। प्रतिभागियों द्वारा बोले गए विशेष शब्दों को डेटा के समृद्ध विवरण में शामिल किया जायेगा। कार्यप्रणाली ने अन्वेषक के सभी पूर्वाग्रहों और अनुमानों को बाहर करने की अनुमति दी (रोसेनफेल्ड, 2009)। इसलिए, घटना को परिभाषित करने के लिए प्रत्येक महिला के अनुभव का विश्लेषण करके उद्देश्य पूरा होगा। जीवित अनुभव ने प्रत्येक प्रतिभागी का व्यक्तिगत रूप से लिया और समग्र रूप से विश्लेषण किया जायेगा।

3.3 कार्यप्रणाली

इस शोध की यात्रा की शुरुआत उन महिलाओं से दिल से दिल की बात करने से होगी, जिन्हें लगता था कि वे सफल होंगे। यह विधि अभूतपूर्व होगी और प्रतिभागियों के वास्तविक अनुभवों को कलमबद्ध करने के लिए अध्ययन की आवश्यकता होगी। मैंने कई शिक्षित महिलाओं से बात की और सफलता पर चर्चा की हैं। उनमें से कुछ ने सोचा कि वे सफल हैं और कुछ नहीं। मैंने उन महिलाओं के साथ संबंध बनाना शुरू कर दिया हैं जो खुद को सफल मानती थीं। जिन महिलाओं को मैंने इस अध्ययन के लिए चुना हैं, उनकी सफलता पर चर्चा करते हुए उन्हें बहुत मज़ा आया। उनमें से एक ने मुझे बताया कि वह एक सेलिब्रिटी की तरह महसूस कर रही थी या जैसे उसने कुछ बहुत बड़ा हासिल किया हैं। महिलाओं ने अपनी सफलता के बारे में अपने वास्तविक अनुभव साझा किए क्योंकि उन्हें अपने जीवन के बारे में बात करते हुए वास्तव में खुशी महसूस हुई।

यहां, मैं प्रतिभागियों के सचेत अनुभव की संरचना का अध्ययन करना चाहता हूं। सजीव अनुभव का अर्थ उन अनुभवों से हैं जो प्रतिभागियों ने महसूस किया जैसे कि साक्षात्कार के समय हो रहा हैं, जिसका अर्थ हैं कि उन्होंने स्मृति लेन की यात्रा की। मैंने उन प्रतिभागियों के साथ भी सहानुभूति व्यक्त की जिन्होंने अपने वास्तविक अनुभव साझा किए। मैंने उनसे स्वाभाविक रूप से बात की हैं ताकि वे सफलता की घटना के बारे में अपना व्यक्तिगत और वास्तविक अनुभव साझा कर सकें। मैंने उनसे मुलाकात की और अनौपचारिक व्यक्तिगत तरीके से सफलता के विचार पर चर्चा की और उनके जीवन के अनुभव को कैद किया और डेटा का एक समृद्ध टुकड़ा प्राप्त किया। जिन महिलाओं को मैंने चुना हैं, उन्होंने उन अनुभवों और भावनाओं को भी साझा किया जो वे अपने पति और परिवार के सदस्यों के

साथ कभी साझा नहीं कर सकती थीं। यह वही हैं जो घटनात्मक पद्धति की आवश्यकता हैं। उनके साथ मेरा रिश्ता इतना घनिष्ठ था कि वे बिना किसी झिझक और वर्जना के मेरे सामने अपना दिल खोल सकते थे।

3.3.1 वैचारिकता

शून्य में सोचना संभव नहीं हैं। कोई वस्तु या घटना होनी चाहिए जिसके बारे में हम सोच सकें। वस्तु या घटना वास्तविक, अमूर्त या काल्पनिक हो सकती हैं और यहीं सफलता हैं। मैंने प्रतिभागियों को सफलता की घटना के बारे में जानबूझकर बनाया हैं, अर्थात उन्हें केंद्र में सफलता के बारे में सोचना हैं और फिर उन अनुभवों को साझा करना हैं। इस शोध में भी जब प्रतिभागी अपने अनुभव साझा कर रहे थे, तो वे उन घटनाओं के प्रति उदासीन थे। इसका अध्ययन घटनात्मक विधियों में किया जाता हैं। उनसे वास्तविक अनुभव प्राप्त करने के लिए अनेक अप्रत्यक्ष प्रश्न पूछे गए। प्रतिभागियों ने उन घटनाओं के बारे में सोचा जो उनकी सफलता के विचार से संबंधित हैं। उन्होंने उस समय की भावनाओं को साझा करते हुए उन पलों को ताजा किया जब घटनाएं हुईं। इसे इरादतनता कहा जाता हैं (माबाक्विओ, 2005 और स्पीयर, एन.डी.)।

3.3.2 चेतना

इस अध्ययन में, मैंने अनुभवों की सचेतन संरचना का अध्ययन किया हैं। प्रतिभागियों द्वारा साझा किए गए अनुभव उनकी चेतना में थे। उन्हें घटना के समय के रूप में सचेत रहने की सुविधा दी गई थी। किसी को एक समय में एक बात के बारे में जागरूक करना आसान नहीं हैं, लेकिन मैंने उनके विशद अनुभव को सचेत रूप से प्राप्त करने के लिए प्रश्नों को यथासंभव घटनात्मक बनाने की कोशिश की हैं। प्रतिभागियों को अध्ययन की जाने वाली घटना के बारे में अपने विचार बनाने के लिए जागरूक किया गया। सफलता से संबंधित भावनाओं को साझा करते हुए महिलाएं उस घटना के बारे में जागरूक थीं जो वे अपनी सफलता की कहानी के रूप में साझा कर रही थीं। शोध की प्रक्रिया में मैंने उनके द्वारा साझा की जाने वाली प्रत्येक घटना के बारे में उन्हें जागरूक करने का प्रयास किया हैं।

शिक्षित महिलाओं की सफलता की घटना से संबंधित कई अनुभव थे, जैसे, सफलता का विचार या सफलता का अर्थ, उनकी सफलता को प्रभावित करने वाले कारक और उनकी सबसे बड़ी सफलता आदि। इस तरह मैंने उनसे सफलता के परिणाम पर बातचीत की। चेतना एक कंटेनर की तरह हैं जिसमें से विचार या विचार न तो भागते हैं और न ही अंदर आते हैं। इसका अर्थ हैं कि जब प्रतिभागी किसी एक चीज के अनुभव साझा कर रहे थे चाहे वह वास्तविक हो या काल्पनिक, वे उस चीज या घटना के बारे में सचेत थे। उस समय उन्होंने उन खास चीजों के बारे में सोचा और कुछ नहीं। यह चेतना का शुद्ध रूप हैं जिसका अध्ययन केवल घटनात्मक पद्धति में ही किया जा सकता हैं। हसरल ने इसे चेतना का निरपेक्ष रूप कहा (लासिक, 2019)। उन घटनाओं के प्रति जागरूक होकर उन्होंने मेरे साथ साझा किया और अपने अनुभवों को जीवंत किया। यह घटनात्मक शोध का एक विशिष्ट गुण हैं।

3.3.3 ब्रैकेटिंग / युग

जैसे गणित में, कोष्ठक में संख्याओं को कोष्ठक के बाहर के अंकों को छोड़ दिया जाता हैं, वैसे ही इस शोध में मैंने घटना के अनुभवों से खुद को अलग कर लिया हैं। शोध की प्रक्रिया में, मैंने केवल प्रतिभागियों के अनुभवों और अध्ययन की घटना के बारे में सोचा हैं और अन्य सभी चीजों के अस्तित्व को बाहर कर दिया हैं। मैंने प्रतिभागियों से डेटा निर्माण की प्रक्रिया में सफलता की घटना के बारे में सभी प्रकार के ज्ञान और पूर्व धारणाओं से खुद को दूर कर लिया। मैंने सफलता के विचार के बारे में अपने सभी अनुभव, भावनाओं को लिखा हैं और उन अनुभवों को एक तरफ रख दिया हैं, जबकि पूरी शोध प्रक्रिया चल रही थी मैंने खुद को प्रशिक्षित किया कि प्रतिभागियों के विचारों को लिखते समय अपने अनुभवों को उनके साथ न मिलाएं। घटनात्मक शोध करते समय पूर्वधारणा-रहित होना आवश्यक हैं। मैंने शोध के दौरान सफलता की घटना के बारे में सभी पूर्वाग्रहों और सैद्धांतिक पूर्वाग्रहों से खुद को मुक्त कर लिया हैं। हसरल के विचार में यह प्रक्रिया ब्रैकेटिंग हैं (बेयर, 2016)।

3.3.4 जीवन-संसार

जीवन अनुभवों से भरा हैं जो किसी की भी दुनिया बना देता हैं। इसे जीवन-संसार के रूप में जाना जाता हैं। प्रतिभागियों को सफलता की घटना के बारे में अपने जीवन-संसार के अनुभवों को साझा

करने के लिए कहा गया था जो उन्होंने महसूस किया था। उन्होंने सफलता के विचार के बारे में अनुभवों के अपने व्यक्तिगत, सामाजिक, अनुभवजन्य और अवधारणात्मक आयामों को साझा किया। शोधकर्ता ने साक्षात्कार-मार्गदर्शिका को इस प्रकार तैयार किया कि वह प्रतिभागियों के जीवन जगत से अनुभवों के सभी पहलुओं को प्राप्त कर सके साथ ही यह ध्यान में रखते हुए कि प्रश्न घटनात्मक भी थे (सैम्पोलो, द एडिटर्स ऑफ एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका, 2019)।

3.4 गुणात्मक शोध की प्रमुख विशेषताएं

किसी भी गुणात्मक शोध की प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार हैं-

3.4.1 आकस्मिक शोध डिजाइन

अध्ययन का उद्देश्य चयनित कार्यप्रणाली और डिजाइन को नेविगेट करना हैं। इस शोध प्रारूप में प्रत्येक महिला ने सफलता का अपना अनुभव बताया। उनकी सफलता पर परिवार, वित्तीय स्थिति, सामाजिक और सांस्कृतिक कारकों के प्रभाव का अध्ययन किया जायेगा। अपने अनुभव की खोज करते हुए प्रतिभागियों ने अपनी सफलता के विभिन्न आयामों का खुलासा किया, उन्होंने संघर्ष और इसे प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों को भी बताया। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों के अनुभव के वास्तविक सार को समझना हैं।

गुणात्मक शोध डिजाइन की प्रकृति उभरती हैं, इसका मतलब हैं कि शोध की आवश्यकता के अनुसार प्रक्रिया को बदल दिया जायेगा। प्रश्न, डेटा निर्माण की विधि और जिन स्थानों का दौरा किया जायेगा, उन्हें जब और जहां आवश्यक हो, संशोधित किया जायेगा। इस प्रकार, यह डिजाइन किसी भी गुणात्मक शोध के रूप में लचीला हैं, इसलिए इसे आकस्मिक डिजाइन (क्रेसवेल, 2013) कहा जाता हैं। इस तरह के शोध में, शोधकर्ता ने प्रतिभागियों के साथ उनके अनुभवों को गहराई से समझने के लिए एक से एक संबंध विकसित किया जायेगा।

3.4.2 प्राकृतिक सेटिंग

मैंने प्राकृतिक वातावरण में अध्ययन किया हैं। कोई कृत्रिमता नहीं हैं क्योंकि प्रतिभागियों के सचेत अनुभवों को शोधकर्ता द्वारा दिल से दिल की बातचीत में शामिल किया गया था जहां प्रतिभागियों को कोई खतरा महसूस नहीं हुआ था। साक्षात्कार एक शांत जगह पर लिए गए ताकि कोई और प्रक्रिया को बाधित न कर सके।

3.4.3 मानव उपकरण

मैं डेटा के निर्माण के लिए एक प्रमुख साधन के रूप में था क्योंकि इसे साक्षात्कार गाइड के माध्यम से गहन साक्षात्कार द्वारा लिया गया था। घटना को बेहतर ढंग से समझने के लिए जहां कहीं भी किसी प्रतिभागी के लिए पूरक प्रश्न पूछना आवश्यक था, वह शोधकर्ता द्वारा पूछा गया था। प्रतिभागियों से वास्तविक और जीवंत अनुभव प्राप्त करने के लिए शोधकर्ता द्वारा एक घनिष्ठ संबंध स्थापित किया गया था।

3.4.4 एकाधिक विधियाँ

डेटा निर्माण के लिए कई विधियों का भी शोधकर्ता द्वारा उपयोग किया गया हैं क्योंकि कुछ विधियाँ कुछ प्रतिभागियों के लिए उपयोगी थीं और दूसरों के लिए उपयोगी नहीं थीं। कभी-कभी प्रतिभागी बहुत निश्चित नहीं होते थे और कुछ प्रश्नों के उत्तर देने के लिए समय की आवश्यकता होती थी इसलिए मैंने उन्हें उस अनुभव के बारे में सोचने के लिए समय दिया हैं। मैंने उनसे कहा कि वे अपने अनुभव कागज पर या किसी अन्य माध्यम से जैसे मेल या सोशल मीडिया संदेशों के माध्यम से जब भी उनकी चेतना में आए, लिखें।

3.4.5 आगमनात्मक और निगमनात्मक तर्क

मैंने डेटा का विश्लेषण करते समय आगमनात्मक और निगमनात्मक तर्क के माध्यम से जटिल तर्क का उपयोग किया हैं और निगमनात्मक तर्क का उपयोग करके, विषय सामने आए हैं।

3.4.6 प्रतिभागियों पर ध्यान दें एकाधिक विचार

मैंने डेटा का विश्लेषण करते समय प्रतिभागियों के दृष्टिकोण, अर्थ और उनके कई व्यक्तिपरक विचारों पर ध्यान केंद्रित किया हैं। घटनात्मक पद्धति में, प्रतिभागियों के जीवित अनुभव उन विषयों के स्रोत थे जो इससे उत्पन्न हुए थे।

3.4.7 चिंतनशील और व्याख्यात्मक प्रकृति

घटनात्मक पद्धति की प्रकृति चिंतनशील और व्याख्यात्मक हैं। जैसा कि प्रतिभागियों के वास्तविक जीवित अनुभवों की संरचना शब्दशः प्रतिलेखों में परिलक्षित होती हैं। सफलता की घटना का पता लगाने के लिए, मैंने प्रतिभागियों के अनुभवों की व्याख्या की हैं ताकि उसका सार पता चल सके।

3.4.8 समग्र चित्र

यह शोध घटना की एक समग्र, जटिल तस्वीर प्रस्तुत करता हैं। डेटा प्रतिभागियों के साथ व्यक्तिगत रूप से तैयार किया जायेगा लेकिन सफलता की घटना की समग्र तस्वीर का वर्णन करने के लिए सामूहिक रूप से विश्लेषण किया जायेगा।

3.5 डेटा जनरेशन उपकरण (साक्षात्कार गाइड)

गुणात्मक शोध के लिए डेटा निर्माण के लिए एक बहुत ही सामान्य उपकरण साक्षात्कार हैं जिसका उपयोग प्रतिभागियों के गहन अनुभवों को घटना को समझने के लिए किया जायेगा। प्रतिभागियों से प्रतिक्रियाएँ प्राप्त करने के लिए यहाँ एक स्व-निर्मित साक्षात्कार-निर्देशिका का उपयोग किया जायेगा। साक्षात्कार-निर्देशिका के प्रश्न शोध प्रश्नों पर आधारित होंगे। जहाँ भी आवश्यक हो, प्रतिभागियों से उनके अनुभवों का पूरा विवरण प्राप्त करने के लिए पूरक प्रश्न पूछे जाएँगे।

3.6 नमूनाकरण

इस शोध-प्रबन्ध की आवश्यकता को पूरा करने के लिए मेरे द्वारा यहाँ उद्देश्यपूर्ण निदर्शन का प्रयोग किया जायेगा। प्रतिभागियों का चयन करने के लिए मानदंड थे a) सभी प्रतिभागी महिलाएं होंगी।

b) सभी प्रतिभागी शिक्षित होंगी अर्थात वे किसी भी क्षेत्र में कम से कम स्नातक होंगी। ग) सभी चयनित प्रतिभागियों ने सोचा कि वे अपनी राय में सफल होंगी। उन प्रतिभागियों की पहचान करना बहुत मुश्किल होंगी जो सोचते होंगे कि वे सफल हैं लेकिन मैंने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों की कई शिक्षित महिलाओं से बात की हैं और अंत में उन महिलाओं को मिला हैं जो अपनी राय में सफल रही हैं-

- एक गृहिणी
- एक अध्यापक
- एक डॉक्टर
- एक वैज्ञानिक
- एक व्यवसायी महिला

व्यक्तियों के जीवित अनुभव के विस्तृत विवरण के लिए नमूना पांच महिलाओं तक सीमित होगी।

3.6.1 पायलट परीक्षण

किसी भी शोध को करने के लिए, एक पायलट अध्ययन के लिए जाना हमेशा बेहतर होता हैं। इस प्रकार के शोध के लिए स्वघोषित सफल महिला का प्रायोगिक अध्ययन भी किया जायेगा। प्रायोगिक अध्ययन विश्वविद्यालय के एक सहायक प्रोफेसर पर किया जायेगा, जबकि इसे संचालित करते हुए शोधकर्ता को विधि, प्रक्रिया और उपकरणों में आगे के शोध के लिए कुछ अंतर्दृष्टि मिली। प्रश्नों को तैयार किया जायेगा, फिर से तैयार किया जायेगा, संशोधित किया जायेगा और आवश्यक होने पर अनुक्रम को बदल दिया जायेगा। पायलट साक्षात्कारों की प्रतिक्रियाओं को शोध अध्ययन से बाहर कर दिया जायेगा।

3.7 डेटा जनरेशन की वास्तविक प्रक्रिया

इस शोध में , प्रतिभागियों के साक्षात्कार और अवलोकन द्वारा डेटा उत्पन्न किया गया है। साक्षात्कार व्यक्तिगत रूप से लिए गए थे। यह ध्यान में रखा गया कि साक्षात्कार के समय प्रतिभागियों को

आराम दिया गया था। प्रतिभागियों का फिर से दौरा किया और उनका साक्षात्कार लिया। बार-बार साक्षात्कार लिए गए और जो भी और जब भी आवश्यक पाया गया, पूरक प्रश्न पूछे गए।

3.8 डेटा विश्लेषण

गुणात्मक शोध में, शोधकर्ता की एक बहुत ही अनिवार्य भूमिका होती है (क्रेसवेल, 2013)। एक महिला होने के नाते मेरे लिए प्रतिभागियों का गहन साक्षात्कार करना आसान था।

डेटा निर्माण की प्रक्रिया के दौरान गुणात्मक अध्ययनों में डेटा का एक साथ विश्लेषण किया जायेगा। गुणात्मक डेटा के विश्लेषण से डेटा के भीतर मौजूद थीम और पैटर्न का उदय होता है। डेनज़िन और लिंकन (1994) ने देखा कि किसी घटना का विश्लेषण "यह जाँचने का अवसर है कि मनुष्य कैसे निर्माण करता है और अपने कार्यों को अर्थ देता है" (रोसेनफेल्ड, 2009)।

डेटा का गुणात्मक रूप से विश्लेषण किया गया था क्योंकि विधि घटनात्मक थी और शब्दशः लिपियों को महत्वपूर्ण बयानों में घटा दिया था जैसा कि मुस्तकास (1994) द्वारा सुझाया गया है। शिक्षित महिलाओं की सफलता पर शिक्षा , परिवार, समाज, संस्कृति आदि के प्रभाव का विश्लेषण किया गया। मेरे द्वारा प्रतिभागियों के अनुभवों का गहराई से विश्लेषण करके प्रक्रिया शुरू की गई थी। सबसे पहले , मैंने अपने अनुभव को अध्ययन की गई घटना (क्रेसवेल, 2013) की ओर रखे।

इतनी सारी समानताएँ थीं कि -हर महिला की कहानी अनोखी थी। हालांकि प्रतिभागियों को जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से चुना गया , लेकिन महिलाओं के अनुभवों से कुछ सामान्य विचार , स्थितियां और प्रतिक्रियाएं सामने आईं। प्रत्येक महिला के संयुक्त अनुभव ने सफलता की घटना की एक तस्वीर तैयार थी। यह अध्ययन प्रतिभागियों के व्यक्तिगत अनुभवों पर केंद्रित है जबकि डेटा का सामूहिक रूप से विश्लेषण किया गया है।

3.9 कार्यप्रणाली सीमा

अध्ययन का विविध स्वरूप कभी-कभी गुणात्मक अध्ययन को कमजोर कर देता है। हालांकि अध्ययन के प्रत्येक चरण के लिए नियोजित तरीके ईमानदार थे लेकिन आंतरिक सीमाएं अभी भी मौजूद थीं, खासकर जब डेटा निर्माण और विश्लेषण के लिए प्राथमिक उपकरण स्वयं शोधकर्ता था (क्रेसवेल, 2013)।

3.10 डेटा का सत्यापन

डेटा का सत्यापन किसके माध्यम से किया जायेगा-

1. सटीकता के लिए रिकॉर्ड किए गए डेटा की कई बार जाँच करना,
2. इंटोनेशन, गति और प्रवर्धन जैसे प्रतिभागी मुखर संकेतों की पहचान करने के लिए रिकॉर्ड किए गए डेटा की जाँच करना,
3. साक्षात्कार के दौरान लिए गए नोट्स की जाँच करना, और
4. प्रतिभागियों की समीक्षा सटीकता के लिए साक्षात्कार टेप पर ली गई (रोसेनफेल्ड, 2009)।

आंकड़ों के सत्यापन के बाद विश्लेषण की प्रक्रिया शुरू की गई। साक्षात्कारों की ऑडियो रिकॉर्डिंग मेरे द्वारा कई बार सुनी गई और मेरे द्वारा शब्दशः ट्रांसक्रिप्ट में बदल दी गई।

3.11 शोध प्रश्न कैसे घटनात्मक हैं: (वर्थिंगटन, एन.डी.)

1. शिक्षित महिलाओं की सफलता का क्या विचार है?

उपरोक्त प्रश्न में घटना 'सफलता का विचार' है।

2. शिक्षित महिलाओं के लिए सफलता क्या है?

उपरोक्त प्रश्न में घटना सफलता के घटकों को खोजने की है।

3. क्या शिक्षित महिलाएं सोचती हैं कि वे सफल हैं?

उपरोक्त प्रश्न में घटना महिलाओं की सफलता के बारे में निर्णय है।

4. शिक्षित महिलाएं सफल होने का अनुभव कैसे करती हैं?

उपरोक्त प्रश्न में घटना महिलाओं के सफल होने का अनुभव है।

5. शिक्षित महिलाएं अपनी सफलता को कैसे देखती हैं?

उपरोक्त प्रश्न में घटना सफलता के बारे में महिलाओं की धारणा है।

6. शिक्षित महिलाओं की सफलता को प्रभावित करने वाले कारक कौन से हैं?

उपरोक्त प्रश्न में घटना सफलता पर कारकों का प्रभाव है।

7. सफल होने में शिक्षा की क्या भूमिका है?

उपरोक्त प्रश्न में घटना सफलता में शिक्षा की भूमिका है।

8. शिक्षित महिलाओं की 'आत्म-धारणा' का क्या विचार है?

उपरोक्त प्रश्न में घटना आत्म-धारणा है।

9. शिक्षित महिलाओं की सफलता को प्रभावित करने वाले सांस्कृतिक और सामाजिक कारक कौन से हैं?

उपरोक्त प्रश्न में घटना सफलता पर सांस्कृतिक और सामाजिक कारकों का प्रभाव है।

10. सफल होने में परिवार की क्या भूमिका है?

उपरोक्त प्रश्न में घटना सफलता में परिवार की भूमिका है।

11. शिक्षित महिलाओं की सफलता को प्रभावित करने वाले पारिवारिक कारक कौन से हैं?

उपरोक्त प्रश्न में घटना सफलता पर पारिवारिक कारकों का प्रभाव है।

संदर्भ

1. रोसेनफेल्ड, ई.जी. (2009) द एसेंट ऑफ़ वीमेन टू सीनियर लीडरशिप पोजीशन इन द फाइनेंसियल सर्विसेज इंडस्ट्री: ए फेनोमेनोलॉजिकल स्टडी (डॉक्टोरल डिसर्टेशन).
2. माबाक्विओ, नेपोलियन जूनियर एम। (2005)। हसरल थ्योरी ऑफ़ इन्टेंशनलिटी। https://philpapers.org/archive/MABHTO.pdf
3. लासिक, के। (2019)। हुसरल: कॉन्ससियसनेस्स https://philpapers .org/browse/husserl-consciousness
4. बेयर, सी। (2016)। "एडमंड हुसरल", द स्टैनफोर्ड इनसाइक्लोपीडिया ऑफ फिलॉसफी। https://plato.stanford.edu/entries/husserl/
5. सम्पाओलो, एम., द एडिटर्स ऑफ एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका। (2019)। जीवन-संसार। https://www.britannica.com/topic/life-world
6. क्रेसवेल, जे.डब्ल्यू. (2013) क्वालिटेटिव इन्क्वायरी एंड रिसर्च डिज़ाइन। नई दिल्ली: सेज पब्लिकेशन्स।

चतुर्थ अध्याय

समंक व्याख्या

4.1 परिचय

इस अध्ययन का उद्देश्य उन शिक्षित महिलाओं के अनुभव का पता लगाना हैं जिन्होंने सोचा था कि वे सफल हैं। प्रतिभागियों को शिक्षित किया जाता हैं और विभिन्न क्षेत्रों से लिया जाता हैं। इस अध्ययन ने शिक्षित महिलाओं की सफलता की परिघटना का खुलासा किया और उनके स्व उनकी सफलता के बारे में धारणा का अर्थ हैं कि वे अपनी सफलता को कैसे देखते हैं। विभिन्न शिक्षित महिलाओं की सफलता को प्रभावित करने वाले कारकों का भी अध्ययन किया गया। का उपयोग करके फेनोमेनोलॉजिकल मेथड (क्रेसवेल, 2013; मुस्तकास, 1994) प्रत्येक के अनुभव प्रतिभागियों को आमने-सामने साक्षात्कार/टेलीफोनिक साक्षात्कार द्वारा लिया गया और ये ऑडियो रिकॉर्डर में प्रतिभागियों की अनुमति से साक्षात्कार रिकॉर्ड किए गए थे। प्रत्येक प्रतिभागी की कहानी को व्यक्तिगत रूप से लिया गया था लेकिन सामूहिक रूप से विश्लेषण किया गया था घटना के बारे में और सार निकालने के लिए उनके जीवित अनुभव को समझें घटना का (क्रेसवेल, 2013; मुस्तकास, 1994)। शोध के जवाब इस अध्ययन के लिए प्रश्न खोजे गए लेकिन शोध प्रश्न सीधे नहीं पूछे गए प्रतिभागियों; प्रत्येक शोध प्रश्न के लिए कर्ड अप्रत्यक्ष प्रश्न किए गए थे पहले अध्याय में शोध प्रश्नों का उल्लेख किया गया था)।

अध्ययन का यह खंड डेटा संग्रह प्रक्रिया, विश्लेषण और से संबंधित हैं

निम्नलिखित बिंदुओं सहित डेटा के परिणाम

1. थीम उभरी / अर्थ इकाइयाँ
2. शब्दश: प्रतिलेख
3. महत्वपूर्ण बयान निकाले गए
4. व्यक्तिगत बनावट विवरण

5. समग्र बनावट-संरचनात्मक विवरण

सभी प्रतिभागियों के नाम उनकी पहचान और छठद्म नाम छिपाने के लिए बदल दिए गए थे इस्तेमाल किया गया।

4.1 घटना के बारे में शोधकर्ता का अनुभव (ब्रैकेटिंग)

मैंने घटना के बारे में अपना अनुभव लिखा हैं क्योंकि कार्यप्रणाली इस अध्ययन में प्रयुक्त घटना विज्ञान (क्रेसवेल, 2013) हैं और यह मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण था मेरे पिछले ज्ञान, विश्वासों, विचारों, मूल्यों को दूर रखकर खुद को ब्रैकेट में रखने के लिए और प्रतिभागियों की दुनिया से खुद को अलग कर लिया। मैंने सोचा कि मैं सफल हूँ लेकिन सफलता के सभी पहलुओं में नहीं। कुछ के मेरी सफलता के आयाम अभी पूरे नहीं हुए हैं। मेरे विचार से सफलता एक यात्रा हैं, यह अंत नहीं हैं। सफलता एक बिंदु नहीं हैं बल्कि यह एक सतत प्रक्रिया हैं। वहाँ कई हैं सफलता के आयाम जैसे स्वास्थ्य, पढ़ाई, करियर, परिवार, जीवन-साथी, बच्चे, पेशा, वित्त, प्रतिष्ठा/सामाजिक स्थिति, प्रसिद्धि, आदि। सफलता समय-समय पर भिन्न हो सकती हैं प्राथमिकताओं के अनुसार समय मैंने अपने जीवन में बहुत संघर्ष किया और इसलिए मैंने फैसला किया सफलता की घटना की खोज करें ताकि व्यक्तिगत अनुभवों का पता लगाया जा सके। मैंने सोचा कि अगर जीवन-साथी मेरी पसंद का हैं तो यह एक महत्वपूर्ण सफलता हैं। मैं शादी कर ली मेरी पसंद के व्यक्ति के लिए और यह मेरे लिए एक बड़ी सफलता थी। शादी के लिए, मैंने लड़ाई लड़ी रूढ़िवादी समाज और अंत में सफल हुआ। शिक्षा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं किसी व्यक्ति का दृष्टिकोण और हर चीज की धारणा बनाने के लिए व्यक्ति की सफलता। मैं एक भावुक व्यक्ति हूँ। मैंने पहले कभी अपने जीवन का लक्ष्य नहीं बनाया। मैं एक परिवार से ताल्लुक रखता हूँ जो मध्य सामाजिक-आर्थिक स्थिति के अंतर्गत आता हैं। करियर का फैसला 115 . ने किया था माता-पिता जो डॉक्टर बनने वाले थे, लेकिन मैं उसमें सफल नहीं हुआ था। इन अप के साथ और डाउन्स, मैंने पढ़ाई के लिए कभी भी प्रयास नहीं छोड़ा हैं। करियर का दूसरा विकल्प भी थाMमेरे माता-पिता ने सुझाव दिया कि पेशा पढ़ाना था और अब मैं इसका आनंद ले रहा हूँ। कब मुझे एक स्कूल में स्नातकोत्तर शिक्षक के रूप में करियर का पहला ब्रेक मिला, मुझे सुखद अनुभूति हुई पढ़ाने के दौरान अनुभव। इस बार मुझे एहसास हुआ कि मैं

खुद को गहराई से तलाश रहा हूँ पढ़ाते और छात्रों के साथ बातचीत करते समय मेरे दिल की। उसी समय, मैंने भी पाया कि स्वतंत्र होना बहुत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि जीवन में पैसा ही सब कुछ नहीं हैं बल्कि यह हैं शारीरिक रचना व्यक्ति के जीवन को बहुत प्रभावित करता हैं। अब मैं क्षेत्र में अपनी सातवीं नौकरी का आनंद ले रहा हूँ शिक्षण की और सात नौकरियों में तीसरी सरकारी नौकरी। वहाँ कई हैं मेरी सफलता को प्रभावित करने वाले कारक जैसे शिक्षित परिवार, वित्तीय स्थिति, समाज, स्कूली शिक्षा, आदि। मेरे परिवार के सदस्य अच्छी तरह से शिक्षित हैं और उन्होंने हमेशा मुझे प्रोत्साहित किया पढ़ाई के लिए। उन्होंने हमेशा उच्च अध्ययन के लिए मेरा समर्थन किया। मैं वास्तव में शिक्षित होना चाहता हूँ न केवल डिग्री प्राप्त करने की भावना। मैं दुनिया को कुछ देना चाहता हूँ जिसके लिए मैं आया हूँ इस धरती पर। जैसे-जैसे जीवन आगे बढ़ता हैं, मैं नए लक्ष्य तय करना चाहता हूँ और उसे हासिल करने की कोशिश करता हूँ। मैं खुद को ज्यादा से ज्यादा एक्सप्लोर करना चाहता हूँ और समाज की सेवा करना चाहता हूँ। यह मेरी यात्रा हैं सफलता। मुझे भगवान में दृढ़ विश्वास हैं और कड़ी मेहनत जो मैं निश्चित रूप से हासिल करूंगा मैं जीवन में जो कुछ भी चाहता हूँ। मेरे जिंदा रहने तक कामयाबी का ये सफर कभी नहीं रुकेगा।

4.2 डेटा जनरेशन और प्रतिभागियों के साक्षात्कार

पिछले अध्याय (यानी पैंतरेबाज़ी) में इसकी पहचान करने के लिए पहले से ही उल्लेख किया गया हैं प्रतिभागियों और डेटा जनरेशन उद्देश्यपूर्ण नमूनाकरण (क्रेसवेल, 2013) का उपयोग किया गया था। सफलता के बारे में उनकी धारणा पर चर्चा करके प्रतिभागियों की पहचान की गई कि यदि वे सोचा कि वे सफल थे? और दूसरी कसौटी यह थी कि प्रत्येक प्रतिभागी का शिक्षा कम से कम स्नातक थी। प्रतिभागी के विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित थे जीवन। मैंने कई शिक्षित महिलाओं से बात की हैं और उनकी धारणा के बारे में पूछा हैं सफलता मिली और उनमें से कुछ को उनकी राय में सफल पाया। चौथी महिलाट परीक्षण के बाद, 1 उनमें से पांच को उठाया जो मानते हैं कि वे सफल थे। कभी-कभी, मैंने चेहरे पर चर्चा की सामना करने के लिए और कभी-कभी टेलीफोन पर। तब से मैंने इंटरव्यू के लिए समय निकाला हैं उन्हें। प्रतिभागियों को आमने-सामने साक्षात्कार और कुछ बातचीत भी दी गई फोन और सोशल मीडिया संदेशों पर किया था। प्रतिभागियों के साक्षात्कार वॉयस रिकॉर्डर / कॉल रिकॉर्डर द्वारा मलटीमीडिया मोबाइल में उनके साथ रिकॉर्ड किए गए थे अनुमति। डेटा जनवरी 2019 से मई 2019 तक

उत्पन्न किया गया था। कई में से सफल महिलाएं, मैंने उचित डेटा लेने के लिए उनमें से केवल पांच से संपर्क किया हैं। मेरे पास उन महिलाओं का चयन किया जिनके साथ संबंध पहले से ही स्थापित थे और कुछ के साथ उनमें से, मैंने साक्षात्कार लेने से पहले निकटता विकसित की। प्रतिभागी से संबंधित हैं भारत का उत्तर प्रदेश राज्य, जबकि उनमें से कुछ उत्तर प्रदेश के बाहर रहते हैं जैसे कि नई दिल्ली और भारत के बेंगलुरु शहर लेकिन उन सभी की परवरिश में हुई हैं उत्तर प्रदेश राज्य में किया गया हैं।

एक महिला पर एक चौथी महिलाट अध्ययन किया गया जिसने सोचा कि वह सफल हैं। इस चौथी महिलाट परीक्षण ने अर्ध-संरचित साक्षात्कार मार्गदर्शिका को मान्य करने की अनुमति दी और यह भी अन्वेषक के व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों को समाप्त करने की अनुमति दी (मौस्ताकास, 1994)। ब्रैकेटिंग ने अन्वेषक को प्रतिभागियों के अनुभव में हस्तक्षेप नहीं करने की अनुमति दी। चौथी महिलाट परीक्षण के बाद, साक्षात्कार गाइड में कुछ मामूली बदलाव किए गए थे (परिशिष्ट ए)। इसे अन्य प्रतिभागियों के लिए वैसे ही लागू किया गया था और क्योंकि इसमें हैं ओपन एंडेड प्रश्न हो सकते हैं कुछ पूरक प्रश्न पूछे गए थे जिन प्रतिभागियों ने अपने अनुभव का पता लगाने में कठिनाई महसूस की, अन्यथा, यह वही था सभी प्रतिभागियों के लिए।

इस अध्ययन का उद्देश्य पांच शिक्षित महिलाओं के अनुभव का पता लगाना हैं जिन्होंने सोचा कि वे सफल हैं और घटना के बारे में उनकी आत्म-धारणा सफलता की। इस शोध में घटना विज्ञान को एक विधि के रूप में इस्तेमाल किया गया हैं और इसमें समय लगता हैं। वह था घटना के बारे में प्रतिभागियों के जीवंत अनुभव को प्राप्त करना बहुत कठिन हैं और उनकी आत्म-धारणा। जून 2019 तक सभी 5 प्रतिभागियों के साक्षात्कार पूरे हो गए थे ताकि क्रेसवेल (2013) द्वारा प्रदर्शित किए गए संतृप्ति स्तर तक पहुंचा जा सके और मुस्तकास (1994)।

मैंने सभी साक्षात्कार व्यक्तिगत रूप से आयोजित किए हैं और व्यक्तिगत रूप से थे। सब प्रतिभागियों की सुविधा के अनुसार एक निजी कमरे में साक्षात्कार लिए गए यह आमने-सामने या टेलीफोन पर चर्चा थी। एक बात का भी ध्यान रखा हैं कि साक्षात्कार के समय प्रतिभागियों का मूड शांत

हो ताकि अमीरों जीवन के अनुभव को कैद किया जा सकता हैं। आयोजित प्रत्येक साक्षात्कार लगभग से था प्रतिभागियों के अपने अनुभवों के स्पष्टीकरण के अनुसार एक घंटे से दो घंटे तक। शोध के लिए साक्षात्कार रिकॉर्ड करने के लिए प्रतिभागियों से अनुमति ली गई थी

प्रयोजन। सावधानियां बरती गईं कि प्रतिभागियों का मूल अनुभव था पता लगाया।

4.3 डेटा का विश्लेषण और प्रस्तुति

मैंने एपोचे (मौस्ताकास, 1994) के प्रयोग के साथ अध्ययन शुरू किया | मैंने खुद को से ब्रैकेट किया हैं अध्ययन की घटना के बारे में सभी पूर्वाग्रहों और अनुमानों का मतलब हैं कि मेरे पास हैं घटना के बारे में अपने सभी अनुभवों और विश्वासों को छोड़ दिया ताकि यह प्रतिभागियों के अनुभवों की व्याख्या को प्रभावित न करें (क्रेसवेल, 2013; हुसेरल, 1977) । डेटा को ट्रांसक्रिप्ट करने के लिए, मैंने कई बार साक्षात्कार सुने हैं और यह एक बार में संपूर्ण ट्रांसक्रिप्शन को दृष्टिगत रूप से पढ़कर विश्लेषण को आसान बना दिया। यह भी था मेरे लिए बहुत सुविधाजनक हैं कि जब आवश्यक हो तो मैं इसे निकालने के लिए बार-बार पढ़ सकता हूँ प्रतिभागियों के वास्तविक अनुभव। के लिए कई सॉफ्टवेयर उपलब्ध हैं लिखित डेटा का भंडारण, कोडिंग और विश्लेषण, उदाहरण के लिए, ATLAS.ti, मैक्सक्यूडीए, एनवीवो और हाइपररिसर्च (क्रेसवेल, 2013)। लेकिन मैंने सोचा था कि वहाँ विश्लेषण के लिए सॉफ़्टवेयर की कोई आवश्यकता नहीं हैं क्योंकि इस शोध का नमूना बहुत छोटा हैं यानी पांच महिलाओं का चयन किया गया। इसलिए इस अध्ययन में, मैंने मैन्युअल रूप से ट्रांसक्रिप्शन और विश्लेषण किया अपने आप से । ट्रांसक्रिप्शन करने के बाद मैंने डेटा के मेमो और कोड लिखे हैं। उसके बाद साक्षात्कार प्रतिलेखन से महत्वपूर्ण बयानों की पहचान की गई ताकि घटना का सार निकाला जा सकता हैं और इसे क्षैतिजीकरण कहा जाता हैं आंकड़े का। विशिष्ट कथनों की पहचान की गई और उन्हें कोडित किया गया और फिर अर्थ में समूहीकृत किया गया इकाइयों और इनकी सहायता से चौदह विषयों की पहचान की गई। अर्थ इकाइयों और प्रतिभागियों के अनुभव के वास्तविक सार को निचोड़ने के लिए कोड डिस्टिल्ड किए गए थे। फिर प्रत्येक प्रतिभागी के अनुभव का एक पाठ्य विवरण तैयार किया गया और वह इसमें था उनके अपने शब्द (क्रेसवेल, 2013)। फिर के अनुभवों का संरचनात्मक विवरण

प्रतिभागियों को लिखा गया था। अंततः: का बनावटी और संरचनात्मक विवरण घटना के सार को समग्र अनुभव को एकीकृत करके इकट्ठा किया गया था सभी प्रतिभागी (मौस्ताकास, 1994)।

विश्लेषण साक्षात्कार द्वारा उत्पन्न गुणात्मक डेटा की रूपरेखा के साथ शुरू होता हैं। डेटा ने घटनात्मक रूप से विश्लेषण किया और विषयों को उभरा और तब प्रकट किया गया प्रत्येक महिला के व्यक्तिगत बनावट और संरचनात्मक विवरण के साथ। अंत में समग्र पाठ्य और संरचनात्मक विवरण साझा किया गया था।

4.4 प्रमुख विषय उभरे

डेटा के क्षेतेजीकरण और कमी से निम्नलिखित विषय सामने आए:

घटनात्मक रूप से

1.परिवार प्राथमिकता के रूप में

2. एक सहारा के रूप में शिक्षित परिवार

3. सफलता में शिक्षा की उल्लेखनीय भूमिका हैं

4, करियर की योजना बनाने में अस्पष्टता

5, सीमित इच्छाएँ ही खुशी की कुंजी हैं

6. आत्मसंतुष्टि ही जीवन का लक्ष्य

7. महिलाएं अपने बच्चों/पति (परिवार) के लिए सब कुछ कुर्बान कर सकती हैं

8. सफलता बहुआयागमी होती हैं

9, पारिवारिक लगाव कभी-कभी करियर में बाधा बन जाता हैं

10. विवाहित महिलाओं के सफल करियर के लिए पति का साथ देना जरूरी हैं

11. खुश इंसान ही दूसरों को खुश करता हैं

12. सफलता केवल भौतिकवादी नहीं हैं

13. आत्म-अन्वेषण की कमी हैं

14. महिलाओं को मल्टीटास्किंग पर्सन माना जाता हैं

4.5 व्यक्तिगत बनावट विवरण:

4.5.1 गृहिणी- पहली महिला:

पहली महिला दिल्ली में रहने वाली एक गृहिणी हैं। वह डबल पोस्ट ग्रेजुएट यानी एम.एससी. (वनस्पति विज्ञान) और एम। लिब। वह इलाहाबाद की रहने वाली हैं। वह शादीशुदा हैं और उसका एक बेटा हैं। वह उसने सोचा कि वह एक सफल महिला हैं, यहाँ तक कि वह एक गृहिणी भी हैं। पहली महिला स्वयं के लिए आप जो कुछ भी कर रहे हैं उसमें सफल होने के लिए संतुष्टि सबसे महत्वपूर्ण चीज हैं। ए सुखी परिवार के लिए आत्मसंतुष्ट होना भी जरूरी हैं।

"मैं खुद को सफल क्यों मानता हूँ? सफलता का मतलब हैं नाम, प्रसिद्धि और पैसे के साथ-साथ आपकी फैमिली और आप खुद संतुष्ट माननीय। आपकी खुश फैमिली हो और उसके साथ-साथ आप भी हैंप्पी हो। आत्मसंतुष्टि हैं तो आप सफल हैं पैसे कम हो कोई बात नहीं लेकिन आप जो काम कर रहे हैं उसमे खुश हैं, आप जो खाना खा रहे हैं वो खुशी से खा रहे हैं तो आप सफल हैं।" (मैंने क्यों सोचा कि मैं सफल हूँ? सफलता का अर्थ हैं आप और आपका परिवार नाम, प्रसिद्धि और धन होने से संतुष्ट हैं। आपका एक खुशहाल परिवार हैं और आप भी इससे खुश हैं। अगर आत्मसंतुष्टि हैं तो आप सफल हैं, यहाँ तक कि आपके पास कम पैसा हैं यह ठीक हैं लेकिन आप जो काम कर रहे हैं उससे आपको खुश होना चाहिए और यदि आप प्रसन्न मन से भोजन कर रहे हैं तो आप सफल हैं।)

पहली महिला अपने जीवन से आत्मसंतुष्टि चाहती हैं। एक व्यक्ति को यही करना चाहिए खुशी के लिए हैं। उसने सोचा कि वह जो कुछ भी कर रही हैं उसके अनुसार परिपूर्ण होना चाहिए उसके लिए और दूसरों की राय में नहीं। कोई भी भौतिकवादी चीज उसे ज्यादा आकर्षित नहीं करती, बस एक चीज हैं जो उसे सफल बनाता हैं वह हैं आत्म-संतुष्टि।

"मैं अपनी लाइफ से संतुष्टि चाहती हूँ, जो मैं करू वो परफेक्शन के साथ मतलाब मुझे उसमे कमी ना लगे वो मैं पूरा करके दे सकु। मैं अपने पे खारी उत्तर बाकी दूसरा कोई उसे सही माने या न माने।

मेरे हिसब से मैं जितनी चीज करना चाहता हूँ मुझे पता होना चाहिए की मैंने पूरा प्रयास उसमे दिया हैं और वो पूरा हो गया हैं।" (मैं अपने जीवन से संतुष्टि चाहता हूँ, मैं जो कुछ भी करता हूँ, करना चाहता हूँ कि पूर्णता के साथ मतलब मेरी तरफ से कोई कमी नहीं छोड़ी। मैं अपने आप से मेल खाना चाहता हूँ मानकों, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि यह दूसरों की राय में सही हैं या नहीं। मेरी राय में, मुझे अवश्य मुझे पता हैं कि मैं जो कुछ भी करना चाहता हूँ उसमें मैंने अपना पूरा प्रयास किया हैं और उसे पूरा किया हैं।)

हालांकि पहली महिला एक गृहिणी हैं, लेकिन उन्हें भी अपने लिए समय नहीं मिला शौक और वे सभी चीजें जो वह अपने लिए करना चाहती थीं।

"अगले पांच सालो में मैं जो कुछ कुछ रहा हूँ, समय की कमी के करण जो मैंने शायद अपनी हॉबी नहीं की हैं वो साड़ी हॉबी आने वाले टाइम में पूरा करना चाहता हूँ। जैसे अपने नाम से कुछ करना चाहता हूँ, अपना स्थापित करना एक बिजनेस जिसमे मैं खुद शामिल हो सकता हूँ।" (अगले पांच वर्षो में, इनमें से कुछ जो चीजें मैंने छोड़ दी हैं, शायद समय की कमी के कारण मैंने अपने शौक पूरे नहीं किए हैं, मैं चाहता हूँ आने वाले समय में सभी शौक पूरे करने के लिए। मैं अपने साथ कुछ स्थापित करना चाहता हूँ किसी भी व्यवसाय की तरह नाम जिसमें मैं खुद को शामिल कर सकता हूँ।)

पहली महिला अपने परिवार के लिए सब कुछ कुर्बान कर सकती हैं। उसने अपनी नौकरी का बलिदान दिया था जब वह गर्भवती थी। वह अपने जीवन से संतुष्ट हैं और कोई कमी नहीं महसूस करती हैं।

"एक ही चीज हैं जिसके लिए सब कुछ बलिदान केर शक्ति हूँ, मेरा पति मेरा बच्चा ... हाहाहा। यार कमी! ऐसी काम तो ऐसी बातों कसम से नहीं लगती क्या सोचू कमी किस चीज की? लेकिन अपनी निजी जिंदगी में ईश्वर ने दो वक्त की रोटी दी हैं अच्छे से खा रहे हैं जब मर्जी आए खा सकते हैं इससे ज्यादा क्या चाहते हैं, जितना हैं उसमें संतोष हैं ये सबसे बड़ी चीज हैं।" (केवल एक चीज जिसके लिए मैं कर सकता हूँ बलिदान सब कुछ मेरे पति और मेरा बच्चा हैं। प्रिय अभाव! ईमानदारी से

बोल रहा हूँ, मैं कसम, अगर मुझे लगता हैं कि मेरे जीवन में कोई कमी नहीं हैं। भगवान की कृपा से, मेरे जीवन में, हमारे पास हैं दो वक्त का खाना और जब चाहो ले सकते हो, इससे ज्यादा और कुछ नहीं चाहिए, जो मेरे पास हैं, मैं मैं इससे संतुष्ट हूँ, यह बहुत बड़ी बात हैं।)

पहली महिला अपने परिवार को पूरा करने के बाद उनके लिए कुछ करना चाहती थी जिम्मेदारियों और बताया कि जीवन में ख्वाहिशें कायम रहनी चाहिए अन्यथा हम होंगे भिक्षुओं की तरह।

"कुछ बच्चे हैं जो अभी पूरी नहीं हुई हैं उसे करने के लिए मैं अभी लगी हूँ। मेरी खुद की इच्छाएँ हैं जो अभी करनी हैं। जीवन में अगर सब खतम हो जाएगा तो संनन््यासी नहीं बन जाएंगे, बनी रहने चाहिए।" (वहाँ हैं कुछ चीजें जो अभी तक पूरी नहीं हुई हैं, अब मैं उसे करने में लगा हूँ। मेरे पास मेरा हैं अब करने की अपनी इच्छा। जीवन में सब कुछ खत्म हो गया तो हम साधु बन जायेंगे, इच्छाएँ जीवन में बनी रहनी चाहिए।)

पहली महिला के मत में सफलता बहुआयामी हैं। सफल होने के लिए जीवन के सभी पहलुओं में संतुलन होना चाहिए।

"लाइफ में बहुत साड़ी चिज़ेन होती हैं सफल होने के लिए। सफलता का मैटलैब मेरा सिरफ नाम और फेम से नहीं हैं, पर्सनल लाइफ में भी सफलता होना चाहिये अगर सब कुछ मिलाकर आप आगे बढ़ रहे हैं तो आप सफल हैं। सिरफ किसी एक चीज में आप आगे बढ़ रहे हैं और बाकी चीजें चुत जा रही हैं हैं तो वो मेरे लिए सफलता नहीं हैं। हम कुछ बन गए और हमारे पास पैसे आ गए तो जो जरूरतमंद लोग हैं उनके लिए मैं कुछ कर सकता हूँ। सफलता का मतलब याही हैं की आप का संतोष और से, जो आप करना चाह रहे हैं जैसे दूर की मदद करनी हैं। सिर्फ पढ़ाई करके कुछ बन के जैसी कंपनी का सीईओ बन के 10 लाख 20 लाख प्रति माह कामना ही सफलता नहीं हैं।" (होने के लिए बहुत सी चीजें हैं जीवन में सफल। मेरे लिए सफलता का मतलब सिर्फ नाम और शोहरत नहीं हैं, एक होना चाहिए निजी जीवन में भी सफलता यदि आप सभी चीजों को एकीकृत करके सभी पहलुओं में बढ़ रहे हैं तब आप सफल होते

हैं। अगर आप सिर्फ एक पहलू में बढ़ रहे हैं और बाकी चीजें बची हैं इसके पीछे यह मेरे लिए सफलता नहीं हैं। अगर मुझे कोई पद मिला हैं और मेरे पास पैसा हैं तो मैं चाहता हूँ जरूरतमंद लोगों के लिए कुछ करें। सफलता का अर्थ हैं अंदर से आपकी संतुष्टि, जैसे आप दूसरों की मदद करना पसंद करना चाहते हैं। सफलता का मतलब केवल सीईओ जैसा पद पाना नहीं हैं एक कंपनी पढ़ाई के माध्यम से और प्रति माह 10-20 लाख कमाती हैं।)

पहली महिला के लिए अंतिम सफलता आत्म-संतुष्टि हैं, और वह इसे चाहती थी उसका जीवन।

"अगर कोई एक चीज चुन्ना पडे तो मैं आत्म-संतुष्टि को चुनूंगी। एएपी सफलता पाने के लिए आत्मसंतुष्ट हैं। आत्मसंतुष्ट आप कब होंगे जब आप खुशी रहोगे सफलता का मतलब आपकी खुशी हैं। एक चीज चुनना हैं तो अगर आप अपना फैमिली के साथ खुश हो, सेल्फ सैटिस्फाइड हो तो वही चुनोगे ना। सब कुछ छोर के फिर आप सफलता नहीं पा सकते।" (अगर मुझे सफलता का एक आयाम चुनना हैं तो मैं आत्मसंतुष्टि का चुनाव करेंगे। यदि आप आत्मसंतुष्ट हैं तो यह एक सफलता हैं। यदि आप हैं खुश हैं तो आप आत्मसंतुष्ट होंगे। सफलता का अर्थ हैं आपकी खुशी। अगर आपको करना हैं केवल एक ही चीज चुनें और अगर आप अपने परिवार से खुश और आत्मसंतुष्ट हैं तो आप वही चुनेंगे। आप सब कुछ छोड़ कर सफलता प्राप्त नहीं कर सकते।)

पहली महिला की राय में, वह बिना किसी नौकरी के एक सफल महिला हैं और
वेतन। वह अपने जीवन से खुश और संतुष्ट हैं।

"आत्मनिर्भर हूँ। मुझे घूमने का शौक हैं तो मैं घूम रही हूँ आज की तारीख में। मुझे इंटीरियर डेकोरेशन का भी शौक हैं। मैटलैब जो जो चेजोन का शौक था वो शौक मैं पूरा कर पा रही हूँ बस एक जॉब नहीं कर पा रही हूँ। जितना हैं उतना मेरे लिए काफी हैं। वो कम ज्यादा दुखों के हसब से अलग चीज हैं। मगर मेरे हिसाब से जीना हैं वो मेरे लिए काफी हैं। वेतन के बिना सफल हूँ। स्थायी, निश्चित वेतन के बिना, मैं संतुष्ट सफल हूँ मेरे जीवन में महिला। " (मैं आत्मनिर्भर हूँ। मुझे घूमने का शौक हैं और मैं ऐसा

कर रहा हूँ वर्तमान में। मुझे इंटीरियर डेकोरेशन का भी शौक हैं। यानी मैं उन शौक को पूरा कर रहा हूँ जो मैं नौकरी के अलावा करना चाहता था। मेरे पास जो हैं वह मेरे लिए पर्याप्त हैं। यह अधिक हो सकता हैं या दूसरों के हिसाब से कम लेकिन मेरे लिए काफी हैं। मैं बिना वेतन के सफल हूँ।)

पहली महिला के लक्ष्य अपने घर, परिवार और शादी तक ही सीमित हैं।

"दिल्ली में मेरा एक घर हैं, स्थिति हैं, मेरा बच्चा हैं, मैटलैब लाइफ में ये छोटी-छोटी चीज परिवार के लिए जरूरी होती हैं। मेरा लक्ष्य याहि था सिमता हुआ क्यों की बाकी सब हासिल किया। और क्या चाहिए? (मेरा दिल्ली में एक घर हैं, पद और पुत्र, अर्थात जीवन में ये छोटी-छोटी बातें एक परिवार के लिए आवश्यक हैं। मेरे लक्ष्य यहीं तक सीमित था क्योंकि बाकी सब कुछ पहले ही हासिल कर लिया गया हैं। क्या ज़रूरत हैं अधिक?)

पहली महिला बहुत सारी भौतिकवादी चीजें नहीं चाहतीं, लेकिन वह एक स्वस्थ और संतोषजनक जीवन। उसके लिए आदर्श जीवन बिना तनाव के जीवन जीना हैं।

"परफेक्ट लाइफ- बिना किसी स्ट्रेस के हैं। बिना किसी तनाव के एक अच्छी सी सुबाह और बिना किसी अशांति के 10-12 घंटे की रात की नींद" और एक स्वस्थ जीवन, शारीरिक, मानसिक स्वस्थ जीवन। मेरे लिए तो यही हैं की सुबाह मैं सुन से उठ और रात को चेन से सू। परफेक्ट लाइफ में फिट हेल्दी बॉडी हो और डेली का फिट और स्वस्थ दिनचर्या हो। बिना किसी तनाव के मैं उठ, मुझे ये नहीं हैं की बाप रे हैं मुझे आज इतने बजे उठना हैं, जल्दी से जल्दी ये करना हैं ये चीजें नहीं। रात में सौ तो मुझे जरूरत न आए टेंशन के करन वो नहीं।" (एक आदर्श जीवन एक जीवन हैं बिना किसी तनाव के। बिना किसी तनाव के सुप्रभात के लिए 10-12 . की अच्छी नींद लें रात में घंटों बिना किसी गड़बड़ी के और शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ जीवन। के लिए मैं, मैं सुबह आराम से उठना चाहता हूँ और रात को आराम से सो सकता हूँ। एक के लिए उत्तम जीवन, स्वस्थ शरीर और स्वस्थ दिनचर्या होनी चाहिए। मैं

जागना चाहता हूँ बिना किसी तनाव के, मैं नहीं चाहता कि तनाव उठे और जल्दबाजी में काम के लिए परेशान हो। मैं नहीं चाहता कि मैं तनाव के कारण रात को सो न सकूं।)

पहली महिला की राय में विकास अच्छा हैं लेकिन इसे लेकर तनाव में रहना अच्छा नहीं हैं जिन चीजों को आप हासिल करना चाहते हैं, वह सफलता नहीं हैं।

"जब आप अपनी फैमिली शुरू करते हो तो आप चाहते हो की ये भी कर लू वो भी कर लू. कहारदने के लिए इतनी बड़ी मार्केट हैं आपको बहुत चीजें दिखेंगी लेकिन उसके लिए मरते रहना दैनिक जीवन में मार-मार के जीना, वो सफलता नहीं हैं। सोचना अच्छी बात हैं की मुझे ये चीज करनी हैं लेकिन उसके लिए आप सबह टेंशन ले के जग रहे हैं और रात को आपको नींद नहीं आ रही हैं परशान हो के काम कर्ण ये ठीक नहीं। धीरे-धीरे आप आगे बढ़ गए तो अच्छी बात हैं नहीं बढ़े तो जीना हैं उतने में ही खुश रहो।" (जब आप अपना परिवार शुरू करते हैं तो आप ऐसी चीजें भी करना चाहते हैं और वह भी। चीजों को खरीदने के लिए बाजार बहुत बड़ा हैं और आपने बहुत कुछ देखा होगा, लेकिन दैनिक जीवन में उसके लिए मरना सफलता नहीं हैं। सोच हैं आप जो करना चाहते हैं उसके बारे में अच्छा हैं लेकिन यह अच्छा नहीं हैं कि आप तनाव से उठ रहे हैं और रात को सो नहीं पाता और उत्सुकता से काम करना अच्छा नहीं होता। यह अच्छा हैं अगर आप धीरे-धीरे बढ़ो वरना जो तुम्हारे पास हैं उसी में खुश रहो।)

पहली महिला की जिंदगी उनके पति और बेटे के इर्द-गिर्द घूमती हैं। वह सोचती हैं कि उसे अपने पति के साथ शादी करना और माँ बनना उसके जीवन की सबसे बड़ी सफलता हैं।

"दो चेजें हैं- एक तो मेरी शादी मेरे पति से होना और एक मेरा बेटा जो फर्स्ट मिसकैरेज के बुरा हुआ। तब ऐसा लगा जैसा परिणाम आया हैं। वाह 9 महीने ऐसे चल रहे हैं जैसे कोई परीक्षा चल रहे हैं आपके। हर बार जो सोनोग्राफी हॉटी थी, ब्लड टेस्ट होता था तो लगता था की मैं परीक्षा देने जा रही हूँ और जब रिपोर्ट आति थी तो लगता की परीक्षा का परिणाम आ रहा हैं। जब अंतिम 9 महीने पूरा हो गया | बाद समय आया की मेरा बेबी हो गया तो लगा की एक उपलब्धि कर लिया। मात्र पति मुझे पहले से

जाने द और ये की मेरी शादी में से हो और वो हो गया तो आप उपलब्धि हाय हैं।" (दो बातें हैं- एक हैं मेरे पति के साथ मेरी शादी और दूसरा मेरा पुत्र हैं जो पहिले गर्भपात के बाद उत्पन्न हुआ हैं। मुझे ऐसा लगा जैसे परिणाम आ रहे हैं। वे नौ महीने ऐसे थे जैसे परीक्षा चल रही हो। हर बार जब सोनोग्राफी और रक्त परीक्षण किए गए, मुझे लगा जैसे मैं परीक्षा में बैठने जा रहा हूँ और जब रिपोर्ट आई तो लगा जैसे परिणाम आ रहे हैं। अंत में, जब नौ महीने हो गए हैं पूरा हुआ और समय आया जब मेरे बेटे का जन्म हुआ तो मुझे लगा जैसे मुझे मिल गया हैं उपलब्धि। मेरे पति शादी से पहले मुझे जानते थे और मैं इसके साथ शादी करना चाहती हूँ उसकी और हमने शादी कर ली, यह भी एक उपलब्धि हैं।)

पहली महिला की नजर में शादी की कामयाबी और माँ बनना उसे बदल देता हैं संपूर्ण जीवन।

"सब कुछ बदल जाता हैं। आपकी प्राथमिकताएं बदल जाती हैं हो जाती हैं, आपकी जिम्मेदारियां बादल गई। आप पहले से ज्यादा बिजी हो जाते हैं और अपने टाइम को बर्बाद करने के कुछ कुछ क्वालिटी टाइम किसी और के लिए जीने लगे।" (सब कुछ हैं बदला हुआ। आपकी प्राथमिकताएं और जिम्मेदारियां बदल दी गई हैं। आप से ज्यादा व्यस्त हैं पहले और आप किसी के लिए कुछ क्वालिटी टाइम बिताते हैं और इसके बजाय दूसरों के लिए जीते हैं समय की बर्बादी।)

पहली महिला के जीवन में कुछ भावनात्मक बाधाएं आईं, जो उनके जीवन में आईं उसकी सफलता का मार्ग और कभी-कभी वह वह काम नहीं कर पाती जो वह करना चाहती थी उसके लिए करो।

"अबी एक चीज मिसिंग हैं जो मैं अपने नाम से करना चाहता हूँ वो। इक आयुर्वेद का स्टोर खोलना चाहता हूँ अपने नाम से अभी तक नहीं कर पाई। भावनात्मक बाधाएं की मुझे उस समय पर कहीं बाहर जा के पोस्ट ग्रेजुएशन कर्ण था तो परिवार ने नहीं भेजा तो मैं नहीं गया।" (एक बात याद आ रही हैं फिर भी क्या मैं अपने नाम के साथ करना चाहता हूँ। मैं अपने नाम से आयुर्वेद की दुकान खोलना चाहता

हूँ न कि अभी तक खोला। भावनात्मक बाधाएं थीं और मैं बाहर से स्नातकोत्तर करना चाहता था मेरे गृहनगर लेकिन मेरे परिवार ने मुझे ऐसा नहीं करने दिया, मैं नहीं गया।)

पहली महिला ने पारिवारिक लगाव और भावुकता के कारण अपनी इच्छाओं की बलि दी रुकावटें

"शिमला यूनिवर्सिटी से आया था रिसर्च का उसके बाद वही पे एडहॉक ऑफर आधार पे जॉब पे मुझे रक्खा जा रहा था तो मेरे ससुर जी ने कहा की पैसे की ऐसी भी क्या ज़रुरत हैं? हम लोग इलाहाबाद में रहे, बेटा दिल्ली में रहे और बहूँ शिमला में रहे। यहाँ पर भी मैंने बलिदान किया इमोशनल बाउंडेशन्स फैमिली की, उनकी वजह से।" (मेरे लिए शोध करने का प्रस्ताव था शिमला विश्वविद्यालय और उसके बाद, वे मुझे वहां तदर्थ आधार पर नियुक्त करेंगे फिर मेरी ससुर ने कहा कि इतने पैसे की क्या जरूरत हैं? हम रह रहे हैं इलाहाबाद; बेटा दिल्ली में रहता हैं और बहूँ शिमला में रहेगी। यहाँ भी हैं मैंने भावनात्मक अवरोधों और पारिवारिक लगाव के कारण बलिदान दिया।)

पहली महिला के माता-पिता और पति ने पढ़ाई और नौकरी के लिए उनका साथ दिया लेकिन फिर भी, उन्होंने सोचा कि उसने अपने परिवार के लिए सब कुछ किया लेकिन कभी-कभी सोचा कि उसने कुछ नहीं किया खुद के लिए।

"पति ने तो शिमला के लिए भी कह दिया था की तुम ज्वाइन कर लो मैं साप्ताहिक अप-डाउन कर लूंगा। दिल्ली से शिमला कोई बहुत दूर हैं नहीं। लेकिन इमोशनल फुल बानी मैं। मैंने कहा लाइफ यही रही जाएगी, हम दो दूर-दूर रहेंगे। लॉन्ग टर्म में मैंने सिर्फ अपने नंगे में नहीं सोचा। लॉन्ग टर्म मीन मैं अपनी फैमिली को साथ में रखना चाहती थी।" (पति ने मुझे शामिल होने के लिए कहा था शिमला और वह साप्ताहिक अप-डाउन करेंगे। दिल्ली शिमला से ज्यादा दूर नहीं हैं। लेकिन मैं एक भावनात्मक मूर्ख बन गया। मैंने कहा जिंदगी अब भी यहीं रहेगी और हम दोनों दूर रहेंगे एक-दूसरे से। मैंने कभी अपने बारे में केवल लॉन्ग टर्म में नहीं सोचा। लंबी अवधि में मैं चाहता हूँ मेरे परिवार को मेरे साथ रखो।)

पहली महिला हर बात का श्रेय अपने माता-पिता और पति को देती हैं। उसके विचार में, उसके माता-पिता ने सभी सकारात्मक चीजें दीं और उसका पति उन सभी का सम्मान करता हैं चीज़ें।

"मम्मी-पापा के बुरे पति हैं जिनको मैं क्रेडिट देता हूँ सक्सेस का। क्यों की जिंदगी में जो उन मुझे सिखाया जो मूल्य, अच्छे संस्कार डालना, प्रेरित करना करना सब उन्ही की दी हुई हैं। मेरी आज की सोच विकसित करने वाले वही लोग हैं। जो मेरी वैल्यूज, फीलिंग्स और इमोशन्स हैं उन चीजों को जो मैं वहन लेके आगे बड़ी हु उसे इन लोगों (पति) ने स्वीकार किया किया।" (मैं अपनी सफलता का श्रेय देता हूँ मेरे माता-पिता के बाद मेरे पति को। क्योंकि जीवन में उन्होंने मुझे जो कुछ भी सिखाया, मूल्य, संस्कार और प्रेरणा उनके द्वारा दी गई। मेरे वर्तमान विचार विकसित हुए उनके द्वारा। जो कुछ भी मेरी भावनाएँ, मूल्य और भावनाएं हैं, जो चीजें मैंने ली हैं वहाँ से और आगे बढ़ो, मेरे पति ने उन सभी बातों को स्वीकार कर लिया।)

पहली महिला के विचार में सफल होने में शिक्षा की प्रमुख भूमिका हैं

प्रत्येक पहलू।

"एजुकेशन का बहुत बड़ा रोल होता हैं सक्सेस में। शिक्षा एक आधार होता हैं इंसान का। ये आधार एक छोटे से शुरू होता हैं और उसके ऊपर कितनी बड़ी बिल्डिंग खादी होगी ये उस आधार की ताकत हैं वो शिक्षा देती हैं। आप कितना सक्सेस करते हो वो, सक्सेस में आपके सोचने का दयारा जो बढ़ता हैं वो एजुकेशन से बढ़ता हैं।" (सफलता में शिक्षा की बड़ी भूमिका होती हैं। शिक्षा ही आधार हैं मनुष्यों की। इस आधार की शुरुआत छोटी-छोटी बातों से होती हैं और यही वह ताकत हैं जो शिक्षा द्वारा दिया गया यह तय करता हैं कि उस पर कितनी बड़ी इमारत खड़ी होगी। तुम कितना सफल हों, और आपके विचारों की सीमा शिक्षा द्वारा विस्तृत हो।)

पहली महिला के विचार में शिक्षा आपके जीवन के हर पहलू को प्रभावित करती हैं, ऐसा नहीं हैं किताबी और विषय ज्ञान के बारे में।

“वो मेरी लाइब्रेरियन की बड़ी सी कुर्सी और एक कमरा जिसमे बैठा के मैं नॉवेल्स पदथी थी, उपलब्धि था मेरा। आगर मैं एजुकेशन नहीं लेटी तो कैसे आती जारी कुर्सी बराबर? जिस जगा आपको जाना हैं रास्ते का पता होना ज़ौरी हैं। शिक्षा हाय यूएस रास्ते पर लेकर जाती हैं। शिक्षा से हमें वो सीढ़ी मिलते हैं आगे तक ले के जाने के लिए। लाइब्रेरी में हज़ारों विषय होते हैं, कितने सारे विषय होते हैं, उनके उप-विषय होते हैं। हर विषय आपकी पर्सनल लाइफ से जुड़ा होता हैं। शिक्षा का मतलब सिर्फ किताबी ज्ञान नहीं होता।” (लाइब्रेरियन की मेरी बड़ी कुर्सी और जिस कमरे में मैं बैठा और अच्छे उपन्यास पढ़े, वह मेरी उपलब्धि थी। अगर मेरे पास नहीं हैं शिक्षा ली तो मैं वह कुर्सी कैसे प्राप्त्कर सकता था? आप जहां भी जाना चाहते हैं रास्ते के बारे में पता होना चाहिए। शिक्षा हमें इस तरह से लाती हैं। हमें वो सीढ़ियाँ मिलती हैं शिक्षा जो हमें आगे ले जाती हैं। पुस्तकालय में, हजारों विषय हैं, इतने सारे विषय और उनके उप-विषय। हर विषय आपके निजी जीवन से जुड़ा हैं। शिक्षा का अर्थ केवल किताबी ज्ञान नहीं हैं।)

पहली महिला शिक्षा के बिना अपनी वर्तमान स्थिति को प्राप्त नहीं कर सकती थी। उसकी विचारों, मूल्यों और तार्किक सोच आदि का विकास शिक्षा द्वारा किया गया था।

“नहीं, बिलकुल नहीं, शिक्षा के बिना मैं आज जिस जगह पर हूँ नहीं पाहुच पति अपने नंगे में कहु तो, मैं संतुलित, सहकारी, तार्किक, विश्वसनीय हूँ, भावनात्मक और जिम्मेदार महिला।" (नहीं, बिल्कुल नहीं, शिक्षा के बिना, मैं नहीं कर सकता था उस स्थिति तक पहुँचें जहाँ मैं अभी हूँ। अपने बारे में बताऊँ तो मैं एक संतुलित, सहकारी हूँ, तार्किक, विश्वसनीय, भावनात्मक और जिम्मेदार महिला।)

जिस समाज में पहली महिला रहते थे, शिक्षा को एक संपत्ति माना जाता था, लेकिन उसके माता-पिता ने जोर देकर कहा कि उसे अपने गृह नगर से ही पढ़ना चाहिए, वे नहीं चाहते थे उसे शहर से बाहर भेजने के लिए। यह समाज का एक मानसिक सेट हैं कि लड़कियों को नहीं भेजा जाना चाहिए पढ़ाई के लिए बाहर।

“हमारी सोसाइटी में लड़कियों की पढ़ाई को अच्छा माना जाता था। लेकिन पढ़ाई जो आपको करनी हैं वो यहाँ रह के करो। सुरक्षा उद्देश्य से माता-पिता बहार नहीं भजना चाहते हैं। बाकी पढाना चाहते थे, पढ़ाई से ऐतराज नहीं था।" (हमारा समाज लड़कियों की शिक्षा को एक अच्छा काम मानता था, लेकिन आप जो चाहें पढ़ाई करने के लिए आपको यहाँ (होम सिटी) से पढ़ाई करनी होगी। माता-पिता मुझे बाहर नहीं भेजना चाहते थे सिर्फ सुरक्षा कारणों से। वरना वे शिक्षित करना चाहते हैं; उनके पास कोई नहीं हैं पढ़ाई के लिए आपत्ति।)

उनका समाज शिक्षा के क्षेत्र में नौकरियों को महिलाओं के लिए उपयुक्त मानता था। यह हैं यह सब समाज की इस धारणा के कारण हैं कि महिलाओं को घर की परवाह करनी चाहिए और नौकरी के साथ-साथ बच्चे भी। यह माना जाता हैं कि शैक्षिक क्षेत्र की नौकरियों की आवश्यकता हैं किसी भी अन्य प्रकार की नौकरियों की तुलना में कम समय।

“एजुकेशनल फील्ड की जॉब को सोसाइटी रेस्पेक्टिव मेंटी हैं महिलाओं के लिए। ओवरऑल देख के लोग परसेप्शन बनते हैं क्यों की उन फैमिली भी देखती हैं हैं। महिलाओं से उम्मीद बहुत ज्यादा होती हैं की वो नौकरी भी कर ले और परिवार भी देख ले. 24»7 घंटे सभी को मिलते हैं उसमे महिलाओं को लॉग मल्टीटास्किंग समजते हैं। वो समजते हैं की अगर नौकरी पूरे कार्यालय समय की होगी महिलाओं के लिए अपनी फैमिली को टाइम नहीं दे पायेगी तो इसलिय कह दिया जाता हैं की सम्मानजनक काम नहीं हैं। अगर आप जॉब के साथ अपनी फैमिली को टाइम दे पा रहे हैं जैसे स्कूल की जॉब हैं तो सबकी नज़र में सम्मानजनक काम हो जाती हैं। मैटलैब »?॥९ नौकरी से पुरुष कम्युनिटी डिस्टर्ब नहीं हो रही, सोसाइटी के द्वारा जो मानक बनाया गया हैं उसमे अगर फिट बैठा हैं तो सम्मानजनक काम हैं।” (शैक्षिक क्षेत्र का कार्य हैं समाज द्वारा महिलाओं के लिए एक सम्मानजनक नौकरी के रूप में माना जाता हैं। लोग धारणा बनाते हैं समग्र दृष्टि से देखना क्योंकि महिलाओं को परिवार को भी देखना होता हैं। से उम्मीदें महिलाएं इतनी हैं कि वे नौकरी करती हैं और अपने परिवार की भी देखभाल करती हैं। सभी को मिलता हैं 2427 घंटे लेकिन लोग सोचते हैं कि महिलाएं मल्टीटास्किंग कर रही हैं। उन्हें लगता हैं कि अगर नौकरी ऑफिस का पूरा समय हो तो महिलाएं अपने परिवार को समय नहीं दे पाती हैं और

इसलिए वे कहा जाता हैं कि नौकरियां सम्मानजनक नहीं हैं। अगर आप अपने परिवार के साथ-साथ समय दे रहे हैं आपकी नौकरी स्कूल की नौकरी की तरह हैं, तो लोगों की नजर में यह एक सम्मानजनक नौकरी हैं। मतलब अगर पुरुष समुदाय आपकी नौकरी से परेशान नहीं हो रहा हैं और इसके द्वारा निर्धारित मानदंडों में फिट हो रहा हैं समाज तब काम सम्मानजनक हैं।)

पुरुषों और महिलाओं के बारे में पहली महिला का नजरिया बहुत अलग हैं। वहाँ पर बहुत पुरुषों और महिलाओं के बीच कई अंतर जैसे उनकी भावनाओं, भावनाओं, अभिव्यक्ति आदि आज के परिदृष्य में यदि वे समान रूप से आगे बढ़ रहे हैं तो इसका श्रेय शिक्षा को जाता हैं।

"पुरुषों और महिलाओं की शारीरिक संरचना, ताकत और काई चीजों में अलग हैं। जैसे लोग कहते हैं नर-नारी एक समान तो ऐसा कार्ड नहीं हैं, मैं इस चीज को नहीं मंती हु। उनका शारीरिक ढांचा अलग हैं, उनकी हर एक चीज अलग हैं। जो पुरुष कर सकते हैं वो महिलाएं नहीं कर सकती हैं और जो महिलाएं कर सकती हैं वो पुरुष नहीं कर सकते। दोनो की मानसिक स्थिति बिलकुल अलग होती हैं, एक ही स्थिति में दो अलग तरह से सोचते हैं। इमोशन्स फीमेल में बहुत ज्यादा होता हैं, एक्सप्रेशन पुरुष में कम होता हैं औरत में ज्यादा होता हैं। प्राथमिकी अपवाद हर जगह हैं। कांधे से कांधा मिलाकर चलना एक अलग बात हैं और वो चल पा रहे हैं सिरफ एजुकेशन की वजह से।" (पुरुष और महिलाएं शारीरिक रूप से भिन्न हैं संरचना, ताकत और कई अन्य चीजें। जैसा कि लोग कहते हैं कि पुरुष और महिला समान हैं, लेकिन यह तथ्य नहीं हैं, मैं इससे सहमत नहीं हूँ। उनकी शारीरिक संरचना और सब कुछ फरक हैं। पुरुष क्या कर सकते हैं महिलाएं नहीं कर सकतीं और महिलाएं क्या कर सकती हैं पुरुष नहीं कर सकते। दोनों बहुत अलग मानसिक स्थितियां हैं, यहाँ तक कि एक ही स्थिति में, वे अलग तरह से सोचते हैं। पुरुषों की तुलना में महिलाओं में बहुत अधिक भावनाएँ और भाव होते हैं। जबकि अपवाद हैं हर जगह। हाथ में हाथ डालकर चलना अलग बात हैं अगर वो ऐसा कर पाते हैं, यह सिर्फ शिक्षा के कारण हैं।)

पहली महिला को उनके परिवार का आर्थिक, मानसिक, सभी तरह से सहयोग मिला। भावनात्मक आदि और साथ ही, अपने चुने हुए क्षेत्र के बारे में समाज का पक्ष प्राप्त किया।

4.5.2 स्कूल टीचर दूसरी महिला

दूसरी महिला केन्द्रीय विद्यालय में प्राथमिक शिक्षिका हैं। वह शादीशुदा हैं और अपने पति , दो बेटियों, ससुर और दो बहनों के साथ रहती हैं। वह एक किफायती मध्यमवर्गीय परिवार से ताल्लुक रखती हैं। वह लखनऊ में रहती हैं और उसकी नौकरी भी लखनऊ में हैं।

दूसरी महिला एक मजबूत महिला हैं और जैसे-जैसे परिस्थितियाँ आईं , उन्होंने उसी के अनुसार काम किया, उन्होंने इन परिस्थितियों को अपने लिए एक आदर्श के रूप में स्वीकार किया।

"मेरी स्थितियां मेरे रोल मॉडल हैं। जैसे-जैसे मेरे पास स्थितियां आती गई वो मेर लिए रोल मॉडल बंटी गई हैं। जब मुझे लगा की मुझे शादी के बाद अब बाकी की जरूरत हैं , कुछ हासिल करना हैं, ऐसी परिस्थितियां आती गई की मुझे लगा अब आर्थिक रूप से अपने आप को बैलेंस करना हैं , स्थापित करना हैं तो अपना रोल मॉडल बनाना हैं।" (मेरी परिस्थितियाँ मेरे आदर्श हैं। जैसे-जैसे परिस्थितियाँ मेरे सामने आईं, वे मेरे लिए एक आदर्श बन गईं। जब मुझे लगा कि मुझे शादी के बाद आराम करने की ज़रूरत हैं, तो मुझे कुछ हासिल करना हैं, क्योंकि परिस्थितियाँ मेरे सामने आईं और मुझे लगा कि मैं खुद को आर्थिक रूप से संतुलित और स्थापित करना हैं , तो मैंने उन परिस्थितियों को अपने लिए एक आदर्श बनाया।)

वह समाज में अपनी पहचान बनाना चाहती थी।

"मैंने बचपन से ही सोचा था की मुझे प्योर होम वुमन नहीं बनाना" हैं, कामकाजी महिला बनाना हैं। मेरी अपनी पहचान होनी चाहिए की लोग दूसरी महिला को जेन. किसी और के नाम से मुझे न जाने की दूसरी महिला उनकी बेटी हैं या उनकी पत्नी हैं। मुझे मेरे नाम से जाने।" (बचपन से ही मुझे लगता था कि मैं पवित्र नहीं बनूंगा) गृहिणी के बजाय मैं एक कामकाजी महिला बनना चाहती हूँ। मेरी अपनी एक

पहचान होनी चाहिए कि मैं लोगों के लिए जाना जाता हूँ। मैं नहीं चाहता कि मेरी पहचान किसी और के नाम से हो जैसे दूसरी महिला उनकी बेटी हैं या उनकी पत्नी। मैं अपने नाम से जाना जाना चाहता हूँ।)

दूसरी महिला एक ऐसी महिला हैं जो बहुत जमीन से जुड़ी हैं। उसके पास ज्यादा बड़े लक्ष्य नहीं हैं जीवन में और केवल वर्तमान से एक कदम आगे बढ़ना चाहता हैं।

अगर प्रोफेशनली बात करें तो मैं अपने आप को एक कदम आगे देखना चाहूँगी। जैसे अभी प्राथमिक शिक्षक हूँ तो आगे कुछ सैलून में टीजीटी (प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक) बन्ना चाहूँगी। बहुत बड़े ख्वाब नहीं रक्खती हु की मैं डायरेक्ट पीजीटी बन जाउ। [अगर प्रोफेशन की बात करें तो मैं खुद को एक कदम आगे देखना चाहता हूँ। चूंकि मैं अभी एक प्राथमिक शिक्षक हूँ और अगले कुछ वर्षों में , मैं एक प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक बनना चाहता हूँ। मेरे इतने बड़े सपने नहीं हैं कि मैं सीधे पीजीटी (स्नातकोत्तर शिक्षक) बनूंगा।]

पेशे के साथ-साथ दूसरी महिला कुछ ऐसा करना चाहती हैं जो समाज के लिए फायदेमंद हो। वह अपनी संतुष्टि के लिए कुछ काम करना चाहती हैं।

"सामाजिक रूप से बात करें तो मैं एक ऐसी सफल महिला बनना चाहती हूँ जिससे हमारे समाज को कुछ फायदा हो। क्योंकी इस उम्र में आ के हमने अपना घर और परिवार स्थापित कर ली हैं। जॉब के लिए मुझे पे किया जा रहा हैं, लेकिन मैं कुछ ऐसा करना चाहता हूँ जिससे मुझे आत्म-संतुष्टि मील सके। अभी तक मैंने कुछ किया नहीं हैं बस सोचा हैं। लेकिन ये भी सोचने से ही आ रहा हैं की मैं ऐसा करूंगी और निश्चित रूप से करुंगी। आइडियल यही हैं की हमें कोई काम करने से पहले विचार लाना पड़ता हैं।" (यदि हम सामाजिक परिदृश्य में बात करें, तो मैं एक सफल महिला बनना चाहती हूँ जिससे समाज को लाभ मिलेगा। क्योंकि इस उम्र में मैंने अपना घर और परिवार बसाया हैं। मैं मुझे मेरी नौकरी के लिए भुगतान किया जा रहा हैं, लेकिन मैं कुछ ऐसा करना चाहता हूँ जिससे मुझे आत्म-संतुष्टि मिले। अभी

तक मैंने कुछ नहीं किया, बस सोचा। लेकिन यह सोचने से भी आ रहा हैं कि मैं यह करूंगा और जरूर करूंगा। आदर्श यह हैं कि हमें करने से पहले विचारों को लाना होगा कोई भी काम)

दूसरी महिला ज्यादा भौतिकवादी नहीं हैं और वह अपने जीवन से आत्म-संतुष्टि चाहती हैं।

"मैं अपनी लाइफ से अपने लिए संतुष्टि चाहती हूँ कि मैं जहां पर खादी हूँ खुद को संतुष्ट कर पाउ और खुद को सांत्वना कर पाउ की मैंने जो किया हैं वो थिक किया हैं। कभी मुझे किसी बात का अपराधबोध महसूस ना हो की मैंने किसी के साथ अनुचित किया या अपनी ही धुन में रही या किसी के लिए कुछ नहीं किया।" (मुझे संतुष्टि चाहिए अपने जीवन से मैं अपने आप को संतुष्ट कर सकती हूँ कि मैं कहाँ खड़ा हूँ और अपने आप को सांत्वना देती हूँ कि मैं क्या हूँ सही किया हैं। मैं उस चीज़ के लिए दोषी महसूस नहीं करना चाहती जो मैंने अनुचित किया हैं किसी के लिए या मैं अपनी धुन में रहा या मैंने किसी के लिए कुछ नहीं किया।)

दूसरी महिला किसी के लिए सब कुछ कुर्बान नहीं कर सकती क्योंकि वह उसे मारना नहीं चाहती आत्म-सम्मान लेकिन अपने बच्चों के लिए, वह एक निश्चित उम्र तक बलिदान कर सकती हैं।

"ईमानदारी से कहूँ तो 100% बलिदान नहीं कर सकती किसी के लिए भी लेकिन 99.09% तक हो सकता हैं। मेरी आत्म-सम्मान के लिए अगर मैं 100% बलिदान करूँगी मार जाएगी। बहुत मुश्किल हैं ये और अगर ऐसी स्थिति आ जाए तो देखा जाएगा। मैं अपने बच्चों के लिए बलिदान कर सकती हूँ वो भी एक निश्चित उम्र तक। जीवन टाइम बच्चों के लिए भी बलिदान नहीं करूंगी। तब तक करुंगी जब तक वो स्थापित नहीं हो जाते। (ईमानदारी से कहूँ तो मैं किसी के लिए भी 100% बलिदान नहीं कर सकती लेकिन यह 99.09% हो सकता हैं। अगर मैंने 100% बलिदान दिया तो मेरा स्वाभिमान मर जाएगा। बहुत मुश्किल हैं लेकिन अगर ऐसी स्थिति आएगी, देखा जाएगा। मैं अपने बच्चों के लिए बलिदान कर सकता हूँ वह भी निश्चित उम्र। मैं बच्चों के लिए भी जीवन का बलिदान नहीं दूंगा। मैं इसे तब तक करूँगा जब तक वो स्थापित नहीं हो जाते ।)

दूसरी महिला के मुताबिक उसे सब कुछ देर से मिला लेकिन अब उसके पास सब कुछ हैं और वह इससे खुश हैं। वह एक स्वतंत्र महिला हैं और उन्हें शादी के बाद नौकरी मिली हैं और यह उनके परिवार के सदस्यों के समग्र समर्थन के कारण हैं। किसी को भी लक्ष्य हासिल करने के लिए परिवार का सहयोग जरूरी हैं।

"मेरे जीवन में (हाहाहा) हर चीज की कमी हैं। मेरे पास बहुत कुछ हैं , मेरे पास सब कुछ हैं। लेकिन जो लूज हुआ मुझे उस हार के बाद सब चीजें मिली हैं जैसे जिस समय पर मुझे स्टडी करनी चाहिए थी उस समय पर स्थितियां ऐसी हो गई की मैं स्टडी नहीं कर पाई मुझे साड़ी चीज डर से मिली हैं पर भगवान देता हैं। ये जो मेरी में ज्ञान की कमी और मार्गदर्शन की कमी की वजह से थी। जैसे ही मुझे नॉलेज और गाइडेंस मिला साड़ी चीज स्मूथली चलने लगी। हन मेहंदी तो करनी पड़ी हैं। ये ज्ञान और मार्गदर्शन मात्र गुरुजी, ससुर और पति और सास (दिवंगत) से मुझे मिला। आज मैं जो कुछ भी हूँ , लोगों की वजह से हूँ।"

दूसरी महिला खुद की खुशी पर फोकस करती हैं। उनकी दृष्टि में यदि कोई सुखी हैं तभी वह दूसरों को सुख दे सकता हैं।

"मेरी प्राथमिकता हैं पहले खुद खुश रहो। जो इंसान खुद खुश रहता हैं वही दूसरे को खुश कर पता हैं। आप अपनी खुशी के लिए बिना दूर को हर्म किए जो अपनी लाइफ में करना चाहते हैं वो जरूर करें।" (मेरी प्राथमिकता होना हैं पहले खुश। जो स्वयं सुखी हैं वही दूसरों को सुखी कर सकता हैं। कुछ भी करें आप अपनी खुशी के लिए दूसरों को नुकसान पहुंचाए बिना अपने जीवन में करना चाहते हैं।) (मेरी प्राथमिकता सबसे पहले खुश रहना हैं जो खुद खुश हैं वही दूसरों को खुश करने में सक्षम हैं अपनी खुशी के लिए दूसरों को नुकसान पहुंचाए बिना आप अपने जीवन में जो करना चाहते हैं वह करें।)

दूसरी महिला अपनी वर्तमान स्थिति से पूरी तरह संतुष्ट हैं। लोगों के लिए यह मुश्किल हो सकता हैं लेकिन उसकी मानसिक स्थिति उसे 100% तक संतुष्टि देती हैं।

"मैं बहुत हूँ; आप कह सकते हैं कि मेरी वर्तमान स्थिति से पूरी तरह संतुष्ट हैं। मेरी वर्तमान स्थिति इस बात पर निर्भर हैं कि मैंने पिछले कुछ वर्षों में क्या किया क्योंकि जैसी मैंने मेहनत की और जिस वक्त से करना शुरू की मुझे वो सब मिला गया। आगर यही मेहनत मैं और पहले कर्ता तो शायद मेरी और अच्छी स्थिति होती। मेरे संतुष्ट होने का कारण हैं कि जो मुझे जैसे मिले उसमे थोड़ा बहुत हेरफेर कर के मैंने उपयोग किया क्योंकि यह स्वीकार कर लिया हैं। और जब कोई चीज एक्सेप्ट हो जाती हैं तो संतुष्टि हो जाती हैं।"

दूसरी महिला सोचती हैं कि सफलता किसी के लिए एक आयामी नहीं हैं , इसके कई आयाम हैं। ये आयाम व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करते हैं।

"मुझे लगता हैं कि सफलता किसी के लिए सिंगल-डायमेंशनल नहीं हैं। जिस तारिके से गणित में 3 आयाम होते हैं उसी तरह से सफलता में 3 आयाम के अलावा 8 दिशाएं होते हैं। मैं अपनी डाइमेंशन को नाम दूंगा मेरे गुरुजी , मेरी फैमिली और मेरे मोटिवेटर्स या सेल्फ मोटिवेशन कह ले ये मेरी इच्छाशक्ति।"

दूसरी महिला के लिए परिस्थितियाँ सफलता का एक महत्वपूर्ण आयाम हैं क्योंकि परिस्थितियाँ ऐसी परिस्थितियाँ हैं जो आपको कुछ करने के लिए मजबूर करती हैं।

"अगर एक आयाम को चुनने को कहा जाए जो सबसे महत्वपूर्ण हैं वो मेरी स्थितियां हैं। मेरी लाइफ में ऐसी स्थितियां नहीं आती तो मैं आज यहाँ पर नहीं होती शायद , ये जो सफलता मुझे मिली हैं नहीं मिल पाती। मुझे लगता हैं कि हालात नहीं होंगे लाइफ में तो आप नहीं बढ़ सकते हैं। क्यू की परिस्थितियाँ ही आपको लडना सिखाती हैं, उस समय पर विचार करें कि कराती हैं की अब आपको क्या करना हैं।"

दूसरी महिला ने अपने जीवन में अधिकांश आयाम हासिल किए लेकिन उन्होंने केवल अपने लिए काम नहीं किया। अधिकांश महिलाओं को उस काम के लिए समय नहीं मिलता हैं जिससे उन्हें खुशी मिलती हैं, हालांकि वे अपने परिवार के लिए सब कुछ करती हैं।

(मैंने लगभग सभी आयाम हासिल कर लिए हैं लेकिन मैंने अपने लिए काम नहीं किया। मुझे अब अपने लिए बहुत कुछ करना हैं, अपनी खुशी के लिए। मैंने दूसरों के लिए बहुत कुछ किया हैं लेकिन अगर आप उनके अनुसार करेंगे तो यह कभी भी पूरा नहीं होगा। यह अपने अनुसार दूसरों के लिए , आप अपने आप को संतुष्ट रखते हैं , और लोग कभी भी संतुष्ट नहीं हो सकते , भले ही वह आपका बच्चा हो। इसलिए, अपने अनुसार दूसरों को अपना सर्वश्रेष्ठ दें, दूसरों के अनुसार, आप कभी भी अपना सर्वश्रेष्ठ नहीं दे पाएंगे श्रेष्ठ।)

दूसरी महिला अपनी वर्तमान स्थिति से संतुष्ट हैं क्योंकि उसे वह सब कुछ मिला हैं जो उसके अनुसार एक शानदार जीवन जीने के लिए उसकी सभी जरूरतों और जरूरतों को पूरा करता हैं।

(मेरी संतुष्टि का स्तर यह हैं कि उदाहरण के लिए- मेरे पास एक कार होनी चाहिए क्योंकि जरूरत हैं। मेरे पास एक कार हैं। कार होने के बाद , मेरा कोई सपना नहीं हैं कि मेरे पास ऑडी या बीएमडब्ल्यू हैं। यह संतुष्टि का चरण हैं। मेरा जरूरतें पूरी हो गई हैं वरना किसी की भी इच्छाएँ पूरी नहीं हो सकतीं।)

दूसरी महिला ने उन लक्ष्यों को हासिल किया जो उन्होंने कुछ साल पहले तय किए थे। वह सामान्य लग्जरी गैजेट्स के साथ एक साधारण जीवन जीना चाहती हैं। ये साधारण चीजें कुछ साल पहले उसके लक्ष्य थे। वह एक डाउन टू अर्थ महिला हैं इसलिए संतुष्ट हैं।

(मैंने उन लक्ष्यों को हासिल किया हैं जो कुछ साल पहले तय किए गए हैं। मैं बहुत जमीन से जुड़ा हूँ, इसलिए मैं अपनी छोटी-छोटी बातें समझाऊंगा। नौकरी से पहले , मेरे पास छोटी चीजें नहीं थीं , एक वॉशिंग मशीन थी जो खराब हो गई थी , एक रेफ्रिजरेटर लेकिन काम नहीं कर रहा था , एलईडी टीवी

नहीं था। पांच साल पहले, मैंने योजना बनाई हैं कि अगले पांच वर्षों में मेरे पास ये सब होना चाहिए और भगवान की कृपा और मेरी मेहनत या मेरी सोच से आप जो भी कह सकते हैं , भगवान हमेशा दया हैं , पाँच साल पहले मुझे ये सब मिला। अब, अगर मैं कुछ और करूँगा तो मेरी इच्छाएँ होंगी।)

आदर्श जीवन के बारे में दूसरी महिला भौतिकवादी नहीं हैं जैसा कि आम लोग सोचते हैं, लेकिन उसमें देखें, संपूर्ण जीवन वह हैं यदि आप 24 घंटे में एक घंटा खुद को दे सकते हैं। यह हैं खुशी और मानसिक शांति की कुंजी।

(मेरे हिसाब से परफेक्ट लाइफ वह हैं जब आप 24 घंटे में से कम से कम एक घंटा सिर्फ और सिर्फ अपने लिए बिता सकें। इस एक घंटे में आप अपने पति , बच्चों, परिवार, घर, नौकरी और दुनिया के बारे में नहीं सोचेंगे। आत्मकेंद्रित हो जाओ और केवल अपने बारे में सोचो , अगर तुम ऐसा कर सकते हो, तो यह एक आदर्श जीवन हैं। यदि आप एक घंटा भी नहीं बचा सकते हैं, तो यह एक संपूर्ण जीवन नहीं हैं, चाहे आपने कुछ भी हासिल किया हो।)

दूसरी महिला के विचार में सफलता एक व्यापक शब्द हैं और इसके कई पहलू या आयाम हैं। अगर आप हर पहलू में खुद को संतुष्ट करते हैं तो आप सफल हैं। भौतिकवादी चीजों से सफलता कभी नहीं मिलती। यह संतुष्टि का स्तर हैं।

(सफलता का एक व्यापक अर्थ हैं। अगर मैं पेशेवर जीवन के बारे में बात करता हूँ तो अगर लोग आपसे संतुष्ट हैं, तो आप सफल हैं। सबसे पहले , आप अपना सर्वश्रेष्ठ देते हैं, आप सफल होते हैं। घर पर पति, बच्चों को अपना सर्वश्रेष्ठ दिल से दें। और ससुराल तो आप सफल हैं उसके बाद समाज के लिए कुछ करते हैं तो सफल होते हैं और उसके बाद अपने लिए कुछ करते हैं तो आप सफल होते हैं ये चार आयाम हैं जो आप करते हैं तो वह आपके लिए एक सफल जीवन हैं। फिर से , मैं कहूँगा कि थोड़ा आत्मकेंद्रित हो और अपनी खुशी के लिए कुछ करो तो आप सफल हैं।)

दूसरी महिला सोचती हैं कि सफलता भौतिकवादी चीजों से नहीं आती और आपकी सफलता आपकी हैं; आपको अपनी सफलता को दूसरों की आंखों से नहीं देखना चाहिए।

(अपनी सफलता को दूसरों के नजरिए से न देखें , और दूसरों से अपनी तुलना भी न करें। अपने वर्तमान से केवल अपने अतीत की तुलना करें। भविष्य के बारे में न सोचें , तो आप खुद को सफल पाएंगे अन्यथा सफलता का कोई मतलब नहीं हैं। भौतिकवादी चीजों से कोई सफलता नहीं हैं।)

दूसरी महिला के अनुसार अगर आपको अपने जीवन में सच्चा प्यार मिलता हैं तो आप सबसे सफल व्यक्ति हैं। यह भावना आपको पूरी तरह से संतुष्ट करती हैं।

(यदि आपके जीवन में सच्चा प्यार हैं तो आप सबसे सफल हैं, उसके बाद कोई इच्छा नहीं बची हैं। यह मेरा विचार हैं। हां , मुझे सच्चा प्यार मिला हैं और यह एक सफलता हैं। उसके बाद सब कुछ भौतिकवादी हैं। जब शादी होती हैं) , यह सामाजिक हैं क्योंकि हमारे समाज में कितने लोग प्रेम विवाह कर सकते हैं और यदि करते हैं तो उनमें से कितने सफल होते हैं। अगर आपको सच्चा प्यार किसी भी रूप में मिला हैं तो आप सफल हैं।)

दूसरी महिला की नजर में जीवन में सफलता के दो पहलू हैं सच्चा प्यार और आर्थिक आजादी।

"मेरे लिए सबसे बड़ी सफलता 2 हैं एक तो आप आर्थिक रूप से मजबूत हो जाएं। आजकल का जैसा समाज हैं उसमें औरत को आर्थिक रूप से मजबूत होना उसकी शादीशुदा जिंदगी में सफलता होने से ज्यादा जरूरी हैं। आप आर्थिक रूप से मजबूत हैं तो सारी चीज आप के लिए आसान हो जाएगी और आप को समाज में सम्मान भी मिलेगा या जो आपकी सम्मान नहीं भी करता था वो भी आप को मनेगा लगेगा। दो चीजें हैं आपके पास तो आप सफल हैं सच्चा प्यार और आर्थिक रूप से मजबूत होना। बाकी पनीर तो आपको नियति में मिल जाती हैं।"

दूसरी महिला की नजर में सच्चे प्यार का मतलब यह नहीं हैं कि आप साथ रह रहे हैं। सच्चा प्यार हर बार साथ रहने का एहसास और पूर्ण होने का एहसास हैं।

"पेशेवर सफलता के बाद यही एक चीज हैं जिसकी कमी थी वो भी पूरी हो गई हैं सच्चा प्यार , यही सबसे बड़ी उपलब्धि हैं। अब कुछ कमी नहीं लगती हैं। सच्चा प्यार का मतलब ये नहीं होता की आप साथ रहें, शादी करें या एक दूसरे को समाज के लिए छोर दें। उससे जब भी बात करते हैं तो लगता हैं मैं पूरा हो गया। उसे भी वही फीलिंग होती हैं।"

दूसरी महिला के लिए व्यावसायिक सफलता प्राथमिकता पर हैं। इसका कारण यह हैं कि व्यक्ति को पहले अपनी बुनियादी जरूरतों को पूरा करना होता हैं, उसके बाद कुछ और आता हैं।

"मैंने अपनी पेशेवर सफलता को पहले रखा। जब मुझे केन्द्रीय विद्यालय से मेरा नियुक्ति पत्र मिला, तो वह चीज मुझे सफल बनाती हैं क्योंकि मैंने प्रतियोगिता को हरा दिया हैं। मैंने दुनिया के शीर्ष पर महसूस किया, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि दूसरों के मामले में क्या हैं। मैं अपने भगवान को धन्यवाद कहता हूँ। मैं उनसे माँगना छोर दिया हैं।"

सभी माताओं की तरह, दूसरी महिला भी सोचती हैं कि नौकरी मिलने के बाद उसके बच्चों का भविष्य बेहतर होगा क्योंकि वह वित्तीय सहायता प्रदान कर सकती हैं।

"जॉब मी सेलेक्शन के बाद सबसे पहला थाट जो आया था की अब मेरे बच्चों का भविष्य सुधार जाएगा। मतलब मैं अपने बच्चों को दे पाउंगी जो एक माँ-बाप सोचते हैं। सबसे पहला थाट की गॉड तुमने मुझे इसी काबिल बना दिया की हम अपने बच्चों की परवरिश ऐसी कर ऐसी कर सके की समाज के लिए कुछ कर सके"

दूसरी महिला के लिए पेशेवर सफलता उसके लिए महत्वपूर्ण हैं और सफलता मिलने से पहले और बाद के जीवन में बहुत अंतर हैं। प्यार में सफलता उसके लिए एक व्यक्तिगत पहलू हैं। सफलता मिलने के बाद लोगों का नजरिया भी बदल जाता हैं।

"ग्रेटेस्ट सक्सेस हम जॉब को कहेंगे और जो सच्चा प्यार हैं वो मेरा अपना पर्सनल हैं उससे मुझे संतुष्टि मिलेगा। मेरे नजरिये से मेरा प्रोफेशनल सक्सेस हायर हैं। सक्सेस के पहले और बाद में बहुत ज्यादा बदलाव हैं। जब आप को सफलता मिली हैं तो आपके दम पर कुछ भी कर सकते हैं , इसे लिए आपको कोई मानता हैं तो तर्क दे सकते हैं। किसी के सामने आपको हाथ फेलने की ज़ौरत नहीं होती।"

दूसरी महिला के अनुसार उनका जीवन वर्तमान से बेहतर हो सकता हैं लेकिन उनकी बचपन की परिस्थितियां ज्यादा अनुकूल नहीं थीं और ज्ञान और मार्गदर्शन की कमी ने उनके जीवन को जटिल बना दिया था।

"मेरा बचपन बहुत ही ज्यादा परशानियों भरा था। क्योंकी वही इंसान जिसको करेक्ट सिचवेशन और गाइडेंस मिलता हैं सक्सेज मिल जाती हैं। एक इंसान जिसको फेयरबल सिचवेशन नहीं मिल पति तो वो कुछ नहीं कर पाता हैं। बचपन में मेरे पास मोटिवेशन तो बहुत था लेकिन मार्गदर्शन लैक ऑफ़ गाइडनेंस और लैक ऑफ़ नॉलेज के कारण जो सक्सेज हैं वो बहुत देर बाद आई।"

दूसरी महिला को अपनी सफलता में कुछ याद आ रहा हैं और वह इससे बेहतर पदनाम हैं वर्तमान में, वह बहुत अधिक सपने नहीं देखती हैं।

"हां मिसिंग हैं मेरी सक्सेस में की मैंने और थोड़ी सी मेहंदी कर ली हॉट जो वर्तमान पदनाम हैं उससे और ऊपर होती हैं। खुद को मैं 10 में से 8 अंक डूंगी, हो सकता हैं की मैं थोड़े में ही संतुष्ट हो जाती हूँ इसलिये ये नंबर मैंने कट लिया।" (हाँ, मेरी सफलता में कुछ कमी हैं कि अगर मैंने थोड़ी सी मेहनत की

होती, मैं वर्तमान पद से ऊँचा होता। मैं 10 में से 8 अंक दूंगा मेरी सफलता, शायद इसका कारण हैं, मैं छोटी-छोटी बातों से संतुष्ट हूँ।)

दूसरी महिला को अपनी सफलता में कुछ याद आ रहा हैं और वह वर्तमान से बेहतर पद हैं , वह ज्यादा ऊंचे सपने नहीं देखती हैं।

हर्डल्स तू सबकी लाइफ में आते हैं , मेरी लाइफ में बहुत ज्यादा हर्डल्स नहीं आए। बस हर्डल्स रहे तो सब कुछ गुड में ही सा ,सीमट गया, बेटर हो सकता था। मेरी फैमिली ही सपोर्टिव टू थी बट उनकी ही कुछ चीजे हर्डल्स भी रही जैसे उनको उनके हिसाब से भी चीजें चाहिए रहती थी मेरे लिए और अपने लिए भी एक्सपेंशन होती थी।

"मेरे पति ही हैं जो मुझे प्रेरित करते हैं आज तक मुझे। किसी चीज के लिए ना नहीं बोला। मेरे अंदर एक अलग सा सकारात्मक रवैया हैं। सकारात्मक रवैया का दसरे लोग गलत मतलाब भी निकलते हैं की इसको तो कोई फ़र्क ही नहीं पदा फ़ार्क तो सबको पता हैं कोई दिखता हैं कोई नहीं दिखता।"

दूसरी महिला अपनी सफलता का पूरा श्रेय अपने ससुर को देती हैं क्योंकि उन्होंने उसे इस हद तक प्रेरित करने के लिए कि उसने जो चाहा वह किया।

"मेरी प्रोफेशनल लाइफ की सक्सेस का टोटल क्रेडिट मैं अपने ससुर को देना चाहूँगी। ही ऑलवेज मोटिवेटेड मी। उन्होंने मुझसे एक वाक्य बोला था जो मुझे आज तक एज इट इज याद हैं, मैं किचेन में थी तो पापा बोले 'एम.एससी की हैं रोटी बेलने के लिए की हैं क्या।' इट वाज ए मीनिंगफुल सेंटेंस फॉर ए डॉटर-इन लॉ। बस उसी समय से मैंने ठान लिया था की मुझे कुछ करना हैं और जब मेरी जॉब लगी थी तो वह (फादर-इन-लॉ) वाज द हैंप्पीएस्ट पर्सन।"

दूसरी महिला की सफलता में ससुराल का सकारात्मक माहौल था।

“मेरे ससुराल का माहौल बहुत सपोर्टिव था और मुझे चीज़े मिलती गई आसानी से। मेरी सक्सेस में बहुत सारे फैक्टर हैं जैसे सिचुएशन, एजुकेशन, मोटिवेशन और पर्सन्स ये सब मेरे प्लस पॉइन्ट थे।”

दूसरी महिला कुछ ऐसी बनना चाहती थी जिसे धन और शोहरत माना जाए और उसे ये दोनों पहलू शिक्षा से मिले।

"ये लगता था की इतना पढ़े हैं तो लाइफ में कुछ अचीव करना हैं वो अचीवमेंट ऐसी होनी चाहिए की वो मनी के रूप में भी दिखे और आपके फेम के रूप में भी दिखें।"

दूसरी महिला की सफलता शिक्षा से प्रभावित हैं। उनके पास अपने करियर के बारे में एक स्पष्ट दृष्टिकोण हैं और उन्होंने केवल उन्हीं शैक्षणिक पाठ्यक्रमों का अनुसरण किया जो उनके पेशे के लिए आवश्यक थे।

“जिस सफलता की बात मैंने की हैं वो पूरी तरह एजुकेशन इन्फ्लुएंस्ड ही हैं। मेरे साथ प्लस पॉइंट ये रहा की मुझे जो प्रोफेशन चुना था मैंने उसी में एजुकेशन ली। लिटरेट तो बहुत लोग हो जाते हैं बट एडुकेट सब नहीं हो पाते हैं। जो कुछ भी आप कहीं से पढ़ते हैं वो आपकी थॉट को चेंज करती हैं। एजुकेशन ने सक्सेस के हर एस्पेक्ट को इन्फ्लुएंस किया हैं।”

दूसरी महिला के विचार में वह शिक्षा प्राप्त किए बिना वह स्थान प्राप्त नहीं कर सकती थी जहाँ वह वर्तमान में हैं। शिक्षा उसकी सफलता की रीढ़ हैं।

“नो, नो, नॉट एट आल···विथाउट एजुकेशन आई कुड अचीव मैं प्रसेन्ट सक्सेस. क्यों कि पड़ेगा ही, उसके बिना तो सक्सेस नहीं मिल सकती चाहे वो प्रोफेशनल लाइफ हो, पर्सनल लाइफ या फिर सोशल लाइफ हो। एजुकेशन से हमारी थिंकिंग बदलती हैं, इम्प्रूव होती हैं",

दूसरी महिला सकारात्मक दृष्टिकोण की महिला हैं और यह उनके व्यवहार में हमेशा झलकती हैं।

"यदि यू विल डु गुड विथ मी, आई विल गिव यू बेटर। इफ यू विल गिव मी वन, आई विल गिव यू टू। इफ यू गिव मी जीरो, आई विल गिव टू। अगर कोई मेरे साथ एक अच्छा काम करता हैं तो मैं उसके साथ दो करूंगी। लेकिन कोई मेरे साथ एक भी अच्छा काम नहीं करता हैं तो मैं दो गली नहीं दूंगी। आपकी नज़र में हम क्या हैं ये आप जाने मगर मेरी नज़र में कोई भी इंसान गलत नहीं हैं, सब अपने पॉइंट ऑफ़ व्यू से सही होते हैं। एव्री सोल वांट्स एक्सेप्टेन्स।"

दूसरी महिला उस समाज से ताल्लुक रखती हैं जहां महिलाओं की शिक्षा का प्रतिशत अन्य जगहों की तुलना में अधिक हैं। लेकिन लोग फील्ड जॉब के बजाय टीचिंग जॉब को महिलाओं के लिए एक आदर्श के रूप में पसंद करते हैं।

"मैं कानपुर से हूँ और कानपुर में वूमेन एजुकेशन का प्रतिशत यू.पी. में हाईएस्ट हैं। मुझे पढ़ने पर कभी भी रेस्ट्रिक्शन्स नहीं थे, जो पढ़ना हैं पढ़िए किसी भी फील्ड में। हाँ पर एक चीज जो मेरे घर में और आस-पास थी की फील्ड वर्क को अवॉयड किया जाता था, बनाना हैं तो टीचर बन जाओ। वूमेन के लिए बेस्ट प्रोफेशन टीचिंग ही था। क्यू की वो सेफ भी होता हैं और टाइम भी ज्यादा मिल जाता हैं।"

दूसरी महिला के समाज ने उसकी कड़ी मेहनत की सराहना की और हमेशा उसकी सफलता का श्रेय उसे दिया क्योंकि उसने पढ़ाई की और शादी के बाद नौकरी पाई। समाज का वातावरण अनुकूल था।

"मेरी सोसाइटी का मेरे लिए बहुत सकारात्मक प्रतिक्रिया था। आस-पास के लोग कहते हैं की ये बहुत मेहंदी करती हैं ये जरूर कुछ करेगी। उनको लगता था शादी के बाद पढ़ाई कर रही हैं, उन्होंने मुझसे प्रभावित किया। मेरे घर में सब सह ऑपरेट करते द लेकिन लोग क्रेडिट मुझे मिलते हैं तुम अच्छे से मैनेज करते हो। मेरी सोसाइटी का पर्यावरण अनुकूल था।"

दूसरी महिला के परिवार के सदस्यों को उसके द्वारा चुने गए क्षेत्र के बारे में पता था और उसे हमेशा अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती रही।

"मेरी फैमिली अवेयर थी और उनका रिएक्शन पॉजिटिव था की तुम आगे बढ़ो अपना लक्ष्य हासिल करो करो। कभी मैं हताश थी तो वो मुझे याद दिलाते थे की आगे बढ़ो जो मिल गया हैं वही पर मत ठहरो।"

दूसरी महिला के परिवार वालों ने हमेशा उसका साथ दिया लेकिन सफलता मिलने के बाद उन्हें लगता हैं कि वह रवैया दिखा रही हैं।

"मेरे संघर्ष की अवधि में किसी का रवैया बदलें नहीं हुआ लेकिन जब मैंने सफलता हासिल कर ली तो उन्हें लगता हैं कि मैं अभिमानी हो गया हूँ। लेकिन मैं तो बिलकुल वैसी ही हूँ डाउन टू अर्थ। जब कोई लेडी सेल्फ डिपेंडेंट हो जाती हैं तो उसके अंदर कॉन्फिडेंस आ जाता हैं जिसे लोग गलत समझ लेते हैं।"

दूसरी महिला का पालन-पोषण एक संयुक्त परिवार में हुआ और इससे उसकी सफलता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा।

"मेरी संयुक्त परिवार थी माँ के यहाँ भी और ससुराल में भी और मुझे इस्का फ़यदा ही मिला हैं जबकी मैंने लोगों से सुना हैं की संयुक्त परिवार के लिए अनुकूल स्थिति नहीं होती हैं।"

दूसरी महिला के पैतृक घर की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी, हालांकि इससे उसकी सफलता पर कोई असर नहीं पड़ा।

“मेरे माता-पिता के घर की वित्तीय स्थिति अच्छी नहीं थी लेकिन वो प्रभाव नहीं किया कभी मेरे ऊपर। मुझे पढ़ाई का महल नहीं मिल पाता था। मेरी फैमिली में ही इतने संकट रहते थे, इतने लड़े झगड़े हुआ करते थे की पढ़ाई का महल नहीं बन पाया। लेकिन मेरे ससुर ने मुझे हर तरह से समर्थन किया हैं।”

दूसरी महिला के परिवार के सदस्य बहुत अधिक पढ़े-लिखे नहीं थे, लेकिन उनकी शिक्षा के स्तर ने उनकी सफलता को प्रभावित नहीं किया।

"मेरी मम्मी ज्यादा पढ़ी नहीं थी शायद 1 या 2 क्लास तक और पापा हाई स्कूल तक उसके बाद पापा ने ट्रेनिंग की थी। मेरे ससुराल में भी कोई इतना ज्यादा पढ़ा नहीं था। लेकिन परिवार के सदस्यों की शिक्षा का कोई प्रभाव नहीं रहा, ये कोई बाधा नहीं रहा।"

4.5.3 व्यवसायी- तीसरी महिला

तीसरी महिला एक बिजनेस वुमन हैं। वह लखनऊ से ताल्लुक रखती हैं और उनकी शिक्षा और पालन-पोषण भी लखनऊ में ही हुआ हैं। उनके पति और माता-पिता सपोर्टिव थे। उसके दो बच्चे एक लड़का और एक लड़की हैं। वह एक महिला ब्यूटी पार्लर चला रही हैं। तीसरी महिला एक रचनात्मक महिला हैं और उन्होंने इसे अपने पेशे से जोड़ा। वह आशावादी हैं और उन लोगों के लिए खुशी फैलाना चाहती हैं जो वैसे भी उससे जुड़े हुए हैं।

तीसरी महिला किसी को फॉलो नहीं करना चाहती इसलिए उसकी लाइफ में कोई रोल मॉडल नहीं हैं।

“किसी को फॉलो करने से हम उसकी ही रेंज तक पा सकते हैं। मैं कुछ अलग करना चाहता हूँ, मेरी रेंज भी हद से आगे हैं, मैं खुद को फॉलो करती हूँ, इसलिये मेरा कोई रोल मॉडल नहीं हैं।”

तीसरी महिला इतनी फ्यूचरिस्टिक नहीं हैं और वह वर्तमान में रहती हैं। आम लोगों की तरह वह भी अपने प्रोफेशन में सबसे ऊपर मानती हैं।

"मैं इतना फ्यूचरिस्टिक नहीं हूँ। बहुत स्पष्ट होने के लिए मैं उपस्थित हूँ को बहुत ज्यादा अच्छा बनाने में विश्वास करता हूँ कि करता हूँ हमशा। आज जिस स्थिति में मैं हूँ बहुत संतुष्ट हूँ। हाँ अगर ड्रीम्स की बात करें तो जाहिर हैं कि आपने प्रोफेशन के टॉप मोस्ट होना चाहूँगी।"

तीसरी महिला को जीवन से कुछ नहीं चाहिए, उन्होंने सब कुछ सर्वशक्तिमान ईश्वर पर छोड़ दिया क्योंकि उनके अनुसार हम सीमा में सोचते हैं और ईश्वर की कृपा सीमा से परे हैं।

"इस जिंदगी से मेरे चाहने से कुछ नहीं मिलता हैं अगर मैं कुछ नहीं चाहूँगी तो जिंदगी मुझे बहुत कुछ देती हैं। मैं अपनी सीमित सोच से कुछ नहीं चाहती, वो जो असीमित सत्ता हैं मैं सब कुछ उसपे छोड़ देती हूँ। जिंदगी मुझे हद से आगे जाएगी मैं उससे कोई उम्मीद नहीं रखती हूँ।"

तीसरी महिला अपने पति के लिए सब कुछ कुर्बान कर सकती हैं क्योंकि वह उसे बिना शर्त प्यार करती हैं और अपने पति की खुशी में अपनी खुशी ढूंढती हैं।

"मेरी आत्मा मेरी अपनी प्राथमिकता हैं लेकिन मेरी खुशी मेरे सोलमेट की खुशी में शामिल हैं। हमारी बॉन्डिंग भी इतनी अच्छी हैं की मैं शब्दों में नहीं बता सकती। मैं कुछ भी त्याग कर सकती हूँ तो अपने पति के लिए। मैंने ये पेशा इस लिए चुना की मैं हर पल उनके साथ जी सकु, उनके लिए मेरी हर चीज बिना शर्त हैं।"

तीसरी महिला को अपने जीवन में कोई कमी महसूस नहीं होती हैं, वह अपने जीवन में जो कुछ भी हैं उससे संतुष्ट हैं।

“पहले बहुत शिकायत रहती हैं जब मैं समझ नहीं पति थी की जिंदगी क्या चाहती हैं मुझसे। लेकिन पिचले 3-4 सैलून से समाधान शुरू किया हैं तो मुझे एक भी चीज की कमी नहीं लगती। मेरे पास सब कुछ हैं... एक अच्छी फैमिली, बिजनेस सेटअप हैं और मैं इंडिपेंडेंट हूँ।"

तीसरी महिला खुश रहना चाहती हैं और उसकी प्राथमिकता उसकी खुशी और उसके आसपास के लोगों की खुशी हैं।

“मेरी प्राथमिकता मेरी आत्मा की खुशी हैं और मैं हर चीज बिना शर्त करता हूँ। मैं किसी पे डिपेंड नहीं हूँ। पहली प्राथमिकता मेरी आत्मा हैं दूसरी मेरी शरीर हैं तीसरी मेरे बच्चे और पति हैं और चौथी हैं संबंध और फिर सामाजिक।”

तीसरी महिला अपनी वर्तमान स्थिति से संतुष्ट हैं। ऐसा इसलिए हैं क्योंकि वह हमेशा वर्तमान में रहती हैं।

"मैं अपनी वर्तमान स्थिति से 100% संतुष्ट हूँ क्योकी आगे पल का पता नहीं हैं।"

तीसरी महिला के अनुसार सफलता बहुआयामी हैं और व्यक्तियों के अनुसार इसके कई आयाम हैं। बहुत सारे लोग हैं, जो सफलता के आयाम खुद बनाते हैं।

“हम ये नहीं कह सकते हैं कि सफलता सिंगल डायमेंशनल हैं। मैं जो भी सर्विस प्रोवाइड कर रही हूँ उसके साथ-साथ पर्सनैलिटी काउंसलर भी हूँ। बहुत से लोगों की व्यक्तिगत समस्याएं भी हल करें कर्ता हु और ये मेरा कमैं का स्रोत नहीं हैं ये मैं बस चैरिटी बेसिस पे करता हूँ। मेरा बिजनेस मेरा कमैं का जरिया हैं लेकिन प्रायोरिटी मेरे काम के परफेक्शन को लेकर हैं की मैं उसे कितना क्रिएटिव कर सकती हूँ दूसरा ये की मेरा क्लाइंट जो मुझसे सर्विस ले के जा रहा हैं उसके चेहरे की खुशी और मुस्कान मेरे लिए बात करती

हैं। मैं अल्टीमेट ब्लेस तब होती हैं जब मेरे आस पास के लोग एंटरटेन हो रहे हो। जैसे हमारी परवरिश मुझे बहुत सारे लोगों का हाथ होता हैं वैसा ही सफलता की भी बहुत सारी डायमेंशन होती हैं।"

तीसरी महिला के अनुसार, उन्होंने वर्तमान में सफलता के सभी आयामों को हासिल किया हैं और उन लक्ष्यों को भी जो कुछ साल पहले तय किए गए थे।

"अगर मैं अपनी वित्तीय सफलता की बात करु तो मैंने उससे ज्यादा हासिल किया हैं जो मैंने कुछ साल पहले सोचा था। पहले मैं लक्ष्य तय करती हैं लक्ष्य से आगे चलती हूँ। जितनी सक्सेस और फेम मुझे मिली हैं मैंने उतनी तो उम्मीद भी नहीं की थी बिजनेस में भी और फैमिली में भी। मैं पुरी तरह संतुष्ट हूँ।"

तीसरी महिला इतनी भौतिकवादी नहीं हैं और वह उम्मीदों के बिना जीना चाहती हैं और हमेशा वर्तमान क्षण का आनंद लेती हैं।

"बिना किसी अपेक्षा के जीना और जो कुछ आपके पास हैं उसे स्वीकार करके जीना और हर समय वर्तमान क्षण में रहना, यही मेरा संपूर्ण जीवन हैं। दरअसल, कोई भी भौतिकवादी चीज परफेक्ट हैं ही नहीं। जिंदगी का परफेक्शन आपकी इनर सोल की जर्नी हैं की आप कितनी खुशी और आशीर्वाद के साथ हो।"

तीसरी महिला के लिए अगर आपके मन पर शत-प्रतिशत नियंत्रण हैं तो आप सफल हैं। सफलता केवल भौतिकवादी चीजों तक ही सीमित नहीं हैं।

"मेरे हसब से आप मेंटली कितने स्ट्रॉन्ग हो ये सक्सेस हैं। बिजनेस, फैमिली ये सब भी सक्सेस का अलग-अलग पहलू होते हैं इंसान के लिए लेकिन याकिन करिए आप की लाइफ की सबसे मुश्किल टास्क हैं अपने माइंड पे कंट्रोल करना। अगर आपने अपने माइंड पे कंट्रोल कर लिया तो आप दुनिया

जीत सकते हैं। अगर एक वारियर हैं तो सामने चार लोग लाडने के लिए आ जाएंगे लेकिन जो मानसिक रूप से मजबूत हैं उसके सामने दुनिया प्राकृतिक होती हैं।"

तीसरी महिला दुनिया की सबसे बड़ी काउंसलर बनना चाहती हैं। यह उसका सपना हैं। वह इसे अपने व्यवसाय के समानांतर कर रही हैं। लोगों की काउंसलिंग करना उसके लिए सबसे बड़ी कामयाबी हैं।

"मुझे दुनिया का सबसे बड़ा काउंसलर बनने का मुन था, ये मेरा हिडन ड्रीम हैं। मुझसे इस से ज्यादा खुशी किसी चीज में नहीं मिलती जितना की किसी को उसकी समस्याएं से निकलने में मिलती हैं। मैं अपने इस जुनून को अपने काम में भी दाल देता हूं। जब मैं 13 साल की थी तो मैंने एक आंटी जो की मुझसे 20 साल बड़ी थी उनकी काउंसलिंग की थी। वो फीलिंग मात्र बहुत बड़ी थी।"

बचपन की उस घटना के बाद तीसरी महिला को फर्क महसूस हुआ और इस तरह के लोगों की और मदद करने का आत्मविश्वास भी मिला।

"उस दिन के बाद मेरे अंदर आत्मविश्वास जगना शुरू हुआ की मैं लोगों की मानसिक रूप से तोर पर मदद कर सकती हूं। मेरे अंदर शायद ये पावर हैं और ऊपरवाले ने मुझे इसी लिए बनाया हैं। मैने साइकोलॉजी में एमए भी किया हैं। इसमे मुझे बचपन से रुचि रहा हैं और मैं बताता नहीं शक्ति की मैंने अब तक कितने लोगों की काउंसलिंग की हैं। ये यात्रा मेरी अजेय हो चुकी हैं।"

तीसरी महिला की नजर में उनकी लाइफ ज्यादा परफेक्ट होगी क्योंकि उन्हें अपने काम पर भरोसा हैं।

"मैं ज़रूर हूँ की जिस तरह से मैं आज चल रही हूँ भविष्य में मेरी ज़िंदगी इससे बेहतर होगी, अगर मैं ज़िंदा रही तो। काई बार परेशानी में लोग आते हैं और मैं बिजनेस की वजह से उनको समय नहीं

दे पाती हूँ। फ्यूचर में जब मैं ज्यादा प्लेस हायर कर लूंगी और स्टाफ बढ़ा लूंगी तो मैं उन लोगों के लिए टाइम निकल पाउंगी।"

तीसरी महिला की जिंदगी में सिर्फ वक्त की कमी हैं और वह लोगों को खुश करने के लिए उनके साथ वक्त बिताना चाहती हैं।

"अब ऐसा नहीं हैं हन पर पहले ऐसा लगता था कि मेरा आराम क्षेत्र कहीं न कहीं मुझे रोक देता हैं। कुछ चीजों को लेके महसूस कर रही हूँ आती थी की मैं अपने कम्फर्ट जोन से नहीं निकल सकती। मैं थोड़ा और मेहंदी करता हूँ तो मैं और ज्यादा खुशियाँ बाँट सकती।"

पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण तीसरी महिला अभी तक खुद को उस तरह से नहीं खोजती हैं जैसा वह करना चाहती हैं।

"मैं आठ अंक दूँगी अपनी सफलता को 10 में से। दो पॉइंट्स की जो कमी हैं क्योकी मेरे ऊपर अभी परिवार की जिम्मेदारियां बहुत हैं। मेरे ससुराल वाले बीमर रहते हैं तो मैं उनके साथ वक्त बिताती हूँ, मेरे बच्चे अभी छोटे हैं। मैं उनको इस लेवल तक ले आउ की वो मेरे साथ कांधे से कंधा मिलाकर काम कर सके। तब तक तो ये लैकिंग ही हैं मेरी।"

तीसरी महिला खुद का विश्लेषण करती हैं और पाती हैं कि हमारे दिमाग में ही बाधाएं हैं, वास्तव में कोई बाधा नहीं हैं अगर हम महसूस करते हैं।

"शुरू करने में बाधा आई, किसी भी महिला के लिए घर से बहार निकल कर कामना अपना एक मुकम ता करना बहुत आसान काम नहीं होता। उसे अपनी फैमिली की साड़ी जिम्मेदारी, बच्चन की परवरिश की जिम्मेदारी भी उसी के कंधो पर होती हैं। वो बाधा मेरी लाइफ में उस समय रहे। उन्को मैं हर्डल्स यूएस टाइम लेति थी क्योकी तब मैं बहुत फ्यूचरिस्टिक थी। फिर मैंने अपने ऊपर काम किया,

आत्मविश्लेषण का दौर गुजर हैं। मैंने अपने आप से पूछताछ कर के अपने आप को निकला हैं तो जवाब देने के लिए सिर्फ यहीं आया की आप खुश रह कर ही खुशियां बांट सकते हैं। तब से मुझे कुछ भी हर्डल नहीं लगता। इस जिंदगी में इस दुनिया में कभी भी किसी भी इंसान के लिए कुछ भी हर्डल नहीं होता, सिर्फ उसकी सोच बाधा होती हैं।"

तीसरी महिला एक स्व-प्रेरित महिला हैं और उनमें कुछ भी करने की इच्छा शक्ति हैं। वह अपनी सफलता का श्रेय भगवान को देती हैं और उसके बाद अपने पति को।

"मेरी सबसे बड़ी ताकत मेरी अपनी इच्छाशक्ति हैं। इसके साथ मेरे पति का सपोर्ट भी मेरी ताकत हैं। ईश्वर की मर्जी के बगैर तो कोई सफलता पा ही नहीं सकता इस दुनिया में। मेरी सफलता का सबसे पहला क्रेडिट भगवान को जाता हैं और उसके बाद मेरे पति को क्यों की वो हर समय मेरे साथ खड़े रहते हैं किसी भी मोड पे किसी भी पल पे।"

तीसरी महिला के माता-पिता, पति और प्रबल इच्छा शक्ति उसके मुख्य कारक हैं सफलता।

"माता-पिता बहुत बड़े समर्थक रहे और दूसरी बात हैं पति" और तीसरी चीज हैं मेरी सफलता हासिल करने की मेरी दृढ़ इच्छा शक्ति।"

तीसरी महिला के विचार में, उनकी शिक्षा लोगों और ग्राहकों को उनके व्यवसाय और उनके जीवन के हर पहलू को समझने में मदद करती हैं।

"मैंने मनोविज्ञान में एम.ए. किया हैं। लोगों को समाधान, उनका व्यवहार समाधान इस तरीके से मेरे अपने बिजनेस में मुझे इसका बहुत फ़ायदा मिला हैं। क्यों कि मैं क्लाइंट्स का दिमाग पढ़ पाती हूँ उनकी उम्मीदें पढ़ पति हूँ जो उनको मेरी सर्विस से हैं, इस तरह हमारी डीलिंग बहुत अच्छी होती हैं। मेरी एजुकेशन ने तो मुझे 100% हेल्प किया हैं मेरे प्रोफेशन में। मैं थैंक्यूफूल हूँ अपनी एजुकेशन के लिए,

साइकोलॉजी से पढ़ा हैं तो गलत निर्णय नहीं था। आज हर क्षेत्र में फायदा हैं न केवल व्यापार में बल्कि मेरे संबंधों में, सोशल सब जगह।

तीसरी महिला के विचार में, उन्होंने शिक्षा के कारण यह मुकाम हासिल किया हैं या नहीं भी हो सकता हैं।

"आप ये नहीं कह सकते हैं कि शिक्षा की वजह से ही आप 100% ऐसे हो। कई लोग अपने शेड से बहुत अलग मूड के होते हैं लेकिन वो उस क्षेत्र में सफलता पा रहे होते हैं जो उनके मूड से बिलकुल अलग होता हैं, तो मैं कह नहीं सकती की सिर्फ शिक्षा की वजह से ऐसा हैं। मेरा अपना मानसिक और मनोवैज्ञानिक स्तर बहुत मजबूत था तभी मैंने ये विषय चुना। अगर किसी कारण मुझे ये शिक्षा नहीं मिल पाती तो मेरी सोच लोगों को समझने की मुझे इसमे आगे बढ़ा देती हैं।"

तीसरी महिला एक हिंदू हैं और उसने एक मुस्लिम व्यक्ति से शादी की हैं और अब वह दोनों धर्मों और संस्कृति का पालन करती हैं और इससे कोई समस्या नहीं हैं।

"मैं दो धर्मों से बनी हूँ और राज्य में बहुत सारे धर्म हैं, अपने भारत का ये जो मिला-जुला संगम हैं आई लव दैट। मुझे ईद मनानी भी उतनी ही पसंद हैं जितनी दीवाली। मेरे ससुराल वाले खुद आते हैं याह दिवाली में, उनको साल भर होली का इंतजार रहता हैं और ईद पे जो सेवई बाँटी हैं मेरे माता-पिता उसका इंतजार करते हैं। तो तुम सब कुछ बहुत बढ़िया हैं, मुझे कभी कोई फर्क महसूस होता हैं ही नहीं हुआ।"

तीसरी महिला जिस समाज में रहती हैं वह महिलाओं की शिक्षा के लिए अनुकूल हैं।

"मेरे गरीब रिश्ते में लड़कियों को शिक्षा के लिए बहुत प्रेरित किया गया हैं। मैंने बचपन से आज तक कभी नहीं सुना की तुझे काम करना हैं पहले खाना बनाने पे ध्यान दे क्योंकि ससुराल जा के यही

करना हैं। मैंने बचपन से यही सुना की तुम सिर्फ पढ़ाई पे ध्यान दो और मेरे ससुराल में भी एजुकेशन को एप्रिसिएट किया जाता हैं।"

तीसरी महिला एक महिला ब्यूटी पार्लर चला रही हैं, इस क्षेत्र की पहले सराहना नहीं की गई थी लेकिन वर्तमान समय में इस काम को लेकर लोगों के विचार बदल गए हैं।

"शुरूआत में समाज का दृश्य बहुत अच्छा नहीं था, उनको लगता था की ये कोन सा काम हैं? मतलाब जैसा की आम तौर पर लोगों को लगता हैं आप डॉक्टर बन जाए, आईएएस, पीसीएस बन जाए, मानव संसाधन विभाग में आप की नौकरी लग जाए तो ये महान उपलब्धि हैं, इस प्रकार की सोच रही हैं हमारे समाज में। ये मैने देखा शुरुआती दौर में लेकिन आज बहुत बदल गया हैं आज इस बिजनेस को लोग बिलकुल अलग नजरिये से देखते हैं, एक हुनर की तरह देखते हैं।"

जब तीसरी महिला ने अपना व्यवसाय शुरू किया तो उनके काम के बारे में उनके समाज की प्रतिक्रिया अच्छी नहीं थी।

"बिजनेस के दृष्टिकोण से संघर्ष करने के लिए नहीं रहा लेकिन शुरुआत का एक साल ऐसा गुजरा जिसमें की सोसाइटी का रिएक्शन बिकुल सुन्न रहा की ये कोई बहुत बड़ा काम नहीं हैं। ये तो आम हैं जिसे देखो ऐसा कर देता हैं। एक साल के बाद लेकिन चीज़ बदल गई फिर मेरा अपना तरीका बिलकुल अलग हैं, मुझे इसमे हर एक की मुस्कान दिखी हैं। फ़िर दुनिया का नज़रिया बदल गया। अब तो लोग इस क्षेत्र में आना पसंद करते हैं, इसके लिए हायर एजुकेशन लेते हैं, कॉस्मेटोलॉजी, डर्मेटोलॉजी के लिए विदेश तक जाते हैं।"

तीसरी महिला जिस समाज में रह रही थी, वह उसके काम के अनुकूल नहीं थी, हालाँकि उसने कड़ी मेहनत की और चीजों को बेहतर बनाया।

“समाज का पर्यावरण अनुकूल नहीं था। वही हैं ना की जब सूरज उग जाता हैं तब दुनिया को धूप दिखती हैं, जब तक नहीं उगता तब तक कोई सराहना नहीं करता किसी को विश्वास ही नहीं होता हैं की कहाँ सूरज निकलेगा अभी तो रात ही हैं। जब सूरज उग गया तो सबको दिख गया।"

तीसरी महिला के माता-पिता ने हमेशा जीवन के हर पहलू और हर परिस्थिति में उनका साथ दिया।

“मेरे परिवार के सदस्यों ने तो बहुत समर्थन किया हैं, मतलब ये उनकी मोटिवेशन और उनके इंस्पिरेशन का नतीजा हैं की मैं इस फील्ड में आगे बढ़ पाई हूँ वरना लोगो का नज़रिया इस क्षेत्र को ले के इतना महान नहीं होता हैं। लेकिन मैंने अपने माता-पिता से सीखा हैं कि कोई भी काम बड़ा या छोटा नहीं होता हैं। ये बात मैं बचपन से सुनती आ रही हूँ कि जो कर रही हैं वो बेहतर करना हैं।"

जब उन्होंने मैदान के बारे में सुना तो तीसरी महिला के परिवार के सदस्यों की प्रतिक्रिया सकारात्मक नहीं थी, उन्होंने चुना लेकिन उस क्षेत्र में जाने का फैसला करने के बाद समर्थन किया।

“मेरे माता-पिता का पहला रिएक्शन था की तुमने जब आईएएस या पीसीएस की तयारी की हैं तो तुम इस फील्ड में क्यों जा रही हो, मैंने टीचिंग जॉब भी की हैं और टीचिंग मुझे आज भी पसंद हैं, लोगों को सिखाना मेरे मनोवैज्ञानिक क्षेत्र का हिसा हैं। मैंने पापा से कहा की आईएएस-पीसीएस अपनी जगह ग्रेट जॉब हैं लेकिन इसमे मैं अपनी रचनात्मकता नहीं डाल सकती। मेरे इस तरह के तर्क से वो कायल हो गए।”

तीसरी महिला का परिवार एकाकी था और वह सोचती हैं कि इससे उन्हें रचनात्मक होने के अधिक अवसर मिले।

"मेरी फैमिली न्यूक्लियर फैमिली रही हैं और मेरी सक्सेस को इन्फ्लुएंस भी इसलिये किया हैं क्योंकि जब आप अकेले होते हैं, खाली होते हैं तो ज्यादा रचनात्मकता की तरफ़ भागते हैं। न्यूक्लियर

फैमिली होने की वजह से मैंने अपने टैलेंट को ज्यादा समझा और जाना। इसलिए, यह मायने रखता हैं कि या तो यह एकल परिवार हैं या संयुक्त परिवार।"

तीसरी महिला एक मध्यमवर्गीय परिवार से ताल्लुक रखती हैं और कभी-कभी वह जो चाहती हैं उसे हासिल करने की उसकी इच्छा शक्ति को मजबूत करती है।

"मेरी परिवार की वित्तीय स्थिति बहुत अच्छी भी नहीं कहूँगी बहुत नीचे भी नहीं कहूँगी, एक औसत स्थिति थी परिवार की। कई बार ऐसा बी हुआ की अभी तुम्हे ये कोर्स नहीं करा सकते। लेकिन मेरी परवरिश में मेरी दादी का हाथ रहा हैं वो कभी हार नहीं मानी। तो हालात कैसे भी रहे हो, मेरे परिवार की आर्थिक स्थिति कभी अच्छी नहीं भी रही तो मैंने कभी हार नहीं मानी मुझे ऐसा लगता हैं की ऐसी स्थिति ने मेरी ताकत को पहचानने और मेरी विल पावर स्टॉन्ग करने में बहुत मदद की हैं।"

तीसरी महिला एक हिंदू थीं और उन्होंने एक मुस्लिम व्यक्ति से शादी की और दोनों धर्मों ने उनके विचारों को प्रभावित किया और उनके अनुसार दोनों धर्म ज्ञान से भरे हुए हैं। उसे इस मुद्दे से संबंधित कोई समस्या नहीं थी।

"पहले हम हिंदू धर्म से बिलॉन्ग करते हैं, इतना खुला धर्म हैं हर धर्म को स्वीकार करने वाला। मैं अपने ओपन माइंडेड होने का क्रेडिट अपने धर्म को ही देती हूँ। अब मैं बिलकुल धर्म के खिलाफ मे पहुँच चुकी हूँ एक बहूँ की तरह रोल प्ले कर रही हूँ। क्योंकि मेरी ऐसी परवरिश हुई हैं, अगर मैं तुलना करू तो मुझे वहाँ भी कोई फर्क नहीं दिखता। मैने इस्लाम को भी बहुत गहरा पढ़ा हैं वो मुझे उतना ही खुले दिमाग वाला दिख रहा हैं। ससुराल वालों के परिवार में मेरे ऊपर कोई दबाव नहीं रहा तो मेरे अंदर सम्मान भी हैं। मैं एक बहुत ही बेहतरीन माध्यम हूँ दोनों धर्म को बाउंड करने का। मैं अपनी इसी स्थिति से पूरी तरह संतुष्ट हूँ। यहा पर नमस्ते करता हूँ तो वहा सलाम-वाले-कुम करती हूँ।"

तीसरी महिला के परिवार के सदस्य पढ़े-लिखे और खुले विचारों वाले हैं। परिवार की शिक्षा और खुले विचारों ने उनकी सोच को बहुत प्रभावित किया।

"पापा मम्मी दोनो ग्रेजुएट हैं, मम्मी ने लंबे समय तक पढ़ाया हैं। मेरी दादी के यहाँ लड़कियों को नहीं पढ़ाया जाता था। लेकिन उनके अंदर इतनी लालसा थी पढ़ने के लिए की जब उनके भाइयों को मास्टर पढ़ाने आता था तो वो दरवाजे के बाहर से सुन-सुन कर पढ़ना सीख गई। मेरी नानी हाई स्कूल पास थी। सब खुले विचारों वाले हैं।"

4.5.4 डॉक्टर चौथी महिला

चौथी महिला जिला सीतापुर में एक होम्योपैथिक चिकित्सक हैं। वह पूरे जिले में एकमात्र महिला होम्योपैथिक चिकित्सक हैं जिन्होंने मुख्य बाजार में क्लिनिक खोला है। उनके पति बिजनेसमैन हैं। उसके दो बच्चे हैं और वह एक संयुक्त परिवार में रहती है। वह कहती है कि वह जीवन के सभी पहलुओं में सफल है और अपनी वर्तमान स्थिति से खुश है।

चौथी महिला अपने पिता से बहुत प्रेरित है और वह उसके लिए एक आदर्श है।

"मेरे पिता मेरे रोल मॉडल हैं क्योंकि मैं उनसे बहुत प्रेरित हूँ। वह हमेशा दूसरों के लिए बहुत कुछ करते हैं। उनका कहना हैं की आपने लिए तो हर कोई करता हैं लेकिन आप अगर बहुत छोटे स्तर के भी हो जैसे कार्यकर्ता हो तब भी आप किसी के लिए कुछ कर सकते हैं। इसका मतलब यह नहीं हैं कि आप के पास बहुत कुछ होगा तबी आप किसी के लिए कुछ कर पाएंगे। उनका एक ये मकसद हैं की खुद को खुश कैसे रखेंगे।"

चौथी महिला अगले कुछ वर्षों में एक सामाजिक कार्यकर्ता बनना चाहती हैं और लोगों को होम्योपैथी के बारे में जागरूक करना चाहती हैं।

“अगले 5 वर्षों में मैं अपने आप को एक अच्छी सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में देखना चाहती हूँ, ये मेरा सपना हैं। दूसरा मेरा सपना हैं की मैं इस होमियोपैथी की फील्ड को इतना बढ़ा दूँ की लोगों समझ आए की ये एक साइंस हैं, ये वर्क करती हैं। अगर आप किसी इनिशियल फेज में हमारे पास आते हैं तो हम उसे 2 -3 दिन में पुरे पर सकते हैं। लेकिन अगर आप लास्ट स्टेज में आते हैं तो केस इतना क्रोनिक हो जाता हैं की उसे ठीक करने में हमे सालों लग जाते हैं। हम अंतिम नहीं हैं, हम पहले हैं।"

चौथी महिला कहती हैं कि उन्हें जिंदगी में सब कुछ मिला, अब उन्हें जिंदगी से ज्यादा कुछ नहीं चाहिए। वह अपने जीवन से संतुष्ट है।

“अपनी लाइफ से मैं कुछ नहीं चाहती हूँ क्योंकि मैंने सब कुछ पा लिया हैं। मैं बहुत संतुष्ट हूँ, मैं अपने पति और अपने परिवार, अपने बच्चों से भी संतुष्ट हूँ। तो ऐसा कुछ बचा नहीं हैं की मुझे बहुत कुछ पाना हैं। मेरे पति बहुत सहयोगी हैं तो कुछ ऐसा नहीं हैं की सपना मेरा कुछ बचा हो। मेरे इस ड्रीम को पूरा करने वाले मेरे पति ही हैं, इस क्लिनिक को खुलवाने में, मुझे प्रेरित करने में।”

चौथी महिला अपने पति के लिए सब कुछ कुर्बान कर सकती है। महिलाएं हमेशा अपने परिवार के लिए अपनी चीजों का त्याग करती हैं। चौथी महिला के मुताबिक उनकी लाइफ में कोई कमी नहीं है।

“मैं अपने पति के लिए सब कुछ बलिदान कर सकती हूँ। अगर पति को जरूरत हैं की उनको कहीं शिफ्ट होना हैं तो मैं उनके लिए सब कुछ छोड़ सकती हूँ, क्लिनिक, पेशा सब कुछ। ईमानदारी से कहूँ तो मेरे जीवन में किसी चीज की कमी नहीं हैं। मैं इससे बहुत खुश हूँ।"

चौथी महिला की प्राथमिकता उसका परिवार है, उसके बाद सब कुछ गिर जाता है।

“मेरी पहली प्राथमिकता मेरा परिवार हैं। मेरी सास, मेरे ससुर पति और मेरे बच्चे। मेरे काम से पहले मेरे लिए वो जरूरी हैं अगर आज वो नहीं होते तो मैं काम नहीं कर सकती थी। क्योंकि जब आप

सिंगल होते हैं तो आपके लिए कोई भी काम आसान होता हैं लेकिन शादी के बाद आपका बच्चा, परिवार से अगर आप परिवार का एक चरण पूरा कर देंगे तो आपको दूसरा चरण पूरा करने में मदद कर मिलेगी।"

चौथी महिला अपने जीवन से 90% संतुष्ट है। वह जिस चीज में सुधार करना चाहती हैं, वह है होम्योपैथी के प्रति मरीजों का नजरिया।

"मैं अपनी पढ़ाई से अपने इलाज से पूरी तरह से संतुष्ट हूँ लेकिन यहाँ के लोगों का रवैया बहुत अलग हैं वो मेरे पास दवा लेने आते हैं और 3 दिन में ठीक हो जाते हैं और भाग जाते हैं। 3 दिन में बंदा ठीक हो के चला गया वो फ़िर नहीं आया तो यह स्पष्ट नहीं हैं कि वह गया हैं या नहीं ठीक हुआ या नहीं। समग्र जीवन में, मैं 90% संतुष्ट हूँ। आपकी उम्मीद अगर बहुत ज्यादा होती हैं तो आप कभी संतुष्ट नहीं हो सकते हैं। अगर आपकी अपेक्षा का दायरा बहुत छोटा हैं तो आप संतुष्ट होंगे चाहे छोटी सी चीज क्यों ना हो।"

चौथी महिला की राय में सफलता कोई एकल-आयामी नहीं है। सभी पहलुओं में संतुलन होना चाहिए।

"आज की ज़िंदगी में ज़्यादा ज़रूरी हैं पैसा। आपके पास पर्याप्त पैसा होना चाहिए कमाने के लिए, यह हैं एक आयाम, दूसरा सामाजिक व्यवहार और तीसरा आपका बौद्धिक भावनात्मक व्यवहार। ऐसा नहीं हैं की आप केवल कमाने में लीन हो गई और परिवार को, खुद को भूल गई। ये सब अगर आप मेंटेन कर के चल रही हैं तो आप सफल हैं। अगर इसमे से एक भी चीज कम होगी तो आप सफल नहीं मान सकते।"

चौथी महिला के लिए सबसे महत्वपूर्ण आयामों में से एक समय है और अगर उसके पास हर चीज के लिए पर्याप्त समय है तो यह एक सफलता है।

“अगर मुझे कहा जाए कोई एक आयाम चुनना हैं तो मैं टाइम को चुनुंगी टाइम से मतलब हैं की हर एक चिज के लिए विशेष समय निकल पाउ; खुद के लिए, अपने पेशे के लिए, घर के लिए और अपनी फैमिली के लिए। क्योंकि अगर मैं अपने समय को बांट कर के काम कर पाऊंगी तो सब कुछ होगा मेरे पास। टाइम एक महत्वपूर्ण मास्टर की हैं सफलता के लिए।”

चौथी महिला के मुताबिक, उन्होंने सफलता के सभी आयामों को हासिल किया है और उन लक्ष्यों को भी हासिल किया है जो उन्होंने कुछ साल पहले तय किए थे।

"मैंने लगभग सभी आयाम हासिल कर ली हैं। ऐसा कुछ नहीं हैं की मैं सोचू और मेरे पास नहीं हैं। मैंने कभी नहीं सोचा था की इतनी जल्दी एक बच्चा होगा और इतनी जल्दी मैं क्लिनिक खोलूंगी और क्लिनिक मेरा इतना अच्छा रन करेगा। मैंने कभी नहीं सोचा था पर हाँ इतनी जल्दी हासिल हो गया ये सब; इसके लिए मैं बहुत हैंरान हूँ।"

चौथी महिला के लिए आदर्श जीवन संतुष्टि और उसकी खुशी है। इसका मतलब है कि वह ज्यादा भौतिकवादी नहीं है।

“परफेक्ट लाइफ का मतलब मेरे हिसाब से संतुष्टि हैं। जितना आप सीमित दायरे में खुश रहेंगी और जितना आप दूसरों को खुश रख पायेंगी वही एक संपूर्ण जीवन हैं। सबसे पहले आपको संतुष्ट होना चाहिए, खुश होने चाहिए हर चीज से चाहे वो बड़ी हो या छोटी। आपको अपने पे ट्रस्ट होना चाहिए की जो मैं कर रही हूँ वो ठीक हैं और जो मैंने किया हैं वो बिकुल सही हैं, कुछ भी गलत नहीं हैं, यह एक संपूर्ण जीवन हैं।”

चौथी महिला के विचार में सफलता कुछ भी नहीं है बल्कि यह लोगों की धारणा पर निर्भर करती है कि वे सफलता को क्या कहते हैं।

"सफलता कुछ भी नहीं हैं, निर्भर करता हैं कि आप सफलता किसको कहना चाहते हैं। कुछ लोगों का नज़रिया होता हैं की जब वो दुनिया के शीर्ष पर पहुँच जाने को सफलता कहते हैं। मैं अपने को सफल मानती हूँ, मेरा अपना तरीका हैं, मैं अगर कुछ भी कम करके खुश हो रही हूँ तो मैं सफल हूँ।"

चौथी महिला को सबसे बड़ी कामयाबी तब मिली जब उसने बीएचएमएस में दाखिला लिया और डिग्री पूरी की और डिग्री पूरी करने के बाद वह बहुत खुश हुई और उसे लगा कि उसकी कोई इच्छा नहीं बची है।

"मेरी सबसे बड़ी सफलता थी कि मुझे बीएचएमएस में प्रवेश मिला और मैंने डिग्री पूरी की। सबसे बड़ी उपलब्धि यह सिर्फ मेरे पिता की वजह से हैं ड्रीम नॉट माई ड्रीम की उनको डॉक्टर बनाना था लेकिन हालात ऐसे थे की वो हासिल नहीं कर पा रहे। मैने अचीव कर के ये गोल दिया। उस समय ऐसा लग रहा था की शायद अब कुछ ख्वाहिश नहीं बचा हैं कोई सपना नहीं बचा हैं। लेकिन डिग्री पूरी करने के बाद फिर एक अच्छी सी जिंदगी की चाह होती हैं, सपने कभी खतम नहीं होते।"

चौथी महिला की राय में सफलता मिलने से पहले और बाद में काफी अंतर होता है। सफलता मिलने के बाद आपके बारे में लोगों का नजरिया पूरी तरह से बदल गया।

"एक डिग्री में प्रवेश के पहले और प्रवेश के एक दिन बाद जमीन आसमान का फ़र्क होता हैं। जब आप किसी डिग्री में आ जाते हैं तो लोगों की निगाहें बदल जाती हैं आपको देखने के लिए। आप जो बातें बोलते हैं लोगो को वो गलत लगती थी, आप एक डिग्री ले के सामने आते हैं तो वही बातें लोगों को सही लगने लगती हैं। बहुत बड़ा फ़र्क हैं आप बस इसे महसूस कर सकते हैं।"

चौथी महिला का जीवन अच्छा चल रहा है, उसकी बहुत इच्छाएँ नहीं हैं क्योंकि उसे लगभग सब कुछ मिल गया है। वह कहती है कि उसकी जिंदगी लगभग परफेक्ट है लेकिन कभी-कभी वह इससे नीचे उतरने से डरती है।

“मेरी ज़िंदगी परफेक्ट हैं, मैं नहीं सोची की इससे ज्यादा और कुछ परफेक्ट हो सकता हैं। सब कुछ बहुत अच्छा हैं। मुझे इसके परफेक्ट से ज्यादा गिरने का डर लगता हैं। बच्चे, पति, माँ सब समय दे रहे हैं। सबसे बड़ी बात की आपके अपने प्रोफेशन को समय दे पा रहे हैं। शादी के बाद औरते काम छोड़ देती हैं लेकिन आज अगर आप उस काम को भी कर रहे हैं तो इससे बड़ी सफलता मुझे नहीं लगता की हमारी जिंदगी में कुछ और होगी।”

उनके अनुसार चौथी महिला की सफलता में किसी चीज की कमी नहीं है और वह इसे 10 में से नौ अंक देती है।

“मेरी सफलता में तो कुछ भी मिसिंग नहीं लगता मुझे। मैं नौ अंक दूँगी अपनी सफलता को क्योंकि ये याद रहे की आप परफेक्ट नहीं हैं। अगर आप अपने परफेक्ट के गर्व में चले जाएंगे तो अपना सब कुछ असंतुलित कर लोगे और 1 मार्क का डर रहेगा तो आपको डर हैं कि इस 1 नंबर को बनाए रखना हैं।”

चौथी महिला को कई बाधाओं का सामना नहीं करना पड़ा लेकिन उनके विचार में एम.बी.बी.एस की कम सीटें थीं। उसके लिए एक बाधा थी लेकिन एक बार उसने बी.एच.एम.एस चुन लिया तो उसने उसमें सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने की कोशिश की।

“सबसे बड़ा बाधा आया सरकार के लिए की इतनी कम सीटें हैं एमबीबीएस में। हर कोई चाहता हैं अच्छे से अच्छा हासिल करना लेकिन इतनी मेहनत के बाद भी हम नहीं कर पाए वो। जब मैंने इसमे (बीएचएमएस) प्रवेश ले लिया फिर अपना बेस्ट से बेस्ट देने की कोशिश की। तो मेरा मुख्य मकसद हैं की हम होम्योपैथी को इतना उदय करें की लोगों को समझ में आए की ये बहुत अच्छी हैं। इस क्षेत्र में काम होना बाकी हैं।"

चौथी महिला की एक दोस्त उसके संघर्ष की अवधि में उसकी सबसे बड़ी ताकत थी और चौथी महिला ने अपनी सफलता का श्रेय अपने चाचा को दिया जो एक होम्योपैथिक चिकित्सक हैं।

“मेरी एक दोस्त ने मेरा बहुत साथ दिया जब हम अपने घर से बहुत दूर रहते थे। मेरे और उसके आपसी समर्थन से हम लोग बहुत अच्छा करते थे। मैं अपनी सफलता का श्रेय देना चाहता हूँ अपने अंकल को। मेरे अंकल खुद भी एक होम्योपैथिक चिकित्सक हैं। उन्होंने मुझे समझाया की अगर एमबीबीएस में प्रवेश नहीं मिल रहा हैं तो अब कोशिश मत करो। मुझे बीएचएमएस प्रवेश मिला हैं वो अच्छे से करो तुम्हारे में भी क्षमता हैं।"

चौथी महिला की शैक्षणिक योग्यता B.H.M.S है। और उसने उसके बाद अभ्यास करना शुरू कर दिया, उसकी सफलता रोगियों के रोगों को ठीक करना है।

"डिग्री पूरी करने के बाद मैंने पेशा शुरू किया किया। मरीज ठीक हो रहे हैं यही सफलता हैं। 10 डॉक्टर बैठे हैं होम्योपैथी के लेकिन केस ठीक नहीं हो रहा हैं, आपका एक मामला भी ठीक हो रहा हैं इसका मतलब हैं कि आप सफल हैं।”

चौथी महिला के अनुसार शिक्षा आपके जीवन के सभी पहलुओं को प्रभावित करती है। यह आपके विचारों और समझ को विकसित करता है।

“एजुकेशन ने बहुत प्रभावित किया हैं मेरी सफलता को। शिक्षा के बिना हम कुछ नहीं कर सकते, किसी भी चीज में कुछ नहीं कर सकते। पेशा के अतिरिक्त आपकी सोच जो बनती हैं, आपके दिमाग में जो चीज आ रही हैं; किसी को देखना, बोलना, समाधान सब आपकी एजुकेशन से हैं। आप किसी के धारणा को जान ही नहीं सकते हैं शिक्षा के बिना।”

चौथी महिला के विचार में वह शिक्षा के बिना वर्तमान स्थान प्राप्त नहीं कर सकती थी।

"नहीं, बिल्कुल भी असंभव नहीं हैं मैं बिना शिक्षा के ये स्थिति नहीं हासिल कर सकती थी। बिना शिक्षा के आप कुछ भी हासिल नहीं कर सकते हैं, न परिवार के लिए, न समाज के लिए। ना अपने आप के लिए। एजुकेशन का बहुत बड़ा रोल हैं।"

चौथी महिला मारवाड़ी परिवार और संस्कृति से ताल्लुक रखती हैं। उनकी जाति में लड़कियों को लड़कों की तुलना में अधिक शिक्षित किया जाता है।

"हम लोग मारवाड़ी हैं। हम मारवाड़ी कल्चर के हैं। हमरी समाज में महिलाओं की शिक्षा को अच्छा माना जाता हैं। हमारी सोसाइटी में लड़कियाँ ज्यादा लड़कों की तुलना में शिक्षित हैं। ये बहुत बड़ा मुद्दा हैं शादियां होने में। हमारे कल्चर में लड़कियाँ ग्रेजुएट मिलेंगी या कोई प्रोफेशनल कोर्स किया हुआ और उन्हें शादी करनी पड़ रही हैं इंटर पास लड़कों से।"

चौथी महिला एक डॉक्टर हैं और समाज इसे महिलाओं के लिए एक अच्छा पेशा मानता है। उन्होंने अपने जीवन में ज्यादा संघर्ष नहीं किया क्योंकि उनके परिवार ने हमेशा उनका साथ दिया।

"डॉक्टर पेशा हैं तो इसके लिए बहुत सीमाएं नहीं हैं। डॉक्टर के लिए समाज कुछ नहीं कर सकती लेकिन हाँ वो लोग खुश होते हैं जब हम कैंप करते हैं, लोगों की मदद करते हैं। मुझे कभी कोई समस्या नहीं हुई, लोग सरहाना ही करते हैं मेरे काम को। समाज और परिवार का वातावरण अनुकूल था।"

चौथी महिला के परिवार के सदस्य बहुत अधिक सहायक हैं और जीवन की हर स्थिति में हमेशा उनका साथ देते हैं।

"मेरे चाचा, मेरे पिता और दादी ये तीनों ही स्तम्भ हैं मेरा जीवन के। ये तीन स्तंभ हैं जिन्होंने मुझे खड़ा किया हैं। घर में छह लड़कियाँ हैं और मेरी दादी माँ सभी को बोलती हैं की तुम्हारी शादी तभी की जाएगी जब तुम अपने पैरों पर खड़ी हो जाएगी।"

पहले चौथी महिला एयर-होस्टेस बनना चाहती थी और जब उसने अपने लक्ष्य के बारे में बताया तो उसके पिता चौंक गए। बाद में, उसने डॉक्टर बनने का फैसला किया जब उसके पिता ने उसकी क्षमताओं का पुन: विश्लेषण करने के लिए कहा।

"जब मैंने अपने पापा को बताया था की मुझे एयर-होस्टेस बनना हैं तो वो हैंरान रह गए। उन्होंने कहा की तुम इतनी होशियार हो पढ़ने लिखने में और एयर होस्टेस बनोगी? थोड़ा सोचो सर्च करो की वो करती क्या हैं? अगर आपको लगता हैं कि वो आपके लायक काम हैं आप कर पाएंगे फिर इसे करें"

एक घटना से चिकित्सा पेशे के लिए चौथी महिला का रवैया सकारात्मक रूप से बदल गया।

"डॉक्टर के लिए सबकी निगाह में एक सम्मान होती हैं। मेरे सामने एक घटना हुई की एक व्यक्ति को रात 11:00 बजे दौरे पड़ते हैं मेरे डॉक्टर चाचा ने उसे कुछ दवा की बूंदें दीं और वह ठीक हो गए। तब से मुझे लगा की क्या पता हम किस समय किसी के काम आ जाए। इस से मैं बहुत ज्यादा प्रेरित हुई चिकित्सा क्षेत्र में आने के लिए।"

चौथी महिला का निवास स्थान उसकी पढ़ाई के लिए अनुकूल था।

"मेरी स्कूली शिक्षा आगरा से हुई हैं। मैने बीएचएमएस राजस्थान से किया हैं। मुझे कोई समस्या का सामना नहीं करनी पड़ी।"

चौथी महिला एक संयुक्त परिवार से ताल्लुक रखती हैं और उन्होंने भी एक संयुक्त परिवार में शादी की और इससे उन्हें कभी कोई समस्या नहीं हुई।

"हमेशा संयुक्त परिवार में ही रही हूँ और संयुक्त परिवार में ही शादी हुई हैं। कभी कोई समस्या नहीं आई। सब लोग बहुत प्यार करते हैं।"

परिवार की आर्थिक स्थिति ने चौथी महिला की सफलता को बहुत प्रभावित किया। हालांकि पैसा ही सब कुछ नहीं है लेकिन यह जीवन के कई पहलुओं को प्रभावित करता है।

"वित्तीय स्थितियों ने काफ़ी हद तक प्रभावित किया। हम चाहते हैं अपना एडमिशन एमबीबीएस प्राइवेट में ले लेकिन फीस डोनेशन बहुत ज्यादा थी, लाखो में थी मैं उसे वहन नहीं कर सकती थी। अगर हमारे पास भी एक करोड़ रूपये होते तो शायद मैं भी एमबीबीएस के लिए ट्राई कर चुकी होती। पैसा बहुत मायने रखता हैं। सक्सेस में पैसा भी बहुत कुछ हैं लेकिन आप ये कहो की पैसे से सब कुछ हो जाएगा ऐसा भी नहीं हैं।"

चौथी महिला के परिवार के सदस्यों की शैक्षिक योग्यता ने उनकी सफलता को बहुत प्रभावित किया। उसकी सफलता पर परिवार के सदस्यों की शिक्षा का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

"मेरे पिता स्नातक हैं मेरी माँ डबल एमए हैं और घर में लगभाग सब लोग पढ़े लिखे हैं। एक जनरल लाइन हैं कहीं जाती हैं की अगर एक बच्चा भी पढ़ेगा तो सारे बच्चे उसे देख के पढ़ के निकल जाएंगे। जब आप पढ़ें लिखे होते हैं तो आपका बात करने का तरीका बदल जाता हैं, आपका रवैया बदल जाता हैं।"

4.5.5 वरिष्ठ वैज्ञानिक- पांचवीं महिला

पांचवीं महिला प्रयागराज (इलाहाबाद) की रहने वाली हैं। उनका पालन-पोषण और शिक्षा प्रयागराज में हुई। वह शादीशुदा है और उसकी दो बेटियां हैं। वह डीआरडीओ में वरिष्ठ वैज्ञानिक हैं। उसने सोचा कि वह सफल है।

पांचवीं महिला की माँ उनके जीवन में उनकी रोल-मॉडल हैं, पढ़ाई के प्रति समर्पण के कारण वह अपनी माँ से बहुत प्रेरित हैं।

" मेरी माँ मेरे लिए एक रोल मॉडल हैं क्योंकि उन्होंने बहुत ही महत्वपूर्ण परिस्थितियों में पढ़ाई की थी तो आस-पास के 5-6 गावों में वह स्कूल जाने वाली अकेली बच्ची थी। काफी दूर था स्कूल तो पढ़ने चली जाती थी, और यहाँ तक पहुँची हैं।"

पांचवीं महिला अपने जीवन से शांति, सुख और स्वास्थ्य चाहती है। इसका मतलब है कि वह इतनी भौतिकवादी नहीं है।

"अपनी लाइफ से मैं मन की शांति, सुखी जीवन और स्वस्थ जीवन इतना ही और क्या चाहिए बाकी तो सब भगवान का दिया हुआ हैं जितने में अच्छी जिंदगी जी सकते हैं। बच्चे अच्छे से रहे, अच्छे लोग मिलेंगे जिंदगी में, कभी कोई समस्या ना हो।"

पांचवीं महिला अपने बच्चों के लिए सब कुछ कुर्बान कर सकती है। उनके अनुसार मातृत्व की अनुभूति सबसे बड़ी अनुभूति होती है और इस तरह त्याग केवल एक माँ ही कर सकती है।

"मेरे बच्चे मेरी जिंदगी हैं। वैसे तो जीवन में माता-पिता, पति, भाई, बहन सबका अपना-अपना स्थान होता हैं, लेकिन यदि तुम एक के लिए पूछो, यह मेरे बच्चे हैं जिनके लिए मैं अपना सब कुछ बलिदान कर सकती हूँ। ये मातृत्व वाली एहसास बिना माँ बने नहीं आ पाती। ये पता नहीं अचानक कहाँ से आ जाता हैं।"

पांचवीं महिला को अपने निजी कामों के लिए समय नहीं मिलता, मतलब वह अपनी सारी जिम्मेदारियां निभाती हैं लेकिन अपने शौक के लिए ही समय नहीं पाती हैं, इसकी कमी उनके जीवन में है।

"मुझे अपनी लाइफ में एक चीज की कमी लगती हैं कि मैं बहुत कुछ करना चाहती थी। ऐसा लगता था की जिंदगी में कोई रोक-टोक ना हो सीमाएं ना हो और वो ओपन वाली जो लाइफ होती हैं की बैग उठा कहीं भी चले दिए जैसे ट्रैकिंग करनी हैं या और कुछ। लेकिन वो चीज़ें थोड़ा बाउंड गई हैं या अब दूसरी प्राथमिकता पे गई हैं, हसबैंड आ गया हैं, जॉब आ गया हैं, बच्चे आ गए हैं। मेरा अपना इंटरेस्ट, हॉबीज सप्रेस हो गए हैं। अब मैं अपने लिए समय निकलना भी चाहुं तो नहीं निकल पति हूँ।"

जीवन में पांचवीं महिला की प्राथमिकता उनका परिवार है और दूसरी नौकरी है। चूंकि ज्यादातर महिलाओं की प्राथमिकता में परिवार होता है, बाकी सब कुछ उसके बाद आता है।

"पहली प्राथमिकता परिवार हैं फिर दूसरे नंबर पर मेरी अपनी पेशेवर जीवन। फैमिली मेरे ख्याल से सभी की प्राथमिकता होगी चाहे तुम किसी पुरुष से भी पूछो। मुझे लगता हैं की अगर मैं अपने करियर में बहुत आगे बढ़ जाउ लेकिन किस लिए बढ़ूंगी अगर मेरे साथ खुश रहने वाले लोग पीछे छूट जाएंगे। इसलिए मैं खुद को परिवार-उन्मुख समझता हूँ हालांकि मेरा सहकर्मी और मेरे पति मुझसे कहते हैं कि आप बहुत महत्वाकांक्षी हो। मैं मानती हूँ की मैं आगे बढ़ना चाहती हूँ ग्रो करना चाहती हूँ फिर भी अगर प्राथमिकता पूछोगी तो फैमिली ही मेरी प्राथमिकता हैं।

पांचवीं महिला अपनी वर्तमान स्थिति से लगभग 80% संतुष्ट है। वह अपने पेशेवर जीवन में और अधिक हासिल करना चाहती है।

“वर्तमान स्थिति से लगभाग 80% संतुष्ट हूँ। कुछ चीजें जिनमें कमी हैं मुझे लगता हैं की मेरा एक प्रमोशन रह गया था। और आगे हो सकती थी मैं अगर चीज़ें अच्छी तरह से नियोजित होती पर ठीक हैं जो हैं अभी।”

पांचवीं महिला के लिए सफलता कोई एक आयामी नहीं है। व्यक्तियों के अनुसार इसके कई आयाम हो सकते हैं।

"सफलता सिंगल डायमेंशनल नहीं होती हैं। हमेशा बहुत सारे पैरामीटर होते हैं जैसे एक दिशा (पेशेवर) में आप सफल हो गए हो बाकी दोनो मापदंडों की कमी कर गए आपका व्यक्तिगत और सामाजिक अभाव कर गया तो मुझे नहीं लगता की सफलता कहा जाएगा। मेरे परिप्रेक्ष्य में तीनो चीजों का संतुलन होना चाहिए।"

पांचवीं महिला बहुत पारिवारिक हैं और अगर उन्हें उनमें से किसी एक को चुनना है तो वह व्यक्तिगत आयाम चुनेंगी।

“मैं तो अपनी व्यक्तिगत आयाम का चयन करुंगी अगर मुझसे एक पहलू का चयन करने को कहा जाए। अगर बच्चे नहीं होते तो शायद मैं अपना प्रोफेशनल सेलेक्ट करती। लेकिन अब प्राथमिकता में बच्चे हैं, बच्चों की किसी चीज़ में कमी नहीं होनी चाहिए। हम उनको इस दुनिया में लेके आए हैं तो हमारा ये पहला फ़र्ज़ हैं उनको एक अच्छा नागरिक बनाना।”

पांचवीं महिला ने कुछ ऐसे लक्ष्य हासिल किए हैं जो उन्होंने कुछ साल पहले तय किए थे। उनके जीवन में जिन चीजों की कमी है, उनका संबंध केवल उनके निजी जीवन जैसे उनके शौक, रुचियों आदि से है।

"व्यक्तिगत जीवन में जो कुछ साल पहले योजना किया था काफी हद तक हासिल कर लिया हैं जैसे अच्छी घर गृहस्थी, अच्छा पति। व्यावसायिक जीवन में भी एक सीनियर साइंटिस्ट के लेवल पे आ जाऊंगी। बाकी मेरी पर्सनल चीज़े की कमी कर गई हैं। सोशल और प्रोफेशनल में मेरा खुद का जो इंटरेस्ट लेवल था वो कमी कर गया हैं, मेरी अपनी हॉबीज कहीं न कहीं दब गई हैं।"

पांचवीं महिला के लिए संपूर्ण जीवन सभी आयामों से मानसिक संतुष्टि, स्वस्थ जीवन और खुशी प्राप्त करना है।

"परफेक्ट लाइफ मेरे लिए वही हो सकती हैं जिसमे की इंसान मानसिक रूप से संतुष्ट हो। स्वास्थ्य संबंधी कोई परेशानी न हो, आप अपनी फैमिली लाइफ से खुश हो, प्रोफेशनल लाइफ से भी खुश हो। यही एक परफेक्ट लाइफ होती हैं। हालाँकि ऐसा होता नहीं हैं, 100% पूर्णता कुछ नहीं होता। लेकिन अगर तीनो में बैलेंस हो तो आप कह सकते हैं की लाइफ परफेक्ट हैं तुम्हारी।"

पांचवीं महिला की नजर में सफलता ही खुशी है। इसका मतलब है कि अगर आप खुश हैं तो आप सफल हैं।

"मेरे विचार से सफलता ही खुशी हैं। इसका जो इंडेक्स हैं वो खुशी इंडेक्स हैं जो इन्सान जितना ज्यादा खुश हैं अपनी जिंदगी में वो उतना ज्यादा सफल हैं। और खुशी कैसी आती हैं संतुष्टि से। जो इन्सान जितना ज्यादा संतुष्ट हैं अपनी लाइफ से, प्रोफेशन में, पर्सनल लाइफ से, रिलेशन्स में भी वो उतना ही खुश होगा जो ज्यादा खुश हैं वो ज्यादा सफल हैं, भले ही वो छोटा सा स्कूल का टीचर हो या बहुत बड़ी कंपनी का मालिक।"

पांचवीं महिला की सबसे बड़ी सफलता नौकरी में उनका चयन है। स्वतंत्र होना एक महिला के लिए एक बड़ी उपलब्धि है।

"मेरी सबसे बड़ी सफलता पेशेवर जीवन में, जाहिर हैं जब मेरी नौकरी लगी थी। क्योंकि मुझे अपने पैरों पे खड़ा होना था और एक अच्छी क्लास वन वाली जॉब चाहिये थी, तो एक मील का पत्थर था। बाकी पर्सनल लाइफ में तो सब ठीक ही था फैमिली अच्छी थी पति भी अच्छा मिल गया हैं।"

पांचवीं महिला के मुताबिक जब उन्हें सफलता मिली तो उस पल का अहसास बहुत अच्छा था और उन्होंने सोचा कि आखिरकार वह सफल हो गई।

"उस समय तो लग रहा था की नौकरी मिल गई हैं अपने पैरों पे खड़े हो गए हैं। एक अच्छी वाली फीलिंग थी लेकिन उसकी वैल्यू जो हैं मुझे बाद में पता चली की कितनी अच्छी जॉब हैं। मेरे पापा के दोस्त और मिलने वाले लोगो के रिएक्शन से पता चला की इतनी प्रतिष्ठा हैं इस काम की।"

पांचवीं महिला की नजर में आजाद होने से पहले और बाद में काफी अंतर था। उसने उस अंतर को महसूस किया और अपने लिए निर्णय ले सकती है।

"बहुत फ़र्क आ जाता हैं यार आप स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने लगते हैं। माता-पिता की भी रोका-टोकी कम हो जाती हैं। एक तरीके से बच्चा ही समझते थे आप भी अपने आपको और माता-पिता भी। हर चीज गाइडेंस से होती थी, पॉकेट मनी सीमित थी। जॉब के बाद कहा खर्च करना हैं अब किसी से पूछने की ज़रुरत नहीं, जितनी सैलरी आती हैं अपने हिसाब से उड़ाते हैं। कहीं भी जा सकता हैं घुमने के लिए। खुद में कॉन्फिडेंस आने लगता है तो पैरेंट्स को भी हमारे ऊपर कॉन्फिडेंस आता है।"

खुद में कॉन्फिडेंस आने लगता है तो पैरेंट्स को भी हमारे ऊपर कॉन्फिडेंस आता है।"

"100% पूर्णता एक भ्रम है जो कभी नहीं आता है। हाँ मेरी लाइफ और बेटर हो सकती थी। किसी भी सफल आदमी से पुछ लो हमें कुछ ना कुछ और हासिल करना ही चाहता है वो। प्रोफेशनल

लाइफ में मुझे प्रोजेक्ट मिल सकता है और विदेश जाने का मौका मिल सकता है जो अभी तक नहीं मिला है।"

उसके जीवन में आत्म-अन्वेषण की कमी है क्योंकि वह खुद को समय नहीं दे पा रही है और यह उसकी सफलता में गायब है।

"मैं अपनी सफलता को दस में से आठ अंक दे सकती हूँ। क्योंकि मेरे व्यक्तिगत इंटरेस्ट बहुत सारे छूट गए पीछे और मैं अपने आप को टाइम कम दे पाती हूँ। आपको खुद को समय देना चाहिए।"

पांचवीं महिला के मुताबिक, उनके जीवन में ज्यादा बाधाएं नहीं आईं लेकिन आर्थिक स्थिति ने उनकी स्कूली शिक्षा को प्रभावित किया। उसके माता-पिता ने उसे समाज से अलग कर दिया और इसने उसे थोड़ा असामाजिक बना दिया।

"पापा ने हम लोगों को रिश्तेदार से बहुत अलग कर के रखा पढ़ाई के लिए तो उसकी वजह से थोड़े असामाजिक हो गए हम लोग। किसी से बात करने में झिझक होने लगी। फाइनेंशियल अगर थोड़ा और अच्छा होता तो और अच्छे स्कूल में पढ़ते। भाषा का मुद्दा एक बाधा था।"

सबसे बड़ी ताकत के बारे में बात करते हुए पांचवीं महिला ने कहा कि कभी हार न मानने की आदत ही उनकी सबसे बड़ी ताकत है।

"मैं गिव-अप नहीं करती ऐसा मुझे लगता हैं। मतलब मैंने अगर सोच लिया हैं कि करना हैं तो भले ही कितनी भी नई चीज़ क्यू ना हो मैं कर लेती हूँ, भले ही मैंने वह काम कभी नहीं किया, मैं निश्चित रूप से कोशिश करता हूँ। मैं एक सीधा-सादा व्यक्ति हूँ, आम तौर पर लोग सराहना करते हैं।"

पांचवीं महिला अपनी सफलता का श्रेय अपने माता-पिता को देती हैं क्योंकि उनके विचार लड़कियों की शिक्षा के लिए बहुत अच्छे और सहायक हैं।

“मेरी सफलता का पूरा श्रेय मेरे माता-पिता को जाता हैं। वे हमें शिक्षित करते हैं, उनकी सोच इतनी अच्छी थी कि उन्हें लगा कि हमें लड़कियों को शिक्षित करना चाहिए। वरना ऐसे माँ-बाप भी होते हैं की लड़कियों को दसवी पढ़ा दो, शादी कर दो ये वाली सोच नहीं थी। पढ़ने के लिए उन रिश्तेदारों से कट कर लिया था।”

पांचवीं महिला के पैतृक घर में पढ़ाई का अच्छा माहौल था, यही उनकी शिक्षा और सफलता का एक महत्वपूर्ण कारक था।

“माता-पिता बहुत सहयोगी थे और हमेशा हमें पढ़ाई के लिए प्रोत्साहित करते रहे। मेरे घर का वातावरण इतना सहायक था कि मेरे माता-पिता हमेशा एक पढ़ने की आदत, शुरू से ही और नौकरी के बाद भी (माँ की नौकरी)। इसलिए, घर में पढ़ाई का माहौल था। हम सब उन्हें देखकर ही पढ़ते थे। मेरे घर में टेलीविजन नहीं था और हम भी असामाजिक थे। तो, ऐसा कुछ विचलित करने वाला नहीं था।”

शैक्षिक योग्यता पूरी करने के बाद पांचवीं महिला को नौकरी मिली और शिक्षा ने उनके जीवन को बहुत प्रभावित किया।

“मूल मानदंड इस नौकरी का बी.टेक था। इलेक्ट्रॉनिक्स या कंप्यूटर विज्ञान में। मैंने उच्च शिक्षा के बाद नौकरी, डीआरडीओ इसे प्रायोजित करता हैं। मैंने आईआईटी दिल्ली से एम.टेक किया। शिक्षा इंसान का माइंड ब्रॉड करती हैं। आप जितने अधिक शिक्षित होंगे, आपकी सोच का स्तर उतना ही व्यापक होगा। अगर आप पढ़े-लिखे हैं तो समाज में भी आपको सम्मान मिलता हैं।”

पांचवीं महिला की राय में वह बिना शिक्षा के वह मुकाम हासिल नहीं कर सकती थी, जहां वह इस समय है। अतः उसके जीवन में शिक्षा का बहुत प्रभाव पड़ता है।

"नहीं...नहीं...नहीं मेरे मामले में यह संभव नहीं हैं, शिक्षा के बिना मैं जिस पोजीशन पे हूँ नहीं पहूँच सकती थी। शिक्षा के बिना भी कुछ बिजनेस होते हैं लोग करते हैं जैसे खेल आदि।"

पांचवीं महिला के पिता जिस समाज से ताल्लुक रखते हैं उस समाज में महिलाओं की शिक्षा अच्छी नहीं मानी जाती थी। लेकिन उन्होंने अपने परिवार को उनके विकास और शिक्षा के लिए समाज से अलग कर दिया था।

"पापा का गांव पश्चिम यूपी में फरुखाबाद में हैं। पहले कहा कोई प्राथमिकता देता था महिलाओं की शिक्षा को। अभी भी शिक्षित कर दिया जाता हैं लेकिन जॉब मिली तो ठीक नहीं तो शादी कर दो, घर तो बसाना ही हैं। मेरे पापा ने हम लोगों को सबसे कट करके रखा था। पापा जाते थे गांव हम लोग नहीं जाते थे।"

पांचवीं महिला को कई संघर्षों का सामना नहीं करना पड़ा क्योंकि उनके माता-पिता बहुत सहायक थे।

"संघर्ष के समय माता-पिता के घर में ही थी मैं। माता-पिता चाहते हैं कि पढ़े बच्चे, आगे बढ़े तो ऐसा कोई बाधा मुझे महसूस नहीं हुआ। हाँ जब रिश्तेदारों का आना जाना था तो वो सब कहते थे क्या जरूरी हैं पढ़ाने की अब बड़ी हो गई हैं शादी कर दो।"

पांचवीं महिला के परिवार के सभी सदस्यों ने जीवन की हर स्थिति में उनका साथ दिया।

"किसी एक का नाम नहीं ले सकती सब ने समर्थन किया था। रात में मैं पढ़ती थी 3 बजे से तो पापा भी जागते रहते थे। बहुत ज्यादा समर्थन करते हैं।"

पांचवीं महिला के माता-पिता को उसके पिछले लक्ष्य में कोई दिलचस्पी नहीं थी क्योंकि पहले वह एक आईपीएस अधिकारी बनना चाहती थी लेकिन बाद में वह बी.टेक पूरा करने के बाद एक वैज्ञानिक बन गई।

"मेरा लक्ष्य आईपीएस अधिकारी बनना था कि मुझे पुलिस सेवा में शामिल होना हैं। अत उस समय मेरे पिता कुछ नहीं कहते थे, बस यही कहते थे कि हाँ आप शामिल हो सकते हैं लेकिन शायद उसने मुझे पुलिस सेवा में जाने के लिए नहीं भेजा था। बाद में मैं भी सोचने लगा कि मैं स्वतंत्र होना चाहिए और समाज में एक प्रतिष्ठित स्थान होना चाहिए।"

पांचवीं महिला के माता-पिता को इस बात की जानकारी नहीं थी कि उसने कौन सा क्षेत्र चुना है। वे उसकी योग्यता के अनुसार नौकरी के विकल्प खोज रहे थे और D.R.D.O वैज्ञानिक को एक उपयुक्त विकल्प के रूप में पाया।

"मेरे माता-पिता को भी इतनी जानकारी नहीं थी कि डीआरडीओ क्या होता हैं। जब मेरी शिक्षा पूरी हुई फिर उन्होंने यह भी खोजना शुरू किया कि नौकरी के अन्य विकल्प क्या हो सकते हैं। मुझे भी नहीं पता था पहले।"

पांचवीं महिला का निवास स्थान उनके अनुकूल नहीं था क्योंकि उनके पड़ोसी उनकी लड़कियों को शिक्षित नहीं कर रहे थे और दसवीं कक्षा पास करने के बाद ही उनकी शादी करते थे।

"सोसाइटी का माहौल बिलकुल भी अनुकूल नहीं था, पापा तो खेलने भी नहीं देते उन बच्चों के साथ मुझे याद हैं मेरी जो बिल्डिंग थी उसमे। दसवां पास करते ही वो लड़कियों की शादी कर देते हैं। मेरे समाज में बहुत सारे मुसलमान थे और उन्होंने लड़कियों की शादी 10वीं पास करने के बाद ही की थी।"

पांचवीं महिला का परिवार एकाकी था और इसने उनकी सफलता को बहुत प्रभावित किया। उसके रिश्तेदार बहुत रूढ़िवादी हैं और लड़कियों की शिक्षा के पक्ष में नहीं हैं।

"हमारा एक एकल परिवार था। हालांकि चाचा-चाची जैसे रिश्तेदार हैं लेकिन हम रहते तो गांव में रहते हैं एक साथ इसका बहुत नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। शायद एक एकल परिवार के कारण, हमारा माता-पिता हमें शिक्षित कर सकते हैं अन्यथा रिश्तेदारों का इतना दबाव हैं कि वे शादी कर लेते हैं लड़की जैसे ही बीस साल की हो जाती हैं। छोटे परिवार में एक फायदा था, लेकिन वहाँ कुछ नुकसान था कि हम थोड़े असामाजिक हो गए। अगर हम संयुक्त परिवार में रहते हैं, तो वहाँ निश्चित रूप से समस्याएं होतीं।"

पांचवीं महिला का परिवार निम्न-मध्यम आर्थिक वर्ग से संबंधित था। परिवार की आर्थिक स्थिति का उसकी स्कूली शिक्षा पर कुछ प्रभाव पड़ा।

"वित्तीय स्थितियां ज्यादा अच्छी नहीं थी लेकिन इतनी बुरी भी नहीं थी। पापा अकेले जॉब करने वाले उस समय। ये कह लो की निम्न मध्यम वर्ग वाला पृष्ठभूमि था। मम्मी की नौकरी के बाद सुधार हुआ लेकिन तब तक आधी शिक्षा निकल गई थी। नहीं तो हो सकता हैं इंग्लिश मीडियम स्कूल में पढ़ाते। हम लोगों के समय में माता-पिता ने पुश कर दिया नहीं तो इतनी चीज के लिए अनुकूल नहीं थी।"

पांचवीं महिला के अनुसार उनके धर्म और जाति ने भी उनकी सफलता को प्रभावित किया है। हिंदू धर्म में पदानुक्रम उस भेदभाव का कारण था जिसका उसने सामना किया।

"धर्म की वजह से ही तो बहुत प्रभाव पड़ा। हिंदू धर्म में जो इतना पदानुक्रम बना रखी हैं ऊपर से आला तक, की ये नंबर एक हैं ये नंबर दो हैं। निचले वाले उसमे 4 और बना रखे हैं, इन सब चीज़ों का फर्क तो पड़ेगा यार। हम लोग तो निचे आते हैं इस हेरची में। हिन्दू धर्म कोई बहुत अच्छा धर्म नहीं हैं। एमएनएनआईटी में एक प्रोफेसर ने सीधे - सीधे बोला था मुझे अपमानजनक तरीके से। मुझे आठ अंक

दिए गए और मेरे दोस्त को दस में से दस अंक मिले एक ही असाइनमेंट। उनका बिहेवियर बहुत अजीब था मेरे लिए।"

पांचवीं महिला का परिवार सुशिक्षित था और उनकी शिक्षा ने उनकी सफलता को इतना प्रभावित किया। उसके माता-पिता शिक्षा के मूल्य को जानते थे।

"परिवार के सदस्यों की शैक्षणिक योग्यता ने बहुत प्रभावित किया हैं मेरी सफलता को। वे शिक्षित थे इसलिए हमें शिक्षा का मूल्य पता चला। अगर वे नहीं थे शिक्षित तो वे भी नहीं जानते कि शिक्षा मायने रखती हैं।"

तालिका-4.1 व्यक्तिगत प्रतिभागियों द्वारा संदर्भित समग्र विषय

प्रतिभागियो	पहली महिला	दूसरी महिला	तीसरी महिला	चौथी महिला	पांचवीं महिला
1.परिवार प्राथमिक रूप में	√	√	√	√	√
2. परिवार एक सहारा के रूप में	√	√	√	√	√
3. शिक्षा की उललेखनिये भूमिका हैं सफलता में	√	√	√	√	√
4. की योजना में अशपष्टत्ता	√		√	√	√
5. सिमित इच्छा की कुंजी ही खुशी	√	√	√	√	
6. आत्मसंतुष्टि हैं जीवन का लक्ष्य हैं		√			√
7. महिलायें सब कुछ त्याग शक्ति ही उनके बच्चों के लिए	√		√		√
8. सफलता बहुआयामी हे	√	√	√	√	√
9. पारिवारिक लगाभ कभी कभी होता हैं करियर में बाधा	√		√		√

10. महिलाओ को माना जाता हैं मल्टीटास्किंग व्यक्ति	√	√	√	√	√
11. पति का साथ देना जरुरी होता ही शादी सुदा महिला के लिए सफल कैरियर में	√	√	√	√	√
12. एक ख़ुश इंसान ही बना सकता हैं दसरो को ख़ुश	√	√	√	√	
13. सफला केवल भौतकबादी नहीं हैं	√	√	√	√	√
14. आत्म अन्वेषद की कामी हे	√	√	√	√	√

4.6 समग्र बनावट-संरचनात्मक विवरण

इस अध्ययन में चयनित महिलाओं की आयु 30-40 वर्ष हैं। इस उम्र तक, वे लगभग खुद को बसा लिया हैं और जीवन में अधिकांश चीजें जैसे शादी, नौकरी और बच्चे आदि। अध्ययन के सभी प्रतिभागी विवाहित हैं, उनके बच्चे हैं और वे इसमें लगे हुए हैं उनका पेशा जो भी हो। सभी शिक्षित महिला प्रतिभागियों को लगता हैं कि वे हैं सफल। प्रतिभागियों में से एक गृहिणी हैं और वह अपने जीवन से संतुष्ट हैं। अन्य चार प्रतिभागी विभिन्न व्यवसायों में कमैं करने वाले व्यक्ति हैं और संतुष्ट भी हैं उनके जीवन के साथ। सभी प्रतिभागियों में से तीन ने अपने माता-पिता को अपने आदर्श के रूप में देखा हैं और उनके काम और विचारधारा का पालन करें। एक प्रतिभागी के पास कोई रोल मॉडल नहीं होता हैं और उसके पास अपनी विचारधारा और दूसरे ने उनकी परिस्थितियों को अपने आदर्श के रूप में देखा हैं। चार के बीच पांच प्रतिभागियों के पास उनकी प्राथमिकता के रूप में परिवार हैं, जिसका अर्थ हैं कि अधिकांश महिलाएं कर सकती हैं अपने परिवार के लिए अपने व्यक्तिगत हितों की उपेक्षा करें। यह उनके जीवन-संसार के कारण हो सकता हैं उनके परिवार और बच्चों के डर्द-गिर्द घूमती हैं। पाँचवाँ प्रतिभागी जो शिक्षक नहीं हैं उसके परिवार को प्राथमिकता के तौर पर लें।

प्रतिभागियों में से एक अपने बच्चों के लिए सब कुछ बलिदान कर सकता हैं, दूसरा एक कर सकता हैं अपने परिवार (बच्चों और पति) के लिए सभी चीजों का त्याग करें, दो प्रतिभागी सभी का

त्याग कर सकते हैं केवल अपने पति के लिए चीजें। पांचवें ने कहा कि वह सब कुछ बलिदान नहीं कर सकती कोई भी, इसके पीछे उसका तर्क यह हैं कि अगर वह सब कुछ त्याग सकती हैं तो उसका स्वाभिमान होगा खो जाओ।

पांच प्रतिभागियों में से दो महिलाएं अपने जीवन से संतुष्टि चाहती हैं और उनमें से एक को कुछ नहीं चाहिए क्योंकि उसे वह सब कुछ मिल गया जो वह उसमें चाहती थी जीवन। उनमें से एक मन की शांति और सुखी, स्वस्थ जीवन चाहता हैं। और आखिरी वाला नहीं हैं कुछ भी चाहिए क्योंकि वह सोचती हैं कि अगर हमें अपने जीवन से उम्मीदें नहीं हैं, तो यह हमें बहुत कुछ देगा।

सभी प्रतिभागी ज्यादा भौतिकवादी नहीं हैं और परफेक्ट के बारे में बात करते हुए जीवन दो महिलाएं स्वस्थ और सुखी जीवन चाहती हैं। एक प्रतिभागी ने बताया कि क्या आप समर्पित कर सकते हैं दिन में कम से कम एक घंटा तो यह एक आदर्श जीवन हैं। एक अन्य प्रतिभागी ने बिना रहने को बताया उम्मीदें उसके लिए एक आदर्श जीवन हैं और पांचवें ने कहा कि अगर आपको जीवन में संतुष्टि हैं तो यह एकदम सही हैं।

अस्सी प्रतिशत प्रतिभागियों ने बताया कि वे समय नहीं दे पा रहे हैं अपने शौक और रुचियों आदि के लिए खुद को। हालांकि वे सभी कर्तव्यों का पालन कर रहे हैं परिवार के सदस्यों के लिए और नौकरी की जिम्मेदारियों को भी कुशलता से निभाना। जबकि सफलता के बारे में बात करते हुए सभी प्रतिभागियों ने बताया कि सफलता एकल-आयामी नहीं हो सकती हैं, यह एक बहुआयामी अवधारणा हैं और आयाम व्यक्तियों की धारणा पर निर्भर करते हैं।

जिन महिलाओं का परिवार सहायक होता हैं, उन्हें अपने जीवन में ज्यादा बाधाएं महसूस नहीं होती हैं। एक महिला के पास बहुत सहायक परिवार हैं और उसके माता-पिता ने उसे अपने रिश्तेदारों से अलग कर दिया और समाज के वे लोग जो उसकी शिक्षा में बाधा डाल सकते हैं। सारा श्रेय वो देती हैं उसके माता-पिता को सफलता। सभी प्रतिभागियों को अपनी उपलब्धि हासिल करने के लिए परिवार का

समर्थन मिला सफलता और वे अपनी सफलता का श्रेय किसी भी तरह से अपने परिवार को देते हैं। यह एक शिक्षित महिलाओं की सफलता का महत्वपूर्ण कारक हैं। शादी के बाद पति का सपोर्ट सभी प्रतिभागियों की राय में करियर में सफलता पाने के लिए आवश्यक हो जाते हैं।

सफलता के मायने अलग-अलग प्रतिभागियों के लिए अलग-अलग होते हैं लेकिन उनमें से कुछ आयाम सभी में समान हैं, जैसे परिवार, पेशा और सामाजिक आदि। महिलाओं में से एक बताया कि उनकी सबसे बड़ी सफलता तब थी जब वह माँ बनीं। एक और ने बताया कि उसे सबसे बड़ी उपलब्धि लोगों को उसके व्यवसाय के साथ परामर्श देना हैं जबकि बाकी तीन महिलाओं ने बताया कि उनका काम ही उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि हैं।

अस्सी प्रतिशत प्रतिभागियों ने सहमति व्यक्त की कि वे अपने वर्तमान को प्राप्त नहीं कर सके शिक्षा के बिना स्थिति, हालांकि वे कार्यरत हैं या नहीं, लेकिन प्रतिभागियों में से एक इसके बारे में निश्चित नहीं था। सभी महिलाओं ने स्वीकार किया कि शिक्षा ने उनके जीवन को बहुत प्रभावित किया हैं या तो यह व्यक्तिगत या पेशेवर हैं। शिक्षा ने उनके जीवन के हर पहलू को प्रभावित किया हैं और सफलता।

एक प्रतिभागी की राय में, काम का प्रकार अच्छा हैं या अच्छा नहीं हैं महिलाओं का फैसला समाज करता हैं। वह एक महिला ब्यूटी पार्लर चला रही हैं। में शुरुआत, जब उसने यह व्यवसाय शुरू किया, तो उसके बारे में समाज की प्रतिक्रिया अच्छी नहीं थी पेशा। लेकिन उनके माता-पिता को उन पर पूरा भरोसा था और उन्होंने उनका पूरा साथ दिया। जब उन्होंने उस पेशे में सफलता हासिल की तो सभी ने उनकी सराहना की। एक औरत बताया कि उनका समाज महिलाओं के लिए फील्डवर्क की सराहना नहीं करता और सोचता हैं कि शिक्षण पेशा महिलाओं के लिए उपयुक्त हैं। एक अन्य प्रतिभागी के अनुसार, समाज की राय, नौकरी उन महिलाओं के लिए अच्छी हैं जिनके साथ वह उसे ठुमके दे सकती हैं परिवार और पुरुष समुदाय को परेशान नहीं किया जाना चाहिए।

अस्सी प्रतिशत प्रतिभागियों ने उस क्षेत्र में प्रवेश नहीं किया जिसमें वे चाहते थे बचपन में जाना केवल एक महिला को उस क्षेत्र में सफलता मिली जिसमें वह चाहती थी जाओ और वह एक शिक्षिका हैं।

चार महिलाओं ने बताया कि निवास स्थान उनकी शिक्षा के लिए अनुकूल हैं लेकिन एक महिला ने बताया कि लड़कियों की शिक्षा के लिए समाज का माहौल अच्छा नहीं हैं उसके समाज के लोग दसवीं कक्षा से अधिक लड़कियों को शिक्षित नहीं करते हैं, वे लड़कियों की शादी करते हैं बहुत कम उम्र में।

सभी महिलाओं ने स्वीकार किया कि जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए परिवार का समर्थन महत्वपूर्ण हैं। शादी के बाद सफलता पाने के लिए पति का साथ होना बहुत जरूरी हैं करियर। एक प्रतिभागी ने शादी और बच्चों के बाद अपनी पढ़ाई फिर से शुरू की और उसे नौकरी मिल गई अपने पति और परिवार के समर्थन के कारण वांछित क्षेत्र।

चालीस प्रतिशत प्रतिभागियों के दोनों परिवारों में संयुक्त परिवार हैं अर्थात
पिता के साथ-साथ ससुराल वाले भी। उनमें से एक ने कहा कि इसने उसकी सफलता को कभी प्रभावित नहीं किया लेकिन एक अन्य ने बताया कि परिवारों में संकट और झगड़ों ने उसकी पढ़ाई को प्रभावित किया। एक पैतृक परिवार में महिला का संयुक्त परिवार हैं और उसने बताया कि इससे उसकी सफलता पर कोई असर नहीं पड़ा। दो महिलाओं के पैतृक परिवार के साथ-साथ ससुराल में एकल परिवार हैं और बताया कि यदि उनका एक संयुक्त परिवार था, यह निश्चित रूप से उनकी सफलता को नकारात्मक रूप से प्रभावित करेगा।

सभी प्रतिभागी मध्यवर्गीय परिवारों से ताललुक रखते हैं और बात करते समय वित्तीय स्थिति, अस्सी प्रतिशत प्रतिभागियों ने सहमति व्यक्त की कि वित्तीय परिवार की स्थिति ने उनकी सफलता को प्रभावित किया था। उनमें से एक ने बताया कि अगर आर्थिक परिवार की स्थिति अच्छी थी तो उसकी

स्कूली शिक्षा और बेहतर हो सकती थी और दूसरी वन ने कहा कि अगर उसके पास ज्यादा पैसे होते तो वह प्राइवेट कॉलेज से एमबीबीएस कर सकती थी। शेष बीस प्रतिशत प्रतिभागियों ने तर्क दिया कि परिवार की आर्थिक स्थिति ने उसकी सफलता को प्रभावित नहीं करते।

पांच में से चार प्रतिभागियों ने सहमति व्यक्त की कि परिवार की शैक्षणिक योग्यता सदस्यों ने उनकी सफलता को बहुत प्रभावित किया, लेकिन एक प्रतिभागी ने बताया कि इससे उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा

अपनी सफलता का वर्णन करते हुए, सभी महिलाओं ने विश्वास के साथ सहमति व्यक्त की कि वे हैं सफल शिक्षित महिलाएं। सफलता के बारे में उनकी आत्म-धारणा यह हैं कि वे हैं एक की कमी को छोड़कर अपनी वर्तमान स्थिति से संतुष्ट हैं यानी वे समय देने में असमर्थ हैं उनके शौक और रुचियों के लिए। अधिकांश प्रतिभागियों ने बताया कि उन्होंने सबसे अधिक हासिल किया हैं उनके अनुसार सफलता के आयाम। लाइफ सपोर्ट में सफलता पाने के लिए परिवार महत्वपूर्ण हैं क्योंकि सभी प्रतिभागियों को मिला।

शिक्षित महिलाओं की सफलता को प्रभावित करने वाले कारक परिवार, शिक्षा, स्कूली शिक्षा, समाज, परिवार की वित्तीय स्थिति, परिवार के सदस्यों की शिक्षा और उनकी इच्छा शक्ति आदि हैं। सभी महिलाओं ने स्वीकार किया कि सीमित इच्छाएँ ही खुशी और सफलता की कुंजी हैं। उनके अनुसार सफलता बहुआयामी है और यह केवल भौतिकवादी नहीं है। सफलता संतुष्टि, खुशी और स्वस्थ जीवन है, यह सफलता के बारे में प्रतिभागियों के स्पष्ट दृष्टिकोण को इंगित करता है।

4.7 प्रमुख विषय सामने आए:

4.7.1 थीम 1- परिवार प्राथमिकता के रूप में

प्रतिभागियों ने सफलता और आत्म-धारणा के बारे में बात करते हुए अपनी प्राथमिकताओं के बारे में साझा किया। उन्होंने बताया कि सफलता जीवन का एक महत्वपूर्ण पहलू है लेकिन एक खुशहाल

परिवार भी एक सफलता है। प्रतिभागियों में से एक ने बताया कि, "एक ही चीज हैं जिसके लिए सब कुछ कुर्बानी कर सकती हूँ, मेरा पति मेरा बच्चा" जिसमें मैं अपना सब कुछ त्याग सकती हूँ, वह हैं मेरा पति और मेरा बच्चा।) एक अन्य महिला ने बताया कि, "अगर मैं कुछ भी त्याग कर सकती हूँ तो अपने पति के लिए। मैंने ये पेशा इसलिए चुना की मैं हर पल उनके साथ जी सकू, उनके लिए मेरी हर चीज बिना शर्त हैं।" (मैं अपने पति के लिए कुछ भी बलिदान कर सकती हूँ। मैंने यह पेशा चुना ताकि मैं हर पल उसके साथ रह सकूं, उसके लिए मेरा सब कुछ बिना शर्त हैं।) हालाँकि वह पढ़ाई में बहुत अच्छी थी और उसके माता-पिता चाहते थे कि वह एक बन जाएगी प्रशासनिक अधिकारी लेकिन उसने ब्यूटी पार्लर का व्यवसाय करना चुना था ताकि वह अपने पति के साथ जीवन जी सकती हैं।

जिन महिलाओं ने साक्षात्कार किया, उन्होंने सबसे पहले अपने परिवार और बाकी सब चीजों पर ध्यान केंद्रित किया उसके बाद पड़ता हैं। उनका जीवन उनके पति और बच्चों के इर्द-गिर्द घूमता हैं। जैसा कि उनमें से एक ने बताया, "मेरे बच्चे मेरी जिंदगी हैं। माता-पिता, पति, भाई, बहन सब लोग अपनी जगाह को वैसा ही रखते हैं जिंदगी में लेकिन अगर किसी एक के लिए तो मेरे बच्चे हैं जिन्के लिए मैं सब कुछ बलिदान कर सकती हूँ।

महिलाएं अपने परिवार की खुशी के लिए सब कुछ बलिदान कर सकती हैं, चाहे वह कुछ भी हो, जैसा कि एक महिला ने कहा, "मैं अपने पति के लिए सब कुछ बलिदान कर सकती हूं। हसबैंड को अगर जरूरत है की उनको कहीं शिफ्ट होना है तो मैं उनके लिए सब कुछ चोर शक्ति हूं, क्लिनिक, पेशा सब कुछ।

ज्यादातर महिलाओं ने बताया कि परिवार उनकी प्राथमिकता हैं लेकिन उनमें से एक नहीं हो सकता किसी के लिए अपना सब कुछ कुर्बान कर दिया और कहा कि "बहुत ईमानदारी से कहूँ तो 100% बलिदान" नहीं कर सकती किसी के लिए भी लेकिन 99.09% तक हो सकता हैं। आगर माई 100% मेरी आत्म-सम्मान मर जाएगी को कुर्बानी करूंगी। बहुत मुश्किल हैं ये और अगर ऐसी स्थिति आ जाए तो देखा जाएगा। मैं अपने बच्चों के लिए बलिदान करें शक्ति हु वो भी एक निश्चित उम्र तक। लाइफ टाइम बच्चन के लिए भी बलिदान नहीं करुंगी तब तक करुंगी जब तक वो स्थापित नहीं करते हैं।

4.7.2 थीम 2- शिक्षित परिवार एक सहारा के रूप में

अधिकांश प्रतिभागियों ने खुलासा किया कि यदि परिवार सहायक हैं तो आप कर सकते हैं आप जो कुछ भी चाहते हैं उसे हासिल करें। जिन महिलाओं को उनके परिवार का समर्थन प्राप्त हैं, उन्होंने नहीं किया उनके जीवन में कई बाधाओं का सामना करना पड़ता हैं। जैसा कि एक महिला अपनी सफलता का पूरा श्रेय देती हैं अपने माता-पिता को और बताया कि, "मेरी सफलता में एक कारक ये रहा की माता-पिता के लिए"बहुत सपोर्टिव थे, हमेशा पढ़ाई के लिए प्रोत्साहित किया।"

प्रतिभागियों में से एक ने शादी और दो बच्चों के बाद अपनी पढ़ाई फिर से शुरू की। उनके पति ने जीवन की हर स्थिति में उनका साथ दिया। उसके ससुर ने उसे प्रोत्साहित किया जीवन में कुछ सीखने और हासिल करने के लिए। जैसा कि उसने बताया, "मेरे पति ही हैं जो मुझे" प्रेरित करते रहें उन्होन आज तक मुझे किसी चीज के लिए ना नहीं बोला। मेरी प्रोफेशनल लाइफ की सक्सेस का टोटल क्रेडिट माई अपने ससुर को देना चुनुंगी उन्होंने मुझे हमेशा प्रेरित किया।" वह जो कड़ी मेहनत कर रही है और परिवार का प्रबंधन कर रही है, उसके लिए उसके समाज के लोगों द्वारा उसकी सराहना की जाती है और शादी के बाद उसे नौकरी मिल जाती है।

प्रतिभागियों में से एक ने बताया कि उनकी सफलता का श्रेय भगवान और उनके पति को जाता है क्योंकि उनके पति का बहुत सहयोग मिलता है। उसके माता-पिता भी बहुत सहायक हैं क्योंकि वह महिलाओं के ब्यूटी पार्लर का व्यवसाय कर रही है और वह जो काम कर रही है उसके बारे में समाज की धारणा अच्छी नहीं थी लेकिन उसके माता-पिता ने उसके व्यवसाय और जीवन में हर तरह से उसका साथ दिया। उसके माता-पिता ने उसे इस सोच के साथ पाला-पोसा कि कोई भी काम छोटा या बड़ा नहीं होता, बस जीवन में जो भी करो बेहतर करो। "मेरी सफलता का सबसे पहला क्रेडिट भगवान को जाता है और उसके बाद मेरे पति को क्यों की वो हर समय मेरे साथ खड़े रहते हैं किसी भी मोड पे किसी भी पल पे। मेरे माता-पिता बहुत बड़े समर्थक रहे।"

उसके माता-पिता की व्यापक सोच ने उसे इस क्षेत्र में सफल बना दिया जो कि मध्यवर्गीय समाज में एक प्रतिष्ठित व्यवसाय नहीं है।

4.7.3 थीम 3- सफलता में शिक्षा की उल्लेखनीय भूमिका है।

साक्षात्कार में लगभग सभी महिलाओं ने खुलासा किया कि उनकी सफलता में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षा सफलता का एक महत्वपूर्ण पहलू है जैसा कि दिव्यंजलि ने बताया, "शिक्षा का बहुत बड़ा रोल होता है सफलता में। शिक्षा एक आधार होता है इंसान का। सक्सेस में आपके सोचने का दिन जो बढ़ता है वो एजुकेशन से बढ़ता है।" हालांकि वह एक गृहिणी हैं, उन्होंने अपनी सफलता में शिक्षा की भूमिका को स्वीकार किया। "शिक्षा का मतलब सिर्फ किताबी ज्ञान नहीं होता।" वह मान गई कि शिक्षा के कारण उसे वह स्थान मिला है, जहां वह है। "एजुकेशन के बिना मैं आज जिस जगह पर हूँ नहीं पहुँच पाती।" वह एक सुखी जीवन जी रही है, सकारात्मक दृष्टिकोण रखती है और अपने अच्छे विचारों का श्रेय शिक्षा को देती है।

दूसरी महिला ने भी अपने जीवन में शिक्षा की भूमिका को स्वीकार किया। "एजुकेशन ने सक्सेस के हर पहलू को प्रभावित किया है।" उसने यह भी स्वीकार किया कि वह बिना शिक्षा के किसी भी प्रकार की सफलता प्राप्त नहीं कर सकती। "नहीं, नहीं, बिल्कुल नहीं ... शिक्षा के बिना मैं अपनी वर्तमान सफलता प्राप्त नहीं कर सकती थी। क्योंकि पढ़ना तो पड़ेगा ही, उसके बिना सफलता नहीं मिल सकती है वो प्रोफेशनल लाइफ हो, पर्सनल लाइफ या फिर सोशल लाइफ हो। शिक्षा से हमारी सोच बदली है, बेहतर होती है।"

तीसरी महिला भी इस बात से सहमत थीं कि शिक्षा ने उन्हें जीवन के सभी पहलुओं में मदद की। "मेरी एजुकेशन ने तो मुझे 100% हेल्प किया है मेरे प्रोफेशन में। मैं थैंक्यूफूल हूँ अपनी एजुकेशन के लिए··· ..हर क्षेत्र में फायदा है वास्तव में व्यवसाय में नहीं बल्कि मेरे संबंधों में, सोशल सब जगह।"

एक प्रतिभागी, चौथी महिला ने भी अपनी सफलता में शिक्षा की भूमिका को स्वीकार किया, “एजुकेशन ने बहुत प्रभावित किया है मेरी सफलता को। शिक्षा के बिना हम कुछ नहीं कर सकते।हालांकि पेशे से वह एक डॉक्टर हैं, लेकिन उन्होंने जीवन के सभी पहलुओं में शिक्षा की भूमिका को स्वीकार किया। वह सोचती है कि शिक्षा के बिना जीवन में कुछ भी हासिल करना असंभव है, “नहीं, यह बिल्कुल भी असंभव नहीं है, मैं बिना शिक्षा के ये स्थिति नहीं हासिल कर सकती। बिना शिक्षा के आप कुछ भी हासिल नहीं कर सकते हैं, न परिवार के लिए, न समाज के लिए। ना अपने आप के लिए। एजुकेशन का बहुत बड़ा रोल है।”

पांचवीं महिला ने यह भी बताया कि शिक्षा लोगों के सोचने के स्तर को विस्तृत करती है और जीवन को प्रभावित करती है। “एजुकेशन इंसान का माइंड ब्रॉड करती है। आप जितना ज्यादा पढे लिखे हो आपका सोच का स्तर बढ़ जाता है। आगर आप शिक्षित हो तो सामाजिक रूप से भी प्रभाव करता है, सम्मान होती है। उसने यह भी स्वीकार किया कि वह शिक्षा के बिना वर्तमान स्थान प्राप्त नहीं कर सकती। "एजुकेशन के बिना मैं जिस पोजीशन पे हूँ नहीं पहुँच सकती थी।

सभी प्रतिभागियों ने अपनी सफलता में शिक्षा की भूमिका को स्वीकार किया और इस बात पर भी सहमति व्यक्त की कि शिक्षा मन और विचारों को व्यापक बनाती है। शिक्षा जीवन के सभी पहलुओं जैसे पेशेवर, व्यक्तिगत या सामाजिक आदि को प्रभावित करती है, सभी प्रतिभागियों ने बताया कि शिक्षा के बिना वर्तमान स्थिति या सफलता प्राप्त करना संभव नहीं है। अतः यह कहा जा सकता है कि शिक्षा का हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है।

4.7.4 थीम 4- करियर की योजना में अस्पष्टता

ज्यादातर महिलाओं ने तर्क दिया कि उन्होंने अपने करियर की योजना नहीं बनाई। वर्तमान में वे जिस क्षेत्र में काम कर रहे हैं, उसकी योजना पहले नहीं बनाई गई थी। प्रतिभागियों में से केवल एक दूसरी महिला ने सहमति व्यक्त की कि उसने उस क्षेत्र में शिक्षा ली है जिसमें वह जाना चाहती है। वह वर्तमान में शिक्षिका हैं। “मेरे साथ प्लस पॉइंट ये रहा की मुझे जो पेशा चुना था मैंने उसी में शिक्षा ली।

तीसरी महिला ने यह भी साझा किया कि उन्होंने प्रशासनिक सेवाओं की तैयारी की और कभी-कभी शिक्षण कार्य भी किया और अंत में एक व्यवसाय शुरू किया, “मेरे माता-पिता का पहला प्रतिक्रिया था की तुमने जब आईएएस या पीसीएस की तयारी की है तो तुम इस फील्ड में क्यो जा रही हो मैंने टीचिंग जॉब भी की है और टीचिंग मुझे आज भी पसंद है। इसका मतलब है कि उसने करियर को ठीक से तय नहीं किया था लेकिन जैसी स्थिति आई, उसने उसी के अनुसार काम किया। वह एक पढ़ी-लिखी महिला हैं और उन्होंने अपनी पसंद से महिलाओं के ब्यूटी पार्लर का व्यवसाय शुरू किया।

पांचवीं महिला बचपन में एक पुलिस अधिकारी बनना चाहती थी लेकिन अब वह एक वैज्ञानिक है, “लक्ष्य तो मैने बताया था आईपीएस (भारतीय पुलिस सेवा) अधिकारी बनने का की मुझे पुलिस में जाना है। बाद में मेरा भी बस ये हो गया की मुझे इंडिपेंडेंट होना है और समाज में प्रतिष्ठा वाली स्थिति होनी चाहिए।” वह वर्तमान में एक वैज्ञानिक हैं और यह पहले उनके द्वारा तय नहीं किया गया था, इसका मतलब है कि उन्हें कैरियर की योजना में भी अस्पष्टता है और उनका वर्तमान पद आकस्मिक था।

चौथी महिला एक एयर-होस्टेस बनना चाहती थी, लेकिन अब एक डॉक्टर, "जब मैंने अपने पापा को बताया था की मुझे एयर-होस्टेस बनना है तो वो हैरान रह गए हैं कहा की इतनी होशियार तुम पढ़ने लिखने में एयर-होस्टेस बनोगी?” उसने साझा किया कि वह एयर-होस्टेस बनना चाहती थी और आखिरकार उसने करियर का चिकित्सा क्षेत्र चुना। इन बातों से संकेत मिलता है कि उसने अपने करियर की योजना भी नहीं बनाई थी।

पाँच प्रतिभागियों में से चार ने अपने करियर की योजना नहीं बनाई। वे वर्तमान में उस पेशे में हैं जो उन्होंने पहले कभी नहीं सोचा था, यह शायद आकस्मिक था। सभी प्रतिभागियों में से केवल एक महिला दूसरी महिला उस क्षेत्र में गई थी जिसमें वह जाना चाहती थी यानी शिक्षण पेशा। तो, प्रतिभागियों ने खुलासा किया कि उनके पास कैरियर नियोजन में अस्पष्टता है।

4.7.5 थीम 5- सीमित इच्छाएँ ही खुशी की कुंजी हैं-

इस अध्ययन में शामिल हर महिला अपने जीवन में सुख चाहती है और उनका मत है कि सुख केवल भौतिकवादी चीजों से नहीं आता है। अधिकांश महिलाएं इस बात से सहमत थीं कि सीमित इच्छाएँ ही खुशी की कुंजी हैं, जैसा कि महिलाओं में से एक ने कहा, "ऐसी कमी तो बताऊ कसम से नहीं लगती जीवन में। ईश्वर ने दो वक्त की रोटी दी है अच्छे से खा रहे हैं जब मर्जी आए खा सकते हैं इससे ज्यादा क्या चाहिए, जितना है उसमें संतोष है ये सबसे बड़ी चीज है।"

व्यक्ति को स्वयं से संतुष्ट होना चाहिए। केवल भौतिकवादी चीजें ही सफलता नहीं दिलाती हैं और यदि आप अन्य लोगों से तुलना करेंगे तो आप कभी संतुष्ट नहीं होंगे। यदि आप अपने अतीत की तुलना में बेहतर स्थिति में हैं तो आप सफल हैं। जैसा कि महिलाओं में से एक ने बताया कि, "आप अपनी सफलता को कभी दूसरे के नज़रिए से मत देखिये और दूसरे से अपने को तुलना भी मत करिए। सिर्फ अपना पास्ट अपने प्रेजेंट से तुलना करें, फ्यूचर भी मत सोचिए तो आप अपने आप को सक्सेसफुल पाएंगे वरना सक्सेस का कोई मतलब नहीं है। भौतिक चीजों से सफलता नहीं होती है।" अगर लोग खुश रहना चाहते हैं तो यह छोटी-छोटी चीजों में पाया जा सकता है। सफल होने के लिए ज्यादा पैसा होना जरूरी नहीं है। यह लोगों की एक धारणा है जिसे वे सफलता कहते हैं। दूसरों के साथ तुलना करने से हमारी खुशियां चुरा सकती हैं लेकिन अगर हम अपनी वर्तमान स्थिति की तुलना अतीत से करें और अपने प्रयासों से इसे बेहतर बनाएं तो आप पाएंगे कि आप सफल हैं।

यदि किसी व्यक्ति की जरूरतें पूरी हो जाती हैं तो वह संतुष्ट हो जाएगा और खुद को खुश कर लेगा लेकिन इच्छाएँ असीमित हैं और पूरी हो भी सकती हैं और नहीं भी। इसलिए, यदि जरूरतें पूरी हो जाती हैं तो व्यक्ति को संतुष्ट होना चाहिए क्योंकि उनमें से एक ने कहा था कि "मेरे पास कार होनी चाहिए क्योंकि जरूरत है। मेरे पास कार है। कार होने के बाद मेरा कोई सपना नहीं है की मेरे पास ऑडी हो बीएमडब्ल्यू हो। यह संतुष्टि का चरण है। मेरी नीड कम्पलीट हो गई है बाकी विशेज तो किसी की नहीं पूरी होती है।"

यदि किसी व्यक्ति की सीमित इच्छाएँ हैं तो वह अधिक इच्छाएँ रखने के बजाय अधिक खुश हो सकता है जो पूरी नहीं हो सकती हैं। व्यक्ति को भविष्य की बेहतरी के लिए काम करना चाहिए लेकिन उसे खुशी की कीमत पर नहीं करना चाहिए।

4.7.6 थीम 6- आत्मसंतुष्टि ही जीवन का लक्ष्य

साक्षात्कार में कई महिलाओं ने सहमति व्यक्त की कि सफलता में संतुष्टि, खुशी और स्वास्थ्य शामिल है। ज्यादातर महिलाएं अपने जीवन में संतुष्टि यानि आत्मसंतुष्टि चाहती हैं। उनमें से एक के रूप में, पहली महिला ने बताया, "मैं अपनी लाइफ से संतुष्टि चाहती हूँ, जो मैं करुं वो परफेक्शन के साथ मतलब मुझे उसमे कमी न लगे।" उनकी राय में, यदि आपके पास ज्यादा पैसा या भौतिकवादी चीजें नहीं हैं लेकिन अगर आपके जीवन में संतुष्टि है तो आप सफल हैं। "आत्मसंतुष्टि है तो आप सफल हैं, पैसे कम हो कोई बात नहीं लेकिन आप जो काम कर रहे हैं उसमें खुश हैं, आप जो खाना खा रहे हैं वो खुशी मन से खा रहे हैं तो आप सफल हैं।"

एक अन्य महिला चौथी महिला भी अपने जीवन से संतुष्टि चाहती है। उसने अपने जीवन में जो किया और जो किया, उससे वह खुद को संतुष्ट करना चाहती है। उन्होंने कहा, 'परफेक्ट लाइफ का मतलब मेरे हिसाब से संतुष्टि है। जितना आप सीमित दायरे में खुश रहेंगी और जितना आप दूसरों को खुश रख पाएंगी वही एक परफेक्ट लाइफ है।"

एक व्यक्ति अपने जीवन में संतुष्टि चाहता है और संतुष्टि उनके दृष्टिकोण से आती है कि उनकी प्राथमिकताएं क्या हैं और उन्हें क्या खुश करता है जैसा कि दूसरी महिला ने कहा, "मैं अपनी जिंदगी से अपने लिए संतुष्टि चाहती हूँ कि मैं जहाँ पर खड़ी हूँ खुद को संतुष्ट कर पाउ और खुद को कंसोल कर पाउ की मैंने जो किया है वो ठीक किया है।"

यदि कोई व्यक्ति खुश है या उसके पारिवारिक जीवन, पेशेवर जीवन और सामाजिक जीवन में संतुलन है तो उसे मानसिक संतुष्टि मिलती है। जैसा कि वैज्ञानिक पांचवीं महिला ने बताया, "परफेक्ट

लाइफ मेरे लिए वही हो सकती है जिसमे की इंसान मानसिक रूप से संतुष्ट हो। कोई हेल्थ इश्यू ना हो, आप अपनी फैमिली लाइफ से खुश हो, प्रोफेशनल लाइफ से भी खुश हो। याही एक परफेक्ट लाइफ होती है; अगर तीनो में बैलेंस हो तो आप कह सकते हैं कि लाइफ परफेक्ट है तुम्हारी।"

आत्म-संतुष्टि एक उपलब्धि है और यदि कोई व्यक्ति अपने पास जो कुछ है उससे स्वयं को संतुष्ट करता है तो यह एक सफलता है। आत्म-संतुष्टि प्राप्त करना न तो आसान है और न ही कठिन।

4.7.7 थीम 7- महिलाएं अपने बच्चों/पति के लिए सब कुछ कुर्बान कर सकती हैं-

जिन महिलाओं का साक्षात्कार लिया गया है वे लगभग सभी पारिवारिक हैं। ज्यादातर महिलाएं ऐसा कुछ नहीं करना चाहती थीं जिससे उनके परिवार पर असर पड़े। अधिकांश महिलाएं अपने बच्चों या पति या परिवार के लिए दोनों साधनों के लिए अपना सब कुछ त्याग सकती हैं। महिलाओं के लिए उनके बच्चे और पति सबसे बड़ी चिंता का विषय होते हैं। उनकी जिंदगी सिर्फ उनके बच्चों और पति के इर्द-गिर्द घूमती है, उसके बाद बाकी सब कुछ गिर जाता है। जैसा कि पहली महिला ने बताया, "एक ही चीज है जिसके लिए सब कुछ बलिदान कर सकती हूँ, मेरा पति मेरा बच्चा ... हाहाहा।" वह कहना चाहती हैं कि अगर आप किसी से पूछेंगे तो जवाब वही होगा। महिलाएं हमेशा किसी और चीज से पहले अपने परिवार के बारे में सोचती हैं।

एक अन्य महिला चौथी महिला जो एक होम्योपैथिक डॉक्टर हैं और उनका क्लिनिक बहुत अच्छी तरह से चलता है, ने बताया, "मैं अपने पति के लिए सब कुछ बलिदान कर सकती हूँ। हसबैंड को अगर नीड है की उनको कहीं शिफ्ट होना है तो मैं उनके लिए सब कुछ छोड़ सकती हूँ, क्लिनिक, प्रोफेशन सब कुछ। चौथी महिला की नजर में उनके पति से ज्यादा महत्वपूर्ण कुछ नहीं है यहाँ तक कि उनका करियर भी। वह अपने पति के लिए सब कुछ छोड़ सकती है।

वैज्ञानिक पांचवीं महिला अपने बच्चों के लिए अपना सब कुछ कुर्बान कर सकती हैं। मातृत्व की अनुभूति सबसे बड़ी अनुभूति होती है और ऐसा त्याग तो एक माँ ही कर सकती है। उन्होंने कहा, 'मेरे

बच्चे मेरी जिंदगी हैं। वैसा ही माता-पिता, पति, भाई, बहन सब लोग अपनी जग रखते हैं जीवन में लेकिन अगर किसी एक के लिए तो मेरे बच्चे हैं जिनके लिए मैं सब कुछ बलिदान कर सकती हूँ।" हालांकि पांचवीं महिला एक वरिष्ठ वैज्ञानिक हैं और उनका करियर उज्ज्वल है, लेकिन वह अपने बच्चों के लिए सब कुछ छोड़ सकती हैं। उनके मुताबिक मातृत्व का यह अहसास पहले नहीं था लेकिन अब हर चीज पर हावी हो रहा हैं।

हालाँकि जिन महिलाओं का साक्षात्कार लिया गया वे अलग-अलग क्षेत्रों से हैं, लेकिन उनमें से अधिकांश की बच्चों और पति के बारे में वही भावना है, जैसा तीसरी महिला ने बताया, "अगर मैं कुछ भी त्याग कर सकती हूँ तो अपने पति के लिए। मैंने ये पेशा इस लिए चुना की मैं हर पल उनके साथ जी सकु, उनके लिए मेरी हर चीज बिना शर्त है।" यहाँ तक कि वह पढ़ाई में भी अच्छी थी लेकिन उसने उन व्यवसायों को छोड़ दिया जिसने उसे लखनऊ से बाहर रहने के लिए मजबूर किया क्योंकि वह अपने पति के साथ रहना चाहती थी और बाद में महिला ब्यूटी पार्लर का व्यवसाय शुरू किया।

केवल एक प्रतिभागी दूसरी महिला ने उत्तर दिया कि वह किसी के लिए सब कुछ बलिदान नहीं कर सकती। उसके शब्दों में, "सच कहूँ तो मैं किसी के लिए अपना 100% त्याग नहीं कर सकती।" वह अकेली ऐसी महिला थी जो किसी के लिए अपना सब कुछ कुर्बान करने के लिए तैयार नहीं थी, लेकिन अगर उसे करना है, तो उसके बच्चे ही होंगे जिनके लिए वह बलिदान कर सकती है।

हमारे समाज में लोग सोचते हैं कि महिलाएं अपने परिवार के लिए बलिदान देने के लिए पैदा होती हैं। इस अध्ययन में, पांच में से चार महिलाओं ने सहमति व्यक्त की कि वे अपने पति या बच्चों के लिए सब कुछ बलिदान कर सकती हैं, लेकिन केवल दूसरी महिला ने साहसपूर्वक कहा कि वह किसी के लिए सब कुछ बलिदान नहीं कर सकती हैं। यह उसका दृष्टिकोण है हम उसे यह नहीं आंक सकते कि वह सही है या गलत। यह उसकी व्यक्तिगत भावनाएँ और रवैया है।

यहाँ ज्यादातर महिलाएं अपने बच्चों और पति के लिए त्याग की भावना रखती हैं। यह लगभग सभी महिलाओं के लिए सामान्य है।

4.7.8 थीम 8- सफलता बहुआयामी है-

जब सफल शिक्षित महिलाओं का साक्षात्कार लिया गया, तो उन्होंने इस बात पर सहमति व्यक्त की कि सफलता एकल-आयामी नहीं है, यह उन सभी के लिए एक बहु-आयामी अवधारणा है। आयामों के बारे में कुछ भिन्नताएं हैं और कुछ समानताएं भी हैं। गृहिणी पहली महिला ने बताया, "जीवन में सफल होने के लिए बहुत सी चीजें हैं। मेरे लिए सफलता का मतलब केवल नाम और शोहरत नहीं है, निजी जीवन में भी सफलता होनी चाहिए। यदि आप सभी चीजों को एकीकृत करके सभी पहलुओं में बढ़ रहे हैं तो आप सफल हैं। यदि आप केवल एक पहलू में बढ़ रहे हैं और अन्य चीजें पीछे रह गई हैं तो यह मेरे लिए सफलता नहीं है। अगर मुझे कोई पद मिला और मेरे पास पैसा है तो मैं जरूरतमंद लोगों के लिए कुछ करना चाहती हूँ। सफलता का अर्थ है अंदर से आपकी संतुष्टि।" यहाँ, उनकी राय में सफलता के कई पहलू हैं जैसे नाम, प्रसिद्धि, व्यक्तिगत जीवन और सामाजिक जीवन की सफलता।

दूसरी महिला सोचती हैं कि सफलता किसी के लिए एक आयामी नहीं है, उन्होंने कहा, "मुझे लगता है कि सफलता किसी के लिए सिंगल डायमेंशनल नहीं है। जिस तारिके से गणित में 3 आयाम होते हैं उसी तरह से सफलता में 3 आयाम के अलावा 8 दिशाएं होते हैं।" दूसरी महिला ने सफलता के आयामों की तुलना गणित के आयामों से की और कहा कि इसकी कुछ दिशाएँ भी होती हैं।

अन्य महिलाओं तीसरी महिला ने बताया कि सफलता कोई एकल-आयामी नहीं है "हम ये नहीं कह सकते हैं कि सफलता एक आयामी है। मैं जो भी सर्विस प्रोवाइड कर रही हूँ उसके साथ-साथ पर्सनैलिटी काउंसलर भी हूँ।" उनकी राय में भी सफलता के कई आयाम होते हैं। उसका आयाम उसका व्यवसाय है, एक परामर्शदाता के रूप में सफलता और उसके ग्राहकों की खुशी और पुरुष अधिक चीज उसकी सफलता का गठन करती है।

डॉक्टर चौथी महिला भी सोचती हैं कि सफलता के कई आयाम हैं और उन्होंने कहा, "आज की जिंदगी में ज्यादा जरूरी है पैसा। आपके पास कमाने के लिए पर्याप्त धन होना चाहिए, यह एक आयाम है, दूसरा सामाजिक व्यवहार और तीसरा आपका बौद्धिक भावनात्मक व्यवहार। अगर इसमे से एक भी चीज कम होगी तो आप सफल नहीं मान सकते।" उसने सफलता को धन, सामाजिक और व्यक्तिगत में विभाजित किया और उसकी दृष्टि में सभी पहलू महत्वपूर्ण हैं। आप इनमें से किसी को भी नहीं छोड़ सकते। अगर इनमें संतुलन हो तो आप सफल होते हैं।

वैज्ञानिक के अनुसार पांचवीं महिला सफलता एक बहुआयामी अवधारणा है, उनके दृष्टिकोण में सफलता के तीन आयाम हैं, व्यावसायिक सफलता, व्यक्तिगत सफलता और सामाजिक सफलता। उनके शब्दों में, "सफलता एकल आयामी नहीं होती है। हमेशा बहुत सारे पैरामीटर होते हैं जैसे एक दिशा (पेशेवर) में आप सफल हो गए हो बाकी दोनो मापदंडों की कमी कर गए आपका व्यक्तिगत और सामाजिक अभाव कर गया तो मुझे नहीं लगेगा की सफलता कहा जाएगा। मेरे परिप्रेक्ष्य में तीनो चीज का संतुलन होना चाहिए।" पांचवीं महिला की दृष्टि में यदि इन तीनों में से किसी एक आयाम का अभाव है तो वह पूर्ण सफलता नहीं है। एक सफल जीवन के लिए हमें सभी आयामों में संतुलन रखना चाहिए।

इन सबसे ऊपर साक्षात्कार में सफल महिलाओं के बारे में सहमति एक बहुआयामी अवधारणा है। प्रतिभागियों द्वारा वर्गीकृत आयामों में कुछ समानताएँ और कुछ अंतर हैं।

4.7.9 थीम 9- पारिवारिक लगाव कभी-कभी करियर में बाधा बन जाता है-

साक्षात्कार में भाग लेने वाले अधिकांश प्रतिभागियों के परिवार प्राथमिकता पर हैं। वे अपने बच्चों और पति के लिए अपना सब कुछ कुर्बान कर सकती हैं। वे अपने लिए कुछ करना चाहते थे जैसे करियर या कुछ और लेकिन कभी-कभी परिवार के साथ लगाव उनके करियर में बाधा का काम करता है। उनमें से अधिकांश ने अपने परिवार के लिए अपनी इच्छाओं का बलिदान दिया।

प्रतिभागियों में से एक दिव्यंजलि, एक गृहिणी, एक सुशिक्षित महिला है और उसे एक विश्वविद्यालय से एक शोध साथी के रूप में प्रस्ताव मिला था और शोध पूरा करने के बाद उसे उसी विश्वविद्यालय में सहायक प्रोफेसर के रूप में नियुक्त किया जाएगा, लेकिन उस समय उसके ससुराल वालों ने उसे कड़वी बातें बताईं और उसके करियर को पैसे से जोड़ दिया। उसके पति ने उसे प्रस्ताव स्वीकार करने की अनुमति दी लेकिन पारिवारिक लगाव के कारण, उसने उस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया और फिर भी किसी भी नौकरी में शामिल नहीं हुई। उनके शब्दों में, "पति ने तो मुझे भी दिया था कि तुम ज्वाइन कर लो मैं वीकली अप-डाउन कर लूंगा लेकिन इमोशनल फुल बनी मैं। लॉन्ग टर्म में मैंने सिर्फ अपने बारे में नहीं सोचा, मैं अपनी फैमिली को साथ में रखना चाहती थी।" उपरोक्त कथन में, उसने स्वीकार किया कि परिवार के लगाव ने उसके करियर को त्याग दिया क्योंकि वह अपने परिवार से दूर नहीं रहना चाहती थी।

तीसरी महिला के मुताबिक, उनके जीवन में कुछ बाधाएं थीं, जैसे कई लोग अपने जीवन में सामना करते हैं। वह बच्चों और ससुराल वालों की देखभाल को अपने करियर में बाधा मानती थी। वह अपने व्यवसाय को जल्दी बढ़ाना चाहती थी और अपने व्यवसाय के साथ-साथ परामर्श भी करना चाहती थी। लेकिन पारिवारिक जिम्मेदारियों के चलते उन्हें अपना बिजनेस तलाशने के लिए ज्यादा वक्त नहीं मिला। उनके शब्दों में, "शुरू में बाधाएं आई, किसी भी महिला के लिए घर से बहार निकल कर कामना अपना एक मुकाम तय करना बहुत आसान काम नहीं होता। उसको अपनी फैमिली की सारी जिम्मेदारी, बच्चन की परवरिश की जिम्मेदारी भी उसी के कंधो पर होती है। वो मुश्किलें उस वक्त मेरे जीवन में रहीं।"

वैज्ञानिक पांचवीं महिला ने कहा कि जब वह गर्भवती थीं तो एक साल के अंतराल के कारण उनकी पदोन्नति में देरी हुई लेकिन फिर भी उनका परिवार प्राथमिकता पर है। उनके शब्दों में, "कुछ चीज़े जिनमें कमी है मुझे लगता है मेरा एक प्रमोशन रहा गया था, देरी हो गया वो हो सकता था क्योंकि मैं एक साल गैप कर दिया बीच में गर्भावस्था के समय।"

4.7.10 थीम 10- विवाहित महिलाओं के सफल करियर के लिए पति का साथ देना जरूरी

यहाँ, भारत में समाज पितृसत्तात्मक है और एक महिला की सफलता के लिए पिता या पति का समर्थन आवश्यक है। साक्षात्कार में भाग लेने वालों ने खुलासा किया कि शादी के बाद सफल होने के लिए पति का समर्थन जरूरी है। पति के सहयोग के बिना जीवन में सफलता प्राप्त करना संभव नहीं है।

गृहिणी पहली महिला के पति ने दूसरे शहर में शोध में शामिल होने के लिए उनका समर्थन किया लेकिन वह इतनी पारिवारिक हैं और शामिल नहीं हुईं। जैसा कि उन्होंने बताया, "पति ने तो शिमला के लिए भी कह दिया था की तुम ज्वाइन कर लो मैं वीकली अप-डाउन कर लूंगा।" वह अपनी सफलता का श्रेय अपने माता-पिता और पति को देती हैं। वह एक खुश, संतुष्ट और सफल महिला हैं। "मम्मी-पापा के बुरे पति हैं जिनको मैं क्रेडिट देती हूँ सक्सेस का।

दूसरी महिला को शादी के बाद नौकरी मिली और उन्हें वह मार्गदर्शन और ज्ञान अपने लोगों से मिला। उनके पति ने जीवन की हर स्थिति में साथ दिया।

"ये ज्ञान और मार्गदर्शन मात्र गुरुजी, ससुर और पति और सास (दिवंगत) से मुझे मिला। आज मैं जो कुछ भी हूँ, लोगों की वजह से हूँ।" उनके पति ने हमेशा उन्हें जीवन और करियर में आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। जैसा कि उनके शब्दों में, "मेरे पति ही हैं जो मुझे प्रेरित करते हैं आज तक मुझे किसी चीज के लिए ना नहीं बोला।"

तीसरी महिला ने यह भी स्वीकार किया कि उनके पति ने उन्हें जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने हमेशा जीवन में हर स्थिति में उनका साथ दिया। उसने एक व्यवसाय शुरू किया ताकि वह अपने पति के साथ जीवन भर रह सके। "मेरे पति का समर्थन भी मेरी ताकत है। मेरी सफलता का सबसे पहला क्रेडिट भगवान को जाता है और उसके बाद मेरे पति को क्यों की वो हर समय मेरे साथ खड़े रहते हैं किसी भी मोड पे किसी भी पल पे।"

चौथी महिला ने कहा कि उनके पति ने उनके सभी सपनों को पूरा करने में उनकी मदद की और अब उनके पास कोई सपना नहीं बचा है; उसका पति उतना ही सपोर्टिव है इसलिए उसने ऐसा सोचा। उनके शब्दों में, "मेरे पति इतने सहकारी हैं तो कुछ ऐसा नहीं है का सपना मेरा कुछ बचा हो, मेरे इस सपने को पूरा करने वाले मेरे पति ही हैं, इस क्लिनिक को खुलवाने में, मुझे प्रेरित करने में।"

जैसा कि अधिकांश प्रतिभागियों ने बताया कि शादी के बाद सफलता पाने या अपनी सफलता को बनाए रखने के लिए पति का समर्थन बहुत जरूरी है। पति को समझना चाहिए कि उसकी पत्नी जीवन और करियर में क्या करना चाहती है। पत्नी सिर्फ घर के कामों के लिए नहीं होती; उसका एक निजी जीवन है और इच्छाएँ भी। अगर पति हर तरह से अपनी पत्नी का समर्थन करता है तो दोनों सफल होंगे और एक सफल जीवन जी सकते हैं।

4.7.11 थीम 11- एक खुश इंसान ही दूसरों को खुश करता है-

प्रतिभागियों के साक्षात्कार से पता चला कि खुशी सफलता का एक महत्वपूर्ण पहलू है। अधिकांश महिलाओं ने सफलता के पहलुओं पर चर्चा करते हुए कहा कि वे अपने जीवन से खुशियां चाहती हैं। जैसा कि पहली महिला ने बताया कि वह क्यों सोचती है कि वह सफल है, "आपकी हैप्पी फैमिली हो और उसके साथ साथ आप भी हैप्पी हो।" और सफलता के एक पहलू को चुनते हुए उन्होंने कहा, "अगर आप अपनी फैमिली के साथ खुश हो, तो वही चुनोगे ना।" उसने कहा कि आपके पास जो कुछ है, उससे आपको खुश रहना चाहिए, जैसे "धीरे-धीरे आप बढ़ गए तो अच्छी बात है नहीं बढ़े तो जीना है उतने में ही खुश रहिए।"

एक अन्य महिला दूसरी महिला ने अपनी प्राथमिकताओं के बारे में बात करते हुए बताया, "मेरी प्राथमिकता है पहले खुद खुश रहो। जो इंसान खुद खुश रहता है वही दूसरों को खुश कर पाता है। आप अपनी खुशी के लिए बिना दूर को हर्म किए जो अपनी लाइफ में करना चाहते हैं वो जरूर करें।"

व्यवसायी तीसरी महिला ने जीवन में प्राथमिकताओं के बारे में बात करते हुए कहा, "मेरी पहली प्राथमिकता मेरी आत्मा की खुशी और मैं हर चीज बिना शर्त करती हूँ। उन्हें सलाह देने वाले लोगों से खुशी मिलती है, जैसा कि उनके शब्दों में है, "इससे ज्यादा खुशी किसी चीज में नहीं मिलती है की किसी को उसकी समस्याएं से निकलने में मिलती है।" वह यह भी सोचती है कि अगर हम खुश हैं तो हम लोगों को खुश कर सकते हैं जैसा कि उन्होंने कहा, "आप खुश रह कर ही खुशियां बात सकती हैं।"

चौथी महिला ने परफेक्ट लाइफ के बारे में बात करते हुए कहा, 'जितना आप सीमा दिनरे में खुश रहेंगे और जितना आप को खुश रख पाएंगे वही एक परफेक्ट लाइफ है। सबसे पहले आप संतुष्ट होने चाहिए, खुश होने चाहिए.

पांचवीं महिला के दृष्टिकोण में यदि कोई जीवन के सभी पहलुओं में खुश है तो यह एक आदर्श जीवन है, उसने उल्लेख किया, "परफेक्ट लाइफ मेरे लिए वही हो सकती है ..... आप अपनी फैमिली लाइफ से खुश हो, प्रोफेशनल लाइफ से भी खुश हो और सफलता को भी परिभाषित किया, "मेरे दृष्टिकोण में सफलता खुशी है।"

अधिकांश प्रतिभागियों ने खुलासा किया कि खुशी सफलता का एक अनिवार्य पहलू है। अगर कोई व्यक्ति अपने जीवन से खुश है तो यह एक बड़ी उपलब्धि है। यहाँ, प्रतिभागियों के साक्षात्कार से पता चलता है कि अगर कोई व्यक्ति खुश है तो ही वह दूसरों को खुश करता है। जीवन का लक्ष्य केवल भौतिकवादी नहीं होना चाहिए, वह सुख और संतुष्टि होना चाहिए। अधिकांश प्रतिभागी अपने जीवन में सुख और संतुष्टि चाहते हैं।

4.7.12 थीम 12- सफलता केवल भौतिकवादी नहीं है-

प्रतिभागियों ने सफलता के बारे में बात करते हुए इस विचार का खुलासा किया कि सफलता अलग-अलग लोगों के लिए अलग है। एक भी चीज सभी के लिए सफल नहीं होती है। अलग-अलग व्यक्तियों के अनुसार कई चीजें शामिल हैं, जैसा कि पहली महिला ने बताया, "सफलता का मतलब है

नाम, फेम और पैसे के साथ-साथ आपकी फैमिली और आप खुद संतुष्ट सम्मान। आपकी हैप्पी फैमिली हो और उसके साथ-साथ आप भी हैप्पी हो।" उसकी संतुष्टि और खुशी के लिए एक सफलता है।

एक अन्य महिला दूसरी महिला ने सफलता के बारे में बताया, "सफलता की बहुत व्यापक अर्थ है। अगर प्रोफेशनल लाइफ में·····.लोग आपसे संतुष्ट हैं·····घर में पति, बच्चे, ससुराल में आप मुन से अपना बेस्ट दिजिये··· समाज के लिए कुछ करते हैं····· खुद के लिए कुछ करते हैं तो सफल हैं।" उनके विचार से यदि आप अपने पेशे, अपने परिवार, समाज और अपने लिए अपने काम का आनंद ले रहे हैं तो यह उसके लिए एक सफलता है। अंत में, उसने कहा, "भौतिक चीजों से सफलता नहीं होती है।" भौतिकवादी चीजें सफलता का पैमाना नहीं हो सकतीं।

तीसरी महिला के अनुसार, कोई भी भौतिकवादी चीजें परिपूर्ण नहीं हैं, जैसा कि उनके शब्दों में है, "असल में, कोई भी भौतिकवादी चीज परफेक्ट है ही नहीं, जिंदगी का परफेक्शन आपकी आंतरिक आत्मा की यात्रा है कि आप कितनी खुशी और आशीर्वाद के साथ हो वही परफेक्शन है।" यहाँ तीसरी महिला की नजर में भौतिकवादी चीजों से ज्यादा खुशी जरूरी है। तीसरी महिला का मानना है कि खुशी आत्मा से निकलती है और अधिग्रहण वाली जीवन शैली से नहीं आती है।

चौथी महिला के अनुसार, "मैं अपने को सफल मानती हूँ, मेरा अपना तरीका है, मैं अगर कुछ भी काम करके खुश हूँ तो मैं सफल हूँ। उनके विचार में खुशी एक सफलता है, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि यह कहां से आती है।

पांचवीं महिला ने सफलता के बारे में बताया, "मेरे नजरिये में सफलता ही खुशी है...जो इन्सान जितना ज्यादा खुश है अपनी जिंदगी में वो उतना ज्यादा सफल है.....वो छोटा सा स्कूल का टीचर हो या बहुत बड़ी कंपनी का मालिक।" पांचवीं महिला के लिए सफलता खुशी का पर्याय है और इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आपका काम चाहे बड़ा हो या छोटा।

साक्षात्कार में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों ने सफलता को संतुष्टि, खुशी, आंतरिक शांति आदि के रूप में वर्णित किया। सफलता अलग-अलग लोगों के लिए अलग-अलग होती है। किसी के लिए यह नाम, प्रसिद्धि, पैसा है और दूसरों के लिए, यह कुछ भी हो सकता है जो उसे खुशी और संतुष्टि देता है। प्रत्येक प्रतिभागी ने दिखाया कि सफलता केवल भौतिकवादी चीजों के लिए नहीं, बल्कि खुशी के इर्द-गिर्द घूमती है।

4.7.13 थीम 13- आत्म-अन्वेषण की कमी है

अधिकांश प्रतिभागियों ने उदासी से कहा कि वे सब कुछ कर रहे हैं, लेकिन खुद के लिए समय नहीं मिल रहा है, जैसा कि उनमें से एक ने कहा, "समय की कमी के कारण जो मैंने शायद अपना शौक नहीं है वो सारी शौक आने वाले समय में पूरा कर के पूरा करना चाहती हूँ। हालांकि वह एक गृहिणी हैं फिर भी वह अपने शौक के लिए समय नहीं निकाल पाती हैं। उसे अपने जीवन में अधिकांश चीजें मिलीं, लेकिन कुछ चीजों की अभी भी कमी है, "कुछ चीज़े हैं जो अभी पूरी नहीं हुई है उसे करने के लिए मैं अभी लगी हूँ। मेरी खुद की इच्छाएं हैं जो अभी करनी हैं।"

एक अन्य महिला दूसरी महिला अपनी वर्तमान स्थिति से बहुत संतुष्ट हैं लेकिन उन्होंने कहा, "मैंने लगभग आयाम हासिल कर लिए हैं। लेकिन अभी खुद का रह गया है, मुझे बहुत कुछ अभी करना है अपने लिए। जो मुझे अपने लिए करना है, अपनी खुशी के लिए करना है।" वह अपनी खुशी के लिए कुछ करना चाहती है क्योंकि उसने दूसरों के लिए बहुत कुछ किया लेकिन अपने लिए नहीं।

चौथी महिला को भी वह सब कुछ मिला जो वह चाहती थी लेकिन वह अपने लिए कुछ करना चाहती है, "अगले 5 सालों में मैं अपने आप को एक अच्छी सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में देखना चाहती हूँ।" वह एक डॉक्टर है लेकिन अपनी संतुष्टि के लिए एक सामाजिक कार्यकर्ता बनना चाहती है।

पांचवीं महिला अपने पेशेवर, पारिवारिक और सामाजिक जीवन से संतुष्ट हैं, लेकिन उन्हें अपने शौक के लिए समय नहीं मिलता है, "मैं बहुत कुछ करना चाहती थी, मेरा अपना इंटरेस्ट, हॉबीज सप्रेस

हो गए हैं, तो अब मैं अपने लिए समय निकलना भी चाहु तो नहीं निकल पति हूँ।" उसे पेंटिंग का शौक है और वह चाहती है कि वह अपने जीवन में कहीं भी, कभी भी ट्रैकिंग और एडवेंचर आदि के लिए स्वतंत्रता प्राप्त करे, लेकिन नौकरी और पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण उसे अपने लिए उचित समय नहीं मिल रहा है।

इन सबसे ऊपर बयानों ने इस बात की वकालत की कि महिलाएं अलग-अलग भूमिकाएं बखूबी निभा रही हैं लेकिन कहीं न कहीं उनकी इच्छाओं की कमी है। उन्हें अपने शौक और अपनी खुशी के लिए चीजों को पूरा करने के लिए उचित समय नहीं मिल रहा है। इसका मतलब है कि जीवन में कहीं न कहीं उनकी आत्म-अन्वेषण की कमी है। वे सभी खुद को तलाशना चाहते हैं और भविष्य में इसे आजमाने के लिए कहा लेकिन फिर भी इसकी कमी है।

4.7.14 थीम 14- महिलाओं को मल्टीटास्किंग पर्सन माना जाता है

अधिकांश प्रतिभागी नौकरी की जिम्मेदारियों के साथ-साथ घरेलू जिम्मेदारियां भी निभा रहे हैं। घर में वे कई कर्तव्यों का पालन करते हैं क्योंकि प्रतिभागियों में से एक दिव्यंजलि ने बताया, "मेरी रोल मॉडल मम्मी क्यो की वो चिज़ेन अब समझ में आई जब मैं माँ बनी है। इतना मल्टीटास्किंग होना मामुली बात नहीं है।" उसने यह भी बताया कि "महिलाओं को परिवार भी देखनी होती है, उम्मीद महिलाओं से बहुत ज्यादा होती है की वो नौकरी भी कर ले वो परिवार भी देख ले। 24×7 जो हर किसी को मिलते हैं उसमें महिलाओं को लोग मल्टीटास्किंग समझते हैं।" पहली महिला ने जिम्मेदारियों के बारे में बात करते हुए बताया कि लोगों को महिलाओं से इतनी उम्मीदें होती हैं कि वे घर की जिम्मेदारियों के साथ-साथ नौकरी भी कर सकती हैं।

एक अन्य महिला दूसरी महिला ने स्वीकार किया कि उसके पास नौकरी के साथ-साथ परिवार, बच्चों की जिम्मेदारियां हैं, उसके शब्दों में, "इस उम्र में आकार हमें अपना परिवार स्थापित कर ली है, एक मा अपने बच्चों को सबसे अच्छी बात है। जॉब के लिए मुझे पे किया जा रहा है। मैं अब समाज के लिए कुछ करना चाहती हूँ। वह इन जिम्मेदारियों को निभाने के साथ-साथ समाज के लिए कुछ करना भी चाहती हैं।

तीसरी महिला ने कहा कि पेशे के साथ परिवार के बच्चों को प्रबंधित करना एक मुश्किल काम है, जैसा कि उन्होंने उल्लेख किया, "किसी भी महिला के लिए घर से बाहर निकल कर एक अपना एक मुकम तय करना आसान काम नहीं होता है क्यो की परिवार की ज़िम्मेदारी और बच्चन की ज़िम्मेदारी उनकी देखरेख की जिम्मेदारी उसी के कंधों पर होती है। वह एक माँ, बहू और एक काउंसलर आदि के रूप में अपनी जिम्मेदारियों को निभाने के साथ व्यवसाय कर रही है।

चौथी महिला परिवार और बच्चों की देखभाल के साथ-साथ अपना क्लिनिक भी चला रही हैं। उनके शब्दों में, "शादी के बाद आपका परिवार है, बेबी और हम यह (क्लिनिक) काम भी कर रहे हैं।"

पांचवीं महिला नौकरी की जिम्मेदारियों के साथ-साथ अपने बच्चों के प्रति अपने कर्तव्यों का भी पालन कर रही है, उन्होंने कहा, "मेरे बच्चे अभी प्राथमिकता पर हैं, हम उनको दुनिया में लेके आए हैं तो हमारा प्राइम फर्ज़ है की उनको एक अच्छा नागरिक बनाना, एक अच्छा भविष्य देना।" वह एक वैज्ञानिक हैं और कार्यालय के साथ-साथ घर पर भी अपने कर्तव्यों का पालन करती हैं, क्योंकि उनके लिए, परिवार किसी और चीज से पहले है, उन्होंने कहा, "पहली प्राथमिकता परिवार है फिर दूसरी मेरी पेशेवर जीवन।"

यह माना जाता है कि महिलाएं मल्टीटास्किंग व्यक्ति हैं क्योंकि पितृसत्तात्मक समाज में यह माना जाता है कि परिवार की देखभाल करना केवल महिलाओं की जिम्मेदारी है। लोग सोचते हैं कि घर का काम और बच्चे सिर्फ महिलाओं की जिम्मेदारी हैं और अगर वे काम कर रहे हैं तो यह उनकी अपनी पसंद है। महिलाएं अपने सभी प्रकार के उत्तरदायित्वों को निभाने के लिए बाध्य हैं। यहाँ, सभी प्रतिभागी घर पर और अपने पेशे में एक साथ विभिन्न प्रकार के कर्तव्यों का पालन करते हैं।

4.8 स्पष्टीकरण और टिप्पणियां

इस अभूतपूर्व अध्ययन ने विभिन्न क्षेत्रों की सफल शिक्षित महिलाओं के जीवंत अनुभव का पता लगाया। यह पहचानने का एक प्रयास है कि शिक्षित महिलाओं की सफलता और सफलता के बारे में उनकी आत्म-धारणा क्या है। यह अध्ययन सफलता की घटना और शिक्षित महिलाओं की सफलता को प्रभावित करने वाले कारकों की पड़ताल करता है। निम्नलिखित प्रवचन शिलालेख इस अध्ययन शोध प्रश्नों पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

शोध प्रश्न-1 शिक्षित महिलाओं की सफलता का क्या विचार है?

प्रतिभागियों ने सफलता के बारे में अपना अनुभव बताया कि वे सफलता के बारे में क्या सोचते हैं, उनके लिए सफलता क्या है और उन्होंने क्यों स्वीकार किया कि वे सफल हैं। इस अध्ययन में चुनी गई महिलाओं ने सवालों के जवाब देते हुए अपनी सफलता के बारे में सोचा, उनमें से एक ने बताया कि वह एक सेलिब्रिटी की तरह महसूस कर रही हैं। प्रतिभागियों ने साझा किया कि उनकी व्यक्तिगत कहानियां कई समानताएं होने के साथ अद्वितीय थीं। पांच महिलाओं को अध्ययन के लिए चुना गया था और वे विभिन्न क्षेत्रों से हैं क्योंकि वे एक गृहिणी, एक शिक्षक, एक व्यवसायी, एक डॉक्टर और एक वैज्ञानिक हैं। पांच में से चार प्रतिभागियों ने अपने करियर की योजना नहीं बनाई थी जिसमें वे सफल होते हैं। ऐसे कई मानदंड हैं जिनके अनुसार वे स्वीकार करते हैं कि वे सफल हैं। हर महिला के लिए सफलता का विचार अलग होता है लेकिन कहीं न कहीं इसमें समानताएं भी होती हैं। सभी प्रतिभागियों के जीवन में कभी-कभी बाधाएँ आती थीं लेकिन उन्होंने उन बाधाओं का सामना किया और अपनी सफलता का आश्वासन दिया।

शोध प्रश्न-2 शिक्षित महिलाओं के लिए सफलता क्या है?

चयनित प्रतिभागियों में शिक्षित महिलाएं हैं। पहली महिला के रूप में शिक्षित महिलाओं की सफलता के लिए बहुत सी चीजें हैं जो एक गृहिणी हैं और वह अपने जीवन से खुश हैं। उसके लिए सफलता नाम, प्रसिद्धि आदि के साथ संतुष्टि है और यह उसके लिए पैसे से ज्यादा महत्वपूर्ण है। उसका एक खुशहाल परिवार है और वह उसी के साथ अपने कुछ शौक पूरा कर रही है। अधिकांश प्रतिभागी इस बात पर ध्यान केंद्रित करते हैं कि सफलता खुशी और संतुष्टि है और ये दोनों संस्थाएं जीवन में किसी भी

अन्य चीजों की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण हैं। हालांकि सुखी जीवन जीने के लिए भौतिकवादी चीजें महत्वपूर्ण हैं लेकिन ये गौण हैं। उनमें से चार ने बताया कि परिवार उनके लिए प्राथमिकता है। पांचवीं महिला के लिए उसके बच्चे जीवन में किसी भी चीज़ से अधिक महत्वपूर्ण हैं, हालाँकि वह एक वैज्ञानिक है लेकिन, वह सोचती है कि परिवार उसके पेशेवर जीवन से अधिक महत्वपूर्ण है। उनमें से एक दूसरी महिला ने कहा कि उसकी खुशी अधिक महत्वपूर्ण है और यह भी जोर देकर कहा कि एक महिला के लिए आर्थिक रूप से स्वतंत्र होना विवाहित जीवन की सफलता से अधिक महत्वपूर्ण है। चौथी महिला जो एक डॉक्टर हैं, ने बताया कि वह अपने पति के लिए अपना सब कुछ त्याग सकती हैं, यहाँ तक कि अपनी प्रैक्टिस के लिए भी, क्योंकि उनके परिवार के साथ रहना उनके पेशे से ज्यादा महत्वपूर्ण है।

ऐसी कई चीजें हैं जो शिक्षित महिलाओं की सफलता का निर्माण करती हैं और वे चीजें हर व्यक्ति में भिन्न होती हैं।

शोध प्रश्न-3 क्या शिक्षित महिलाएं सोचती हैं कि वे सफल हैं?

कई शिक्षित महिलाओं से पूछा गया लेकिन अंत में, जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से पांच महिलाओं को इस अध्ययन के लिए चुना गया और उन्होंने स्वीकार किया कि वे सफल हैं। उनकी सफलता के मापदंड उनके अपने हैं क्योंकि अलग-अलग लोगों के लिए सफलता के आयाम और पहलू अलग-अलग होते हैं। पहली महिला के लिए सफलता का अर्थ है नाम, प्रसिद्धि, धन और सुखी परिवार के साथ आत्म-संतुष्टि। पांच चुनी गई महिलाओं में से चार के लिए उनके परिवार को प्राथमिकता दी जाती है। प्रतिभागियों के अनुसार कई आयाम हैं और परिवार, पेशे, सामाजिक, वित्तीय और व्यक्तिगत के रूप में सभी के बीच कुछ सामान्य हैं। पहली महिला ने खुशी से साझा किया कि माँ बनना सबसे बड़ी सफलता है और दूसरी महिला के लिए सच्चा प्यार पाना सबसे बड़ी सफलता है। पांचवीं महिला ने स्वीकार किया कि उनके बच्चे सबसे महत्वपूर्ण हैं और वह उनके लिए एक खुशहाल और स्वस्थ जीवन चाहती हैं। दूसरी महिला ने तर्क दिया कि एक महिला के लिए एक सफल विवाहित जीवन की तुलना में आर्थिक सफलता अधिक महत्वपूर्ण है।

इस अध्ययन में अधिकांश महिलाओं ने सफलता के कुछ सामान्य पहलुओं जैसे संतुष्टि, खुशी, परिवार, वित्त, स्वास्थ्य आदि के बारे में सहमति व्यक्त की।

शोध प्रश्न-4 शिक्षित महिलाएं सफल होने का अनुभव कैसे करती हैं? यह वर्णन।

प्रतिभागियों द्वारा बताए अनुसार सफल होने का अनुभव बहुत अच्छा है। पहली महिला ने कहा कि जब वह मां बनीं तो उन्हें लगा कि वह किसी परीक्षा में सफल हो गई हैं और यह उनके लिए बहुत अच्छा अहसास था। और पांचवीं महिला के लिए जब उनका चयन डी.आर.डी.ओ. में वैज्ञानिक के रूप में हुआ। उसे बहुत अच्छा लगा कि उसकी मेहनत का फल मिला और वह स्वतंत्र हो गई। स्वतंत्र होने के बाद उसने महसूस किया कि वह अपने निर्णय ले सकती है और उसके माता-पिता के प्रतिबंधों की जाँच की गई और उसने अधिक आत्मविश्वास महसूस किया। शादी और बच्चों के बाद दूसरी महिला ने फिर से पढ़ाई शुरू की। उसे नौकरी मिल गई और अब उसके लिए सब कुछ ठीक है। नौकरी पाना उनकी सबसे बड़ी सफलता है और परिवार और समाज के सभी लोगों ने उनकी कड़ी मेहनत और परिवार के प्रबंधन के लिए उनकी सराहना की। एक प्रतिभागी चौथी महिला, जब B.H.M.S में चुनी गई, तो उसे लगा कि वह स्वर्ग में है और उसके बाद कोई इच्छा नहीं बची है। उसने अपने पिता के सपने को पूरा किया जो एक डॉक्टर बनने का था। वह उस समय बहुत खुश थी। तीसरी महिला एक बेहतरीन काउंसलर बनना चाहती थी लेकिन वह बिजनेस कर रही है, वह उन लोगों की काउंसलिंग कर रही है, जिनकी वह सेवा करती है। उसने एक महिला की काउंसलिंग की जो उससे लगभग 20 साल बड़ी थी और उसके अनुसार यह उसकी सबसे बड़ी सफलता थी क्योंकि वह उस समय केवल तेरह साल की थी और उसने अपनी काउंसलिंग से एक व्यक्ति की जान बचाई।

इस अध्ययन में, प्रतिभागियों ने खुलासा किया कि अलग-अलग लोगों के लिए सफलता अलग-अलग होती है लेकिन सफलता की भावना कमाल की होती है। अध्ययन में सभी महिलाओं के लिए सफलता प्राप्त करने का अनुभव बहुत अच्छा है।

शोध प्रश्न-5 शिक्षित महिलाएं अपनी सफलता को कैसे देखती हैं?

इस अध्ययन में महिलाएं स्वीकार करती हैं कि वे सफल हैं। उन्होंने सफलता के विभिन्न पहलुओं और आयामों के बारे में बताया। उनमें से अधिकांश ने बताया कि उन्होंने सफलता के कई आयाम हासिल किए और उनमें से कुछ शेष हैं। चूंकि चार प्रतिभागी कामकाजी महिलाएं हैं और वे सभी अपने पेशेवर जीवन से संतुष्ट हैं। पेशा सफलता का एक पहलू है और उन्हें यह पहलू मिला है। उनमें से एक पहली महिला एक गृहिणी हैं, लेकिन उनके शब्दों में, "स्थायी निश्चित वेतन के बिना मैं अपने जीवन में एक संतुष्ट सफल महिला हूं।" इसका मतलब है कि वह बिना कमाऊ व्यक्ति के अपने जीवन से संतुष्ट और खुश है और स्वीकार करती है कि वह सफल है। तो, सफल होने के लिए नौकरी अनिवार्य नहीं है बल्कि यह एक विकल्प है। दिव्यंजलि को लगता है कि कोई भी कमाई का काम किए बिना सफल महसूस कर सकता है। लगभग सभी प्रतिभागियों को सफलता के सभी पहलुओं के बारे में पता चला लेकिन यह एक सामान्य बात है कि उन्होंने अपने हितों और शौक के लिए काम नहीं किया। लगभग सभी प्रतिभागी परिवारोन्मुखी हैं। वे सभी सोचते हैं कि वे सफल हैं लेकिन उनकी सफलता में कुछ पहलू गायब हैं। पांच में से दो महिलाएं अपने जीवन और सफलता से शत-प्रतिशत संतुष्ट हैं।

शोध प्रश्न-6 शिक्षित महिलाओं की सफलता को प्रभावित करने वाले कारक कौन से हैं?

इस अध्ययन में, महिला-प्रतिभागियों ने उन कारकों का खुलासा किया जिन्होंने उनकी सफलता को प्रभावित किया। सबसे महत्वपूर्ण कारकों में से एक सहायक परिवार है। परिवार का सहयोग हो तो सफलता मिलने में परेशानी कम होती है। सभी प्रतिभागियों के मामलों में, उनके परिवार सहायक थे। पांचवीं महिला ने साझा किया कि उनके माता-पिता ने उन्हें उन रिश्तेदारों और समाज से अलग कर दिया जो उनकी पढ़ाई में खलल डाल रहे थे और लड़कियों की शिक्षा के खिलाफ थे। सभी प्रतिभागी विवाहित हैं और उनका एक सहयोगी पति है और यह भी उनकी सफलता का एक महत्वपूर्ण कारक है। अन्य कारक महिलाओं की इच्छा-शक्ति है क्योंकि प्रतिभागियों में से एक ने बताया कि उन्हें कार्यस्थल पर या निजी जीवन में कभी भी किसी चीज के लिए नहीं छोड़ा गया था। तीसरी महिला ने चर्चा की कि उनकी सफलता प्राप्त करने में उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति एक महत्वपूर्ण कारक थी। दूसरी महिला ने शादी के बाद अपनी पढ़ाई फिर से शुरू की और नौकरी मिल गई, उसने अपनी मेहनत और इच्छा-शक्ति को बताया कि शादी और बच्चों के बाद उसे पेशेवर जीवन में सफल बनाया है। इनके घर का माहौल भी इनकी सफलता

को प्रभावित करता है। दूसरी महिला ने कहा कि उसके घर में झगड़े और झगड़े उसकी पढ़ाई में बाधा थे जबकि पांचवीं महिला ने बताया कि उसके साथ उसके माता-पिता भी पढ़ते थे, इससे उसके घर में अध्ययन का माहौल बना। बाद में अब एक वैज्ञानिक है और वह अपने घर में ऐसे सकारात्मक माहौल का श्रेय अपने माता-पिता को देती है जिसने उसे सफल बनाया। वित्तीय स्थितियों ने भी लगभग सभी प्रतिभागियों की सफलता को प्रभावित किया।

शोध प्रश्न-7 सफल होने में शिक्षा की क्या भूमिका है?

इस अध्ययन के प्रत्येक प्रतिभागी ने सफल होने में शिक्षा की भूमिका के बारे में सहमति व्यक्त की, उनमें से केवल एक ने विरोधाभास किया कि वह 100% सुनिश्चित नहीं है कि यह शिक्षा की भूमिका है। सभी प्रतिभागी विभिन्न ट्रेडों में न्यूनतम स्नातक हैं और उनमें से चार स्नातकोत्तर हैं। प्रतिभागियों ने सहमति व्यक्त की कि शिक्षा ने उनके दिमाग और विचारों को व्यापक बनाया है। यह व्यवहार, विचारों को शुद्ध करने, सही निर्णय लेने और परिस्थितियों से निपटने में मदद करता है। शिक्षा जीवन के हर पहलू को प्रभावित करती है। चाहे वे कामकाजी महिला हों या गैर-कामकाजी, शिक्षा ही सफलता का पहला स्तंभ है। अध्ययन की पांच में से चार महिलाओं ने स्वीकार किया कि उन्हें शिक्षा के बिना सफलता नहीं मिल सकती है। तीन प्रतिभागियों ने बताया कि उनकी पेशेवर उपलब्धि उनकी सबसे बड़ी सफलता है और शिक्षा के बिना इसे हासिल करना असंभव था। व्यवहार, व्यवहार और जीवन के सभी पहलुओं पर शिक्षा के प्रभाव को सभी प्रतिभागियों ने स्वीकार किया।

शोध प्रश्न-8 शिक्षित महिलाओं की 'आत्म-धारणा' का क्या विचार है?

इस अध्ययन में महिलाओं ने सफलता की आत्म-धारणा के अपने विचार साझा किए, जिसका अर्थ है कि वे खुद को और अपनी सफलता को कैसे देखते हैं। अध्ययन की दो महिलाएं अपने जीवन और सफलता से सौ प्रतिशत संतुष्ट थीं। उनमें से एक, पांचवीं महिला, जो एक वैज्ञानिक है, ने स्वीकार किया कि वह महत्वाकांक्षी है और आगे बढ़ना चाहती है, लेकिन साथ ही, उसने कहा कि उसके बच्चे उसकी जिंदगी हैं और उसके बच्चों से ज्यादा महत्वपूर्ण कुछ भी नहीं है और अब उसकी इच्छाएं दबा दी गई हैं। दूसरी महिला की दृष्टि में सफल वैवाहिक जीवन से अधिक स्वतंत्र होना अधिक आवश्यक है।

उन्होंने कहा कि जीवन में आर्थिक रूप से मजबूत होना सबसे महत्वपूर्ण चीज है। उनमें से एक होम्योपैथिक चिकित्सक ने बताया कि उसका कोई सपना नहीं बचा है, वह अपनी वर्तमान सफलता से खुश है। वह अपने जीवन के सभी पहलुओं में भी संतुष्ट थी। गृहिणी पहली महिला ने भी उन्हें जीवन के लगभग सभी आयामों में एक सफल महिला के रूप में माना, हालांकि वह आय पैदा करने वाली शख्सियत नहीं हैं। व्यवसायी तीसरी महिला वर्तमान में रहती हैं और उन्हें एक सफल महिला के रूप में देखती हैं। उसे जीवन से कोई इच्छा नहीं थी और उसने सोचा कि अगर उम्मीदें नहीं होंगी तो जीवन और देगा।

अध्ययन में चुनी गई सभी महिलाएं उन्हें अपने वर्तमान जीवन से सफल और लगभग संतुष्ट मानती हैं।

शोध प्रश्न-9 शिक्षित महिलाओं की सफलता को प्रभावित करने वाले सांस्कृतिक और सामाजिक कारक कौन से हैं?

सभी प्रतिभागी भारत के उत्तर प्रदेश राज्य से ताल्लुक रखते हैं। सभी प्रतिभागी हिंदू धर्म से ताल्लुक रखते हैं लेकिन प्रतिभागियों में से एक तीसरी महिला ने एक मुस्लिम लड़के से शादी की। सभी प्रतिभागी अलग-अलग शहरों के शहरी इलाकों से ताल्लुक रखते हैं। उनके परिवारों की संस्कृति और धर्म ने उनके विचारों और दृष्टिकोण को प्रभावित किया। पांचवीं महिला ने खुलासा किया कि एक प्रोफेसर ने उन्हें इसलिए अपमानित किया क्योंकि वह अनुसूचित जाति से हैं। वह किसी भी धर्म और जाति के इस प्रकार के भेदभाव को पसंद नहीं करती थी, खासकर हिंदू में। वह एक मेहनती और आत्मविश्वासी महिला हैं और उन्होंने उन्हें D.R.D.O में एक वैज्ञानिक के रूप में स्थापित किया। बेंगलुरू। उसने जीवन में कभी हार नहीं मानी थी कि समाज का माहौल अनुकूल था या नहीं। पहली महिला ने बताया कि सांस्कृतिक और सामाजिक वातावरण उनके अनुकूल था। दूसरी महिला ने साझा किया कि उन्हें सांस्कृतिक और सामाजिक समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ा, लेकिन उनका समाज महिलाओं के लिए फील्ड जॉब के पक्ष में नहीं था। चौथी महिला और तीसरी महिला के पास संस्कृति और समाज से जुड़े मुद्दे नहीं थे क्योंकि समाज का वातावरण उनके अनुकूल था।

शोध प्रश्न-10 सफल होने में परिवार की क्या भूमिका है?

सफल होने में परिवार की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है और सभी प्रतिभागियों ने इसे स्वीकार किया। अगर परिवार का सहयोग मिलता है तो उन्हें जीवन में कम बाधाओं का सामना करना पड़ता है। पांचवीं महिला ने अपने परिवार के बारे में अपना अनुभव साझा किया कि उसके माता-पिता बहुत सहायक हैं और जब वह देर रात और सुबह-सुबह पढ़ रही थी तो उसके साथ उसके पिता जाग गए थे। उसके माता-पिता को पढ़ने की आदत है और वह भी उन्हें देखकर पढ़ाई के लिए प्रेरित करती थी। उसके माता-पिता ने उसे उन रिश्तेदारों और समाज के लोगों से अलग कर दिया जो उनकी पढ़ाई में बाधा डालते थे और लड़कियों की शिक्षा के खिलाफ थे। पहली महिला ने बताया कि उनके माता-पिता द्वारा दिए गए मूल्यों ने जीवन में हर जगह मदद की और उन्होंने जीवन के सभी पहलुओं में उनका साथ दिया। शादी के बाद पति ने उसका साथ दिया और वह अपने जीवन से खुश है हालांकि वह कोई काम नहीं कर रही है। दूसरी महिला ने चर्चा की कि उसके ससुराल वाले और पति ने उसका बहुत समर्थन किया और उसने अपनी पढ़ाई फिर से शुरू की और शादी के बाद नौकरी मिल गई। उसके ससुर उसके लिए कई किताबें खरीदते थे और उसे हमेशा पढ़ाई और जीवन में कुछ हासिल करने के लिए प्रोत्साहित करते थे। उसके ससुर ने घर के कामों में भी उसकी मदद की ताकि उसे पढ़ाई के लिए समय मिले। प्रतिभागियों में से एक, तीसरी महिला महिलाओं के ब्यूटी पार्लर का व्यवसाय कर रही है। उनके माता-पिता ने पहले उनसे इस पेशे के बारे में पूछताछ की लेकिन बाद में उन्होंने उनके व्यवसाय में उनका साथ दिया और बताया कि कोई भी काम बड़ा या छोटा नहीं होता है। चौथी महिला जो एक डॉक्टर हैं, ने बताया कि उनका परिवार बहुत सपोर्टिव है और उन्होंने साझा किया कि वह एक एयर-होस्टेस बनना चाहती हैं, तो उनके माता-पिता ने उनसे सहमति जताई कि अगर वह वह काम कर सकती है तो इसके लिए जाएं। उन्होंने जीवन के हर फैसले में उनका साथ दिया।

इसका अर्थ है कि शिक्षित महिलाओं की सफलता में परिवार की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। जैसा कि प्रतिभागियों ने परिवार की भूमिका के बारे में अपने अनुभव साझा किए।

शोध प्रश्न-11 शिक्षित महिलाओं की सफलता को प्रभावित करने वाले पारिवारिक कारक कौन से हैं?

प्रतिभागियों ने यह भी बताया कि उनकी सफलता को प्रभावित करने वाले पारिवारिक कारकों में परिवार के सदस्यों की शिक्षा, वित्तीय स्थिति, आकार और परिवार का प्रकार, परिवार का निवास स्थान आदि शामिल हैं। पांचवीं महिला जो एक वैज्ञानिक हैं, ने अब साझा किया कि उनके माता-पिता अच्छी तरह से शिक्षित हैं और इसीलिए शिक्षा का मूल्य जानते थे। उसके माता-पिता हमेशा उसे पढ़ाई के लिए बढ़ावा देते थे और हर तरह से उसका साथ देते थे। उसके माता-पिता की पढ़ने की आदतें हैं जिसने उसे अध्ययन के लिए प्रेरित किया। उसने यह भी बताया कि उसका परिवार एकल था और यह उसके विकास के लिए सकारात्मक था क्योंकि उसके रिश्तेदार संकीर्ण सोच वाले और लड़कियों की शिक्षा के खिलाफ थे। उनका पारिवारिक आवास अधिक अनुकूल नहीं था क्योंकि पड़ोसी बहुत कम उम्र में लड़कियों की शादी कर रहे थे और उन्हें दसवीं कक्षा से अधिक शिक्षित भी नहीं करते थे। उसने बताया कि परिवार की आर्थिक स्थिति ने भी उसकी सफलता को इस तरह प्रभावित किया कि अगर हालात बेहतर होते तो उसकी स्कूली शिक्षा बेहतर होती।

दो महिलाओं ने बताया कि उनके परिवार के सदस्यों की शिक्षा ने उनकी सफलता को ज्यादा प्रभावित नहीं किया। उनमें से दो ने बताया कि उनके परिवार के सदस्यों की शिक्षा ने उनकी सफलता को प्रभावित किया क्योंकि वे शिक्षित थे और अपने बच्चों विशेषकर लड़कियों को शिक्षित करना चाहते थे। तीसरी महिला ने बताया कि उनका परिवार एकाकी था और इसका उनकी सफलता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा। उनमें से तीन ने बताया कि उनका परिवार एक संयुक्त परिवार है और इससे उनकी सफलता पर ज्यादा प्रभाव नहीं पड़ा। परिवार की आर्थिक स्थिति ने अधिकांश प्रतिभागियों की सफलता को प्रभावित किया और उन सभी ने इसे स्वीकार कर लिया। चौथी महिला ने स्वीकार किया कि अगर उसके परिवार के पास और पैसे हो सकते हैं तो वह M.B.B.S हो सकती है। बीएचएमएस डॉक्टर की जगह डॉक्टर दूसरी महिला ने कहा कि आर्थिक स्थिति ने उनकी सफलता को प्रभावित नहीं किया। तीसरी महिला इस बात से सहमत थीं कि वित्तीय समस्याओं के कारण उनके व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में देरी हुई है।

शिक्षित महिलाओं की सफलता का विचार अलग-अलग महिलाओं के लिए अलग-अलग होता है लेकिन उनमें कुछ समानताएं होती हैं। सफलता एक व्यापक शब्द है जैसा कि प्रतिभागियों द्वारा प्रकट किया गया है। सफलता के कई पहलू या आयाम होते हैं। प्रतिभागियों के अनुसार कुछ सामान्य आयाम पारिवारिक, पेशेवर, आर्थिक, व्यक्तिगत, स्वास्थ्य और सामाजिक आदि हैं, जिनमें आत्म-संतुष्टि और खुशी शामिल है। सफलता के बारे में प्रतिभागियों के अलग-अलग विचार हैं। किसी के लिए बच्चे और परिवार अधिक महत्वपूर्ण होते हैं और दूसरों के लिए शायद दूसरा पहलू। महिलाएं आम तौर पर परिवार उन्मुख होती हैं और अधिकांश प्रतिभागी अपने परिवार को प्राथमिकता के रूप में रखते हैं। सफलता कोई एक चीज या उपलब्धि नहीं है बल्कि यह विभिन्न पहलुओं का एक संयुक्त रूप है। अधिकांश महिला प्रतिभागियों ने सहमति व्यक्त की कि सफलता सभी आयामों का संतुलन है और यह एक सतत प्रक्रिया है। एक ही आयाम में सफल होने पर कोई भी सफल नहीं हो सकता है।

पंचम अध्याय

5.1 परिचय

सफलता एक ऐसा शब्द है जो उन लोगों के लिए उत्साह की भावना लाता है जो सफल होना चाहते हैं। इस दुनिया में हर कोई सफल होना चाहता है लेकिन सफलता के मायने हर व्यक्ति में अलग-अलग हो सकते हैं। मेरे विचार से जब हम जीवन के किसी भी पहलू में जो कुछ भी चाहते हैं उसे प्राप्त कर लेते हैं तो वह एक सफलता है। सफलता कोई अंतिम बिंदु नहीं है बल्कि यह एक यात्रा है। एक महिला होने के नाते, मैं शिक्षित महिलाओं की सफलता के तत्वों को जानना चाहती थी और इसी सोच के साथ मैंने इस शोध की यात्रा शुरू की। मैं जानना चाहता था कि एक महिला को क्या सफल बनाता है, विभिन्न महिलाओं के लिए सफलता का क्या विचार है, उनकी सफलता को प्रभावित करने वाले कारक क्या हैं और सफलता के बारे में उनकी आत्म-धारणा क्या है आदि।

सफलता के बारे में अपनी जिज्ञासाओं का उत्तर पाने के लिए मैंने शिक्षित महिलाओं की सफलता और आत्मबोध के विचार का अध्ययन करने का निर्णय लिया। मैंने शिक्षित महिलाओं का चयन किया है, इसका मतलब है कि वे कम से कम किसी भी क्षेत्र में स्नातक थीं। मैं समझता हूँ कि इस प्रकार के गहन अध्ययन के लिए अन्य उपागमों की अपेक्षा गुणात्मक उपागम अधिक उपयुक्त है।

शोध के इस अभियान को शुरू करने से पहले, मैंने क्षेत्र में किए गए शोधों को देखा है। इसके लिए मैंने कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं, लेखों आदि की समीक्षा की और विषय के समानांतर कोई अध्ययन नहीं पाया। मैंने शोधों को विभिन्न शीर्षकों में वर्गीकृत किया है जैसे कि महिला शिक्षा की स्थिति, शिक्षा और महिला सशक्तिकरण, महिला शिक्षा का सामाजिक परिप्रेक्ष्य, आत्म-धारणा, गुणात्मक शोध और घटना विज्ञान।

मैं जो अध्ययन करना चाहता था वह अपने आप में अनूठा था और इसमें बहुत समय और ध्यान देने की आवश्यकता थी। मैं शिक्षित महिलाओं की सफलता की परिघटना का अध्ययन करना चाहता था

और पाया कि इस उद्देश्य के लिए घटनात्मक पद्धति उपयुक्त थी। अध्ययन ने शिक्षित महिलाओं की सफलता और आत्म-धारणा के विचार का पता लगाया। सबसे पहले, मैंने अध्ययन को आगे बढ़ाने के लिए शोध प्रश्न बनाए। डेटा एक स्व-निर्मित साक्षात्कार गाइड द्वारा तैयार किया गया था जिसमें इसमें ओपन-एंडेड प्रश्न शामिल थे। ये प्रश्न अध्ययन के शोध प्रश्नों पर आधारित थे। एक विश्वविद्यालय में कार्यरत एक सहायक प्राध्यापक पर प्रायोगिक अध्ययन किया गया। फिर साक्षात्कार गाइड और साक्षात्कार की शैली में कुछ बदलाव किए गए। चूंकि उपकरण एक साक्षात्कार गाइड था, इसलिए जब भी आवश्यक हो, पूरक प्रश्न भी पूछे जाते थे। साक्षात्कार प्रतिभागियों की अनुमति से दर्ज किए गए थे। साक्षात्कार से पहले, मैंने घटना के बारे में अपने स्वयं के अनुभवों को अलग रखा क्योंकि यह इस्तेमाल की जाने वाली पद्धति की गंभीर आवश्यकता थी। इसे घटनात्मक शब्दावली में ब्रैकेटिंग कहा जाता है। मैंने कई शिक्षित महिलाओं से बात की है और अंत में उनमें से पांच को चुना है जो अपनी राय में सफल रहीं। फिर, प्रत्येक प्रतिभागी का साक्षात्कार करके डेटा उत्पन्न किया। साक्षात्कार व्यक्तिगत रूप से और एक प्राकृतिक सेटिंग में भी लिए गए थे। कभी-कभी जरूरत के हिसाब से टेलीफोन पर चर्चा भी की जाती थी।

इस गुणात्मक शोध में डेटा उत्पन्न होने के समय एक साथ विश्लेषण किया गया था। इसके अलावा, घटना का सार प्राप्त करने के लिए घटनात्मक पद्धति द्वारा इसका गहराई से विश्लेषण किया गया था। बार-बार सुनकर साक्षात्कारों को लिपिबद्ध किया गया। फिर महत्वपूर्ण बयानों को शब्दशः लिपियों से निकाला गया। समान महत्वपूर्ण कथनों को एक में वर्गीकृत किया गया और अंत में, सामान्य महत्वपूर्ण कथनों से 14 विषय सामने आए। मुझे प्रतिभागियों के बीच कई सामान्य चीजें मिलीं, हालांकि साक्षात्कार व्यक्तिगत रूप से और व्यक्तिगत रूप से लिए गए थे। प्रत्येक प्रतिभागी की कहानी अनूठी थी लेकिन विषय उनके सामान्य महत्वपूर्ण बयानों से उभरे। ये विषय उस अध्ययन का सार थे जो शिक्षित महिलाओं की सफलता की घटना की पड़ताल करता है।

5.2 चर्चा

महत्वपूर्ण कथनों से तैयार किए गए अर्थ निकाले गए। फिर सामान्य सूत्रबद्ध अर्थों को एक श्रेणी में वर्गीकृत किया गया और इसे एक विषय के रूप में बताया गया। इस तरह इस अभूतपूर्व अध्ययन से 14 विषय उभर कर सामने आए। निम्नलिखित अनुच्छेदों में, विषयों की चर्चा प्रस्तुत की जाएगी-

5.2.1 थीम-1 परिवार प्राथमिकता के रूप में

पांच प्रतिभागियों में से चार को प्राथमिकता के रूप में उनके परिवार हैं। यह एक स्कूल शिक्षक को छोड़कर सभी प्रतिभागियों के बीच एक सामान्य विचार है। शायद इसका कारण यह था कि भारत में लड़कियों को इस सोच के साथ पाला जाता है कि वे बलिदान देने और परिवार को आंतरिक समर्थन देने के लिए पैदा हुई हैं। अधिकांश लड़कियों ने अपनी माताओं को अपने परिवार के लिए चौबीसों घंटे काम करते देखा। यह काम लोगों की नजर में गैर-आय पैदा करने वाला काम है। महिलाएं पहले अपने परिवार के बारे में सोचती हैं और उसके बाद कुछ और आता है। यहां तक कि उनका अपना मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य भी प्राथमिकता में नहीं है। शायद यह संस्कृति मन में एक मूक सिद्धांत है कि सब कुछ उनके परिवार के बाद आता है। यह एक गृहिणी के साथ-साथ नौकरी करने वाली महिलाओं के लिए भी समान रूप से सच है। एक वैज्ञानिक स्मिता ने बताया कि वह अपने बच्चों के लिए सब कुछ छोड़ सकती हैं। भारत में हम एक पितृसत्तात्मक समाज में रह रहे हैं और महिलाओं की भूमिका को गौण माना जाता है, यह भी एक संभावित कारण है कि वे अपने परिवार को प्राथमिकता देते हैं।

एक महिला ने बताया कि उसकी प्राथमिकता उसकी खुशी है क्योंकि एक खुश इंसान ही दूसरों को खुश कर सकता है। उसने कहा कि वह दुनिया में किसी के लिए अपना सब कुछ बलिदान नहीं कर सकती। उसने बताया कि वह इसलिए सफल हुई क्योंकि उसे सच्चा प्यार और नौकरी मिली। उन्होंने यह भी कहा कि एक सफल विवाह के बजाय एक महिला के लिए आर्थिक सफलता अधिक महत्वपूर्ण है। वह पहले से शादीशुदा है और उसकी दो बेटियां हैं। उसने दूसरे आदमी को सच्चा प्यार कहा, जिसके साथ उसका पिछले पांच साल से रिश्ता है और उसकी शादी को लगभग 15 साल हो चुके हैं। हो सकता

है कि उसका ध्यान उस व्यक्ति पर है जिसे उसने सच्चा प्यार कहा और इसने उसे और अधिक आत्मकेंद्रित बना दिया और परिवार उसकी प्राथमिकता नहीं है।

5.2.2 थीम-2 शिक्षित परिवार सहारा के रूप में

सभी प्रतिभागियों ने खुद को सफल महिला माना। अपनी सफलता को प्रभावित करने वाले कारकों पर चर्चा करते हुए उन सभी ने स्वीकार किया कि उनके परिवारों ने हमेशा उनका साथ दिया। प्रतिभागियों के परिवार के अधिकांश सदस्य शिक्षित थे और यह एक अनुकूल स्थिति थी क्योंकि एक शिक्षित व्यक्ति शिक्षा के मूल्य को समझ सकता था। आमतौर पर लोग अपने परिवार के साथ रहते हैं और अगर परिवार का साथ मिले तो व्यक्ति अपने करियर आदि में कुछ भी कर सकता है। प्रतिभागियों में से एक ने बताया कि उसके माता-पिता के घर में संकट और झगड़ों के कारण पढ़ाई का माहौल नहीं था लेकिन उसके ससुराल में सभी ने पढ़ाई के लिए उसका साथ दिया। उसने शादी के बाद फिर से पढ़ाई शुरू की और आखिरकार उसे नौकरी मिल गई। इसका मतलब है कि सफलता पाने के लिए परिवार का समर्थन एक महत्वपूर्ण कारक है। जैसा कि मैंने देखा कि जब पिया को अपने ससुराल वालों का समर्थन मिला तो वह सफल हुई।

अध्ययन का यह विषय रोसेनफेल्ड (2009) के साहित्य का समर्थन करता है, जिन्होंने वित्तीय सेवा उद्योग में वरिष्ठ नेतृत्व के पदों पर महिलाओं की चढ़ाई का अध्ययन किया और उनकी सफलता में 'पारिवारिक पालन-पोषण एक सकारात्मक स्वर सेट' विषय पाया। माता-पिता से प्राप्त आदतें, समर्पण और कार्य नैतिकता सफलता प्राप्त करने के लिए एक प्रणोदक के रूप में खेलते हैं।

5.2.3 थीम-3 शिक्षा की सफलता में उल्लेखनीय भूमिका है

शिक्षा सभी के लिए महत्वपूर्ण है और जब हम सफलता की बात करते हैं तो इसमें एक प्रमुख भूमिका होती है। सभी प्रतिभागियों ने सहमति व्यक्त की कि शिक्षा के बिना वे उस स्थिति को प्राप्त करने में सक्षम नहीं हैं जो वे वर्तमान में हैं। वे सभी इस बात से सहमत थे कि शिक्षा उनके दिमाग, विचारों और विचारों आदि को विस्तृत करती है। हम सभी जानते हैं कि शिक्षा जीवन का एक बहुत ही महत्वपूर्ण पहलू

है। शिक्षा एक महिला/पुरुष को मानव में बदल सकती है। प्रतिभागियों में से एक ने बताया कि हो सकता है कि वह शिक्षा प्राप्त किए बिना वर्तमान स्थिति प्राप्त कर सके लेकिन इसके विपरीत, वह यह भी मानती थी कि शिक्षा ने उसके विचारों और विचारों को व्यापक बनाया है। जब मैं प्रतिभागियों से सफलता के बारे में चर्चा कर रहा था, तो वे बहुत स्पष्ट थे कि उनकी सफलता में शिक्षा की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है।

शिक्षा लोगों को उनके अधिकारों, अवसरों आदि से अवगत करा सकती है और उनकी क्षमताओं की पहचान भी कर सकती है। एक शिक्षित व्यक्ति व्यापक और तार्किक रूप से सोच सकता है और अपना क्षेत्र चुन सकता है और जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करने के तरीके की पहचान कर सकता है। प्रतिभागियों को शिक्षा के कारण सफलता मिली; इसे सामान्यीकृत नहीं किया जा सकता है लेकिन उन सभी ने स्वीकार किया कि उनकी सफलता में इसकी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है।

5.2.4 थीम-4 करियर की योजना बनाने में अस्पष्टता

हम जहां रह रहे हैं समाज के लोगों के बीच यह एक आम समस्या है। ऐसा इसलिए हो सकता है क्योंकि अधिकांश माता-पिता अपनी इच्छाओं को अपने बच्चों और मार्गदर्शन की कमी पर थोपते हैं। पांच प्रतिभागियों में से चार ने अपने करियर की योजना नहीं बनाई थी। केवल एक प्रतिभागी ने उस क्षेत्र में अपना करियर बनाया, जिसमें वह जाना चाहती थी। बाकी चारों उस फील्ड में हैं, जिसके बारे में उन्होंने कभी सोचा भी नहीं था। इसलिए, यह नहीं कहा जा सकता है कि एक व्यक्ति को सफलता नहीं मिल सकती है यदि उसने अपने करियर की योजना नहीं बनाई है। कई बार हमें उस क्षेत्र में सफलता मिल जाती है जिसके बारे में हमने कभी सोचा भी नहीं था। लेकिन अगर हम कम उम्र में ही अपने करियर की योजना बना लें तो यह सफलता पाने में मदद कर सकता है। सभी प्रतिभागी अपनी राय में सफल हैं। इसलिए, यह सामान्यीकृत नहीं किया जा सकता है कि सफल होने के लिए, कैरियर की योजना बनाना आवश्यक है।

यह विषय रोसेनफेल्ड (2009) द्वारा किए गए घटनात्मक अध्ययन के साहित्य का समर्थन करता है जिसमें एक विषय उभरा, 'कैरियर योजना की कमी'। इससे पता चलता है कि महिलाएं अपने करियर

की योजना बनाने में कम समय लगाती हैं। अधिकांश महिलाएं उन क्षेत्रों में काम कर रही हैं, जिनमें उन्होंने प्रवेश करने का फैसला पहले नहीं किया था और वे सफल हैं।

5.2.5 थीम-5 सीमित इच्छाएं ही खुशी की कुंजी हैं

अधिकांश प्रतिभागियों ने सहमति व्यक्त की कि यदि हमारी इच्छाएँ कम हैं, तो हम बहुत अधिक इच्छाएँ रखने के बजाय अधिक खुश होंगे। कई भारतीय आध्यात्मिक महाकाव्यों और साहित्य में लिखा है कि लोगों को कई इच्छाएं नहीं रखनी चाहिए। जैसा कि भगवत गीता में उल्लेख किया गया है कि हमें परिणाम की परवाह किए बिना अपना काम करने पर ध्यान देना चाहिए। मिताली ने बताया कि वह ज्यादा फ्यूचरिस्टिक नहीं थीं और उन्हें जिंदगी से कोई उम्मीद नहीं है। उसने यह भी बताया कि अगर उसे उम्मीदें नहीं हैं तो जीवन असीमित देगा। पिया ने बताया कि वह बहुत डाउन टू अर्थ लेडी हैं और उनकी कई इच्छाएं नहीं हैं। उसने जीवन में अपनी जरूरतों को पूरा किया है और उसे और कुछ नहीं चाहिए। दिव्यांजलि ने यह भी बताया कि उसके पास जो कुछ है उससे वह खुश है और भगवान की कृपा से उसके पास जीवन में सब कुछ है। उसने बताया कि इच्छाओं का कोई अंत नहीं है लेकिन हमारे पास जो कुछ भी है उसमें हमें खुश रहना चाहिए। स्मिता ने यह भी बताया कि उनकी जिंदगी में सब कुछ है और यह अच्छा चल रहा है। पायल ने बताया कि उनका कोई सपना नहीं बचा है क्योंकि उनके सारे सपने पूरे हो गए हैं। उन्होंने कहा कि अगर हम सीमित दायरे में संतुष्ट हैं और लोगों को खुश करते हैं, तो यह एक आदर्श जीवन था।

अध्ययन के सभी प्रतिभागी अपनी वर्तमान स्थिति से संतुष्ट थे। ऐसा इसलिए नहीं था क्योंकि उनके पास सब कुछ है बल्कि इसलिए है क्योंकि वे सभी खुशी से जीने की कला जानते हैं। वे सभी अपने जीवन में जो कुछ भी है उससे खुश हैं। शायद यह हमारी संस्कृति और हमारे मूल्यों का प्रभाव है।

5.2.6 थीम-6 आत्मसंतुष्टि ही जीवन का लक्ष्य

प्रतिभागियों ने बताया कि जीवन का लक्ष्य भौतिक चीजों को प्राप्त करना नहीं बल्कि आत्मसंतुष्टि प्राप्त करना है। अधिकांश प्रतिभागियों ने सहमति व्यक्त की कि सफलता का अर्थ संतुष्टि है।

जैसा कि दिव्यांजलि ने बताया कि हमारे पास पैसा कम है तो ठीक है लेकिन अगर हमारे पास आत्मसंतुष्टि है तो हम सफल हैं। उनके विचार में सफलता का पैमाना आत्मसंतुष्टि है। पिया ने यह भी खुलासा किया कि वह अपने जीवन से संतुष्टि चाहती थी और उसने जो कुछ भी किया वह सही है। स्मिता ने चर्चा की कि अगर उन्हें मानसिक संतुष्टि है और जीवन के सभी पहलुओं से खुश हैं तो यह उनके लिए एक आदर्श जीवन है।

अधिकांश प्रतिभागियों ने संतुष्टि को अपने जीवन का लक्ष्य बताया। प्रतिभागियों में से किसी के पास जीवन का केवल भौतिकवादी लक्ष्य नहीं है। इसका एक कारण भारत की संस्कृति भी हो सकती है, जहां हमने इस सोच के साथ पोषण किया कि हमारे जीवन का अंतिम लक्ष्य आध्यात्मिक है।

5.2.7 थीम-7 महिलाएं अपने बच्चों/पति (परिवार) के लिए सब कुछ कुर्बान कर सकती हैं

चार प्रतिभागियों ने दृढ़ता से सहमति व्यक्त की कि वे अपने पति और बच्चों के लिए परिवार के लिए सब कुछ बलिदान कर सकते हैं। केवल एक महिला पिया ने बताया कि वह किसी के लिए अपना सब कुछ कुर्बान नहीं कर सकती और अगर इस तरह की स्थिति आती है तो वह उसी क्षण तय करेगी कि क्या किया जा सकता है। बाकी प्रतिभागियों ने खुलासा किया कि उनके पति/बच्चों से ज्यादा महत्वपूर्ण कुछ नहीं है, वे सभी अपने परिवार के लिए कुछ भी बलिदान कर सकते हैं। दिव्यांजलि ने बताया कि वह अपने बेटे और पति के लिए सब कुछ कुर्बान कर सकती हैं। उसने गर्भवती होने के बाद अपनी नौकरी छोड़ दी और अभी तक कोई नौकरी नहीं की। मिताली और पायल ने बताया कि वे अपनी बॉन्डिंग और प्यार की वजह से अपने पति के लिए सब कुछ कुर्बान कर सकते हैं।

अगर हम भारतीय संदर्भ में बात करें, तो यहां ज्यादातर लड़कियों को इस विचार के साथ लाया गया है कि उन्हें अपने परिवार के लिए खुद की खुशियों का त्याग करना चाहिए। समाज की यह मानसिकता है कि नारी की खुशी हमेशा गौण होती है। यह भी सच है कि जब कोई महिला किसी से प्यार करती है, तो वह उस व्यक्ति के लिए अपनी सारी खुशियां कुर्बान कर देती है। ज्यादातर महिलाएं अपने

परिवार (पति और बच्चों) से प्यार करती हैं और उनका परिवार उनकी प्राथमिकता पर होता है। हम यह सामान्य नहीं कह सकते कि एक महिला अपने परिवार के लिए सब कुछ त्याग देती है लेकिन मैंने इस अध्ययन में पाया कि पांच महिलाओं में से चार इस बात पर सहमत थीं कि वे अपने परिवार के लिए सब कुछ बलिदान कर सकती हैं।

5.2.8 थीम-8 सफलता बहुआयामी है

सभी प्रतिभागियों ने कहा कि सफलता उनके लिए बहुआयामी है। उनमें से एक ने बताया कि उन्हें लगता था कि सफलता किसी के लिए एक आयामी नहीं है। आम तौर पर लोग सोचते हैं कि अगर हमारे पास पैसा, ताकत, प्रतिष्ठा है तो हम सफल हैं। यहां, प्रतिभागियों ने खुलासा किया कि सफलता के कई आयाम हैं और ये आयाम एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में भिन्न होते हैं। परिवार, पेशे, आर्थिक और व्यक्तिगत आदि के रूप में सभी के बीच कुछ आयाम समान हैं।

दिव्यांजलि ने बताया कि नाम, प्रसिद्धि, पैसा, परिवार, सुख, आत्म-संतुष्टि आदि कई चीजें थीं जो हमें सफल बनाती हैं। पिया ने सफलता के आयामों की तुलना गणित के आयामों से की। मिताली ने चर्चा की कि वह अपने व्यवसाय के साथ-साथ लोगों की काउंसलिंग कर रही हैं और कई अन्य चीजें उनकी सफलता का कारण बनती हैं। जैसे उनका निजी जीवन, परिवार, व्यवसाय, अपने ग्राहकों की संतुष्टि आदि। पायल के लिए पैसा, परिवार, पेशा और सामाजिक-भावनात्मक पहलू सफलता के आयाम हैं। स्मिता ने बताया कि उनकी पर्सनल, प्रोफेशनल और सोशल लाइफ ही सफलता के आयाम हैं।

सफलता कोई चीज या बिंदु नहीं है बल्कि जीवन के कई पहलू सफलता का निर्माण करते हैं। एक व्यक्ति जब कुछ भी करने से संतुष्ट महसूस करता है जो उसके लिए एक सफलता है। सफलता एक बहुआयामी अवधारणा है और व्यक्ति के अनुसार आयाम भिन्न हो सकते हैं।

5.2.9 थीम-9 पारिवारिक लगाव कभी-कभी करियर में बाधा बन जाता है

प्रतिभागियों में से कुछ ने एक स्वर में बात की कि कभी-कभी उनका पारिवारिक लगाव करियर के लिए एक बाधा था। जैसा कि हम जानते हैं कि हमारे समाज में यह माना जाता है कि घर और परिवार की जिम्मेदारियों को पूरा करना महिलाओं का कर्तव्य है। अगर कोई महिला पेशेवर रूप से काम कर रही है तो उसे घर और ऑफिस की दोहरी जिम्मेदारी संभालनी पड़ती है।

दिव्यांजलि ने बताया कि उन्होंने पारिवारिक लगाव के कारण शिमला विश्वविद्यालय से शोध प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया और अभी तक किसी भी नौकरी में शामिल नहीं हुआ। उनके शब्दों में, 'इमोशनल फ़ूल बनी माई।' (मैं इमोशनल फ़ूल बन गई) उसने बताया कि उसने अपने बारे में नहीं बल्कि अपने परिवार के बारे में सोचा और यह उसके करियर के लिए एक बाधा थी। मिताली ने यह भी साझा किया कि उन्हें अपने व्यवसाय के लिए ज्यादा समय नहीं मिला क्योंकि उन्हें अपने बच्चों और ससुराल वालों की देखभाल करनी थी। उसने इसे अपने करियर के लिए एक बाधा के रूप में सोचा। स्मिता ने खुलासा किया कि मैटरनिटी लीव के कारण उनकी पदोन्नति में देरी हुई और उन्होंने बताया कि उन्होंने इसकी योजना नहीं बनाई थी अन्यथा यह उनके करियर के लिए बाधा नहीं होगी।

अधिकांश प्रतिभागी इस बात से सहमत थे कि पारिवारिक लगाव उनके करियर में एक बाधा थी। लेकिन उन्होंने सोचा कि अगर वे अपने करियर को प्राथमिकता देंगे और आत्मकेंद्रित हो जाएंगे तो यह पाप होगा। अधिकांश महिलाओं ने करियर के बजाय अपने परिवार को एक प्रमुख चिंता का विषय बना दिया और कभी-कभी इसका खामियाजा भुगतना पड़ा।

5.2.10 थीम-10 विवाहित महिलाओं के सफल करियर के लिए पति का साथ देना जरूरी

सभी प्रतिभागियों ने शादी कर ली और स्वीकार किया कि शादी के बाद वे दोहरी भूमिका निभा रहे हैं। सफलता पर चर्चा करते हुए वे इस बात पर सहमत हुए कि सफल करियर के लिए पति का समर्थन आवश्यक है। पति के समर्थन के बिना, अपने करियर के साथ-साथ जीवन में भी सफल होना कठिन था। संयोग से सभी प्रतिभागियों के पास एक सहायक पति है। दिव्यांजलि ने बताया कि उनके पति ने हर जगह

उनका साथ दिया। पिया ने स्वीकार किया कि उनके पति ने जीवन के हर पहलू में उनका साथ दिया और उनके ससुर भी जीवन में उनके लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। उन्होंने शादी के बाद फिर से उनके सहयोग से पढ़ाई शुरू की और अपने करियर में सफल रही। पायल ने बताया कि उनके पति ने उनके सभी सपनों को साकार किया और हमेशा उनका साथ दिया। मिताली भी इस बात से सहमत थीं कि उनके पति ने जीवन के हर क्षेत्र में सहयोग किया इसलिए वह अपने व्यवसाय में सफल हुई। स्मिता ने स्वीकार किया कि सौभाग्य से, उसे एक सहायक पति मिला, हालांकि उसके ससुराल वालों का परिवार संकीर्ण सोच वाला था। वह डीआरडीओ में वरिष्ठ वैज्ञानिक हैं। बेंगलुरु और एक सफल करियर और पारिवारिक जीवन है।

कुल मिलाकर जब हम इस पितृसत्तात्मक समाज में विश्लेषण करते हैं, तो यह पाया जाता है कि एक महिला को अपने परिवार के किसी भी पुरुष के समर्थन की आवश्यकता होती है। हम जिस समाज में रह रहे हैं वह पुरुष प्रधान है। अधिकांश परिवारों में महिला सदस्यों को निर्णय लेने की अनुमति नहीं है। परिवार में पुरुष सदस्य सर्वसम्मत होते हैं, शायद यही कारण है कि एक महिला को उनके समर्थन की आवश्यकता होती है। विवाहित महिलाओं के मामले में, उनके पति उनके करियर को बनाने या शादी से पहले नौकरी पर रखने के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अगर महिलाओं को अपने पति से समर्थन और प्रेरणा मिलती है, तो वे अपने करियर और पारिवारिक जीवन में भी बेहतर प्रदर्शन करेंगी।

5.2.11 थीम-11 खुश रहने वाला इंसान ही दूसरों को खुश करता है

प्रतिभागियों के साथ चर्चा में, मैंने पाया कि खुशी सफलता का एक महत्वपूर्ण आयाम है। लगभग सभी प्रतिभागी इस बात से सहमत थे कि जीवन के लिए खुशी जरूरी है। पिया ने बताया कि उनकी प्राथमिकता उनकी खुशी है क्योंकि एक खुश इंसान दूसरों को खुश कर सकता है। मिताली ने यह भी बताया कि अगर हम खुश हैं तो हम खुशियां फैला सकते हैं। दिव्यांजलि ने बताया कि अगर हम अपने परिवार से खुश हैं तो हम जीवन के उस आयाम को चुनेंगे। पायल ने कहा कि अगर हम सीमित इच्छाओं से खुश हैं और दूसरों को खुश कर सकते हैं तो यह एक आदर्श जीवन है। स्मिता ने अपने दृष्टिकोण में सफलता को बताया खुशी है, अगर कोई व्यक्ति खुश है तो वह सफल है।

लगभग सभी प्रतिभागी खुशी को जीवन के एक पहलू के रूप में स्वीकार करते हैं और उनमें से अधिकांश ने बताया कि यदि कोई व्यक्ति खुश है तो वह दूसरों को खुश कर सकता है। अगर हम खुशी के बारे में सोचते हैं, तो हम इसे उन चीजों या काम में पा सकते हैं जिनमें ज्यादा पैसे की जरूरत नहीं होती है। अगर हम खुशी की तलाश करते हैं, तो हम इसे अपने आस-पास पाएंगे।

5.2.12 थीम-12 सफलता केवल भौतिकवादी नहीं है

प्रतिभागियों के साथ चर्चा में, मैंने पाया कि वे सभी सहमत थे कि सफलता केवल भौतिकवादी नहीं है। जीवन के कई आयाम व्यक्ति की सफलता का निर्माण करते हैं। जीवन जीने के लिए भौतिकवादी चीजें जरूरी हैं लेकिन यह जीवन का अंतिम लक्ष्य नहीं है। प्रतिभागियों ने खुलासा किया कि सफलता जीवन के आयामों का कुल योग है और आयाम एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में भिन्न हो सकते हैं। दिव्यांजलि ने बताया कि सफलता का मतलब है नाम, शोहरत, पैसा के साथ-साथ आपकी खुशी और परिवार। पिया ने बताया कि सफलता का व्यापक अर्थ होता है और इसमें पेशेवर, पारिवारिक, सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन शामिल होता है। उनके विचार में सफलता भौतिकवादी चीजों से नहीं आती है। पायल ने बताया कि वह अपने तरीके की वजह से सफल हुई हैं। अगर वह कोई काम करके खुश होती है, तो वह उसके लिए एक सफलता थी। स्मिता के दृष्टिकोण से खुशी एक सफलता है, उन्होंने बताया कि अगर कोई व्यक्ति खुश है, तो वह सफल है। यानी सिर्फ पैसा या भौतिकवादी चीजें ही सुख नहीं दे सकतीं।

लगभग सभी प्रतिभागी सफलता को संतुष्टि, खुशी आदि के रूप में वर्णित करते हैं न कि केवल भौतिकवादी चीजों के रूप में। इससे पता चलता है कि सफलता कोई भौतिकवादी चीज नहीं है जैसा कि आम लोग इसके बारे में सोचते हैं।

5.2.13 थीम-13 आत्म-अन्वेषण की कमी है

अधिकांश प्रतिभागियों ने सहमति व्यक्त की कि उन्हें अपने लिए समय नहीं मिल रहा है। हालांकि वे घर, परिवार और पेशेवर सभी काम ईमानदारी से कर रहे हैं। वे सभी अपने परिवार और पेशे

के संबंध में सभी जिम्मेदारियां निभाते हैं लेकिन वे अपने लिए समय का प्रबंधन नहीं कर पाते हैं। दिव्यांजलि एक गृहिणी हैं लेकिन उन्होंने बताया कि अपने बेटे और परिवार की देखभाल करने में उन्हें अपने शौक और कामों के लिए समय नहीं मिल पाता है। पिया ने बताया कि मैंने सफलता के लगभग सभी आयाम हासिल कर लिए हैं लेकिन एक ही आयाम बचा है खुद का और खुद का सुख। वह अपने लिए कुछ करना चाहती है। स्मिता ने बताया कि वह जीवन में बहुत कुछ करना चाहती हैं लेकिन उनके शौक, रुचियां जिम्मेदारियों के कारण दब गई हैं। उन्होंने बताया कि अगर वो अपने लिए टाइम मैनेज करना चाहती हैं तो भी उन्हें टाइम नहीं मिल पाता. मिताली लोगों को सलाह देना चाहती है लेकिन कई बार उसे व्यस्त कार्यक्रम के कारण उसके लिए समय नहीं मिलता है, हालांकि उसे इसमें खुशी मिलती है और परामर्श उसका जुनून है।

उपरोक्त सभी बातों से पता चलता है कि महिलाएं अपने परिवार और पेशे के लिए सब कुछ करती हैं लेकिन उन्हें आत्म-अन्वेषण के लिए समय नहीं मिल रहा है। शायद इसका कारण यह है कि वे खुद को तरजीह नहीं दे रहे हैं। ये सभी अपने परिवार और प्रोफेशन के लिए समय तो मैनेज कर रहे हैं लेकिन अपने लिए समय नहीं निकाल पा रहे हैं। भारतीय संस्कृति में महिलाएं कभी भी अपनी खुशी को प्राथमिकता नहीं देती हैं और उनकी पहली चिंता हमेशा परिवार होती है चाहे वे गृहिणी हों या पेशेवर, यहां तक कि वे अपने स्वास्थ्य पर भी कभी ध्यान नहीं देती हैं। शायद लड़कियों का सांस्कृतिक प्रभाव और पालन-पोषण महिलाओं में आत्म-अन्वेषण की कमी का कारण है।

5.2.14 थीम-14 महिलाओं को मल्टीटास्किंग पर्सन माना जाता है

लगभग सभी प्रतिभागी अपने परिवारों में दोहरी भूमिका निभाते हैं। महिलाएं घर में हर तरह की ड्यूटी कर रही हैं और अगर नौकरी करती हैं तो उन्हें अपने ऑफिस की जिम्मेदारी भी निभानी पड़ती है। दिव्यांजलि ने बताया कि महिलाओं को एक दिन में बराबर का समय मिलता है लेकिन लोगों को उनसे काफी उम्मीदें हैं. पिया ने साझा किया कि उसने अपना परिवार स्थापित किया, नौकरी कर रही थी और अपने और समाज के लिए कुछ करना चाहती थी। इसका मतलब है कि उसके पास कई जिम्मेदारियां हैं। मिताली ने यह भी बताया कि मां, पत्नी, बहू, बिजनेसवुमन और काउंसलर की भूमिका निभाने के साथ-

साथ एक महिला के लिए पहचान बनाना आसान नहीं है. पायल ने यह भी बताया कि शादी के बाद हमारा एक परिवार, बच्चा और हमारा पेशा आदि होता है। इसका मतलब है कि बहुत सारे कर्तव्य हैं। स्मिता ने बच्चों की जिम्मेदारियों और नौकरी आदि पर भी चर्चा की।

सभी प्रतिभागियों ने अपने द्वारा निभायी जा रही जिम्मेदारियों के बारे में बात की। उन्होंने यह भी बताया कि वे इनमें से किसी को भी नहीं छोड़ सकते। एक कामकाजी महिला के लिए समय का प्रबंधन करना बहुत मुश्किल होता है। लोगों की यह अपेक्षा है कि किसी भी तरह कामकाजी महिलाएं अपने निजी और पेशेवर जीवन के बीच तालमेल बिठाएं। वे चाहते हैं कि महिलाएं मल्टी-टास्किंग हों क्योंकि हमारी संस्कृति में घर के सभी काम, बच्चों की जिम्मेदारी महिलाओं की मानी जाती है। यदि महिलाएं कार्यरत हैं तो यह उनका अपना दायित्व है। यह पितृसत्तात्मक समाज का सांस्कृतिक प्रभाव हो सकता है।

यह विषय 'कार्य जीवन संतुलन के लिए संघर्ष' विषय के समानांतर है, जिसकी उत्पत्ति रोसेनफेल्ड (2009) के अध्ययन में हुई थी, जिसमें पाया गया कि वरिष्ठ नेतृत्व पदों पर महिलाओं ने कार्यालय और पारिवारिक जीवन की जिम्मेदारियों को संतुलित करने के लिए संघर्ष किया था। यहां तक कि जिनके बच्चे नहीं थे, उन्हें भी करियर और पारिवारिक जीवन संतुलन की समान समस्याओं का सामना करना पड़ा।

5.3 अध्ययन के निहितार्थ

- लोग सफलता की घटना के बारे में जानेंगे।
- लोग सफलता के विभिन्न आयामों से अवगत होंगे।
- अध्ययन से पता चलता है कि शिक्षित महिलाओं की सफलता को प्रभावित करने वाले कारक।
- अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि केवल भौतिकवादी उपलब्धियां ही सफलता नहीं हैं।
- अध्ययन सफलता में शिक्षा के महत्व को प्रकट करता है।
- अध्ययन सफलता प्राप्त करने में परिवार के महत्व पर प्रकाश डालता है।

- अध्ययन से सफलता के बारे में शिक्षित महिलाओं की आत्म-धारणा का पता चलता है।
- लोग सफलता के घटकों के बारे में जानेंगे।
- शिक्षित महिलाओं को सफलता प्राप्त करने में आने वाली समस्याओं के बारे में लोग जानेंगे।
- अध्ययन से जीवन में खुशी के महत्व का पता चलता है।

5.4 आगे के शोध के लिए सुझाव

- कैरियर के अन्य क्षेत्रों को आगे के शोध में शामिल किया जा सकता है
- विभिन्न क्षेत्रों के सर्वोच्च व्यक्तित्वों को एक नमूने के रूप में लिया जा सकता है
- एक अन्य सांस्कृतिक वातावरण के प्रतिभागियों को एक नमूने के रूप में लिया जा सकता है
- अध्ययन आम तौर पर पुरुषों या लोगों पर किया जा सकता है
- पुरुषों और महिलाओं की सफलता और आत्मबोध के विचार का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है
- अध्ययन एक बड़े नमूने के आकार के साथ किया जा सकता है
- आगे के शोधों में अन्य जनसांख्यिकीय क्षेत्रों से नमूने लिए जा सकते हैं

5.5 निष्कर्ष

अध्ययन ने शिक्षित महिलाओं की सफलता और आत्म-धारणा के विचार का खुलासा किया। सभी प्रतिभागी खुद को एक सफल महिला के रूप में देखते हैं। वे सभी इस बात से सहमत थे कि सफलता एक बहुआयामी अवधारणा है और हर व्यक्ति के लिए आयाम अलग-अलग होते हैं। कुछ सामान्य आयाम परिवार, आर्थिक, पेशेवर, स्वास्थ्य, सामाजिक आदि हैं। अधिकांश प्रतिभागी अपने परिवार को प्राथमिकता के रूप में रखते हैं और बाकी सब कुछ उसके बाद आता है। उनमें से अधिकांश अपने परिवार (पति / बच्चों) के लिए सब कुछ त्याग सकते हैं, इसका मतलब है कि उनका जीवन उनके परिवार के इर्द-गिर्द घूमता है। उनमें से केवल एक ही शिक्षक है जो किसी के लिए अपना सब कुछ

बलिदान नहीं कर सकता। उन सभी ने सोचा कि सफलता केवल भौतिकवादी नहीं है और सफलता को संतुष्टि, मन की शांति, खुशी आदि के रूप में वर्णित किया है। वे सभी अपने जीवन से संतुष्टि और खुशी चाहते हैं न कि केवल भौतिकवादी चीजें प्राप्त करना। अध्ययन ने आम लोगों के विचारों को खारिज कर दिया कि नाम, प्रसिद्धि, समृद्धि और पद ही एक सफलता है। यदि परिवार सहायक है तो एक महिला के लिए जीवन और करियर में सफलता प्राप्त करना आसान है क्योंकि सभी प्रतिभागियों का एक सहायक परिवार होता है। सभी प्रतिभागी विवाहित हैं और स्वीकार करते हैं कि एक सफल करियर में पति का समर्थन एक महत्वपूर्ण कारक है। अधिकांश प्रतिभागी इस बात से सहमत थे कि पारिवारिक लगाव कभी-कभी करियर में एक बाधा होता है। सभी प्रतिभागी खुद को तलाशने में असमर्थ हैं क्योंकि वे अपने शौक और रुचियों के लिए समय का प्रबंधन नहीं कर सके, यहां तक कि वे परिवार और पेशे की सभी जिम्मेदारियों को निभा रहे हैं। वे सभी इस बात से सहमत हैं कि महिलाओं को मल्टीटास्किंग पर्सन माना जाता है।

अध्ययन का सार यह है कि सफलता एक गैर-भौतिकवादी अवधारणा है, यह संतुष्टि, खुशी और मन की शांति आदि है। हमारे समाज में अधिकांश महिलाएं परिवार उन्मुख हैं। उन्होंने खुद को अपने परिवार के बाद रखा। हर कोई अपने जीवन में संतुष्टि चाहता है। सफलता एक व्यापक अवधारणा है और हर व्यक्ति में भिन्न होती है। सफल होना एक बहुत अच्छा एहसास है और केवल पैसा कमाना ही सफलता नहीं है।

संदर्भ

- 17 लोक सभा इलेक्ट मोस्ट वोमेन एमपीएस एवर. (2019). रेट्रिएवेड फ्रॉम https://www.indiaspend.com/१७ -लोक-सभा- एलेक्ट्स -मोस्ट -वीमेन -एमपीएस –एवर
- अल्वेमन्,डी , ओब्रिएन ,डी ,एंड डिल्लोन, डी.(1996). कन्वर्सेशन्स: ऑन राइटिंग क्वालिटेटिव रिसर्च रीडिंग क्वार्टरली,31 (1),114-120 . रेट्रिएवेड फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/748242
- एप्ए ६ स्टाइल : सेकेंडरी सोर्स (2020). रेट्रिएवेद फ्रॉम https:/ लिबगुइडेस नवकस्टल इडीउ अउ /एपए-६ /सेकेंडरी-सोर्सेज
- एपए क्विक साइटेशन गाइड (2019). रेट्रिएवेद फ्रॉम https:/ गाइड लाइब्रेरी पी स उ. इ डी उ/ए पी ए क्विक गाइड /इनटेक्सट
- अराबी लेखिका को पहली बार मिला बुकर पुरस्कार (2019 MAY 23) अमर उजाला, पी.१६.
- अर्चना (एन डी) हेल्थ ईज़ वेल्थ क्वोट्स रेट्रिएवेद फ्रॉम https:/WWW. इंडिया असेलेब्रटिंगकॉम /क्वोट्स /हेल्थ -इज़ -वेल्थ -क्वोट्स /
- अरुणिमा सिन्हा (2019). रेट्रिएवेद फ्रॉम https://en.wikipedia.org/wiki/ अरुणिमा सिन्हा
- अरवीड सोन , पी (2013). रिस्ट्रक्चरिंग अटेन्शनलिटी एंड इंटेंशनलिटी ह्यूमन स्टडीज , 36 (2), 199-216 . रेट्रिएवेद फ्रॉम ttp://www.jstor.org/stable/24021493
- बनर्जी,ए , एंड राजू ,एस (2009). जेंडररड मोबिलिटी वोमन मीग्रेंट्स एंड वर्क इन अर्बन इंडिया इकनोमिक एंड पोलिटिकल वीकली ,44 (28), 115-123 रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/40279264
- बीवेर्स ,ए (2002). फेनोमेनोलॉजी एंड आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस। मेटाफिलॉसॉफी ,33 (1 /2), 70-82 . रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/24439316
- बेहरमैन,जे., एंड दुविसेक, एस.(2017). द रिलेशनशिप बिटवीन वोमन'एस पेड एम्प्लॉयमेंट एंड वोमेन्स स्टेटेड सोन प्रेफरेंस इन इंडिया डेमोग्राफी रिसर्च, 36, 1601-1636. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/26332175

- बेस्ट,जे. डब्लू ,कहन ,जे.वि.(2012) रिसर्च इन एजुकेशन (10th एड). नई दिल्ली: पी एच् आई लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड
- बेयर,सी (2016). एडमण्ड हसरल , द स्टैनफोर्ड इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ फिलोसोफी रेट्रिएवेद फ्रॉम https://plato.stanford.edu/entries/husserl/
- बिलग्रामी, टी. (2018, जनुअरी 22-28). हायर एजुकेशन फॉर वोमेन इन इंडिया यूनिवर्सिटी न्यूज़, 56(04).
- बोर्जोईस, पी (1971). फेनोमेनोलॉजी एंड द साइंस ऑफ़ लैंग्वेज रिसर्च इन फेनोमेनोलॉजी,1 , 119 - 136. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/24654423
- बस्छ, टी.(1979). फेनोमेनोलॉजी एस हुमानिस्म द केस ऑफ़ हुस्सेरल एंड सार्त्रे रिसर्च इन फेनोमेनोलॉजी,9 , 127-143. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/24654332
- बटरवॉर्थ, जी. (1992). ओरिगिन्स ऑफ़ सेल्फ-परसेप्शन इन इनफैन्सी साइकोलॉजिकल इन्क्वायरी, 3 (2), 103-111. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/1449193
- बैरप्पा, के. एंड बनो,डब्लू (2018 ,अगस्त 13 -19) जेंडर बेस्ड ओप्पोर्तुनिटीज़ फॉर वोमेन इन स्टेम स्ट्रीम्स यूनिवर्सिटी न्यूज़, 56 (33).
- कैनफ़ील्ड, जे, एंड स्विट्ज़र, जे.(2005) द सक्सेस प्रिंसिपल्स (10 एनिवर्सरी एडिशन एड). नई यॉर्क: विलियम मोरौ।
- कार्सन,जी. (1971). ए सेल्फ-परसेप्शन द कोनसेलोर इस ए टीचर द स्कूल कॉउंसलर,18 (5), 319-321. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/23897373
- सेण्टर फॉर इनोवेशन इन रिसेर्च एंड टीचिंग (एन.डी) फेनोमेनोलॉजी मेथड्स एंड डाटा कलेक्शन रेट्रिएवेद फ्रॉम https://cirt.gcu.edu/research/developmentresources/research_ready/phenomenology/2

- सिरफ, डब्लू (1951). ए मेटाफिज़िकल फेनोमेनोलॉजी द रिव्यु ऑफ़ मेटाफिजिक्स, 5(1), 125-144 . रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/20123250
- चानना, के. (1990). द डायलेक्टिक्स ऑफ़ ट्रेडिशन एंड मॉडर्निटी एंड वोमेंस एजुकेशन इन इंडिया सोशियोलॉजिकल बुलेटिन,39(1/2), 75-91. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/23634527
- चानना, के. (2002) ट्रेडिंग द हल्लोवेड हॉल्स: वोमेन इन हायर एजुकेशन इन इंडिया इकनोमिक एंड पोलिटिकल वीकली,35(12), 1012-1022. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/4409055
- चानना, के. (2001). हिन्दुइस्म एंड फीमेल सेक्सुअलिटी: सोसिअल कण्ट्रोल एंड एजुकेशन ऑफ़ गर्ल्स इन इंडिया सोशियोलॉजिकल बुलेटिन, 50(1), 37-63. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/23620149
- चेकर, ऍम. (1990) टीचर्स परसेप्शन ऑफ़ देयर प्रिंसिपल्स इम्प्रैशन अबाउट दम रिलेटेड टू देयर सेल्फ-परसेप्शन एंड देयर वर्क बिहैवियर। अनपब्लिश्ड दिस्सेरटेशन, युनिवेर्सिटी ऑफ़ दिल्ली, नई दिल्ली।
- सिलेसिज़, एस. (2011). ए फेनोमेनोलॉजीकल एप्प्रोच टू एक्सपेरिएंसेस वीथ टेक्नोलॉजी: करंट स्टैट, प्रॉमिस, एंड फ्यूचर डयरेक्शंस फॉर रिसर्च एजुकेशनल टेक्नोलॉजी रिसर्च एंड डेवलपमेंट, 59 (4), 487-510. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/41414955
- क्लेमेंस, पी(एन.डी) व्हाट इज़ सक्सेस? रेट्रिएवेद फ्रॉम https://possibilitychange.com/what-is-success/
- क्लॉट्स-फिगर्स, आई. (2012) आर फीमेल लीडर्स गुड फॉर एजुकेशन? एविडेंस फ्रॉम इंडिया अमेरिकन इकनोमिक जर्नल: एप्लाइड इकोनॉमिक्स, 4(1), 212-244. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/41419430
- कट्स, सी.,एंड पेलेग्रिन, आर (1957). एग्जीक्यूटिव एंड सुपरविसोर्स: कॉन्ट्रास्टिंग सेल्फ-कन्सेप्शन्स एंड कन्सेप्शन्स ऑफ़ ईच आदर अमेरिकन सोशियोलॉजिकल रिव्यु,22 (2), 217-220. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/2088861

- कोरमक, डी. एफ. (1991). द रिसर्च प्रोसेस इन नर्सिंग 2 इ डी. ऑस्ट्रेलिया: ब्लैकवेल साइंटिफिक पब्लिकेशन्स:
- क्रेसवेल्ल, जे.डब्लू (2013) क्वालिटेटिव इन्क्वायरी एंड रिसर्च डिज़ाइन नई दिल्ली: सेज पब्लिकेशन्स
- क्रॉसनाये, आर., रिएगले -क्रुम्ब, सी.,एंड म्युलर, सी. (2007) जेंडर, सेल्फ-परसेप्शन, एंड ऐकडेमिक प्रोब्लेम्स इन हाई स्कूल प्रोब्लेम्स, 54 (1), 118-138. doi:10.1525/sp.2007.54.1.118.
- क्यूरी, इ. (2001). मैडम क्यूरी ए बायोग्राफी (बी.शीयन,ट्रांस।)नई यॉर्क: द कापो प्रेस।
- डेविस, के. (1995). द फेनोमेनोलॉजी ऑफ़ रिसर्च: द कन्ट्रक्शंस ऑफ़ मीनिंग इन कम्पोजीशन रिसर्च जे ए सी, 15(1), 121-129. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/20866011
- ड़ेजुंग, जे. (1959). मेज़रमेंट ऑफ़ एक्यूरेसी ऑफ़ सेल्फ-रोल परसेप्शन द एअरबुक ऑफ़ द नेशनल कॉउन्सिल ऑन मेज़रमेंट यूज़्ड इन एजुकेशन, (16), 111-116 रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/41862836
- डोरेस्वामी, आर. (1996). द होम एंड द वर्ल्ड: इमेजेस ऑफ़ सेल्फ-परसेप्शन इंडिया इंटरनेशनल सेण्टर क्वार्टरली, 23(2), 123-129. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/23004654
- एडेटिक रिडक्शन (2018). रेट्रिएवेद फ्रॉम https://en.wikipedia.org/wiki/Eidetic_reduction
- एल्लिओट, बी. (2005). फेनोमेनोलॉजी एंड इमेजिनेशन इन हुसेरल एंड हैंडीगगेर नई यॉर्क: रोउटलेड्ज
- फिनेगन, टी. (2012). लेविनस फैथफुलनेस टू हुस्सेरल, फेनोमेनोलॉजी, एंड गॉड. रिलीजियस स्टडीज, 48 (3), 281-303. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/23260027
- फुलेर, सी.,एंड नरसिम्हां, एच् (2013). मैरिज, एजुकेशन, एंड एम्प्लॉयमेंट अमंग तमिल ब्राह्मण वोमेन इन साउथ इंडिया, 1891-2010. मॉडर्न एसियन स्टडीज, 47(1),53-84. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/23359779
- गड्डाम, एस.(2017). डेस्टिनेशन सक्सेस नई यॉर्क: मॉर्गन जेम्स पब्लिशिंग।
- गत्ती, बी., एंड आंद्रे, ऍम. (2010). द रेलेवंस ऑफ़ क्वालिटेटिव रिसर्च मेथड्स इन एजुकेशन इन ब्राज़ील इन बोहंसक आर., पी एफ ए एफ एफ एन., एंड वेल्लेर डब्लू (इ दी एस), क्वालिटेटिव

एनालिसिस एंड डाक्यूमेंट्री मेथड्स: इन इंटरनेशनल एजुकेशनल रिसर्च (पी पी. 41-52) ऑपलादेन; फ़ार्मिंग्टन हिल्स: वर्लग बरबारा बुदरीच रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/j.ctvbkjvmn.4

- गिग्लिटी, आर., एंड सेक्रेस्ट, एस. (1988). ऐकडेमिक सक्सेस एक्सपेक्टेंसी: द इंटरप्ले ऑफ़ जेंडर, सिचुएशन एंड मीनिंग रिसर्च इन हायर एजुकेशन, 29(4), 281-297. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/40195885
- गिड्डेन, डी. (1979). एपिक्युरस ऑन सेल्फ-परसेप्शन अमेरिकन फिलोसोफिकल क्वार्टरली, 16 (4), 297-306. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/20009771
- जॉर्डन, आई, एंड कोंब्स, ए. (1958). द लर्नरसेल्फ एंड परसेप्शन रिव्यु ऑफ़ एजुकेशनल रिसर्च, 28(5), 433-444. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/1168970
- गोसलीन, डी. (1962). एक्यूरेसी ऑफ़ सेल्फ परसेप्शन एंड सोशल असेस्प्टन्स सोसिओमेट्री, 25 (3), 283-296. रेट्रिएवेद फ्रॉम https://www.jstor.org/stable/2786129
- गुप्ता, एन. (2007). इंडियन वोमेन इन डॉक्टोरल एजुकेशन इन साइंस एंड इंजीनियरिंग ए स्टडी ऑफ़ इनफॉर्मल मिलिएउ एट द रेपुटेड इंडियन इंस्टीटूट्स ऑफ़, टेक्नोलॉजी,एंड ह्यूमन वैल्यूज, 32(5). 507-533 रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/29734002
- गुप्ता, एन., एंड शर्मा, ए (2002). वोमेन ऐकडेमिक साइंटिस्ट्स इन इंडिया सोशिअल स्टडीज ऑफ़ साइंस, 32 (5/6), 901-915 रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/3183058
- हम्मरबर्ग,के., किर्कमैन, ऍम, एंड दे लस्य, एस. (2016) क्वालिटेटिव रिसर्च मेथड्स; व्हेन टू यूज़ देम एंड होव टू जड्ज देम. ह्यूमन रिप्रोडक्शन, Vol.31(3), 498–501. रेट्रिएवेद फ्रॉम https://academic.oup.com/humrep/article/31/3/498/2384737
- हच, जे.ए. (2002) डूइंग क्वालिटेटिव रिसर्च इन एजुकेशन सेटिंग नई यॉर्क: स्टेट यूनिवेर्सिटी ऑफ़ नई यॉर्क प्रेस
- हीप, जे., एंड रोथ, पी. (1973) ऑन फेनोमेनोलॉजीकल सोशियोलॉजी अमेरिकन सोशियोलॉजिकल रिव्यु, 38 (3), 354-367 रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/2094358

- हैंडीगगेर, ऍम. (2013). बेसिक्स प्रोब्लेम्स ऑफ़ फेनोमेनोलॉजी (एस. ऍम. कैम्पबेल, ट्रांस।) लंदन: ब्लूम्सबरी ऐकडेमिक।
- हेल्म्सटेलर, एस. (2015). हु आर यू रियली एंड व्हाट डु यू वांट? भोपाल: मंजुल पब्लिशिंग हाउस
- हैंक, जे.,एंड तीमस्त्र, टी.(1993). द फंक्शन ऑफ़ क्वालिटेटिव रिसर्च सोसिअल इंडीकेटर्स रिसर्च, 29(3), 291-305 रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/27522699
- हॉफमन,डब्लू (एन.डी.). व्हाट इस फेनोमेनोलॉजी? रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.maxvanmanen.com/files/2014/03/ व्हाट इज फेनोमेनोलॉजी पी डी एफ
- होरगन, टी. (2013). ओरिजिनल इंटेंशनलिटी इज फेनोमेनल इंटेंशनलिटी द मोनिस्ट, 96(2), 232-251. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/42751179
- इन ए फर्स्ट, अरेबिक नावेल विंस इंटरनेशनल बुकर (2019, मई 23) . द हिन्दू, पी.12.
- इंडिया वेस्ट (2012). रेट्रिएवेद फ्रॉम https://www.indiawest.com/entertainment/bollywood/my-body-is-my-religionjohn-abraham/article_440e7f66-3d79-5e4d-8dbf-5ca2064fbf8a.html
- आई एन एस वी तारिणी अवार्डेड नारी शक्ति पुरस्कार 2017. (2018). रेट्रिएवेद फ्रॉम https://currentaffairs.gktoday.in/tags/insv-tarini
- इस्लाम, एन. (1983). सोशियोलॉजी, फेनोमेनोलॉजी एंड फेनोमेनोलॉजीकल सोशियोलॉजी। सोशियोलॉजिकल बुलेटिन,32(2), 137 -152. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/23619226
- जैकोब, इ. (1989). क्वालिटेटिव रिसर्च: ए डिफेन्स ऑफ़ ट्रडिशन्स रिव्यु ऑफ़ एजुकेशनल रिसर्च, 59(2), 229-235. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/1170416
- जोन्स, जे.., एंड ग्रीनीक्स, एल. (1970). मेज़र ऑफ़ सेल्फ-परसेप्शन एस प्रेडिक्टर्स ऑफ़ स्कॉलैस्टिक अचीवमेंट द जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल रिसर्च, 63 (5),201-203. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/27535963

- कांबले, ऍम. (2002). मॉडर्न एजुकेशन एंड वोमेन इन इंडिया।ट्रांसफॉर्मेशन, 19 (1), 71-72. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/43052523
- खन्ना, ऍम. (2009). पोलिटिकल पार्टिसिपेशन ऑफ़ वोमेन इन इंडियन जर्नल ऑफ़ पोलिटिकल साइंस, 70(1), 55-64. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/41856495
- कोवाक्स, जी. (1979). फेनोमेनोलॉजी एंड द आर्ट ऑफ़ टीचिंग जर्नल ऑफ़ थॉट, 14(3), 194-198. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/42588781
- क्रिएगल, यु. (2009). सेल्फ-रेप्रेसेंटेशनलिस्म एंड फेनोमेनोलॉजी।फिलोसोफिकल स्टडीज : एन इंटरनेशनल जर्नल फॉर फिलॉसोफी इन द अनलिटिक ट्रेडिशन, 143(3), 357-381. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/27734410
- क्रुगेर, एच्. (2010). द इम्पोर्टेन्स ऑफ़ क्वालिटेटिव मेथड्स इन द जर्मन एजुकेशनल साइंस इन बोहंसक आर, पी एफ ए एफ एफ एन., एंड वेल्लेर डब्लू। (इ डी एस), क्वालिटेटिव अनलयसिस एंड डाक्यूमेंट्री मेथड्स: इन इंटरनेशनल एजुकेशनल रिसेर्च (पी पी. 53-74). ऑपलादेन; फ़ार्मिंग्टन हिल्स: वेरलॉग बरबरा बदरीच रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/j.ctvbkjvmn.5
- कूपर,ए., लिंगार्ड , एल., एंड लेविंसन, डब्लू। (2008). क्वालिटेटिव रिसर्च : क्रिटिकली अप्प्रैसिंग क्वालिटेटिव रिसर्च बी ऍम जे : ब्रिटिश मेडिकल जर्नल, 337(7671), 687-689. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/20510884
- कुशनर , डी. (1997). सेल्फ-परसेप्शन एंड आइडेंटिटी इन कंटेम्पररी तुर्केर जर्नल ऑफ़ कंटेम्प्ररी हिस्ट्री, 32(2), 219-233. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/261242
- लासिक, के. (2019). हुस्सेरल: कॉन्ससियसनेस्स रेट्रिएवेद फ्रॉम https://philpapers.org/browse/husserl-consciousness
- लंगेलिएर, के. (1994). अप्प्रेसिएटिंग फेनोमेनोलॉजी एंड फेमिनिज्म रिसर्चइंग क्विलत्मकींग एंड कम्युनिकेशन ह्यूमन स्टडीज, 17(1),65-85 रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/20011029

- लेथेर्बी, जी.,एंड जदरोडोव्स्की,डी. (1995). "डिअर रिसर्चर":द यूज़ ऑफ़ कॉरेस्पोंडेंस एस ए मेथड वीथिन फेमिनिस्ट क्वालिटेटिव रिसर्च जेंडर एंड सोसाइटी, 9(5), 576-593. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/189897
- लाइफ वर्ड (2019). रेट्रिएवेद फ्रॉम https://en.wikipedia.org/wiki/Lifeworld
- लवलैंड,के. (1992). सेल्फ -परसेप्शन एंड सेल्फ -कन्सेप्शन। साइकोलॉजिकल इन्क्वायरी, 3(2),125 - 127. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/1449200
- मबकिऔ, नेपोलियन ज.आर. ऍम. (2005). हुस्सेरल थ्योरी ऑफ़ इंटेंशनलिटी रेट्रिएवेद फ्रॉम https://philpapers.org/archive/MABHTO.pdf
- मैक्डोनाल्ड, पी.एस.(2012). लैंग्वेज ऑफ़ इंटेंशनलिटी। लंदन कॉन्टीनुम इंटरनेशनल पब्लिशिंग ग्रुप।
- मानेन, ऍम.वी. (2011). डूइंग फेनोमेनोलॉजी इन्वोल्वेस टू टाइप ऑफ़ इन्क्वायरी एक्टिविटीज: इम्पीरिकल एंड रिफ्लेक्टिव मेथड्स। रेट्रिएवेद http://www.phenomenologyonline.com/inquiry/methods-procedures/
- मानेन,ऍम.बी.(2011). एथिकल फेनोमेनोलॉजी रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.phenomenologyonline.com/inquiry/orientationsinphenomenology/ethical-phenomenology/
- मानेन, ऍम,बी.(2011). एक्सिस्टेंटिअल फेनोमेनोलॉजी रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.phenomenologyonline.com/inquiry/orientationsinphenomenology/existential-phenomenology/
- मानेन,ऍम.बी.(2011). हेर्मेनुटीकल फेनोमेनोलॉजी रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.phenomenologyonline.com/inquiry/orientations-inphenomenology/hermeneutical-phenomenology/
- मानेन,ऍम.बी.(2011). इन्क्वारी रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.phenomenologyonline.com/inquiry/

- मानेन,ऍम.बी.(2011). लिंगुइस्टिकल फेनोमेनोलॉजी रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.phenomenologyonline.com/inquiry/orientations-inphenomenology/linguistical-phenomenology/
- मानेन,ऍम.बी.(2011). फेनोमेनोलोग्य हेस ए रिच एंड कॉप्लेक्स बैकग्राउंड एंड इट कॉन्टिनुएस टू इवॉल्व अलोंग लाइन्स डेट फाइंड डेयर ओरिजिन्स इन एअरलियर पीरियड्स एंड मूवमेंट, रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.phenomenologyonline.com/inquiry/orientationsinphenomenology/
- मानेन,ऍम.बी.(2011). फेनोमेनोलॉजी ऑफ़ प्रैक्टिस रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.phenomenologyonline.com/inquiry/orientationsinphenomenology/experiential-phenomenology/
- मानेन,ऍम.बी.(2011). द मैन पर्पस ऑफ़ द एम्पिरिकल (एंड एक्सेगेटिकल) मेथड्स इज टू एक्स्प्लोर एक्साम्प्ल एंड वेरायटीज ऑफ़ लीवड एक्सपेरिएंसेस, इस्पेसिअली इन द फॉर्म ऑफ़ अनेकदोटस, नरातिवेस, स्टोरीज एंड अदर लीवड एक्सपीरियंस अकाउंट्स। रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.phenomenologyonline.com/inquiry/methodsprocedures/empirical-methods/
- मानेन,ऍम.बी.(2011). द पर्पस ऑफ़ फेनोमेनोलोजीकाल रिफ्लेक्शन इज टू ट्री टू ग्रस्प द मीनिंग ऑफ़ समथिंग रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.phenomenologyonline.com/inquiry/methodsprocedures/reflective-methods/
- Manen, M.V. (2011). ट्रान्सेंडैंटल फेनोमेनोलॉजी रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.phenomenologyonline.com/inquiry/orientationsinphenomenology/ transcendental-phenomenology/
- Manen, M.V. (2016). रेसर्चिंग लीवड एक्सपीरियंस (2 इ डी). नई यॉर्क रोउटलेड्ज टेलोर एंड फ्रांसिस ग्रुप.

- मंगल एस.के. (2006) एडवांस्ड एजुकेशनल साइकोलॉजी (2 इ डी) नई दिल्ली प्रेन्टिस हॉल ऑफ़ इंडियन प्राइवेट लिमिटेड।
- मंजरे, आर.ऍम. एंड पाटिल, ए (2018, मार्च 05-11) रोल ऑफ़ एजुकेशन इन वोमेन एम्पोवेर्मेंट फ्रॉम फेमिस्ट पर्सपेक्टिव यूनिवेर्सिटी न्यूज़, 56(10).
- मार्टिन , जे.एल. (इडी). (2011). वोमेन एस लीडर इन एजुकेशन कैलिफ़ोर्निया प्राइजर
- मसरूर, एफ. (2011). इज पर्सेप्टुअल फेनोमेनोलॉजी थिन ? फिलोसोफी एंड फेनोमेनोलॉजीकल थिन ? फिलोसोफी एंड फेनोमेनोलॉजीकल रिसर्च,83 (2), 366-397. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/23035376
- मिल्लर, बी. (2011). सेंसरी फेनोमेनोलॉजी एंड पर्सेप्टुअल कंटेंट द फिलोसोफी क्वार्टरली, 61(244),558 -579 रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/23012982
- मीनागवा, के., वहील,डी.,एंड चार्लटोन, ए.(1993). स्मोकिंग एंड सेल्फ-परसेप्शन इन सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट तंबाकू कण्ट्रोल,2 (3), 215 -221. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/20206873
- महाजन, अच् के. (2018). क्वालिटेटिव रिसर्च मेथेडोलॉजी इन सोसिअल साइंस एंड रिलेटेड सब्जेक्ट्स। जर्नल ऑफ़ इकॉनमी डेवलपमेंट, एनवायरनमेंट एंड पीपल , 7(1), 23-48 रेट्रिएवेद फ्रॉम https://mpra.ub.unimuenchen.de/85654/1/MPRA_paper_85654.pdf
- मोहंती, जे. (1978). हुस्सेरल ट्रान्सेंडैंटल फेनोमेनोलॉजी एंड एसेंटिअलिस्म द रिव्यु ऑफ़ मेटाफिजिक्स, 32(2), 299-321. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/20127191
- मूरे, ऐ. (1967). एक्सिस्टेंटिअल फेनोमेनोलॉजी। फेनोमेनोलॉजी एंड फेनोमेनोलॉजिकल रिसर्च,27(3), 408-414. रेट्रिएवेद फ्रॉम https://www.jstor.org/stable/2103130
- मूरे, जे. (1942). इज दीस फेनोमेनोलॉजी? फिलोसॉफी एंड फेनोमेनोलॉजीकल रिसर्च, 3(1),78-84. doi:10.2307/2103130
- मोर्स, जे.ऍम.(इ डी.). (1994). क्रिटिकल इश्यूज इन क्वालिटेटिव मेथड्स। नई दिल्ली सेज पब्लिकेशन

- मोस्तकेस, सी. (1994). फेनोमेनोलॉजी रिसर्च मेथड्स। नई दिल्ली सेज पुब्लिकेशन्स
- मूंसों, टी. (1962). विट्गेनटेंस फेनोमेनोलॉजी फिलोसॉफी एंड फेनोमेनोलॉजीकल रिसर्च, 23(1), 37-50 doi:10.2307/2104987
- मुर्रो, सी. (1989). द मीनिंग ऑफ़ सक्सेस। अमेरिकन म्यूजिक टीचर, 38(3), 4 -8 रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/43549520
- एन.ए. (1885). सक्सेस द आर्ट यूनियन, 2(1), 10 -11 रेट्रिएवेद https://www.jstor.org/stable/20443005
- नक्कीरन, एन. (2016). इज़ सैंपलिंग ए मिसनोमेर इन क्वालिटेटिव रिसर्च ? सोशियोलॉजी बुलेटिन,65(1),40-49 रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/26368063
- नोलंद, ऍम., एंड ग्रुबेर,जे. (1978). सेल्फ-परसेप्शन, पर्सनालिटी, एंड बिहेवियर इन इमोशनलिटी डिस्टर्बड चिल्ड्रन बिहेवियरल डिसऑर्डर , 4(1), 6 -12. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/43153658
- नोलन,ए.,एंड टालवेर्ट, टी. (2011). क्वालिटेटिव असेर्टिओंस एस प्रेस्क्रिप्टिवे स्टेटमेंट एजुकेशनल साइकोलॉजी रिव्यु, 23(2), 263-271. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/23882863
- ओल्डफ़ादर, पी.,एंड वेस्ट, जे.(1994). क्वालिटेटिव रिसर्च एस जैज़ एजुकेशनल रिसर्चर, 23(8), 22-26. रेट्रिएवेद फ्रॉम ttp://www.jstor.org/stable/1176859
- ओवेरगार्ड, एस. (2008). हॉव टू एनालाइज इमीडियेट एक्सपीरियंस: हिनतिक्का,हुस्सेरल, एंड द आईडिया ऑफ़ फेनोमेनोलॉजी मेटाफिलॉसॉफी, 39(3), 282-304 रेट्रिएवेद फ्रॉमhttp://www.jstor.org/stable/24439905
- पैकर, ऍम. (2011). द साइंस ऑफ़ क्वालिटेटिव रिसर्च नई यॉर्क कैंब्रिज युनिवर्सिटी प्रेस
- पैक्स, ए. (2011). फेनोमेनोलॉजी एंड डांस: हुस्सेरल मैडिटेशन। डांस रिसर्च जर्नल,43(2), 33-49 रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/23266964

- पण्डे, बी. (1985). वोमेंस एजुकेशन सोशल साइंटिस्ट,13(10/11), 11 -19 doi:10.2307/3517216 रेट्रिएवेद फ्रॉम https://www.jstor.org/stable/3517216
- पण्डे, बी. (1985) वोमेंस एजुकेशन सोशल साइंटिस्ट, 13(10/11), 11 -19 doi:10.2307/3517216
- पंकजम, जी. (2014) इश्यूज इन एजुकेशन नई दिल्ली : ज्ञान पब्लिशिंग हाउस।
- पारीख, पी.पी.एंड सुखातमे, एस.पी. (2004)वोमेन इंजिनीयर्स इन इंडिया इकनोमिक एंड पोलिटिकल वीकली, 39(2). 193-201. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/4414501
- पटेल, आई. (1998). द कंटेम्पररी वोमेंस मोवमेंट एंड वोमेंस एजुकेशन इन इंडिया इंटरनेशनल रिव्यु ऑफ़ एजुकेशन /इंटरनेशनल रिव्यू इंटरनेशनल दे एजुकेशन, 44(2/3), 155-175. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/3445176
- पटेल, एस. (2015). 101 इन्स्पिरिंग कोट्स फ्रॉम द मोस्ट सक्सेसफुल पीपल इन हिस्ट्री रेट्रिएवेद फ्रॉम https://www.inc.com/sujan-patel/101
- पत्तों, ऍम.क्यू (2002). क्वालिटेटिव रिसर्च एंड िवलूशन मेथड्स (3 इ डी). नई दिल्ली सेज पुब्लिकेशन्स
- पेअर्स, ए. (1926). सक्सेस द साइंटिफिक मंथली, 23(1), 46-49 रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/7574
- पेले कोट्स (2019). रेट्रिएवेद फ्रॉम https://en.wikipedia.org/wiki/Perception
- परसेप्शन। (2020). रेट्रिएवेद फ्रॉम http://en.wikipedia.org/wiki/ फेनोमेनोलॉजी (फिलॉसोफी)
- फेनोमेनोलॉजी (फिलॉसोफी). (2019) रेट्रिएवेद फ्रॉम http://en.wikipedia.org/wiki/ फेनोमेनोलॉजी (फिलॉसोफी)
- फेनोमेनोलॉजी (साइकोलॉजी) (2019). रेट्रिएवेद फ्रॉम https://en.wikipedia.org/wiki फेनोमेनोलॉजी (साइकोलॉजी)
- फेनोमेनोलॉजी (2008-2019). रेट्रिएवेद फ्रॉम https://www.philosophybasics.com/branch_फेनोमेनोलॉजी.html

- पिलाइ, वी. (1981). वाइफ एजुकेशन एंड अर्बन फॅमिली साइज इन इंडिया द फॉर्म द रिलेशनशिप सोशियोलॉजिकल फोकस,14(3), 247-253. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/20831208
- पित्त,डी.(2004)द फेनोमेनोलॉजी ऑफ़ कॉग्नीशन और व्हाट इज इट लाइक टू थिंक डेट पी?फिलोसॉफी एंड फेनोमेनोलॉजीकल रिसर्च, 69(1),1 -36 रेट्रिएवेद फ्रॉम from http://www.jstor.org/stable/40040701
- पावर,जे., डराने, अच्.,क्लोज,बी.,नूनन, ऍम., वाइन , ए., एंड मार्शल, जे. (1971) ए रिसर्च नोट ऑन द सेल्फ-परसेप्शन ऑफ़ युथ अमेरिकन एजुकेशनल रिसर्च जर्नल, 8(4), 665 -670. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/1162133
- पी.पी.ए. 696 रिसर्च मथोड़स डाटा कलेक्शन स्ट्रेटजीस 2 :क्वालिटेटिव रिसर्च (एन. डी.) रेट्रिएवेद फ्रॉम https://web.csulb.edu/~msaintg/ppa696/696quali.htm#:~:text=Qualitative%20research%20aims%20to%20get,their%20meaning%20influences%20their%20 बिहेवियर
- पसतहास, जी. (1968). एथ्नोमेथोडस एंड फेनोइनोलॉजी। सोशल रिसर्च, 35(3), 500-520 रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/40969922
- क्वालिटेटिव मेथोडोलोजिज़ एथनोग्राफी फेनोमेनोलॉजी, ग्राउंडेड थ्योरी एंड मोर (एन.डी.) रेट्रिएवेद फ्रॉम ttp://www.brown.uk.com/teaching/qualitativepostgrad/handout
- कुतोषी, एस. बी. (2018). जर्नल ऑफ़ एजुकेशन एंड एजुकेशनल डेवेलोपमेंट फेनोमेनोलॉजी ए फिलोसॉफी एंड मेथड ऑफ़ इन्क्वारी, 5,215-222 रेट्रिएवेद फ्रॉम https://files.eric.ed.gov/fulltext/EJ1180603.pdf
- रचा इतिहास युधान मिशन में जाने की बाधा पार करने वाली पहली फाइटर पायलट बनी भावना (2019 मई 23). अमर उजाला, पी. 11.
- रैटक्लिफ, ऍम. (2011)स्टैंस, फीलिंग एंड फेनोमेनोलॉजी। सिंथेस, 178(1), 121-130. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/41477263

- रेड्डी पी.के. (2017, अक्टूबर 30-नवंबर 05). एजुकेशन एंड एम्पावरमेंट फॉर इंक्लूसिव ग्रोथ ऑफ़ वोमेन इन इंडिया युनिवेर्सिटी न्यूज़, 55(44).
- रिड-डाउनिंग, टी. (1990). हुस्सेरल परिपपोसिशनलेस फिलोसॉफी रिसर्च इन फेनोइनोलॉजी, 20, 136-151. . रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/24654457
- रीव्स, एस., अल्बर्ट, ऍम., कूपर, ए,एंड होडगेस, बी. (2008). क्वालिटेटिव रिसर्च : व्हाई यूज़ थेओरीज़ इन क्वालिटेटिव रिसर्च? बी ऍम जे: ब्रिटिश मेडिकल जर्नल,337(7670), 631-634 . रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/20510825
- रेन, के. (2012). रोल्स ऑफ़ वोमेन हायर एजुकेशन इंस्टीटूशन इन इंटरनेशनल कॉन्टेक्ट्स हायर एजुकेशन, 64(2), 177-191. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/23255275
- रेज़लर, ए., एंड एंडरसन, ए. (1971). फोकस्ड एंड अनफोकस्ड फीडबैक एंड सेल्फ-परसेप्शन द जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल रिसर्च,65(2), 61-64. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/27536213
- रिचर्ड्स, एल, एंड मोर्स, जे. ऍम. (2007). यूजर गाइड टू क्वालिटेटिव मेथड्स (2 इ डी). नई दिल्ली सेज पुब्लिकेशन्स।
- रोसेंफील्ड,इ.जी. (2009). द एसेंट ऑफ़ वोमेन टू सीनियर लीडरशिप पोसिशन्स इन द फाइनेंसियल सर्विसेज इंडस्ट्री: ए फेनोमेनोलॉजीकल स्टडी (डाक्टरल दिस्सेरटेशन). रेट्रिएवेद फ्रॉम https://pqdtopen.proquest.com/doc/288213099.html?FMT=AI
- साहनी, आर.,एंड शंकर, वी. (2012). गर्ल्स हायर एजुकेशन इन इंडिया ऑन द रोड टू इन्क्लूसिवेनेस्स: ऑन ट्रैक बट हैडिंग वेयर? हायर एजुकेशन, 63(2), 237-256. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/41343620
- सल्डाना, जे., एंड ऑमस्टा, ऍम. (2018). क्वालिटेटिव रिसर्च अनलीजिंग लाइफ कैलिफ़ोर्निया सेज पब्लिकेशन

- संपाओलो, ऍम., द एडिटर्स ऑफ़ इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका(2019). लाइफ वर्ल्ड रेट्रिएवेद फ्रॉम https://www.britannica.com/topic/life-world
- सरकार, एल. (1983). स्टेटस ऑफ़ वोमेन एंड लॉ एस एन इंट्रूमेंट ऑफ़ सोशल चेंज जर्नल ऑफ़ द इंडियन लॉ इंस्टिट्यूट, 25(2), 262-269. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/43950875
- सविकी, ऍम. (एन.डी.).एडमंड हुस्सेरल। रेट्रिएवेद फ्रॉम https://www.iep.utm.edu/husserl/
- सचच्त, आर. (1972). हुस्सेरलीन एंड हैंडीगगेरियन फेनोमेनोलॉजी फिलोसोफिकल स्टडीज: एन इंटरनेशनल जर्नल फॉर फिलोसॉफी इन द अनलिटिक ट्रेडिशन 23(5)293-31. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/4318732
- स्च्मित, आर. (1962). इन सर्च ऑफ़ फेनोमेनोलॉजी द रिव्यु ऑफ़ मेटाफिजिक्स, 15(3), 450-479. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/20123894
- स्कुट्ज़, ए. (1945). सम लीडिंग कॉन्सेप्ट्स ऑफ़ फेनोमेनोलॉजी सोशल रिसर्च, 12(1), 77-97. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/40982061
- सेल्फ-परसेप्शन (2020). . रेट्रिएवेद फ्रॉम https://www.merriamwebster.com/
- शर्मा, आर. (2016). द मोंक हु सोल्ड हिस फेरारी। लखनऊ:जैको पब्लिशिंग हाउस
- शर्मा, आर. द 8 फोंट्स ऑफ़ सक्सेस रेट्रिएवेद फ्रॉम https://www.robinsharma.com द- 8 -फोंट्स -ऑफ़ –सक्सेस
- श्रीदेवी, एस. (1972). वोमेंस हायर एजुकेशन इन इंडिया सीन्स इंडिपेंडेंस इम्प्रोविंग कॉलेज एंड यूनिवर्सिटी टीचिंग, 20(1), 71-72 रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/27563329
- स्टडीज, जी., एंड कप्लान, ए. (2011). अचीवमेंट गोल्स एंड पर्सिस्टेंस अक्रॉस टास्कस द रोल्स ऑफ़ फेलियर एंड सक्सेस द जर्नल ऑफ़ एक्सपेरिमेंटल एजुकेशन, 79(4), 429-451. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/43821001
- सिम्मोंस, जे. ए. एंड बेंसोन, बी.इ. (2013). द नई फेनोमेनोलॉजी। लंदन ब्लूम्सबरी ऐकडेमिक।

- सिंह, ए. (2007) फेनोइनोलॉजी एंड इट्स एजुकेशनल इम्प्लिकेशन्स अनपब्लिशड पी.एच्.डी., युनिवेर्सिटी ऑफ़ लखनऊ।
- सिंह, डी., सिंह, डी. (1980). वोमेन एग्जीक्यूटिव इन इंडिया मैनेजमेंट इंटरनेशनल रिव्यु, 20(2), 53-60. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/40227517
- सिंह, आर. (2011)कोपिंग वीथ द अडोलेसेंसे कंसर्नस बय गर्ल्स : रोल ऑफ़ एजुकेशन। अनपब्लिशड डाक्टरल दिस्सेरटेशन युनिवेर्सिटी ऑफ़ लखनऊ, लखनऊ।
- सिन्हा, डी. (1995). मेटाफिजिक्स ऑफ़ एक्सपीरियंस इन अदवैता वेदांता। नई दिल्ली मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड।
- सिन्हा,पी. (2003). वोमेन एंटरप्रेंयूर्शिप इन द नार्थ ईस्ट इंडिया: मोटिवेशन, सोशल सपोर्ट एंड कन्सट्रैन्ट इंडियन जर्नल ऑफ़ इंडस्ट्रियल रिलेशन्स, 38(4), 425-443. रेट्रिएवेद फ्रॉम ttp://www.jstor.org/stable/27767864
- .स्मिथ, डी. (2003) पुरे लॉजिक, ओंटोलॉजी, एंड फेनोमेनोलॉजी रिव्यू इंटरनेशनल दे फिलॉसॉफी, 57(224 (2)), 133-156. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/23955718
- स्मिथ, डी. डब्लू।, एंड मसंतीरे, आर. (1944). हुस्सेरल एंड इंटेंशनलिटी। हॉलैंड कलुवेर ऐकडेमिक पब्लिशर ग्रुप
- स्पॉल्डिंग, एस. (2015). फेनोमेनोलॉजी ऑफ़ सोशल कॉग्निशन एर्केंण्टनीस (1975),80 (5),1069-1089. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/24734926
- स्पीयर, ए. डी. (एन.डी.). एडमंड हुस्सेरल : इंटेंशनलिटी एंड इंटेंशनल कंटेंट रेट्रिएवेद फ्रॉम https://www.iep.utm.edu/huss-int/#H1
- स्पैगेलबेर्ग, एच्. (1960). हुस्सेरल फेनोमेनोलॉजी एंड एक्सिस्टेंटिअलिस्म द जर्नल ऑफ़ फिलोसॉफी, 57(2), 62 -74 रेट्रिएवेद फ्रॉम https://www.jstor.org/stable/2022808
- स्क्विटानी, एफ. (2006). मिस्टेकन सेल्फ-परसेप्शन एंड एक्विलिब्रियम इकनोमिक थ्योरी, 27(3),615-641. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/25056042

- स्ताप्लेटोन, टी. जे. (1983). हुस्सेरल एंड हैंडीगगेर: द कुएस्शन ऑफ़ ए फेनोमेनोलॉजीकल बेगिनिंग अल्बेनी: स्टेट युनिवेर्सिटी ऑफ़ नई यॉर्क प्रेस।
- स्टेनियस, के,मकेला, के., मोवस्की, ऍम.,एंड गबरहेलिक, आर. (2017). हॉव टू राइट पुब्लिशेबल क्वालिटेटिव रिसर्च इन स्टेनियस के. मोवस्की ऍम., बाबर टी., पैट्स आर.,ओ रेल्ली जे.,एंड कान्डों पी. (इ डी एस),पब्लिशिंग एडिक्शन साइंस: ए गाइड फॉर द परप्लेक्सेड (पी.पी. 155 -172) लंदन: यूबीक्विटी प्रेस। रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/j.ctv3t5qxw.14
- स्टीकर, यु.,एंड हाम्पेल, आर. (2015). क्वालिटेटिव रिसर्च इन कॉल. कैलिको जर्नल, 32(3), 380-395. रेट्रिएवेद फ्रॉम https://www.jstor.org/stable/calicojournal.32.3.380
- स्ट्रिंगर, आर., एंड हेल्थ, एन. (2008). ऐकडेमिक सेल्फ-परसेप्शन एंड इट्स रिलेशनशिप टू ऐकडेमिक परफॉरमेंस कैनेडियन जर्नल ऑफ़ एजुकेशन /रिव्यू कानडीएन दे एजुकेशन, 31(2), 327-345. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/20466704
- सक्सेस (2019). रेट्रिएवेद फ्रॉम https://en.oxforddictionaries.com/definition/success
- सुधा, टी.(2006). एजुकेशन, एम्प्लॉइमन्ट एंड एम्पावरमेंट ऑफ़ रूरल वोमेन इन तमिल नाडु। डाक्टरल दिस्सेरटेशन, युनिवेर्सिटी ऑफ़ अन्नामलाई युनिवेर्सिटी अन्नामलाईनगर। रेट्रिएवेद फ्रॉम http://hdl.handle.net/10603/225206/
- सुन्दर, पी. (1996). वोमेन एंड फिलांथ्रोपि इन इंडिया। वोलन्टस: इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ वोलंटरी एंड नॉनप्रॉफिट आर्गेनाइजेशन, 7(4), 412-427 रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/27927537
- सिडनी, एस. (1996) द फर्स्ट पर्सन पर्सपेक्टिव एंड अदर एस्सेस। नई यॉर्क कैंब्रिज युनिवेर्सिटी प्रेस।
- टंडन, यु., एंड गुप्ता, ए. (2010). टीचर इन इमर्जिंग इंडियन सोसाइटी लखनऊ :आलोक प्रकशन।
- तिलक, जे. (1983). इनक्वॉलिटी इन एजुकेशन बय सेक्स इन इंडिया। इंडियन जर्नल ऑफ़ इंडस्ट्रियल रिलेशन्स, 18(3), 375-395. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/27768728

- त्यागी, वी. (2019). हैल्थी माइंड, हैल्थी बॉडी। रेट्रिएवेद फ्रॉम https://www.wisdomtimes.com हैल्थी –माइंड- हैल्थी- बॉडी
- तयमान, एस. (1983). द फेनोमेनोलॉजी ऑफ़ फॉर्गेटिंग फिलोसॉफी एंड फेनोमेनोलॉजीकल रिसर्च, 44(1), 45-60. 10.2307/2107579
- वैन दे पित्ते, ऍम. (1977). इस देयर ए फेनोमेनोलॉजी मेथड? मेटाफिलॉसॉफी, 8(1),21-35. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/24435624
- वर्मा, वी. (1976). हेगल फेनोमेनोलॉजी ऑफ़ माइंड द इंडियन जर्नल ऑफ़ पोलिटिकल साइंस, 37(3), 1 -23. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/41854744
- वर्डिक्ट 2019 इन चार्ट्स एंड मैप्स:लोक सभा हैस मोर फीमेल ऍम.पीं.देन एवर बिफोर मोर दयनासत्स टु. (2019). रेट्रिएवेद फ्रॉम https://scroll.in/article/925313 वर्डिक्ट- 2019- इन- चार्ट्स- एंड- मैप्स:-लोक -सभा –हैस- मोर- फीमेल- ऍम.पीं.देन- एवर -बिफोर -मोर –दयनासत्स- टु.
- विवेकानंद साहित्य। (2009). कोलकत्ता:अद्वैत आश्रम।
- वेंक, डी. (1996). जर्नल ऑफ़ कम्पेरेटिव फॅमिली स्टडीज, 27(1), 153-154. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/41602442
- विलटश्च, एच्. (2015). इन्टुइटीयन्स, सीमिंग, एंड फेनोमेनोलॉजी तोरेमा रेविस्टा इंटरनेशनल दे फिलॉसफिअ, 34(3), 57-78 रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/26370125
- वर्थिंग, ऍम , (एन. डी.) रेट्रिएवेद फ्रॉम http://a1149861.sites.myregisteredsite.com डिफ्रेंस बिटवीन फेनोमेनोलॉजीकल रिसर्च एंड बेसिक क्वालिटेटिव रिसर्च डिज़ाइन। पी.डी एफ
- जहवी, डी. (इ डी). (2012). कंटेम्परारी फेनोमेनोलॉजी। ऑक्सफ़ोर्ड:ऑक्सफ़ोर्ड युनिवेर्सिटी प्रेस।
- ज़िलसेल, इ. (1941). फेनोमेनोलॉजीकल एंड नेचुरल साइंस फिलोसॉफी ऑफ़ साइंस, 8(1), 26-32. रेट्रिएवेद फ्रॉम http://www.jstor.org/stable/184362
- बुर्जुआ, पी. (1971)। फेनोमेनोलॉजी एंड द साइंसेस। रिसर्च इन फेनोमेनोलॉजी, 1, 119-136।

- स्कैच, आर। (1972)। हुसेरलियन एंड हाइडेगेरियन फेनोमेनोलॉजी। फिलोसोफिकल स्टडीज: एन इंटरनेशनल जर्नल फॉर फिलॉसोफी इन द अनलिटिक ट्रेडिशन, 23(5), 293-314।
- पैट्रिक सुलिवन (1981) सेमियोटिक फेनोमेनोलॉजी एंड पीयर्स, सेमियोटिक्स 1981 पीपी 83-93, डीओआई: 10.1007/978-1-4615-9328-7_9
- हेयिंक, जे, एंड टायमस्ट्रा, टी। (1993) द फंक्शन ऑफ़ क्वालिटेटिव रिसर्च। सोशल इंडीकेटर्स रिसर्च, 29(3), 291-305।
- ओल्डफादर, पी, एंड वेस्ट, जे। (1994) क्वालिटेटिव रिसर्च ऐज जैज़। एजुकेशनल रिसर्चर, 23(8), 22-26।
- चानाना, के. (2001)। हिन्दुइज़्म एंड फीमेल सेक्सुअलिटी: सोशल कण्ट्रोल एंड एजुकेशन ऑफ़ गर्ल्स इन इंडिया। सोशियोलॉजिकल बुलेटिन, 50(1), 37-63.
- गुप्ता, एन., एंड शर्मा, ए. (2002) वीमेन एकेडमिक साइंटिस्ट इन इंडिया। सोशल स्टडीज ऑफ़ साइंस, 32(5/6), 901-915.
- बीवर, ए (2002)। फेनोमेनोलॉजी एंड आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस। मेटाफिलॉसॉफी, 33(1/2), 70-82.
- पारिख, पी.पी. एंड सुखात्मे, एस.पी. (2004) वीमेन इंजीनियर इन इंडिया। इकोनॉमिक एंड पोलिटिकल वीकली, 39(2), 193-201.
- पिट, डी. (2004) द फेनोमेनोलॉजी ऑफ़ कॉग्निशन ओर " व्हाट इज इट लाइक टू थिंक दैट? फिलॉसफी एंड फेनोमेनोलॉजिकल रिसर्च, 69(1), 1-36।
- कैनफील्ड, जे।, एंड स्विट्जर, जे। (2005) द सक्सेस प्रिंसिपल्स (10वीं एनिवर्सरी एडिशन एजुकेशन।) न्यूयॉर्क: विलियम मोरो।
- स्क्विंटानी, एफ। (2006) मिस्टेकन सेल्फ -परसेंप्शन एक्विलिब्रियम। इकनोमिक थ्योरी, 27(3), 615-641

- क्रॉसनो, आर, रीगल-क्रंब, सी, एंड मुलर, सी। (2007) जेंडर, सेल्फ -परसेप्शन, एंड ऐकडेमिक प्रोब्लेम्स इन हाई स्कूल। सोशल प्रोब्लेम्स, 54(1), 118-138. डीओआई:10.1525/एसपी.2007.54.1.118।
- गुप्ता, एन। (2007) इंडियन वीमेन इन डॉक्टोरल एजुकेशन इन साइंस एंड इंजीनियरिंग: ए स्टडी ऑफ़ इनफॉर्मल मिलिएउ एट द रेपुटेड इंडियन इंस्टीटूशन। ऑफ़ टेक्नोलॉजी। साइंस, टेक्नोलॉजी एंड ह्यूमन वैल्यूज, 32(5), 507-533।
- रिचर्ड्स, एल. एंड मोर्स, जे.एम. (2007) रीडमे फर्स्ट फॉर ए यूज़र्स गाइड टू क्वालिटेटिव मेथोड्स। सेज पब्लिकेशंस, थाउजेंड ओक्स, ओपन जर्नल ऑफ नर्सिंग, वॉल्यूम 5 नंबर 5, 19 मई
- क्लॉट्स-फिगुएरास, इरमा, (2007) "आर फीमेल लीडर्स गुड फॉर एजुकेशन?: एविडेंस फ्रॉम इंडिया" UC3M वर्किंग पेपर। इकोनॉमिक्स वी 077342, यूनिवर्सिडैड कार्लोस III डी मैड्रिड। डिपार्टमेंट डे इकोनोमिया।
- ओवरगार्ड, एस। (2008) हाऊ टू एनालाइज इमीडियेट एक्सपीरियंस: हिंटिका, हुसरल, एंड द आइडिया ऑफ फेनोमेनोलॉजी। मेटाफिलॉसॉफी, 39(3), 282-304।
- टॉम फ्रोइस एंड टॉम ज़िमके (2009) "एनएक्टिव आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस: इन्वेस्टिगेशन द सिस्टमिक ऑर्गनाइजेशन ऑफ लाइफ एंड माइंड", आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस 173 (2009) 466-500।
- नोलन, ए, एंड टैलबर्ट, टी। (2011) क्वालिटेटिव अस्सेर्टेसन एज प्रेस्क्रिप्टिव स्टेटमेंट। एजुकेशनल साइकोलॉजी रिव्यु, 23(2), 263-271।
- पेक्स, ए। (2011)। फेनोमेनोलॉजी एंड डांस: हसरलियन मेडिटेशन। डांस रिसर्च जर्नल, 43(2), 33-49.
- क्लॉट्स-फिगुएरेस, आई। (2012)। आर फीमेल लीडर्स गुड फॉर एजुकेशन? एविडेंस फ्रॉम इंडिया। अमेरिकन इकोनॉमिक जर्नल: एप्लाइड इकोनॉमिक्स, 4(1), 212-244।
- लोरी बीमन एट अल। (2012) "फीमेल लीडरशिप राइसेस एस्पिरशन एंड एजुकेशनल अटेन्मेन्ट फॉर गर्ल्स: ए पॉलिसी एक्सपेरिमेंट इन इंडिया । 2012 फ़रवरी 3; 335 (6068): 582-586।

- थॉमस फिनगान (2012) "लेविनास फैथ्फुल्नेस टू हुस्सेरल, फेनोमेनोलॉजी, एंड गॉड", वॉल्यूम। 48, नंबर 3 (सितंबर 2012), पीपी। 281-303
- कैटरीना एडल्स-हिर्श (2015); फेनोमेनोलॉजी एंड एजुकेशनल रिसर्च इंट। एड के जे. रेस. 3 (8)। 251-260।
- अमांडा विलियमसन (2015) "ऑन डांस एंड फेनोमेनोलॉजी: एन ऐसे इंटरव्यू विथ प्रोफेसर सोंद्रा फ्रेले, यूनिवर्सिटी ऑफ़ न्यूयॉर्क ", वॉल्यूम। 2, इशू 2.
- सरोजा देवी राजेंद्रन (2016) इंडियन वूमेन एजुकेशन जनवरी 2016", कांफ्रेंस: वूमेन एम्पावरमेंट एंड ह्यूमन राइट: ट्रांसफॉर्मिंग दियर राइट : ट्रांसफॉर्मिंग दियर राइट्स इन द 21वींसेंचुरी एट: अलगप्पा अलगप्पा, कराईकुडी
- सदरुद्दीन बहादुर कुतोशी (2018) "फेनोमेनोलॉजी: ए फिलॉसफी एंड मेथड ऑफ इंक्वायरी", जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड एजुकेशनल डेवलपमेंट, वॉल्यूम। 5 नंबर 1 (जून 2018)।
- हॉल, जोनाथन (2018) "ए फेनोमेनोलॉजिकल स्टडी स्टडी ऑफ़ द एक्सपेरिएंसेस वीमेन इन साइंसेस फ़ील्ड्स" (2018)। इलेक्ट्रॉनिक थीसिस एंड दिस्सेरटेशन। 5983.
- ब्रायन ई. न्यूबॉयर एट अल। (2019) "हाउ फेनोमेनोलॉजी कैन हेल्प्स अस लर्न द एक्सपेरिएंसेस ऑफ़ अदर्स", पर्सपेक्टिव ऑन मेडिकल एजुकेशन वॉल्यूम-8, पेज- 90-97 (2019)।
- किम, ई, एंड अल्बेलो, जेएल (2020)। वुमेन इन एविएशन: ए फेनोमेनोलॉजिकल स्टडी एक्सप्लोरिंग द नीड्स एंड वांट्स नीड्सरी फॉर ग्रेजुएशन। कॉलेजिएट एविएशन रिव्यू इंटरनेशनल, वॉल्यूम -38, इशू -2।
- रिजवे, लैवेंट्रिस एस., (2021) "ए फेनोमेनोलॉजिकल स्टडी ऑफ़ परसेप्शन ऑफ़ सेल्फ- एफिशिएंसी एंड बेलोगिंग्नेस इन ट्रांसफर स्टूडेंट विथ डिसैबिलिटीज आफ्टर एन इंडिविडुअलिज़्ड ओरिएंटेशन एट ए पब्लिक यूनिवर्सिटी" (2021)।
- नुशेल एल चांस (2021) "ए फेनोमेनोलॉजिकल इन्क्वायरी इन टू द इन्फ्लुएंस ऑफ़ क्रूसिबल एक्सपेरिएंसेस ऑन द लीडरशिप डेवलपमेंट ऑफ़ ब्लैक वीमेन इन हायर एजुकेशन सीनियर लीडरशिप", वॉल्यूम 49, इशू 4, 2021, https://doi.org/10.1177/174114322 1101 9417

- बेकिर यिलिरिम (2021) "प्रीस्कूल एजुकेशन इन टर्की ड्यूरिंग द कोविड -19 पंडामिक: ए फेनोमेनोलॉजिकल स्टडी", अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन जर्नल वॉल्यूम 49, पेज 947–963 (2021)
- सैफुल अमीन एट अल। (2022) "अना याहानु फकत": ए फेनोमेनोलॉजिकल स्टडी ऑन द परफॉरमेंस करैक्टर एंड लाइफ सक्सेस", अप्रैल 2022, क्वालिटेटिव रिपोर्ट, 27(4):945-964, डीओआई:10.46743/2160-3715/2022.4916